निश्चयबुद्धि विजयन्ति - संशयबुद्धि विनश्यन्ति

विषय सूची

निश्चयबुद्धि की परिभाषा एवं अर्थ
विजय की परिभाषा एवं अर्थ
निश्चय का आधार और प्रमाण
निश्चय का जीवन में महत्व

प्रथम अध्याय (Ist Chapter)

1. आत्मा का ज्ञान,
2. परमात्मा का ज्ञान,
3. विश्व-नाटक का ज्ञान
4. सृष्टि-चक्र और पुरुषोत्तम संगमयुग एवं संगमयुग की प्राप्तियों का ज्ञान तथा अनुभव
5. त्रिलोक का ज्ञान
6. कल्प वृक्ष का ज्ञान,
7. कर्मों का ज्ञान,
8. योग का ज्ञान और अनुाव
9. पवित्रता का ज्ञान और महत्व

द्वितीय अध्याय (IInd Chapter)

1. निश्चयबुद्धि और धर्मराज़, धर्मराजपुरी एवं धर्मराज की सजायें
2. निश्चय और सेवा - ज्ञान सेवा, यज्ञ की स्थूल सेवा एवं मन्सा सेवा
3. निश्चय और चरित्र उत्थान एवं दैवी गुण
4. निश्चय बुद्धि और जीवन यात्रा
A. जीवनमुक्त देवताई जीवन
B. जीवनबन्ध तमोप्रधान मानवीय जीवन
C. सदाबहार संगमयुगी जीवन अर्थात् ब्राह्मण जीवन
5. निश्चय और श्रीमत
6. निश्चय और पुरुषार्थ एवं परीक्षा अर्थात् पढ़ाई एवं परीक्षा
7. निश्चय और साक्षी स्थिति
8. निश्चय, विनाश और विजय
9. निश्चय और मृत्यु-विजय
10. निश्चय और स्वर्ग-नर्क
11. निश्चय और सुख-दुख एवं अतीन्द्रिय सुख
12. निश्चय और ब्रह्मचर्य
13. A. निश्चय बुद्धि, अन्न और मन
B. निश्चय बुद्धि और संग

14. निश्चय और कर्मभोग
शारीरिक एवं मानसिक व्याधि तथा उपचार
15. निश्चय और ब्राह्मण जीवन की प्राप्तियाँ
16. निश्चय और पाप-पुण्य का खाता
17. निश्चय और भारत भूमि
18. निश्चयबुद्धि और ब्रह्मा बाबा
19. बाबा के द्वारा दिये गये स्वमान एवं वरदान

तृतीय अध्याय (IIIrd Chapter)

1. निश्चय बुद्धि और परस्पर व्यवहार
2. निश्चय और भक्तिमार्ग
3. निश्चय और सन्यास मार्ग
4. निश्चय और साइन्स
5. निश्चय और भविष्य
6. निश्चय और साहित्य
7. निश्चय बुद्धि और साक्षात्कार
8. निश्चय बुद्धि और आदर्शवाद एवं यथार्थवाद
9. निश्चय बुद्धि और विकर्म विनाश
10. निश्चय बुद्धि और अधिकार एवं कर्तव्य
निश्चय बुद्धि और अहंकार एवं हीनता की भावना
11. निश्चय बुद्धि - जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, भूत-प्रेत, वास्तु-शास्त्र आदि
12. निश्चय बुद्धि और दान
13. निश्चय बुद्धि और प्रत्यक्षता
14. निश्चय बुद्धि और विश्व के विभिन्न धर्म, सिद्धान्त एवं दर्शन
15. निश्चयबुद्धि और संकल्प शक्ति
16. निश्चय बुद्धि - उपभोग एवं उपयोग
17. निश्चय बुद्धि - योगबल से जन्म
18. निश्चय बुद्धि - जीवन की पहेली की सफलता का राज़
19. निश्चयबुद्धि और निर्भय, निश्चिन्त, अटल-अचल स्थिति
20. निश्चय बुद्धि और मनोविज्ञान एवं दार्शनिक ज्ञान
21. निश्चय और चिन्तन
22. निश्चयबुद्धि और ज्ञान, गुण-शक्तियों की धारणा
23. निश्चयबुद्धि और दृष्टि-वृत्ति, स्मृति

आध्यात्मिक प्रश्नावली
सारांश
निश्चयबुद्धि की निशानियां
विविधि बिन्दु

प्रस्तावना

प्राण प्यारे बाबा ने हम आत्माओं के कल्याणार्थ साकार रूप में और अव्यक्त रूप में अनेक आध्यात्मिक, भौतिक, कर्म सम्बन्धी सत्यों का ज्ञान दिया है, उनके सम्बन्ध में मुरलियों में समय समय पर अनेक अनमोल महावाक्य उच्चारण किये हैं, जिनके विषय में हमको स्पष्ट जानकारी हो, उनका अनुभव हो, उन पर श्रृद्धा-विश्वास और निश्चय हो तो हमारा ये आध्यात्मिक जीवन अवश्य ही निर्भय, निश्चिन्त, सहज और सुखमय होगा। हमारे कर्मों में श्रेष्ठता होगी, जिससे हमारा भविष्य जीवन भी सुखमय होगा।

इन सत्यों का ज्ञान और उन पर निश्चय आत्मा को बुरे कर्मों से रोकता (Control) भी है और श्रेष्ठ कर्मों के लिए प्रेरित भी करता है। इनके विषय में हमारा ज्ञान जितना ही स्पष्ट होगा, उनका गहरा अनुभव होगा और निश्चय दृढ़ होता है, वह उतना ही प्रभावशाली होता है और उतनी ही कर्मों में श्रेष्ठता होती है। वे सत्य हमारी स्मृति में रहें, इस उद्देश्य से ही बाबा के महावाक्यों को यहाँ उद्धृत किया गया है और उन सत्यों के विषय में अन्य आध्यात्मिक जगत में जो मान्यतायें प्रचलित हैं, उन पर भी संक्षिप्त रूप से विचार किया गया है। इन सत्यों के विषय में चिन्तन से हमारे जीवन में भी लाभ हुआ है और आशा है कि अन्य पाठ्क भी इससे अवश्य ही लाभन्वित होंगे।

जो अनादि-अविनाशी (Eternal) सत्य हैं, वे सदा ही सत्य हैं। उनमें देश-काल-व्यक्ति के कारण कोई अन्तर नहीं हो सकता है। वे सत्य सर्वमान्य होते और सबको एकमत से स्वीकार्य होते हैं और होने भी चाहिए। इसमें आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियम और सिद्धान्त मुख्य हैं।

जो स्वेच्छिक विषय हैं, उनके विषय में वैचारिक भिन्नता अवश्यम्भावी है क्योंकि ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है, इसलिए विचारों में भी भिन्नता होना स्वभाविक है। उनमें एक-दो के विचारों को सम्मान देकर यथार्थ सत्य का निर्णय करना ही यथार्थ है। उन विषयों में देश-काल-परिस्थितियों के आधार पर किसी व्यक्ति के अपने ही विचारों में भिन्नता हो सकती है, वे परिवर्तन हो सकते हैं, इसलिए उनकी कोई निश्चित (Hard Fast) सीमा-रेखा नहीं हो सकती है। इनमें धारणायें और सेवा के क्षेत्र विशेष हैं।

बाबा की मुरली में भी कई विषयों पर देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग उत्तर होते हैं। किस देश-काल और परिस्थिति में क्या उचित है, उस पर स्वयं ही विचार करना होता है।

निश्चय बुद्धि विजयन्ति - संशय बुद्धि विनश्यन्ति

जीवन में सबसे बड़ी विजय है, अपनी इन्द्रियों पर विजय और सबसे बड़ी हार है देहाभिमान के वश अपनी इन्द्रियों से हार। परमपिता परमात्मा संगमयुग पर आकर हमको यथार्थ ज्ञान देकर देही-अभिमानी बनाकर इन्द्रियों पर विजयी बनाते हैं और जो अपनी इन्द्रियों पर विजय पा लेता है, उसकी कब भी जीवन में हार हो नहीं सकती। जो अपनी इन्द्रियों पर विजय पा लेता है, ऐसी समर्थ आत्मा की जीवन के हर क्षेत्र में विजय निश्चित होती है।

"एक बल, एक भरोसा - ऐसे निश्चयबुद्धि की विजय न हो, यह हो नहीं सकता। अपने में ही जरा सा संकल्पमात्र भी संशय आता है कि यह होगा या नहीं होगा, तो विजय नहीं होगी। अपने में, बाप में और ड्रामा में पूरा-पूरा निश्चय हो तो कभी विजय न मिले, यह हो नहीं सकता। अगर विजय नहीं होती तो जरूर कोई न कोई प्वाइन्ट में निश्चय की कमी है।"

अ.बापदादा 12.12.83 पार्टी 3

"निश्चय बुद्धि की निशानी है - हर दृश्य को निश्चित जानकर सदा निश्चिन्त रहना। क्यों, क्या और कैसे की चिन्ता नहीं होगी। फरिश्तेपन की लास्ट स्टेज है - सदा शुभचिन्तक और निश्चिन्त।" अ.बापदादा 7.2.76

"निश्चयबुद्धि नम्बरवार नहीं होते, पुरुषार्थ में नम्बरवार होते हैं। पक्के निश्चयबुद्धि की निशानी है कि उनकी बुद्धि सदैव निशान (आत्मा) की ओर होगी।" अ.बापदादा 8.5.69

"सेकण्ड में निश्चय बुद्धि रहे, सप्ताह कोर्स के बाद रहे वा और भी अधिक समय के बाद निश्चय बुद्धि बने। ... निश्चय और संशय की युद्ध चलते-चलते निश्चय बुद्धि बने। सेकण्ड का निश्चय अर्थात् नजर से निहाल। सेकण्ड नम्बर बोल से निहाल। ... चौथा नम्बर अभी अभी संशय अभी अभी निश्चय।" A.B.D. 21.12.78

"जो पक्के निश्चयबुद्धि बन जाते हैं, वे कोई की परवाह नहीं करते। बिल्कुल नष्टोमोहा हो जाते हैं। राजाई को भी ठोकर मार देंगे। भक्ति मार्ग में मीरा का मिसाल है।"

सा.बाबा 28.04.03 रिवा.

"निश्चय इस ब्राह्मण जीवन के सम्पन्नता का फाउण्डेशन है। अगर फाउण्डेशन मज़बूत है तो सहज और तीव्र गति से सम्पूर्णता तक पहुँचना निश्चित है।... स्वयं को आत्मा-स्वरूप में जानना, मानना और चलना तथा बाप को भी जो है, जैसा है, वैसे जानना - यह है यथार्थ निश्चय। ... पहले नम्बर का यथार्थ निश्चय नहीं, तो धीरे-धीरे जो शुरू की खुशी वा जोश है, उसमें अन्तर आ जाता है।" अ.बापदादा 4.12.95

"सदा निर्विघ्न स्थिति द्वारा सदा विजयी आत्मायें हैं। विजय निश्चित है - ऐसे निश्चयबुद्धि

निश्चयबुद्धि की परिभाषा एवं अर्थ

निश्चय अर्थात ज्ञान + चिन्तन + अनुभव (ज्ञान की सत्यता का) + धारणा अर्थात् निश्चय + कर्म = कर्मफल अर्थात् विजय = सदा सुख-शान्ति का अनुभव

इस पुरुषोत्तम संगम युग का समय सारे कल्प में सर्वश्रेष्ठ समय है और ये ब्राह्मण जीवन सर्वोत्तम जीवन है। संगम युग के यथार्थ ज्ञान, उसकी प्राप्तियाँ, उनकी उपयोगिता का अनुभव हो जाये, उस पर पूरा निश्चय हो जाये तो ये संगमयुगी जीवन अति महान और आनन्दमय अनुभव होगा और आत्मा कभी भी संगमयुगी जीवन से ऊबेगी नहीं परन्तु वाह्यमुखता और इन्द्रिय सुखों का आकर्षण इसमें बड़ी बाधा है, जो सतत पुरुषार्थ से ही दूर हो सकती है।

इस संगमयुग पर इस सर्वोत्तम ब्राह्मण जीवन में सच्चे सुख को प्राप्त करने के दो रास्ते हैं एक योग का और दूसरा ज्ञान का। वास्तव में रास्ता एक ही है ज्ञान-योग का और योग एवं ज्ञान इसके दो किनारे हैं। जो केवल भावना के आधार पर योग के किनारे का सहारा लेकर जीवन के लक्ष्य सुख-शान्ति को पाने का पुरुषार्थ करते हैं उनके जीवन में अन्धश्रृद्धा का निर्माण हो सकता है अर्थात् होने की सम्भावना है और कब-कब होती भी है। दूसरा किनारा ज्ञान का है। जो ज्ञान के किनारे का सहारा लेकर जीवन के अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने का पुरुषार्थ करते हैं, उनके जीवन में अहंकार के बीज अंकुरित हो सकते हैं और होते भी हैं। किसी विकट परिस्थिति में दोनों ही धोखा खा सकते हैं और विजयश्री अर्थात् सच्ची सुख-शान्ति से वंचित हो सकते हैं। अपने गन्तव्य तक सुगमता से पहुँचने के लिए अर्थात् इस ब्राह्मण जीवन के समरांगण में सच्ची विजयश्री को वरण करने के लिए ज्ञान-योग का संतुलित पथ ही सर्वश्रेष्ठ है। इसीलिए बाबा कहते हैं कि मुझे ज्ञानी तू आत्मा अति प्रिय है, उसका अर्थ ये नहीं कि थोथा ज्ञान हो परन्तु ज्ञान, योग से युक्त हो। इसका बड़ा सुन्दर उदाहरण महाभारत में युधिष्ठिर और अन्य पाण्डवों का है। विजय-माला तो सभी पाण्डवों के गले में पड़ी परन्तु अन्तिम लक्ष्य तक युधिष्ठिर ही पहुँचे क्योंकि उनके जीवन में न अन्धश्रृद्धा जाग्रत हुई और न ही अहंकार आया।

निश्चय और विजय के अनेक क्षेत्र हैं। परमात्मा पर निश्चय, ज्ञान के किसी बिन्दु पर निश्चय, पीर-पैगम्बर, स्थान, देवी-देवता, मन्दिर-मस्जिद पर निश्चय आदि आदि। जीवन के हर क्षेत्र में विजय प्राप्त करने के लिए निश्चय अति आवश्यक है। इन सभी पर निश्चय से मनुष्यों के संकल्प और कार्य की सफलता तो होती है परन्तु परमात्मा के अतिरिक्त अन्य सभी

से जो सफलता होती है, वह अल्पकालिक होती है और समयान्तर में आत्मा की उतरती कला का कारण अवश्य बनती है। एक परमात्मा और उसके द्वारा मिले ज्ञान के निश्चय से ही आत्मा की चढ़ती कला होती है और जो आध्यात्मिक सफलता का मूलाधार है। महाभारत में भी कहा है कि जहाँ श्रीकृष्ण हैं, वहीं विजय है।

सम्पूर्ण निश्चय (आत्मा, परमात्मा और ड्रामा) = सम्पूर्ण विजय (मन्सा-वाचा-कर्मणा) = कर्मातीत स्थिति (स्थूल वतन में देह और देह के बन्धन से कर्मातीत और सूक्ष्म वतन के सेवा के सम्बन्ध से भी कर्मातीत) = बिन्दुरूप या बीजरूप। जब तक हम पूर्ण कर्मातीत स्थिति को नहीं पा लेते, तब तक हमको अपनी विजय रूपी कसौटी पर निश्चय रूपी स्वर्ण को कसते रहना है अर्थात् चेक करते रहना है और चेक करके संशय रूपी खाद को निकालते हुए सच्चा सोना अर्थात् बाप समान बनना है।

जब निश्चय दृढ़ होता है तो उस कार्य में सफलता अवश्य मिलती है परन्तु यदि वह ज्ञान असत्य है तो सफलता अल्पकालिक होती है लेकिन जब ज्ञान सत्य होता है तो सफलता दीर्घकालिक होती है और आत्मा के उत्थान का कारण बनती है। मनुष्य को सदा तीन प्रकार की सफलता की इच्छा रहती है। एक - वर्तमान पुरुषार्थी जीवन की सफलता अर्थात् सदा जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव हो, इस जीवन में कोई भी प्रकार से दुख की अनुभूति न हो, सेकेण्ड में जहाँ चाहें, जैसे चाहें, जब चाहें वैसी स्थिति में स्थित हो जायें, कर्मेन्द्रियों पर विजय हो, इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति हो, सदा प्राप्ति स्वरूप अर्थात् सम्पन्नता का अनुभव हो, मृत्यु-भय से सदा मुक्त हों। दूसरा, अन्तिम समय की सफलता अर्थात् मृत्यु-दुख से मुक्त और परमात्मा की याद में इस नश्वर देह का त्याग सहज और स्वेच्छा से करें। तीसरी है, भविष्य अर्थात् अगले जन्म की सफलता अर्थात् भविष्य में सुख-शान्तिमय जीवन के लिए आश्वस्त हों। जो व्यक्ति तीनों प्रकार की सफलताओं के प्रति आश्वस्त होगा, वह सदा ही निश्चिन्त, निर्संकल्प, निर्भय होगा और सदा ही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेगा। बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है, यदि उसका यथार्थ अनुभव है, उसमें हमारा दृढ़ निश्चय है और उस अनुसार हमारा जीवन और कर्म हैं तो हम सदा ही इन तीनों ही सफलताओं को अनुभव करते हैं, उनके प्रति आश्वस्त रहते हैं और जीवन में सदा सुख-शान्ति का अनुभव करते हैं।

चौथे प्रकार की सफलता है भूतकाल की सफलता अर्थात् भूतकाल के विषय में कोई पश्चाताप न रहे। अभी हमको बाबा मिला, बाबा ने ड्रामा का यथार्थ ज्ञान देकर भूतकाल के पश्चाताप या चिन्तन से भी मुक्त कर बाबा ने अभी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराया है, ये भूतकाल के जीवन की सफलता है। बाबा कहते भी हैं कि भक्ति के फल स्वरूप ही भगवान

तुम बच्चों को मिला है।

"परन्तु किसको निश्चय बैठना ही बड़ा मुश्किल है। निश्चय पूरा बैठ जाये तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। ... यह दोनों हैं इकट्ठे। परन्तु तुमको निश्चय रखना है कि शिवबाबा समझाते हैं।"

सा.बाबा 13.1.2001 रिवा.

"चैक करो - सफलता स्वरूप कहाँ तक बने हैं? अगर सफलता में परसेन्टेज है तो उसका कारण निश्चय में भी परसेन्टेज है। निश्चय सिर्फ बाप में है, यह तो बहुत अच्छा है लेकिन निश्चयबुद्धि अर्थात् बाप में निश्चय, स्व में निश्चय, ड्रामा में निश्चय और साथ-साथ परिवार में निश्चय। इन चारो निश्चय के आधार से सफलता सहज और स्वत: है।"

अ.बापदादा 14.11.02

"ब्राह्मण जीवन में सिर्फ जानना नहीं है कि "मैं यह हूँ और बाप यह है", लेकिन जानने का अर्थ है जो जानते हैं, वह मानना और चलना। ... निश्चयबुद्धि विजयी ... चारो प्रकार का निश्चय अर्थात् बाप में, आप में, ड्रामा में और ब्राह्मण परिवार में निश्चय।"

अ.बापदादा 9.1.95

"ऐसे निश्चयबुद्धि की विजय भी इतनी ही निश्चित है, हार असम्भव है। ये भी निश्चित है कि बातें भी अन्त तक आनी हैं लेकिन उसमें विजयी बनने के लिए एक ही समय पर चारो ही तरफ का निश्चय पक्का चाहिए। ... माला कब बनती है, जब दाना, दाने से मिलता है। ... इसलिए ब्राह्मण परिवार में हर परिस्थिति में निश्चयबुद्धि, तब राज्य-भाग्य में भी सदा राज्य अधिकारी होंगे।"

अ.बापदादा 9.1.95

निश्चय का आधार और प्रमाण

किसी बात की सत्यता को निश्चय करने के लिए उसका आधार अति आवश्यक है, जिससे उसकी सत्यता सिद्ध हो। इसके लिए या तो वह बात बुद्धि गम्य हो या उसकी सत्यता प्रमाणित हो, तब ही उसके विषय में निश्चय दृढ़ होता है। आध्यात्म मार्ग में चार प्रकार के प्रमाण बताये गये हैं। प्रथम प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थात् प्रत्यक्ष में किसी बात को देखकर उस की सत्यता को स्वीकार करना और उस पर निश्चय करना, दूसरा है अनुभव प्रमाण अर्थात् किसी बात के विषय में अनुभव करके उसको मानना जैसे पानी की मिठास को चखकर उसमें चीनी है उसको मानना, निश्चय करना। तीसरा अनुमान प्रमाण अर्थात् अनुमान के आधार पर मानना, निश्चय करना जैसे धुयें को देखकर आग की विद्यता का निश्चय करना और चौथा है कही, सुनी या लिखी हुई बात के आधार पर किसी बात की सत्यता को मानना और निश्चय करना।

बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है, उनमें अनेक बातें तो हम प्रत्यक्ष में देखते हैं और बाबा ने प्रत्यक्ष में दिखाया है, कुछ का अनुभव करते हैं, कुछ को अनुमान के आधार पर मानते हैं और कुछ की सत्यता को बाबा ने कहा है, इसलिए सत्य मानते हैं क्योंकि बाबा के द्वारा कही हुई सभी बातें हमको प्रत्यक्ष में सत्य देखने में आई हैं, अनुभव में आई हैं तो जो बातें अभी तक हम अनुभव नहीं भी कर रहे हैं या जो भविष्य में होने वाली हैं, वे भी अवश्य ही सत्य होंगी, ऐसा हम सभी निश्चय करते हैं।

कहा गया है प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है और अनुभव को भी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है क्योंकि जिस बात का अनुभव कर लिया, वह तो हमारे लिए स्वत: सिद्ध हो गई। वास्तव में प्रत्यक्ष और अनुभव के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। प्रमाण की आवश्यकता अनुमान और कही-सुनी-लिखी हुई बात की सत्यता को जानने और निश्चय के लिए ही होती है। जैसा मनुष्य का निश्चय होता है, वैसे कर्म अवश्य होते हैं।

बाबा ने कहा है प्रत्यक्ष प्रमाण सबसे श्रेष्ठ प्रमाण है। तुम बच्चों को देखकर लोगों को ज्ञान की महानता का अनुभव होना चाहिए। तुमको देखकर, लोगों को अनुभव हो कि इनको पढ़ाने वाला, बनाने वाला परमपिता परमात्मा है। तुम्हारे जीवन से परमात्मा के गुण और कर्तव्य दिखाई दें, उनका अनुभव हो। हर ब्राह्मण के जीवन में ये चारो ही प्रकार की बातों के आधार पर अनेक प्रकार के निश्चय संचित रहते हैं। शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा ने हमको ज्ञान देकर, अपने सानिध्य से अनेक प्रकार के अनुभव कराये हैं, जिनसे हमको उनके प्रति निश्चय दृढ़ हुआ है अर्थात् ज्ञान और परमात्मा के प्रति श्रृद्धा-भावना जाग्रत होती है। बाबा ने तो सबको ही ये अनुभव कराया है परन्तु उसको जीवन में धारण करके सदा जाग्रत रखना हर आत्मा का अपना कार्य है, जिसमें सभी नम्बरवार हैं।

जीवन में सच्चे सुख को प्राप्त करने और उसको स्थाई रखने के लिए हर ब्राह्मण आत्मा का ये परम कर्तव्य है कि ज्ञान के विभिन्न बिन्दुओं का मनन-चिन्तन करके, उसके तथ्यों (Facts Figures, Cause Effect) का अनुभव करे। जब अनुभव होगा तब ही उस पर निश्चय होगा और जब निश्चय होगा तब वे तथ्य जीवन में प्रभावी होंगे अर्थात् कर्म में आयेंगे और जब कर्म में आयेंगे तब ही उनका फल कर्म-फल अर्थात् विजय के रूप में सुख प्राप्त होगा अर्थात् अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होगा।

किसी भी कठिन परीक्षा की परिस्थिति में क्या करना है या क्या कहना है, उसके विषय में सोचने, चिन्तन करने से सफलता नहीं होगी परन्तु यदि उस समय हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे, हमको परमात्मा की याद होगी, उस पर विश्वास होगा तो सफलता

अवश्य मिलेगी क्योंकि ड्रामा निश्चित है और परमात्मा बुद्धिमानों की बुद्धि है, सर्वशक्तिवान है, जब वह हमारे साथ है तो हमारी सफलता निश्चित है - ये दृढ़ निश्चय है तो विजय निश्चित है। इसमें अंशमात्र भी संशय नहीं है और न होना चाहिए।

"जैसे ब्रह्मा बाप को देखा ... ऐसे बच्चों में भी सम्पूर्णता के समीप आने की निशानी स्वयं भी समीपता का अनुभव करेंगे और औरों को भी अनुभव होगा। व्यक्त में होते अव्यक्त रूप की अनुभूति करेंगे, जिससे सामने आने वाली आत्मायें व्यक्त भाव को भूल कर अव्यक्त स्थिति का अनुभव करेंगी। यह है समीपता की निशानी।"

अ.बापदादा 18.11.81

"अभी अपने फीचर्स द्वारा सभी को फ्युचर का साक्षात्कार कराओ। सुना, क्या करना है। अच्छा।" अ.बापदादा 18.1.2002

"किसी बात को स्पष्ट करने के लिए अनेक प्रकार के प्रमाण दिये जाते हैं लेकिन सभी प्रमाण में श्रेष्ठ प्रमाण "प्रत्यक्ष प्रमाण" ही है। तो ऐसे बने हो, जो कोई भी देखे तो अनुभव करे कि इन्हें पढ़ाने वाला वा बनाने वाला सर्वशक्तिवान बाप है।"

अ.बापदादा 14.4.77

"यहाँ भी बाबा ने 15 दिन का प्रोग्राम दिया था ढोढा और छाछ खाने का। और कुछ भी नहीं बनता था। बीमार आदि सबके लिए यही बनता था। किसको कुछ भी हुआ नहीं, और ही बीमार बच्चे भी तन्दुरुस्त हो गये। देखते थे आसक्ति टूटी हुई है! यह नहीं होना चाहिए या यह होना चाहिए। चाहना को चुहरा कहा जाता है। यहाँ तो बाप कहते हैं - मांगने से मरना भला। बाप ही जानते हैं - बच्चों को क्या देना है। जो कुछ देना होगा, वह खुद ही देंगे। यह सब ड्रामा बना हुआ है।"

सा.बाबा 8.5.04 रिवा.

निश्चय का जीवन में महत्व

निश्चयबुद्धि विजयन्ति गाया हुआ है। निश्चय जीवन के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है अर्थात् निश्चय के आधार पर हर कार्य में सफलता मिलती है। ज्ञान मार्ग और दुनिया में भी निश्चय के आधार पर अनेकानेक साहसी पुरुषों ने असम्भव कार्य भी सम्भव करके दिखाये हैं। निश्चय के आधार पर ही "परमात्मा सर्वव्यापी है", की मान्यता 1500 वर्षों से विश्व में राज्य कर रही है और आज भी मनुष्यों के दिलों में घर किये हुए है, जिसको काटना ज्ञानी आत्माओं

के लिए भी कठिन होता है। बाबा ने भी निश्चय के लिए अनेक प्रकार से महावाक्य उच्चारण किये हैं।

"निश्चय और विजय - ये एक-दो के पक्के साथी हैं। ... निश्चयबुद्धि की कभी हार हो नहीं सकती। निश्चयबुद्धि औरों को भी हार से छुड़ाने वाले हैं। ... विजय का फाउण्डेशन है निश्चय। ... फाउण्डेशन पक्का होगा तो निर्भय होंगे। ... मायाजीत बनने का अर्थ ही है निश्चयबुद्धि विजयी।"

अ.बापदादा 21.12.89 पार्टी 3

"सिर्फ बाप में निश्चय नहीं। अपने आप में भी निश्चय और ड्रामा में भी निश्चय। अगर ड्रामा में निश्चय होगा तो अकल्याण की बात भी कल्याण में बदल जायेगी। ... बाप, आप और ड्रामा तीनों निश्चय साथ-साथ रहें। कभी संकल्प में भी कोई हिला न सके। अंगद बन जाओ।"

अ.बापदादा 21.12.89 पार्टी 3

"ये सभी जानते हो कि वर्तमान श्रेष्ठ जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय। जितना निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है, उतना ही आदि से अब तक सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि सदा नेचुरल रूप में अनुभव होती है।"

अ.बापदादा 9.1.95

"यह भी बाबा बतलाते हैं कि जिन्होंने गृहस्थ छोड़ा है, बच्चे बनें हैं, वे भी इतना याद नहीं करते हैं। घर में रहने वाले और ही जास्ती याद करते हैं। अर्जुन और भील का भी मिसाल है ना। मेहनत है बाप को याद करना और चक्र को समझना।"

सा.बाबा 3.8.06 रिवा.

बाबा से मिले 9 ज्ञान रत्न

"ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन ज्ञान रतनों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर वे रत्न समझ अंगूठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रतनों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।" सा.बाबा 10.1.69

"बच्चे जब (मुरली) सुनते हैं तो अपने को आत्मा निश्चय कर बैठें और यह निश्चय करें कि बाप परमात्मा हमको सुना रहे हैं। यह डायरेक्शन अथवा मत एक ही बाप देते हैं, उसको श्रीमत कहा जाता है।" सा.बाबा 6.7.2000 रिवा.

जो इस सत्य को अनुभव करता, निश्चय करता और धारण करता है कि ये मुरली अनन्त ज्ञान रत्नों की खान है, सर्व समस्याओं का हल देने वाली है और ब्राह्मण जीवन का आधार है, वह कब मुरली को मिस नहीं करेगा और उसको ये मुरली जीवन में सर्व सफलतायें प्रदान करेगी। बाबा ने तो हमको ज्ञान रतनों की खान दी है, उनमें से एक ज्ञान रतन की भी यथार्थ धारणा है, स्मृति है तो कोई भी ग्रहचारी आ नहीं सकती और यदि आ भी गई है तो स्मृति आते ही समाप्त हो जायेगी। ये अटल सत्य है।

बाबा कहता है तुम शिवबाबा की याद में दिल्ली तक चले जाओ लेकिन थकावट नहीं होगी। इसका एक जाग्रत उदाहरण है। आदरणीय गुल्जार दादी के तन में बीमारी होते भी बाबा ने 16-18 घण्टे तक उस तन से सेवा करके दिखाया और उतने समय तक दैनिक एवं दैहिक विभिन्न आवश्यक क्रियायें भी शान्त रहीं। आदरणीय दादी जी इतनी आयु होते भी कितनी अथक सेवा कर रही हैं!

"परमात्मा को बीज कहा जाता है। वह सारे झाड़ की नॉलेज देता है। परमात्मा को ज्ञान सागर कहते हैं ना। ज्ञान सागर है, तब ही पतित-पावन है। लिखते हो तो बड़ी समझ से लिखना चाहिए। पहले पतित-पावन कहें वा ज्ञान सागर कहें? जरूर ज्ञान है, तब तो पतित को पावन बनायेगा। तो पहले ज्ञान सागर, पीछे पतित-पावन लिखना चाहिए।"

सा.बाबा 13.10.72 रिवा.

बाबा ज्ञान का सागर है और बाबा की मुरली अनन्त अमूल्य रत्नों की खान है, उनमें से मुख्य 9 रत्नों को चुनकर यहाँ वर्णन करते हैं, जो जीवन में परम उपयोगी हैं और ब्राह्मण जीवन की सफलता या विजय का मूलाधार हैं, जिन पर पक्का निश्चय हो तो इस ब्राह्मण जीवन का पुरुषार्थ सदा तीव्र रहे और पुरुषार्थ की सफलता भी निश्चित है।

1. आत्मा का ज्ञान
2. परमात्मा का ज्ञान
3. विश्व-नाटक का ज्ञान
4. सृष्टि-चक्र का ज्ञान
5. त्रिलोक का ज्ञान
6. कल्प वृक्ष का ज्ञान
7. कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान
8. योग का यथार्थ ज्ञान और अनुभव
9. पवित्रता का ज्ञान और महत्व

परमात्मा ज्ञान का सागर है, ज्ञान रतनों की खान है। बाबा की मुरली ज्ञान रत्नों की खान है, उससे जितने भी रत्न हम ले सकें, कम हैं। इनमें से कुछ का वर्णन ऊपर किया और उनका कुछ विस्तार से वर्णन यहाँ करेंगे, जिन पर हमारे जीवन की सफलता का मुख्य आधार है। इसके अतिरिक्त अनेक ज्ञान-रत्न, ज्ञान-सागर बाप के द्वारा हमको मिले हुए हैं, जिन ज्ञान रत्नों का वर्णन II एवं III अध्याय में करेंगे, जो उन पर निश्चय करके, जीवन में अपनायेगा, उस अनुसार कर्म करेगा, उसकी सफलता निश्चित होगी। होगी या नहीं होगी, इसका प्रश्न ही नहीं है। यह भी एक संशय है। यह अटल सत्य है कि बाप सत्य है, उसका हर महावाक्य सत्य है, भले ही हम अपनी अल्पज्ञ बुद्धि से उसको समझ पायें या न समझ पायें परन्तु समय आयेगा जब हम उसकी सत्यता को अनुभव अवश्य करेंगे।

सत्य बाप के द्वारा जो भी ज्ञान रतन मिले हैं, वे सत्य हैं। जिनको उन ज्ञान रतनों के विषय में उसके गुण-धर्मों के विषय में यथार्थ ज्ञान होगा, उनका अनुभव होगा और उन पर निश्चय होगा तो उससे प्राप्त होने वाली प्राप्तियों की अनुभूति अवश्य होगी अर्थात् विजय का अनुभव अवश्य होगा अर्थात् उनसे जो प्राप्ति की अनुभूति होगी, जिससे वह जीवन में सन्तुष्टता और सुख-शान्ति का अनुभव करेगा।

इन ज्ञान रत्नों का ज्ञान जितना ही हमारी बुद्धि में स्पष्ट होगा, धारणा उतनी ही सहज होगी और जितनी धारणा होगी, उतनी ही कर्मों में श्रेष्ठता आयेगी और जितना ही कर्म श्रेष्ठ होगा तो कर्म-फल भी अवश्य ही श्रेष्ठ होगा। जितना श्रेष्ठ कर्म-फल का खाता जमा होगा, उतना ही वह व्यक्ति स्वयं को निर्संकल्प, निर्भय, निश्चिन्त अनुभव करेगा। दृढ़ निश्चय और धारणा वाला ही निर्भय होकर ये ज्ञान दूसरों को भी सुना सकेगा और प्रभावित कर सकेगा, उनकी सत्यता का अनुभव करा सकेगा।

बाबा के द्वारा दिये गये ज्ञान रत्नों की यादगार में ही स्थूल रतनों का भक्ति मार्ग में गायन है और स्थूल रतनों के भिन्न-भिन्न नाम रखे हैं, जिनको मनुष्य ग्रहचारी के निराकारण के लिए भिन्न-भिन्न रूप से प्रयोग करते हैं।

"9 रत्नों को भिन्न-भिन्न विघ्न-विनाशक रत्न गाया जाता है। जैसा विघ्न वैसी विशेषता वाला रतन रिंग बनाकर पहनते हैं वा लॉकेट में डालते हैं वा किसी भी रूप से उस रत्न को घर में रखते हैं। ... नम्बरवार होते हुए भी अमूल्य और विघ्न-विनाशक सभी हैं। आज भी श्रेष्ठ स्वरूप से आप रत्नों का आत्मायें स्वमान रखती हैं।"

अ.बापदादा 2.3.85

१. आत्मा का ज्ञान

परमात्मा पिता ने हम आत्माओं को आत्मा के नाम-रूप-धाम-गुण-कर्तव्य और शक्तियों के विषय में विस्तार से ज्ञान दिया है और आत्म-कल्याण के लिए मार्ग-प्रदर्शन किया है। उन सब का यथार्थ ज्ञान हो, निश्चय हो और उनकी जीवन में धारणा हो, तो जीवन सदा परमानन्दमय अनुभव हो।

आत्मा परमात्मा की वंशधर है, इसलिए आत्मा में परमात्मा के समान ही ज्ञान, गुण, शक्तियां नीहित हैं अर्थात परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है और आत्मा भी सच्चिदानन्द स्वरूप है। परन्तु यथार्थ ज्ञान की अनुपस्थिति में वे ज्ञान, गुण, शक्तियां लोप हो गई हैं परन्तु जब परमात्मा पुन: स्मृति दिलाते हैं तो वे सब पुन: जाग्रत हो जाती हैं। इसलिए कभी भी आत्मा को अपने में संशयबुद्धि नहीं होना चाहिए। जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है तो वे ज्ञान, गुण, शक्तियां आत्मा को स्वयं भी अनुभव में आती हैं और वे वातावरण में भी प्रवाहित होती हैं।

आत्मा मन-बुद्धि-संस्कारों सहित एक चैतन्य सत्ता है। मन-बुद्धि आत्मा से अलग कोई चीज नहीं हैं। मन-बुद्धि आत्मा की कार्य-शक्तियाँ हैं अथवा आत्मा को ही उसके कार्य के अनुसार मन या बुद्धि के रूप से जाना जाता है। आत्मा अजर-अमर-अविनाशी है। सभी आत्मायें परमधाम की रहने वाली हैं और इस विश्व-नाटक में पार्टधारी हैं। हर आत्मा अपने मूल रूप में पवित्र है और बाप समान गुणों और शक्तियों से परिपूर्ण है परन्तु आत्मायें गर्भ से देह धारण करने के कारण देहाभिमान के वश होकर अपवित्र, गुणों और शक्तियों से हीन हो जाती हैं, तब परमपिता परमात्मा आकर आत्माओं को इस सत्यता की अनुभूति कराते हैं, जिसको अनुभव करके आत्मा उस स्वरूप को पुन: प्राप्त कर लेती है।

जब हमको ये निश्चय हो जाता है कि हम ही देवता थे और फिर से देवता अवश्य बनेंगे, तो हमारा पुरुषार्थ, कार्य-व्यवहार उस अनुरूप स्वत: हो जायेगा और हमारी धारणायें भी उस अनुरूप अवश्य हो जायेंगी।

आत्मा एक ज्योति बिन्दु है। जब आत्मा अपने यथार्थ स्वरूप को पहचान लेता है, उस पर निश्चय हो जाता है तो वह सहज ही संकल्प करते ही अपने बिन्दुरूप स्वरूप में स्थित हो जायेगा क्योंकि जैसा निश्चय होता है, उस अनुसार कर्म अवश्य होता है। जिनको स्वयं पर, परमात्मा पर और ड्रामा पर शत प्रतिशत निश्चय होगा वे संकल्प करते ही बिन्दु रूप में स्थित हो जायेंगे।

निश्चय होगा कि हम सभी आत्मायें परमधाम की रहने वाली हैं और इस विश्व-नाटक में पार्टधारी हैं। यहाँ अपना-पराया, शत्रु-मित्र कोई नहीं है। अपने-पराये, मित्र-शत्रु का भेद तो पार्ट मात्र हैं। यथार्थ में तो हम सब एक परमपिता परमात्मा की सन्तान भाई-भाई हैं, तो पार्ट बजाते भी हमारा सबके साथ प्रेम भाव अवश्य होगा। सत्यता तो ये है कि जीवात्मा आपही अपना मित्र है और आपही अपना शत्रु है अर्थात् आत्मा अपने सुख-दुख का कारण स्वयं ही है। दूसरा कोई मित्र-शत्रु नहीं है। दूसरे तो पार्ट अनुसार केवल निमित्त मात्र मित्र-शत्रु बनते हैं।

निश्चय होगा कि ये ब्राह्मण जीवन महान है, महान कर्मों को करने के लिए मिला है, इस पर ही सारे कल्प के जीवन का आधार है तो धारणा स्वत: ही महान हो जायेगी और महानता का निश्चय महान कर्म के लिए स्वत: प्रेरित करता है। जब कर्म श्रेष्ठ होगा तो प्राप्ति भी श्रेष्ठ अवश्य होगी क्योंकि इस कर्मक्षेत्र पर कोई भी कर्म निष्फल नहीं होता। अच्छे कर्म का अच्छा फल और बुरे कर्म का बुरा फल हर आत्मा को अवश्य ही मिलेगा। ये कर्म का अटल विधान है।

जब देह की नश्वरता और आत्मा की अविनाश्यता का यथार्थ ज्ञान और अनुभव होगा तब ही आत्मिक स्वरूप का निश्चय होगा और आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे, जिससे देह से ममत्व स्वत: ही मिटेगा। जब देह से ममत्व मिट जायेगा तो देह की दुनिया से भी ममत्व मिट जायेगा और जब देह और देह की दुनिया से ममत्व मिट गया तो आत्मा को परमात्मा की याद स्वत: आयेगी, आत्मा का परमात्मा से निरन्तर मिलन होगा और परमात्म-प्राप्तियों का निरन्तर अनुभव होगा अर्थात् आत्मा सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलेगी और आत्मा को घर जाने की खुशी होगी, जिससे आत्मा का मृत्यु-भय मिट जायेगा। आत्मा सदा स्वयं को निर्भय-निश्चिन्त अनुभव करेगी।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को कृत्य का संकल्प स्वत: आता है और उसकी

शुभ में रुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा में विकार का संकल्प भी नहीं आ सकता, उसमें ब्रह्मचर्य की धारणा स्वत: होगी।

"हम विजयी होंगे या नहीं होंगे - ये संकल्प उठना भी संशय बुद्धि बनना है। वे माया को कैसे जीत सकेंगे ? ये संकल्प आना भी संशय बुद्धि है। हम कल्प-कल्प के विजयी हैं, सर्वशक्तिवान बाप हमारा साथी-सहयोगी है तो विजय हमारी निश्चित है।"

सा.बाबा 30.6.2000 रिवा.

"जो कहते हैं माया तो बड़ी जबरदस्त है, हम कैसे चल सकेंगे। अगर ऐसा सोचा तो माया एकदम कच्चा खा लेगी। गज को ग्राह ने खाया, यह अभी की बात है ना। ... अभी तुम्हारी चढ़ती कला होती है।"

सा.बाबा 30.6.2000 रिवा.

जब ये निश्चय और अभ्यास होगा कि हम ज्योतिबिन्दु आत्मा हैं, शरीर नहीं तब ही परमात्मा याद स्वत: आयेगी और अन्य आत्मायें भी आत्मा रूप में दिखाई देंगी, जिससे आत्मा मायाजीत बनेंगी और जीवन में सच्ची सफलता का अर्थात् सुख-शान्ति का अनुभव होगा।

हर आत्मा अपने मूल स्वरूप में पवित्र है और परमात्मा की प्रिय सन्तान हैं। सभी आत्मायें परमात्मा को अति प्रिय हैं। जब आत्मा को इस सत्य का निश्चय होगा, तब ही वह परमात्मा को याद कर परमात्म-प्यार का अनुभव कर सकेगी।

सच्चे निश्चयबुद्धि आत्मा को जीवन में सब प्रकार की विजय का अनुभव होगा। उसको भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य तीनों कालों में सफलता का अनुभव होगा।

ऐसे स्वयं में निश्चय वाला एक सेकण्ड में संकल्प करते ही देह से न्यारा अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जायेगा। वह सदा मृत्यु-भय से मुक्त, हर संकल्प, हर कर्म में अपने को विजयी अनुभव करेगा, जिससे वह सदा ही सन्तुष्टता का अनुभव करेगा और सदा खुशी में रहेगा। ये है वर्तमान में विजय।

अन्त में एक बाप की याद रहे, मृत्यु का दुख अनुभव न हो। यह है अन्तिम विजय।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा अपने भविष्य में श्रेष्ठ पद प्राप्त होने के विषय में भी सदा आश्वस्त होगी, जिससे भविष्य के विषय में भी उसको कोई चिन्ता नहीं होगी। यह है भविष्य की विजय।

मनुष्य को अपने भूतकाल में किये गये विकर्म भी कर्मभोग या पश्चाताप के रूप में सामने आते हैं और आत्मा को दुखी करते रहते हैं परन्तु ड्रामा के यथार्थ ज्ञान की धारणा और श्रेष्ठ कर्म में प्रवृत्त आत्मा इस पश्चाताप से भी मुक्त रहती है, भल कर्म भोग आता है परन्तु

पश्चाताप करके आत्मा दुखी न हो। ये है आत्मा की भूतकाल पर विजय।
सेवा में विजय - जो आत्मायें आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर निश्चयबुद्धि होकर सेवा करते हैं, उनकी सेवा की सफलता निश्चित होती है और उनको सदा ही सेवा से सन्तुष्टि और खुशी की अनुभूति होती है। सच्चे पुरुषार्थी ज्ञानी तू आत्मा को आत्म-निश्चय में स्थित होने से ये सभी प्रकार की विजयों का अर्थात् सफलताओं का अनुभव होगा और वह अपने जीवन को धन्य-धन्य अनुभव करेगा। वह जीवन किसी प्रकार की अप्राप्ति की अनुभूति नहीं करेगा अर्थात् उसको किसी और प्राप्ति की इच्छा नहीं होगी। उसकी इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति होगी। परमात्मा ने आत्मा के विषय में जो महावाक्य उच्चारे, जो वरदान दिये, जिन उपाधियों से सम्बोधित किया वे केवल आश्वासन मात्र या केवल उत्साहित करने के लिए नहीं हैं बल्कि शत प्रतिशत सत्य हैं भले अभी हम उनको उस रूप में अनुभव न भी कर रहे हों परन्तु समय आयेगा जब हम उनकी सत्यता को अनुभव करेंगे।
"बिन्दु को जाना तो सब कुछ जाना। सब कुछ पाया। बिन्दु रूप में स्थित हो जो संकल्प करो, जो भावना रखो, जो बोल बोलो, जो कर्म करो, जैसे बिन्दु महान है वैसे सर्व बातें महान हो जाती हैं अर्थात् स्वत: श्रेष्ठ हो जाती हैं।" अव्यक्त बापदादा 11.11.81
"बिन्दु शब्द ही कमाल का शब्द है। ... बिन्दु की ताली प्रकृति भी सुनेगी, सर्व कर्मेन्द्रियाँ भी सुनेंगी और सर्व साथी भी सुनेंगे।" अव्यक्त बापदादा 11.11.81
"कभी-कभी यह भी संकल्प उत्पन्न होता है कि बनना तो चाहिए लेकिन बन सकूँगी ? स्वयं के प्रति जरा सा व्यर्थ संकल्प के रूप में शक पैदा होगा, जिसको कहा जाता है "संशय का रॉयल रूप"। शक जरा सा लहर के माफिक भी आया तो गया, लेकिन उसका भी प्रभाव होता है। गायन है - निश्चय बुद्धि विजयन्ति।" अव्यक्त बापदादा 18.11.81
"जो हिम्मत वाले होंगे, वे डरेंगे नहीं कि सर्विस छूट जायेगी। पहले ज्ञान की पढ़ाई पढ़ेंगे। जो सच्चे दिल वाले होंगे, उनकी सर्विस कब छूटेगी नहीं।"

सा.बाबा 3.7.69 रिवा.

B. *निश्चय बुद्धि और आत्मा की चढ़ती कला*

आत्म-निश्चय से आत्मा की शक्ति संचित रहती है और धीरे2 आत्मा की उतरती कला होती है परन्तु किसी आत्मा की केवल आत्म-निश्चय से चढ़ती कला नहीं हो सकती है, चढ़ती कला के लिए तो यथार्थ ज्ञान और सर्वशक्तिवान परमात्मा की याद चाहिए।

सतयुग-त्रेता युग में आत्मा को आत्म-निश्चय तो होता है परन्तु यथार्थ ज्ञान और परमात्मा की याद न होने के कारण आत्मा की कलायें धीरे-धीरे उतरती जाती हैं। द्वापर से

आत्मा की शक्ति की कलायें गिरने के कारण आत्म-निश्चय में भी कमी हो जाती है, जिससे आत्मा पर देहाभिमान प्रभावी हो जाता है और आत्मा भ्रमित होकर निश्चय-संशय के झूले में झूलने लगती है, जिससे गिरती कला भी तीव्रता से होती है। किसी भी बात के निर्णय में आत्मा अपनी तरफ खींचती और देहाभिमान अपनी तरफ खीचता है, जिससे आत्मा संकल्प-विकल्पों के जाल में फंस जाती है, जिससे आत्मा की आत्मिक शक्ति का तीव्रता से ह्रास होता है अर्थात् आत्मा की कलायें तीव्रता से गिरती जाती हैं।

संगम पर आत्मा को परमात्मा के द्वारा यथार्थ ज्ञान मिलने पर आत्मा आत्मा-निश्चय के साथ परमात्म-निश्चय में स्थित होने से ही आत्मा की चढ़ती कला होती है और आत्मा को सच्ची विजय अर्थात् सच्चे सुख की अनुभूति होती है।

जिसको ये निश्चय होगा कि हम आत्मा हैं और सभी आत्मायें हमारे भाई हैं, उसके दिल में सर्व आत्माओं के लिए प्रेम अवश्य जाग्रत होगा और जब हमारा उनके साथ प्रेम होगा तो उनका भी हमारे प्रति अवश्य प्रेम होगा। प्रेम आत्मा की मूलभूत प्यास है और विश्व एकता का आधार है।

C. अन्य योनियों की आत्मायें और उनका मानव-आत्माओं से सम्बन्ध

भारतीय सभ्यता की ये विशालता है कि उसमें मनुष्यात्माओं के साथ विभिन्न योनि की आत्माओं को भी महत्व दिया गया है और सभी योनि की आत्माओं के प्रति श्रृद्धा-भाव अपनाया गया है तथा सभी प्राणियों के प्रति दया-भाव प्रदर्शित किया है। इस कारण भारत में 84 लाख योनियों की बात कही गई है। परन्तु ब्राह्मण परिवार के कुछ लोगों का ऐसा निश्चय या मान्यता है कि अन्य योनि के प्राणियों में मनुष्यात्मा जैसी मन-बुद्धि-संस्कारों सहित आत्मायें नहीं हैं अर्थात् उनमें आत्मिक गुण नहीं हैं, जिसके कारण कभी-कभी उनका व्यवहार भी उनके प्रति निर्दयता का हो जाता है। परन्तु बाबा के महावाक्यों को देखें तो उनमें कहाँ भी ये नहीं कहा गया है कि अन्य योनि की आत्मायें, आत्मायें नहीं हैं, उनमें चेतनता नहीं है और उनके अन्दर आत्मिक गुण अर्थात् मन-बुद्धि-संस्कार नहीं हैं, भले बाबा ने कहा है कि तुम उनकी चिन्ता मत करो, तुम बाप को यादकर अपनी आत्मा को पावन बनाने का पुरुषार्थ करो। बाबा ने तो मुरली में ये भी कहा है कि जैसे तुम्हारी आत्मा है वैसे ही मच्छर में भी आत्मा है, छोटी-बड़ी नहीं है। बाबा के ये महावाक्य सिद्ध करते हैं कि उनमें भी आत्मा है।

जब हम आत्मा के विषय में निश्चय करते हैं तो हमको ये भी ध्यान रखना अति आवश्यक है कि अन्य आत्मायें भले वे किसी भी योनि की आत्मायें हों, सबके प्रति भी हमारी

रहम की भावना रहे। इसके लिए वास्तविकता तो ये है कि जिनके अन्दर मन-बुद्धि-संस्कार है वे सभी आत्मायें हैं और हमारे समान ही सुख-दुख का अनुभव करती हैं। हर योनि की आत्मा कर्म करती है और कर्मो अनुसार सुखी-दुखी होती है तथा समय पर मुक्ति-जीवनमुक्ति पाती है क्योंकि परमात्मा जड़ तत्वों सहित सभी को पावन करता है। वे सभी आत्मायें हैं और सभी योनि की आत्मायें विनाश के बाद परमधाम जायेंगी, भले उनका सेक्शन अलग होगा।

मनुष्यात्माओं का अन्य योनि की आत्माओं के प्रति जैसा व्यवहार होता है, उसका फल भी उस अनुसार उसको अवश्य भोगना पड़ता है। भले ही बाबा ने अन्य योनि की आत्माओं के विषय में कुछ अधिक नहीं कहा है क्योंकि बाबा जानता है कि मनुष्य संसार का सबसे चिन्तनशील प्राणी है और उत्थान और पतन में मनुष्य का सबसे अधिक हाथ है, उसके ऊपर सभी जड़-जंगम और चेतन का आधार है। उसके चिन्तन से जो वायब्रेशन पैदा होता है, वह जड़-जंगम-चेतन तीनों को प्रभावित करता है। जब मनुष्यात्मायें पावन हो जायेंगी तो उनका व्यवहार सभी आत्माओं के प्रति स्वत: शुद्ध हो जायेगा, उससे जो शुद्ध वायब्रेशन पैदा होगा वह जड़-जंगम दोनों को ही पावन बनायेगा।

"ऐसे थोड़ेही बच्चों पर दया कर देंगे। गरीब तो चीटियां भी हैं, फिर उनको डारा (दुख) न दो। जान तो उनमें भी है ना।" सा.बाबा 22.11.73 रिवाइज

आत्मा का पुनर्जन्म और योनि परिवर्तन - लिंग परिवर्तन

हर योनि की आत्मा अपनी योनि में ही अपने कर्मों के अनुसार सुख-दुख भोगती है। मनुष्यात्मा 84 लाख योनियों या पशु योनियों में पुनर्जन्म नहीं लेती है। बाबा के द्वारा दिये हुए ज्ञान के अनुसारैं लिंग परिवर्तन हो सकता है परन्तु बहुत कम होता है। पुनर्जन्म के विषय में प्राप्त जानकारी के अनुसार लिंग परिवर्तन का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिलता है, देखने में नहीं आता है।

अमेरिका का एडगर केसी नाम का एक प्रसिद्ध विद्वान, जिसने पुनर्जन्म के सम्बन्ध में खोज की और जिसने हजारों व्यक्तियों के पिछले कई जन्मों के विषय में बताया परन्तु उसके द्वारा बताई गये किसी भी तथ्य में न योनि परिवर्तन की बात कही गई है और न ही लिंग परिवर्तन की बात है। सभी ने उसी योनि में और उसी लिंग में जन्म लिया और अपने कर्मों का फल भोगा।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा का वायब्रेशन और उससे निर्मित वातावरण अभेद्य

होता है, जिसमें न कोई अस्त्र-शस्त्र प्रवेश कर सकता है और न ही कोई हिंसक व्यक्ति या जानवर प्रवेश कर सकता है। उस वायब्रेशन के अन्दर किसी व्यक्ति का अशुद्ध वायब्रेशन भी प्रवेश नहीं कर सकता है। जब कोई आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर, सर्वशक्तिवान परमात्मा की याद में होती है तो उसका वायब्रेशन और भी प्रभावशाली (Surcharge) होता है। जिस आत्मा को इस सत्य का ज्ञान और निश्चय होगा वह कब भी भयभीत नहीं हो सकती। वह सदा निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प, निर्वैर होती है। इस सम्बन्ध में आत्मिक शक्ति सम्पन्न अनेक ऋषि-मुनियों, तपस्वी आत्माओं के उदाहरण हैं। इसलिए हमको अपनी योग-शक्ति पर विश्वास और निश्चय होना चाहिए। ऐसी योगी आत्मा का संकल्प ब्रह्मास्त्र है, जो त्रिलोक में कहाँ भी बैठी आत्मा को प्रभावित करेगा परन्तु निश्चय का पक्ष (Factor) मूल है।

आत्मिक स्वरूप के अभ्यास के लिए बाबा श्रीमत दी है -

"बाप बच्चों को समझाते हैं - देह सहित देह के सब सम्बन्ध भूल अपने को आत्मा समझो। यह बहुत जरूरी बात है, जो इस संगमयुग पर बाप ही समझाते हैं।"

सा.बाबा 8.12.05 रिवा.

"समझा वे सकेंगे, जो याद की यात्रा में होंगे। ... नॉलेज है सोर्स ऑफ इन्कम। योग को बल कहा जाता है। दोनों में रात-दिन का फर्क है। ... अशरीरी होकर बैठो तो कितने पावन बन जायें।"

सा.बाबा 22.11.05 रिवा.

"नम्बरवन पुरुषार्थ है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना। ... खुद भी याद में बैठे और औरों को भी बिठायें। ... अपने को शरीर समझना सबसे कड़ी बीमारी है।"

सा.बाबा 21.11.05 रिवा.

"समान बच्चों की विशेषता है कि वे सदा निविघ्न, निर्विकल्प, निर्मान और निर्मल होंगे। ऐसी आत्मायें सदा स्वतन्त्र होती हैं ... अपने से पूछो ऐसी बेहद की स्वतन्त्र आत्मा बने हैं! पहली स्वतन्त्रता है - देहभान से स्वतन्त्र। जब चाहे तब देह का आधार लें, जब चाहें तब देह से न्यारा जो जायें।""

अ.बापदादा 30.11.05

"अपने को आत्मा समझ दूसरे को भी आत्मा देखने की प्रैक्टिस डालो, इस युक्ति से तुम्हारी यह बीमारी निकल जायेगी। ... जितना तुम देही-अभिमानी होंगे, उतना तुम्हारे में कशिश आयेगी। अभी इतना इस देह और पुरानी दुनिया से पूरा वैराग्य नहीं आया है।"

सा.बाबा 6.11.04 रिवा.

"अभी तुमको ज्ञान मिलता है। ज्ञान सहित याद में रहने से पाप कटते हैं। यह ज्ञान और कोई को नहीं है। मनुष्य यह थोड़ेही समझते हैं - हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं, हमको शरीर से डिटैच होकर बैठना है। यहाँ तुमको बल मिलता है, जिससे तुम अपने को आत्मा समझ बाप की याद में बैठ सकते हो। कैसे अपने को आत्मा समझ डिटैच होकर बैठना है, यह बाप ही समझाते हैं।" सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

"अशरीरी बनने की शिक्षा कोई जानते ही नहीं हैं। ... तुम बच्चे जब यहाँ बैठते हो तो इस धुन में बैठो कि हम सब आत्मायें अशरीरी हैं।" सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

"जब रुहानी चित्र व तस्वीर आकर्षणमय बनायेंगे तो चलते-फिरते उसको देख अनेक आत्मायें भी देह-अभिमान से निकल देही-अभिमानी बन जायेंगी। जब स्थूल चित्रों में इतनी आकर्षण है, तो क्या आप रुहानी चैतन्य चित्रों में उतनी रुहानी आकर्षण नहीं है?"

अ.बापदादा 18.7.74

"मैं तुमको सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा। बाप गॉरन्टी तब करते हैं जब तुम यह गॉरन्टी करते हो कि बाबा हम आपको याद करते रहेंगे। इतना याद करो जो शरीर का भान भी न रहे।"

सा.बाबा 10.8.05 रिवा.

"ऐसे नहीं कि जिस समय याद में बैठो, उस समय अशरीरी स्थिति का अनुभव करो। नहीं, चलते-फिरते बीच-बीच में यह अभ्यास पक्का करो। आत्मा का स्वरूप ज्यादा याद होना चाहिए। ... "मेरा बाबा" यह भूले नहीं।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 2

"सदा आकारी और निराकारी स्थिति का अभ्यास करना है। जब चाहें तब उस स्थिति में स्थित हो जायें। इसके लिए सारा दिन अभ्यास करना पड़े ... तो सूक्ष्म रीति से चेक करो कि लगाव अंश मात्र भी नहीं हो।" अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 3

2. *परमात्मा*

"जब बाप पर निश्चय हो तब समझे बाप तो सत्य है। जरूर बाप सत्य बातें ही बताते होंगे। इसमें संशय नहीं लाना चाहिए। ... जब तक बाप का निश्चय नहीं होगा तब तक प्रश्न पूछते रहेंगे।" सा.बाबा 18.11.2000 रिवा.

A. परमात्मा के ज्ञान, गुण, कर्तव्यों के विषय में बाबा ने विस्तार से ज्ञान दिया है और कहा है कि मैं जो हूँ, जैसा हूँ जानकर मुझे याद करो। अगर परमात्मा पर निश्चय है कि परमात्मा ज्ञान का सागर, पतित-पावन, सर्वशक्तिवान .. है, वह हमारे साथ है, उसका हाथ हमारे ऊपर है और वह सदा सर्वदा और सर्वत्र हमारी मदद कर सकता है और करेगा भी। इस सत्य का निश्चय होगा तो हम सदा, सर्वदा और सर्वत्र उसकी मदद का अवश्य अनुभव करेंगे। इसके

अनेक उदाहरण हैं और हरेक भाई-बहन को कुछ न कुछ अनुभव अवश्य है। ज्ञान सुनाने के समय, सेवा के समय और आपत्ति काल के समय भी परमात्मा ने सहयोग किया है और करेगा। भक्ति मार्ग में यथार्थ ज्ञान न होने पर भी परमात्मा पर अन्धश्रृद्धा से निश्चय रखने वालों को भी परमात्मा की मदद मिलती है। भक्ति मार्ग में भी इसके अनेक उदाहरण हैं।

जब परमात्मा पर पूरा निश्चय होगा तो ज्ञान की धारणा करने और नियम-संयम पर चलने में भी सहज होगा। बाप जो कहते, सुनाते, श्रीमत देते उसको पालन करने में जो कठिनाई या कमी होती, उसका मूल कारण है परमात्मा पर यथार्थ निश्चय की कमी अर्थात् संशय है। परमात्मा के गुण-कर्तव्यों का यथार्थ निश्चय होगा तो ज्ञान मार्ग में चलना अवश्य ही सहज अनुभव होगा।

यथार्थ निश्चय माना एक बाप से ही सुनना, एक बाप को ही सुनाना, एक बाबा के सामने ही सब इच्छायें, आशायें, आकाक्षायें रखना, एक की मत पर ही चलना, एक को ही याद करना क्योंकि एक बाप ही दाता है और सब शुद्ध आशायें-इच्छायें पूर्ण करने वाला है एवं उसके साथ सम्बन्ध, उसकी याद ही चढ़ती कला का आधार है। विचारणीय बात है कि दुनिया के सभी व्यक्ति स्वयं ही उतरती कला में हैं, तो वे हमको क्या दे सकते हैं और जो ब्राह्मण आत्मायें चढ़ती कला में हैं, उनका आधार भी परमात्मा ही है तो वे भी हमको क्या दे सकते हैं? वे केवल परमात्मा की ओर चलने का मार्ग प्रदर्शित करने का सहयोग अवश्य कर सकते हैं परन्तु चलना तो हमको ही पड़ेगा। उनकी याद भी चढ़ती कला का आधार नहीं हो सकती। ये निश्चय होगा तब ही हमको एक बाप की याद होगी और सदा चढ़ती कला होगी। जैसे ब्रह्मा बाप का उदाहरण - फॉलो फादर ... गीता को भी फेंक दिया।

परमात्मा सत्य है अर्थात् सत्य बताने वाला है - इसका निश्चय होगा तो ये भी निश्चय होगा कि उसका हर महावाक्य सत्य है। जब उसके महावाक्यों की सत्यता का निश्चय होगा तो उनके बताये गये मार्ग पर चलने की शक्ति अनुभव होगी, परमात्मा के सदा साथ और सहयोग की अनुभूति होगी, परमात्मा से सर्व सम्बन्धों के सुखों की अनुभूति होगी क्योंकि सत्य सदा ही कल्याणकारी होता है।

जब परमात्मा पर निश्चय होगा तो उसके कर्तव्यों पर भी निश्चय होगा और देश-काल और परिस्थितियों के अनुसार बाबा ने जिसको निमित्त बनाया, उसमें भी अवश्य पूरा निश्चय होगा। स्मृति रहे कि बाबा ज्ञान का सागर है और सर्वशक्तिवान है उसने जिसको निमित्त बनाया, बाबा उसके लिए उत्तरदायी है, उसकी मत पर चलने में भी कभी अहित नहीं हो सकता परन्तु मत लेने वाले को उसकी मत पर निश्चय हो और मत लेते समय परमात्मा की याद हो।

इसके लिए बाबा के महावाक्य हैं - बाबा ने जिसको निमित्त बनाया है, उसके लिए भी रेस्पान्सिबुल मैं हूँ। उसमें कोई अहित भी होगा तो बाबा उसको ठीक कर देगा।

निश्चय हो कि परमात्मा ब्रह्मा तन में आया हुआ है और ब्रह्मा तन से सारा ज्ञान दे रहा है और सर्व सम्बन्धों से साथ निभा रहा है, सर्व सम्बन्धों का सुख देने वाला है, तब ही हम उसके द्वारा सर्व सम्बन्धों का सुख अनुभव कर सकेंगे।

यह भी निश्चय हो कि परमात्मा भी एक आत्मा है परन्तु वह गुणों और शक्तियों में अन्य आत्माओं से भिन्न है। वह ज्ञान का सागर, सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ, पतित- पावन है, अयोनिज है। वह अभी आया हुआ है। परमात्मा सत्य, पूर्ण न्यायकारी, सर्व का कल्याणकारी, समदर्शी है, उसकी सर्वशक्तियाँ सर्व आत्माओं पर समान रूप से बरस रही हैं। उसके पास किसी के लिए कोई पक्षपात नहीं। इसलिए परमात्मा को धर्मराज भी कहते हैं। वह हमको देख भी रहा है और उसमें वह शक्ति है कि जब चाहे तब वह हमारे सर्व क्रिया-कलापों को देख सकता है, जान सकता है। यह भी निश्चय हो कि एक परमात्मा की याद से ही आत्मा पावन बन सकती है। इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है पावन बनने का। परमात्मा का साथ ही ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार है। उसका हर कार्य विश्व-कल्याण के लिए है। वह सत्य है और उसके द्वारा उच्चारा गया हर महावाक्य सत्य है, भले हम उसको समझ पायें या न समझ पायें। परन्तु यदि हम निश्चय से उसके महावाक्यों पर चलते रहें, उसके बताये गये नियम-संयम को पालन करते रहें तो हमारा सदा ही कल्याण है और हमको अपना ये जीवन अति सहज, सुखमय और महान अनुभव होगा। वह हमारा सदा-सर्वदा-सर्वत्र साथ निभाता है यदि हम एक उसके सहारे रहे तो तो उसका सहारा सदा ही अनुभव होगा परन्तु यदि हमने किसी वस्तु या व्यक्ति को अपना सहारा बना लिया तो उसका सहारा छूट जाता है। यह इस सृष्टि का विधि-विधान है।

"बाप क्षमा भी तब करेंगे, जब संगमयुग होगा। ... आत्मा ही बाप को पुकारती है। ऐसे भी नहीं कि परमात्मा कोई बैठ सुनते हैं। बाप समझाते हैं ड्रामा प्लेन अनुसार पतितों को पावन बनाने के लिए तो मैं शरीर में आता हूँ। ऐसे नहीं कि पुकार सुनकर आता हूँ। भक्ति जब पूरी होती है तब मुझे आना ही है। यह समझने की बातें हैं।"

सा.बाबा 21.7.2001 रिवा.

"अभी भगवान तुम्हारी सेवा कर रहा है। भगवान की सेवा तो सब करते हैं लेकिन यहाँ भगवान सेवा करता है।... भाग्यवान आये हैं भगवान के पास।"

अ.बापदादा 25.11.85

निश्चय और परमपिता परमात्मा का साथ और सहयोग

सबसे पहला निश्चय है - परमात्मा के विषय में निश्चय। बाबा के महावाक्य हैं कि परमात्मा पर निश्चय होगा तब ही कोई आगे की बातें समझ सकेगा और आगे बढ़ेगा। अब प्रश्न उठता है कि परमात्मा के विषय में क्या-क्या निश्चय होना चाहिए? इसके लिए परमात्मा के सभी गुण-धर्मों का ज्ञान, अनुभव और निश्चय होना आवश्यक है।

जब परमात्मा पर निश्चय होगा और उसके गुण-कर्तव्यों पर निश्चय होगा तो उसके प्रति आत्मा को स्वत: प्रेम जाग्रत होगा और जब परमात्मा के प्रति प्रेम जाग्रत होगा तो उसकी याद स्वत: आयेगी, उसके सानिध्य का अनुभव होगा। परमात्मा के सानिध्य से आत्मा में निर्भयता आयेगी। ज्ञान को श्रद्धा-भावना से सुनेंगे और दूसरों को भी निर्भयता से सुना सकेंगे, जैसे मम्मा ज्ञान के सभी तथ्यों को निर्भयता से सुनाती थी। हम सभी एक परमात्मा पिता के बच्चे हैं के निश्चय से पवित्रता की धारणा भी सहज होगी।

निश्चय बुद्धि आत्मा की निशानी है - निराकार और साकार दानों स्वरूपों में यथार्थ अनुभव और निश्चय। ऐसे निश्चय वाली आत्मा फॉलो फादर अवश्य करेगी। फॉलो फादर में पहले फॉलो निराकार बाप। निराकारी स्थिति में, निर्संकल्प स्थिति में, साक्षी स्थिति में निराकार बाप को फॉलो करना। परमात्मा शुभाशुभ के चिन्तन से परे, साक्षी दृष्टा है, ज्ञान का सागर, सदा मुक्त ... है। आत्मा भी मूल रूप में उसके गुणों से परिपूर्ण है, जो गुण देह धारण करने से धीरे-धीरे विलुप्त हो जाते हैं। अभी हमको भी वैसी स्थिति बनानी है।

साकार में फॉलो साकारी ब्रह्मा बाप। निरहंकारी, निर्विकारी, फरिश्ता स्थिति में एक ब्रह्मा बाप को फॉलो करना। एक ब्रह्मा बाप, दूसरा न कोई। फॉलो फादर का पाठ, कर्मयोगी, शुभचिन्तन और शुभ चिन्तक, जीवनमुक्त स्थिति में ब्रह्मा बाप को फॉलो करना।

एक बाप की श्रीमत ही कल्याणकारी है, और सभी आत्मायें स्वार्थी हैं, उनकी मत से पतन ही होता है। सभी आत्माओं में कोई न कोई सूक्ष्म या स्थूल कामना अवश्य होती है, निष्काम एक परमात्मा ही है। परमपिता परमात्मा ने जो हमको दिया है, वह विश्व की सम्पूर्ण सम्पत्ति से अधिक मूल्यवान है। जिसको उसकी परख है अर्थात् उसके मूल्य को अनुभव करता है, उसके जीवन में कब हीनता या अहंकार का बीज अंकुरित हो नहीं सकता।

जिसके साथ सर्वशक्तिवान परमात्मा है, उस पर ग्रहचारी कैसे आ सकती! यदि आती है तो वह हमारे पूर्व जन्म का भोग है और वह परमात्मा की याद से अवश्य ही खत्म हो जायेगा।

जिसने परमपिता परमात्मा को यथार्थ रीति पहचाना है, उसकी छत्रछाया, उसकी

शक्ति को अनुभव किया है, वह कब अपने को असुरक्षित अनुभव कर नहीं सकता और उसकी आंख संसार की किसी वस्तु या व्यक्ति में डूब नहीं सकती।

बाबा ने जो बोला, वह निश्चित ही होगा, यदि विधि पूर्वक किया गया तो। बाबा ने कहा है - साइलेन्स की शक्ति से ये-ये होगा ... वह निश्चित ही होगा। विधि पूर्वक करने से वह सब होगा, उसमें अंशमात्र भी न होने की गुंजाइश नहीं है। होगा या नहीं होगा, देखें होता है या नहीं होता है, ये सोचने का भी स्थान नहीं है। ये सोचना भी एक प्रकार का संशय है, जो कर्म की सफलता में अन्तर पैदा कर देता है।

परमात्मा के निश्चय और सहयोग से जीवन परिवर्तन में, खान-पान के रूप में, व्यवहार के रूप में अनेक उदाहरण हैं। इसीलिए गायन है - जिसका साथी है भगवान... तूफान। इस निश्चय से निर्भयता आयेगी, हिम्मत रहेगी और पुरुषार्थ श्रेष्ठ होगा, जिसके परिणाम स्वरूप सफलता निश्चित होगी।

जिसको परमात्मा पर निश्चय होगा, वह वर्तमान में सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्थिति का अनुभव करेगा और भविष्य के कल्याणमय जीवन के प्रति भी आश्वस्थ रहेगा, इसलिए उसका जीवन सदा निर्भय, निश्चिन्त, सदा सुखमय होगा। उसके जीवन में नीरसता आ नहीं सकती, सदा अतीन्द्रिय सुख में रहेगा। वह अन्त में भी एक परमात्मा की याद में शान्ति से देह का त्याग करेगा, मृत्यु-दुख से मुक्त होगा। जिसको परमात्मा और उनके महावाक्यों पर निश्चय होगा, वह भविष्य जीवन के लिए पुरुषार्थ करेगा परन्तु उसकी सफलता के विषय में उसको चिन्ता नहीं होगी। वह कभी भूतकाल के पश्चाताप में और भविष्य के चिन्तन में समय नहीं गँवायेगा। इस तरह उसको भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य तीनों कालों में सफलता का अनुभव होगा, जिससे उसका जीवन सदा सुखमय और खुशियों से भरपूर होगा।

सृष्टि अनादि-अविनाशी है, उसको रचने का कोई प्रश्न ही नहीं परन्तु ड्रामा अनुसार परमात्मा स्वर्ग का रचना अवश्य करता है। परमात्मा न्यायकारी-समदर्शी है और ज्ञान-गुण-शक्तियों का अखुट भण्डार है, इसलिए उसके सर्व भण्डार सर्व आत्माओं के लिए सदा समान रूप से खुले हैं परन्तु हर आत्मा अपने पार्ट और पुरुषार्थ अनुसार उससे लेता है।

परमधाम में किसी भी प्रकार का संकल्प नहीं होता है, इसलिए वहाँ लेने या न लेने का कोई प्रश्न ही नहीं है। संकल्प आदि देह में आने के बाद ही उत्पन्न होते हैं और तब ही लेने या न लेने की प्रक्रिया होती है।

परमात्मा के हर गुण-कर्तव्य-शक्ति का अनुभव और उसका निश्चय होने से ही परमात्मा की याद स्थिर होती है और यही आत्मा के कल्याण का प्रशस्त मार्ग है। जब

परमात्मा पर पूर्ण निश्चय होगा तो उसकी मदद अवश्य मिलेगी। इस सत्य पर भी निश्चय तब होगा जब उसके गुण-कर्तव्य-शक्ति का यथार्थ ज्ञान और अनुभव होगा और जब अनुभव होगा तब ही निश्चय होगा और जब निश्चय होगा तब ही उसकी याद होगी और उसकी मदद का समय पर अनुभव कर सकेंगे।

"जैसे लौकिक माँ-बाप को सभी बच्चे प्यारे लगते हैं वैसे बेहद के मात-पिता को भी सभी बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं। मुझे सभी बच्चे प्यारे हैं क्योंकि मैं सर्व का गति-सद्गतिदाता हूँ।"

सा. बाबा 6.6.72 रात्रि क्लास रिवा.

एक बाप पर पूरा अटल निश्चय हो और उनकी श्रीमत पर चलते रहें तो ये ब्राह्मण-जीवन परमानन्दमय है। यह जन्म सर्व महान है, इस जीवन की प्राप्तियाँ सर्व महान है, इस जीवन में प्राप्त सुख सर्व महान है - जब इस सत्य का ज्ञान, अनुभव और उस पर निश्चय होगा तब ही इस जीवन का सच्चा सुख अनुभव होगा और ये जीवन सफल होगा और दिल से निकलेगा - बाबा तेरा शुक्रिया।

"अनेक प्रकार के संशय पड़ते हैं परन्तु शिव बाबा हमारा बाप है, उनसे वर्सा लेना है। बाप आये हैं अमर लोक ले चलने के लिए - इसमें कब संशय न आना चाहिए।"

सा. बाबा 27.7.68 रात्रि क्लास

"बाप को तो खुशी और गम की दरकार नहीं। यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। तुमको भी न खुशी और न गम होना चाहिए। बाप मिला फिर और क्या चाहिए, उनकी मत पर चलना चाहिए। इस समय स्वर्ग से भी अधिक खुशी होनी चाहिए।" सा. बाबा 22.8.68

"बाप कहते हैं कि मेरा ऐसा पार्ट नहीं है, जो कि बीमार को अच्छा कर दूँ। हमारा पार्ट तो है रास्ता बताना कि तुम पवित्र बनो। पवित्र बनने से तुम घर में भी जा सकोगे और राजधानी में भी आ सकोगे। बाकी कोई उम्मीद नहीं रखो कि फलाना बीमार है, आशीर्वाद मिले। आशीर्वाद-कृपा की मेरे पास बात नहीं है। उसके लिए तो साधु, सन्यासी आदि के पास जाओ। ... पावन बनाना बाप का काम है।" सा.बाबा 11.8.69 रिवा.

जिसको ये पक्का निश्चय हो गया कि परमात्मा सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञ है, वह हमको देख रहा है, उससे कब विकर्म नहीं होंगे और जब विकर्म नहीं होंगे तो सुकर्म ही होंगे और परिणाम स्वरूप सुख-शान्ति का अनुभव अवश्य होगा।

परमपिता परमात्मा और ये ईश्वरीय ज्ञान मानव जीवन की परम प्राप्ति है और परमानन्द को देने वाली है। दूसरे किसी से कोई आश रखना निश्चय की कमी का प्रतीक है अर्थात् संशय बुद्धि की निशानी है और संशय बुद्धि विनश्यन्ति अर्थात् वह उस परमानन्द को

अनुभव नहीं कर सकेगा।

न्यायकारी, सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा सर्व प्राप्तियाँ हमको दे रहा है, उसके लिए ये संकल्प करना कि कोई दूसरा उसमें बाधक है या हो सकता है, परमात्मा की महिमा में बट्टा लगाना है और अपने को धोखा देना है, जो संशयबुद्धि आत्मा की निशानी है, वे परमात्मा से प्राप्त सर्व प्रापतियों का कभी अनुभव नहीं कर सकेंगे। निश्चय बुद्धि भक्त के निश्चय का गीत है - रहिमन विपदा हू भली जो नारायण रत होये .., जिसका साथी है भगवान ... तूफान, जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करे सब कोई। यदि हमारे जीवन में किसी प्रकार की अप्राप्ति की अनुभूति है, भय-चिन्ता है तो चेक करो - हमारा परमात्मा में यथार्थ निश्चय है और हमको किसी प्रकार अप्राप्ति की अनुभूति हो रही है तो क्यों हो रही है?

परमपिता परमात्मा तो सर्व ज्ञान-गुण-शक्तियों का सागर है, उसकी सर्व प्राप्तियाँ सर्व आत्माओं के लिए समान रूप से खुली हुई परन्तु जिसका बुद्धि रूपी पात्र जितना है, वह उतना ही प्राप्त करता है। यदि पात्र छोटा है या पात्र बन्द है तो मदद कैसे प्राप्त करेगा। यथार्थ ज्ञान पर निश्चय, विश्वास और उसकी धारणा के आधार पर आत्मा की पात्रता में वृद्धि होती है और परमात्मा की मदद की अनुभूति होती है।

परमपिता परमात्मा पर निश्चय शत-प्रतिशत है तो उसका सहयोग भी शत-प्रतिशत अवश्य मिलेगा। मिलेगा या नहीं मिलेगा, इसका प्रश्न ही नहीं। ये भी संशयबुद्धि बनना है। यदि निश्चय दृढ़ है तो परमात्मा का सहयोग भी पूरा ही मिलेगा क्योंकि परमात्मा हम आत्माओं के सहयोग के लिए ही इस विश्व में आया है।

"इसको जीव कहा जाता है, इसमें आत्मा भी है और तुम बच्चे जानते हो परमपिता परमात्मा भी इनमें है। यह तो पहले-पहले पक्का निश्चय होना चाहिए। ... इस निश्चय में ही रमण करना है।" सा.बाबा 1.1.2001 रिवा.

"बाप आते हैं जीते जी मरना सिखाने। मरना तो सारी दुनिया को है। तुमको पावन बनकर मरना है। ... इसमें सच्ची कमाई होती है, फिर झूठी कमाई को क्या करेंगे। उस झूठी कमाई को सच्ची कमाई से बदली करना है। बाप ने करके दिखाया।"

सा.बाबा 3.6.69 रिवा.

"सच्चे दिल से, निस्वार्थ भाव से सेवा करनी है। बाबा कहते हैं ऐसे बच्चों की हुण्डी मैं सकारता हूँ। यह भी ड्रामा में नूँध है। ... मांगो कोई से भी नहीं, मांगने से मरना भला। आप ही तुम्हारे पास आ जायेगा। उसमें ताकत रहेगी।" सा.बाबा 12.5.04 रिवा.

"मुख्य बात है - जो यथार्थ निश्चय है, उसको पक्का करो।... बाप साथ है तो किसी की हिम्मत

नहीं है, जो हिला सके। निश्चयबुद्धि का अर्थ ही है विजयी।"

अ.बापदादा 4.12.95

"देवताओं को वहाँ पता थोड़ेही रहता है कि हमने यह राज्य कैसे पाया? ... ये बड़ी समझने की गुह्य बातें हैं। समझदार ही समझें। बाकी जो बूढ़ी मातायें हैं, उनमें इतनी बुद्धि तो है नहीं। यह भी ड्रामा प्लेन अनुसार हर एक का अपना पार्ट है। ऐसे तो नहीं कहेंगे - हे ईश्वर बुद्धि दो। हम सबको एक जैसी बुद्धि दें तो सब नारायण बन जायें।" सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

"63 जन्मों के हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज हो सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं - इस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं। ... याद रखो - सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी तो सत्य के साथ की नाँव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती।" अ.बापदादा 3.5.77

"अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना है क्योंकि यह कर्म-क्षेत्र है, कर्म-भूमि है, इसमें जो बोयेंगे सो पायेंगे। यह भी इसका नियम है। बाप कहते हैं - इस लॉ को तो मैं भी ब्रेक नहीं कर सकता हूँ भल मैं वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ।" मातेश्वरी 24.6.65

३. *विश्व-नाटक का ज्ञान*

वह विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू ब हू पुनरावृत्त होता है। जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता परन्तु ये एक कटु सत्य है कि जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है। विश्व-नाटक के गुण-धर्मो का यथार्थ ज्ञान हो, उनका अनुभव हो और उन पर पूरा निश्चय हो तो ये जीवन परमानन्दमय होगा।

वास्तविकता को देखा जाये तो विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान और परमात्मा का साथ ही आत्मा और विश्व की चढ़ती कला का आधार है। सतयुग में आत्मायें सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण होती हैं, प्रकृति भी सतोप्रधान होती है फिर भी आत्मा और प्रकृति की उतरती कला होती है। अभी संगमयुग पर जब परमात्मा विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देते हैं, तब उसकी धारणा और परमात्मा के सानिध्य से आत्मा और प्रकृति की चढ़ती कला होती है।

"निश्चयबुद्धि के आगे व्यर्थ आ नहीं सकता। ... जब ड्रामा के राज़ को जानते हैं, आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हैं ... ड्रामा में अटल निश्चय है, नॉलेजफुल भी हैं, पॉवरफुल भी हैं तो व्यर्थ संकल्प हिलाने की हिम्मत भी नहीं रख सकते हैं।" अ.बापदादा 9.1.95

"जब विजय निश्चित है तो निश्चिन्त रहेगा ना। कोई भी बात में चिन्ता की रेखा दिखाई नहीं देगी। ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी, निश्चित और सदा निश्चिन्त रहने वाले हो ? ...बाप में निश्चयबुद्धि के साथ-साथ अपने आप में भी निश्चयबुद्धि होने चाहिए और साथ-साथ जो भी ड्रामा के हर सेकण्ड की एक्ट रिपीट हो रही है, उसमें भी 100 प्रतिशत निश्चयबुद्धि चाहिए - इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि।" अ.बापदादा 27.2.72

विश्व-नाटक का सच्चा सुख अनुभव करने के लिए इसके विधि-विधान, गुण-धर्मों और विशेषताओं को जानना, अनुभव करना और उन पर निश्चय करना अति आवश्यक है। उनमें से कुछ का, जो अति आवश्यक हैं, उनका वर्णन यहाँ करते हैं।

विश्व-नाटक के विधि-विधान, गुण-धर्म अर्थात् विशेषतायें

(Characterstics of The World-Drama)

विश्व-नाटक के गुण-धर्मों पर विचार करें तो इसमें अनन्त विशेषतायें हैं। जैसे परमात्मा के गुण और विशेषतायें सागर के समान अथाह है, वैसे ही इस विश्व-नाटक के गुण और विशेषतायें सागर के समान अथाह और अनन्त हैं। यदि हम उन सब विशेषताओं को जानकर जीवन में धारण कर लें तो जीवन में कब मायूसी, दुख-अशान्ति की महसूसता, राग-द्वेष, भय-चिन्ता आ नहीं सकती। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से जीवन परमानन्दमय हो जायेगा।

बाबा ने आध्यात्मिक जगत के अटल-अविनाशी सत्य सिद्धान्तों के विषय में अनेक रहस्यों का उद्घाटन किया है। आध्यात्मिक जीवन में उन्नति के लिए उन सिद्धान्तों का ज्ञान और उनका अनुभव और उन पर निश्चय होना अति आवश्यक है। उनमें से कुछ मुख्य सिद्धान्तों का हम यहाँ वर्णन करते हैं, यथा आत्मा किस तरह से शरीर द्वारा कार्य करती है, आत्मा की शक्तियों का जड़-जंगम-चेतन प्रकृतियों पर कैसे और क्या प्रभाव पड़ता है और उन जड़-जंगम प्रकृतियों का आत्मा के ऊपर क्या प्रभाव पड़ता है। जब उसका सत्य ज्ञान, उनका अनुभव और उन पर निश्चय होगा तो उसका हमारे जीवन पर प्रभाव होगा और उस अनुसार ही हमारे संकल्प और कर्म होंगे और जैसे कर्म होंगे, उस अनुसार ही कर्म-फल होगा अर्थात् जीवन की सफलता-असफलता होगी।

1. ये सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इसमें हर आत्मा और जड़ तत्वों के हर कण में सारे कल्प की गति-विधि का विधि-विधान नूँधा हुआ है। इसके गुण-धर्मों को जानने वाली और अपने स्वधर्म में स्थित होकर पार्ट बजाने वाली आत्मा

इसके परम सुख को अनुभव करती है। इसलिए इसके गुण-धर्मों का ज्ञान जो परमात्मा ने दिया है, उसमें से कुछ मुख्य-मुख्य का यहाँ वर्णन करते हैं।

2. विश्व-नाटक के नियम-सिद्धान्त हर आत्मा पर समान रूप से प्रभावित होते हैं, उनमें किसी तरह का पक्षपात न ही होता है और न ही हो सकता है।

3. ये विश्व-नाटक क्रिया-प्रतिक्रिया के सिद्धान्त पर आधारित है अर्थात् इसमें कोई भी घटना अनायास नहीं होती है। हर घटना का कोई न कोई आधार अवश्य होता है। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होते हुए ही ये घटनाचक्र आगे बढ़ता है।

4. आत्मायें और परमात्मा इस विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं और एक ही वंश के हैं, इसलिए आत्मा में भी परमात्मा के समान गुण-धर्म हैं परन्तु आत्माओं के गर्भ से देह धारण करने से वे विस्मृत हो जाते हैं, परमात्मा कब गर्भ से जन्म नहीं लेते, इसलिए गुण-धर्म सदा एकरस कायम रहते हैं। परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है, आत्मा भी सच्चिदानन्द स्वरूप है। आत्मायें पार्ट बजाने के लिए गर्भ से देह धारण करती हैं, परमात्मा परकाया प्रवेश होकर पार्ट बजाते हैं।

5. परमात्मा सहित सर्व-आत्माओं और जड़ तत्वों के अणु-परमाणुओं में सारे कल्प की गति-विधि का अविनाशी पार्ट उनमें नूँधा हुआ है, जो कल्प-कल्प पुनरावृत्त होता है। परमात्मा को छोड़कर हर आत्मा और हर वस्तु की सतो, रजो, तमो स्थिति आती है।

6. परमधाम सर्व आत्माओं का घर है और इस आकाश तत्व के अन्दर ये साकार लोक एक ड्रामा स्टेज है। परमधाम से सभी आत्मायें अपने निश्चित समय पर पार्ट बजाने आती हैं और कल्पान्त में सभी आत्मायें वापस घर परमधाम जाती हैं। हर आत्मा को अपने पार्ट के समयानुसार मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है। कल्प के आदि से ही आत्मायें इस सृष्टि पर आती रहती हैं, ऊपर मुक्ति में जाने का समय कल्पान्त का पुरुषोत्तम संगमयुग ही है।

7. ये सृष्टि-चक्र चढ़ती कला और उतरती कला, स्मृति-विस्मृति, ज्ञान-भक्ति, दिन-रात का खेल है। इसकी यथार्थता को भूलने और देह में आने से आत्माओं की उतरती कला होती है और परमात्मा द्वारा इसका यथार्थ ज्ञान मिलने पर उस ज्ञान की धारणा और परमात्मा की याद से आत्माओं की चढ़ती कला होती है। मनुष्यात्मा सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए उसके उत्थान से जड़ तत्वों सहित सारे जगत के सर्व प्राणियों का उत्थान होता है और उसके पतन से सारे विश्व के प्राणियों का पतन होता है।

8. जब आत्मा पवित्र बनती हैं तब भी इसमें प्राकृतिक आपदायें आती हैं, अणु-युद्ध, गृह-युद्ध आदि होता है, जिनसे इसका मूलभूत परिवर्तन होता है और त्रेता के अन्त और द्वापर आदि में

जब आत्मायें पतित बनती हैं अर्थात् काम-विकार में प्रवेश करती हैं तब भी प्राकृतिक आपदाओं से इसमें विशेष परिवर्तन होता है, जिससे दैवी सभ्यता के अवशेष भी विलीन हो जाते हैं।

9. इस विश्व-नाटक में कोई किसका मित्र-शत्रु नहीं है, सभी पार्टधारी हैं। मित्रता-शत्रुता अज्ञानता जनित भ्रम है, जो भी विश्व-नाटक के अस्तित्व और समयानुसार आत्माओं के यथार्थ रीति पार्ट बजाने के लिए अति आवश्यक है।

10. इसके नियम-सिद्धान्त अटल-अविनाशी हैं, जिनमें कब भी कोई भूलचूक न हुई है और न हो सकती है।

11. ये विश्व-नाटक सुख-दुख, हार-जीत का खेल होते हुए भी परम सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी (Eternal, Just, Auspicious) है। कल्पान्त में जो महा-विनाश होता है, वह भी कल्याणकारी और विश्व-नाटक की अति आवश्यक घटना है।

12. सृष्टि-चक्र के आधे भाग में एक देवी-देवता धर्म और आधे भाग में अनेक धर्म होते हैं। हर धर्म-वंश, हर आत्मा और वस्तु की सतो, रजो, तमो अवस्थायें समय और अपने पार्ट के अनुसार होती ही हैं।

13. विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है। इसकी न कभी रचना हुई है और न कभी विनाश होने वाला है। परमात्मा के द्वारा दिये गये विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान के आधार पर इस विश्व-नाटक के चक्र की कलम लगती है अर्थात् पुराने चक्र से ही नया चक्र अस्तित्व में आता है।

14. यह विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है, इसका एक दृश्य न मिले दूसरे से, एक क्षण का दृश्य न मिले दूसरे से, एक जीवात्मा के फीचर्स न मिलें दूसरे से अर्थात् हर बात में भिन्नता और विविधता अवश्य है, जो इसकी शोभा है।

15. विश्व-नाटक में आत्माओं के पार्ट और कर्म-फल अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध का अद्वितीय सन्तुलन है। बिना कर्म के कोई भी आत्मा सुख या दुख को पा नहीं सकती। हर आत्मा अपने पार्ट के आधे समय बाद विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती है, जिसके फलस्वरूप दुख पाती है। परमात्मा के द्वारा दिया गया यथार्थ ज्ञान और परमात्मा की याद ही विकर्मों को विनाश करने और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति प्राप्त करने का एकमात्र साधन है।

16. ये विश्व नाटक एक अनादि-अविनाशी परमानन्दमय खेल है, जो आत्मा अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित साक्षी होकर इसे देखता है, उसको ये परमानन्दमय अनुभव होता है।

17. ये विश्व-नाटक सतत परिवर्तनशील है, इसलिए साक्षी होकर देखने वाले को ये नित्य नया प्रतीत होता है।

18. इस विश्व-नाटक का अन्तर्जाल (Internate) इतना सूक्ष्म और शक्तिशाली है कि कोई आत्मा कहाँ भी कोई कर्म करे, मन में संकल्प भी करे तो भी उसका फल निश्चित हो जाता है, भले कोई उसको देखे न देखे और हर आत्मा को वह फल सुख या दुख के रूप में भोगना ही पड़ता है।

19. विस्मृति भी इस विश्व-नाटक की एक बड़ी महत्वपूर्ण विशेषता है, जिसके कारण ही हर आत्मा अपने वर्तमान पार्ट को सफलतापूर्वक बजाती है, जिससे ये नाटक रुचिकर बन जाता है और अबाध रूप से निरन्तर गतिशील है।

20. ये अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक है, जो हू ब हू पुनरावृत्त होता है परन्तु हमको आगे का ज्ञान नहीं है इसलिए पुरुषार्थ करना हर आत्मा का स्वभाविक गुण है और कर्तव्य है। कोई भी आत्मा कर्म के बिना इस सृष्टि रंगमंच अर्थात् कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती। इसमें कर्म और कर्मफल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के विधि-विधान की अनादि-अविनाशी नूँध है, जिस पर ये नाटक सतत गतिशील है।

21. इस विश्व-नाटक में न कोई ऊंच है और न कोई नीच है, इसलिए इसमें अहंकार और हीनता का कोई स्थान नहीं है। सब आत्मायें इसमें अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं और परमात्मा की प्रिय सन्तान हैं। हर आत्मा देश-काल के अनुसार ऊंच-नीच बनती ही है।

22. इस विश्व-नाटक की ये भी विशेषता है कि आत्मा इसमें पार्टधारी भी है और दर्शक भी है। जो आत्मा इसको साक्षी होकर देखती है और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाती है, वह इसके परम सुख को अनुभव करती है।

"दुनिया पुरानी हो गई है, नाटक को पुराना नहीं कहेंगे। नाटक तो कब पुराना होता ही नहीं। नाटक तो नित्य नया है। यह तो चलता ही रहता है। बाकी दुनिया पुरानी होती है। हम एक्टर्स तमोप्रधान दुखी हो जाते हैं।" सा. बाबा 3.2.69 रिवा.

"इस सृष्टि में कोई भी चीज सदा कायम है नहीं। सदा कायम तो एक शिवबाबा ही है। बाकी सबको नीचे आना ही है। ... यह सब राज़ ड्रामा में हैं।... बाप आकर ज्ञान और योग के पंख देते हैं। योग बल से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे और तुम पुण्यात्मा बन जायेंगे।"

सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

23. विश्व-नाटक के सतत परिवर्तनशीलता का सिद्धान्त

विश्व-नाटक सतत परिवर्तनशील है परन्तु 5000 साल के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। सतत परिवर्तन इस विश्व-नाटक की एक स्वभाविक क्रिया है और इस विश्व-नाटक का अटल एवं अति आवश्यक अंग है। देश-काल, परिस्थितियां, स्वभाव-संस्कार, वस्तु-व्यक्ति सब

परिवर्तनशील हैं, जिनके आधार पर ये विश्व-नाटक सफलता पूर्वक चलता है। जो इस परिवर्तन के सिद्धान्त को समझकर, उसको अनुभव करके निश्चय होकर देश-काल-परिस्थितियों के अनुसार अपने को परिवर्तन कर लेता है अर्थात् अपनी समझ, ज्ञान, स्वभाव-संस्कार, चलन-व्यवहार में परिवर्तन कर लेता है, वही सच्चा ज्ञानी है और वही इस विश्व-नाटक के सच्चे सुख को अनुभव करता है और करेगा।

इस विश्व-नाटक के विषय में गायन है - गायन है बनी बनाई बन रही ... जो अनहोनी होये। अंग्रेजी में भी कहावत है - Events can't be changed but we can change our attitude towards events.

यह विश्व- नाटक कर्म-फल-कर्म, क्रिया-प्रतिक्रिया, पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित एक घटना-चक्र है, जो हर 5 हजार वर्ष के बाद हू ब हू पुनरावृत्त होता है। इसमें कुछ परिवर्तन नहीं हो सकता परन्तु ये हर क्षण परिवर्तन होता है और उस परिवर्तन के आधार से ये नित्य नया प्रतीत होता है और मनोरंजक है।

संगमयुग पर इस यज्ञ में भी देश-काल और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन अवश्य होगा और परिवर्तन होते हुए ही गाड़ी अपनी मंजिल पर पहुंचेगी अर्थात् सतयुगी राजाई की स्थापना होगी। इसलिए ज्ञानी आत्मा को किसी बात में आश्चर्य नहीं होना चाहिए, प्रभावित नहीं होना चाहिए। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बिल्कुल सही बजा रहा है और उसका फल पा रहा है, इसलिए किसी बात की चिन्ता-फिकर की कोई बात नहीं है। इस सत्य सिद्धान्त को समझकर इस संगमयुगी जीवन का सुख अनुभव करो और कराओ।

24. निश्चय बुद्धि होकर कोई भी गलत या सही बात कही जाती है तो उसका प्रभाव सुनने वालों वालों पर सही की तरह ही पड़ता है क्योंकि उस समय कहने वाली आत्मा से जो वायब्रेशन प्रवाहित होता है, वह सुनने वालों के ऊपर उसी अनुरूप प्रभावित होता है।

25. ये परमात्मा, प्रकृति और विश्व-नाटक का अटल विधान है कि धर्म के पथ पर चलने वाला सदा ही विजयी होता है क्योंकि परमात्मा और प्रकृति दोनों न्यायकारी, समदर्शी और अन्तर्यामी हैं अर्थात् सर्वज्ञ हैं परन्तु ये भी सदा स्मृति में रखना है कि धर्म-अधर्म की युद्ध अवश्य चलेगी। इस अटल सत्य का ज्ञान, निश्चय और धारण वाला ही सत्य पथ पर सहज चल सकता है। वह कभी धर्म-पथ से विचलित नहीं होता है, वह व्यर्थ संकल्पों से भी मुक्त रहता है, उसके कारण उसके व्यवहार में भी शुद्धि रहती है, जिससे उसके जीवन में सुख-शान्ति रहती है और जीवन की अन्तिम विजय मुक्ति-जीवनमुक्ति का भी सुख प्राप्त कर सकता है।

26. विश्व-नाटक की हर घटना का कोई आधार अवश्य होता है और इन घटनाओं के आधार पर ही भविष्य के अच्छे-बुरे सम्बन्धों का निर्माण होता है, पुराने हिसाब-किताब पूरे होते हैं और उनके आधार पर भविश्य की घटनाओं की पृष्ठभूमि बनती है और ये विश्व-नाटक सतत चलता है। इसलिए इस जगत की किसी भी प्रिय या अप्रिय घटना को देख-सुनकर आश्चर्यचकित या दुख न होना चाहिए।

27. आत्मा की मूल स्थिति पूर्ण पवित्र है परन्तु जब आत्मा इस धरा पर अपना अनादि-अविनाशी अभिनय करने अर्थ जड़ प्रकृति अर्थात जड़ तत्वों से निर्मित देह को धारण करती है तो आत्मा की कलायें गिरने लगती हैं और अन्ततः आत्मा देहाभिमान के वशीभूत होकर अपवित्र हो जाती है अर्थात् कलाहीन हो जाती है, तब परम पावन परमात्मा आकर आत्माओं को पावन बनने का रास्ता बताते हैं। इसके साथ बाबा ने ये भी बताया है कि आत्मा की कलायें शून्य कभी नहीं होती है, कुछ अंश रहता अवश्य है, जिससे परमात्मा आकर सम्पूर्ण कलाओं का कलम लगाते हैं।

28. स्वस्थिति में स्थित आत्मा की स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या की होती है। उसकी आवश्यकता, इच्छा और इच्छा-पूर्ति में पूर्ण सन्तुलन होता है, जिससे समय पर यथोचित आवश्यकतायें अवश्य पूर्ण होती हैं, जिस कारण उसको कभी भी अप्राप्ति का अनुभव नहीं होता है और उसको अधिक संग्रह की आवश्यकता नहीं होती है। भले ही इस विविधतापूर्ण नाटक में हर आत्मा की प्राप्तियों में भिन्नता है, अपनी-अपनी हैं।

29. स्वस्थिति में स्थित आत्मा को समय पर कृत्य का संकल्प स्वतः आता है और उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वतः होती है। इसलिए उसके विषय में अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है अपनी स्वस्थिति में रहने की अर्थात् पवित्र बनने की। यही हर आत्मा का परम कर्तव्य है।

30. पवित्र-आत्मा कब दुख नहीं पा सकती अर्थात् स्वस्थिति में स्थित आत्मा को कोई दुख नहीं दे सकता है। इसलिए हर आत्मा पहले-पहले इस धरा पर आती है तो पवित्र होने के कारण सुख भोगती है।

31. आत्मा शरीर के द्वारा जो भी देखती, सुनती, स्पर्श करती उसका प्रभाव उसके जीवन पर अवश्य होता है और उसके ऊपर उसके भविष्य का आधार होता है। इनकी अनुभूति जितनी गहरी होती है, उसका प्रभाव उतना ही गहरा और दीर्घगामी होता है। परमात्मा से मिलन मनाते तो उसकी अनुभूति जितनी गहरी होगी, उसका प्रभाव उतना ही अधिक होगा। इसीलिए बाबा कहते हैं योग में कब एक-दूसरे से स्पर्श करते हुए नहीं बैठो। कभी देखो कि किसी को

देखकर हमारे मन में अपवित्र संकल्प आ रहे हैं तो उस स्थान से हट जाओ क्योंकि किसी दृश्य को देखकर जितने संकल्प चलते हैं, उसका प्रभाव उतना ही गहरा होता जाता है।

32. संकल्प के अनुसार ही शरीर में प्रक्रियायें होती हैं, रस स्राव होते हैं, जो जीवन के अनेक क्षेत्रों में अपनी भूमिका निभाते हैं। यथा विकारी या निर्विकारी बनने में, दैहिक बीमारियों आदि में। जब किसी देहधारी को देखकर हमारे अन्दर विकारी संकल्प चलते हैं, तो ग्रन्थियों से विकारी तत्व स्रवित होते हैं, जो समयान्तर में हमारे पतन का का कारण बन जाते हैं अर्थात् हमको काम विकार के बाध्य करते हैं और जब हम परमात्मा की याद में किसी आत्मा को आत्मिक दृष्टि से देखते हैं तो उस अनुसार प्रभाव होता है अर्थात जिसको देखते हैं, वह भी आत्मिक स्थिति का अनुभव करता है। हम जिस भावना से किसी आत्मा को देखते हैं, उसका तुरन्त ही उस पर प्रभाव होता है, उसकी प्रतिक्रिया होती है।

33. समकक्ष स्वभाव-संस्कार अपने समकक्ष स्वभाव-संस्कारों वाले व्यक्तियों को स्वत: आकर्षित करते हैं, जिनके आधार पर संगठन और विघटन होते हैं।

34. मनुष्य के संकल्पों के अनुसार वायब्रेशन्स प्रवाहित होते हैं, जो वातावरण का निर्माण करते हैं और उस वातावरण में आने वाले व्यक्तियों को भी प्रभावित करते हैं। इसीलिए बाबा कहते किसी विकारी को क्लास में नहीं बैठने दो, नहीं तो उसका वायब्रेशन दूसरों को भी प्रभावित करेगा।

35 मनुष्य से जो वायब्रेशन प्रवाहित होते वे एक दिशायी भी होते हैं तो चहुदिशायी भी होते हैं, जिनकी तुलना में बाबा ने लाइट-हाउस और सर्च-लाइट से की है।

36. जीवात्मा के संकल्पों से निर्मित वायब्रेशन्स का प्रभाव जड़, जंगम, चेतन तीनों को प्रभावित करता है और उन जड़ तत्वों का प्रभाव भी जीवात्मा को प्रभावित करता है। इसीलिए अन्न का प्रभाव मन पर और मन का प्रभाव अन्न पर पड़ता है। इसीलिए बाबा ने अन्न की परहेज के विषय में ध्यान रखने को कहा है और जब भोजन स्वीकार करते हैं तो दृष्टि देकर खाने को कहा है।

37 काम आत्मा का सबसे बड़ा शत्रु है क्योंकि काम वासना आत्मा की सबसे अधिक आत्मिक शक्ति को क्षीण करती है, इसीलिए द्वापर से आत्मा की कलायें तीव्रता से गिरती हैं।

38 ये सृष्टि कर्मक्षेत्र है, इसलिए कोई भी आत्मा कर्म के बिना इस कर्मक्षेत्र पर नहीं रह सकती। ऐसे ही कर्मातीत बनने के बाद कोई भी आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर नहीं रह सकती है।

39. जो जितना रुस्तम होता है, माया भी उससे उतना ही रुस्तम होकर लड़ती है, उतनी ही परीक्षायें आती हैं। इसलिए बाबा कहते हैं - परीक्षाओं में पास हो तब तो उसको रुस्तम कहा

जायेगा।

40. यथार्थ आत्मिक ज्ञान आत्मा को निर्भय, निर्संकल्प, निश्चिन्त बनाता है और अतीन्द्रिय सुख देने वाला होता है। परमात्मा ज्ञान का सागर है, इसलिए वह सदा निर्संकल्प, निर्भय, निर्वैर ... है, आत्माओं को ऐसा बनना है।

41. जीवात्मा जिसको याद करती है, जिसके पास रहती है, जिसको देखता-स्पर्श करता है, उसके गुण, संस्कार, स्वभाव एक-दूसरे पर अवश्य प्रभावित होते हैं परन्तु शक्तिशाली का प्रभाव, शक्तिहीन पर परिलच्छित होता है। ऐसे ही परमात्मा की याद से उसके गुण-संस्कार आत्माओं पर प्रभावित होते हैं परन्तु परमात्मा, आत्माओं के गुण-संस्कारों से प्रभावित नहीं होता है क्योंकि वह सर्वशक्तिवान, निराकार है।

42 आत्मा जैसा चिन्तन, अध्ययन करती है, उसका प्रभाव उसके ऊपर अवश्य पड़ता है और वह वैसा ही बन जाता है। इसलिए बाबा ने हमको सदा शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक रहने के लिए कहा है, सदा ज्ञान का चिन्तन करने के लिए कहा है।

मनुष्य ऑख, नाक, कान, त्वचा (स्पर्श), जिव्हा से जो भी ग्रहण करता है, उसका चिन्तन होता है और उसका प्रभाव उसके जीवन पर अवश्य ही पड़ता है अर्थात् वह उसके जीवन को प्रभावित करता है - ये अनादि-अविनाशी सत्य है। उसके अनुसार ही संकल्प और कर्म होते हैं, जिन पर ही जीवन की सफलता-असफलता का आधार होता है। इसलिए आध्यात्मिक पुरुषार्थी को अपनी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों से सदा शुभ ही ग्रहण करना चाहिए।

"दुख देते नहीं लेकिन ले तो लेते हो ना। व्यर्थ संकल्प चलने का कारण ही यह है कि व्यर्थ दुख ले लिया, सुन लिया तो दुखी हुए। सुनी हुई बात न चाहते भी मन में चलती है।... ये छोटी-छोटी अवज्ञायें मन को भारी बना देती हैं, इसलिए उड़ नहीं सकते। यह बहुत गुह्य गति है।" अ.बापदादा 17.12.89

43. सन्मार्ग पर चलने वाली हर आत्मा को सम्भावित खतरे या धोखे से बचने के लिए परमात्मा इशारा अवश्य देता है परन्तु जिसकी प्रभु-प्रीति सच्ची है और जो निश्चयबुद्धि है, वह उसको समझ लेता है और उससे बच जाता है। जो देहाभिमान के कारण निश्चय-संशय के झूले में झूलता है वह कब बच भी सकता और न भी बच सकता है।

"खान-पान की बहुत परहेज रखना है। किसी भी विकारी द्वारा प्राप्त, बनाया हुआ या साथ में खाना भी विकारों की ओर प्रेरित करता है।" सा.बाबा 20.11.68

"अपने दिल में दूसरों के प्रति जैसी भावना होती वैसा ही दूसरों से रिटर्न मिलता है। जैसे गुम्बज में जो आवाज़ करते वही आवाज वापस आता है।" अ.बापदादा 7.3.90

"शिवबाबा की याद में न रहकर कोई काम करते तो वह पाप बन जाता है।"

सा.बाबा 26.7.69 रिवा.

44. हर तत्व अपने मूल तत्व की ओर स्वत: प्रवाहित होता है, जैसे आग की लौ सदा ही सूर्य की ओर उठती है और जल सागर की ओर सदा ही बहता है। इसी तरह आत्मा का आकर्षण सदा ही परमात्मा की ओर है, उसकी याद आत्मा को स्वत: ही आती है, यदि कोई बन्धन नहीं है। सारा पुरुषार्थ इस देह के बन्धन से मुक्त होने का है।

45. कुछ वैज्ञानिकों और ज्ञान-मार्ग के पथिकों में भी ऐसी अभिधारणा है कि अभी जो गीता सुनाई जा रही है या हम जो संकल्प करते हैं तो उसके वायब्रेशन अनन्त काल तक वातावरण में रहते हैं और उसके आधार पर ही शास्त्रों की रचना होती है। परन्तु सृष्टि का अटल सिद्धान्त है कि जो बना है, वह नष्ट होगा और जो नष्ट हो रहा है वह फिर बनेगा, इसलिए कोई भी वायब्रेशन अनन्त काल तक वातावरण में नहीं रह सकता। यदि वही पूर्व का वायब्रेशन वातावरण में विद्यमान है तो तो जिन वायब्रेशन की अभी रचना हो रही है, वे कहाँ जायेंगे, क्या होगा, मिटेंगे कब और कैसे ? वास्वतिकता तो ये है कि कल्पान्त में प्राय: सभी द्वापर-कलियुग के वायब्रेशन वातावरण से प्राय: लोप हो जाते हैं और सभी तत्व अपने मूल रूप में आ जाते हैं। द्वापर युग में शास्त्रों आदि की रचना आत्मायें अभी जो संस्कार अपने में भरती हैं, उसके आधार पर करती हैं। ड्रामा प्लेन अनुसार द्वापर से जब दुख आदि की घटनायें शुरू होती हैं तो मनुष्य शान्ति के लिए एकान्त में जाकर रहते हैं और उस शान्त वातावरण में उनके अभी के ज्ञान के सुसुप्त संस्कार जाग्रत होते हैं, जिनके आधार पर गीता आदि शास्त्रों की रचना होती है। परन्तु ये भी सत्य है कि मनुष्य जो संकल्प करता है, उसके वायब्रेशन बहुत समय तक वातावरण में रहते अवश्य हैं परन्तु अनन्त काल तक नहीं।

इस विश्व-नाटक में हर घटना एक निश्चित समय के बाद चक्रवत पुनरावृत्त होती है और 5000 वर्ष के बाद अणु-परमाणु सहित हू ब हू पुनरावृत्त होता है।

यह विश्व एक नाटक है, सभी आत्मायें इसमें पार्टधारी हैं। इसमें न कोई किसका अपना है और न पराया है, न कोई मित्र है और न ही कोई शत्रु है, न कोई कुछ दे सकता है और न ही कोई कुछ ले सकता है। न किसी ने कुछ दिया है और न ही किसी ने हमारा कुछ लिया है। यह सब जो हो रहा है, वह सब अभिनय मात्र है। दाता एक परमात्मा ही है, उसने ड्रामा अनुसार जो दिया है, वही आत्माओं के लिए कल्याणकारी है।

यह विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है। ये विश्व नाटक हू ब हू पुनरावृत्त होते भी इसमें हर आत्मा के पुरुषार्थ और प्रालब्ध अर्थात् कर्म और फल के विधान का अद्भुत

समन्वय है।

निराकार शिवबाबा पक्षपात रहित सर्व का हितकारी है, आकारी फरिश्ता स्वरूप ब्रह्मा बाबा भी पक्षपात रहित सर्व का हितकारी है और ये विश्व-नाटक भी पक्षपात रहित सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। इस सत्य को समझकर तीनों के गुण कर्तव्यों में निश्चयबुद्धि होकर बाप समान बनना है।

ड्रामा के ज्ञान की यथार्थ धारणा वाला सदा साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखता है और वह इसकी किसी भी घटना से लिप्त नहीं होता है। साक्षी स्थिति मानव जीवन की परम प्राप्ति है और संगम पर परमात्मा का परम वरदान है।

"जो कुछ भी ड्रामा में होता है, उसमें कल्याण ही भरा हुआ है। अगर ये स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी। ... साक्षीपन की सीट शान की सीट है, इससे परे न हो तो परेशानी खत्म हो जायेगी। .. नॉलेजफुल बाप के बच्चे बन गये, त्रिकालदर्शी बन गये तो परेशान कैसे हो सकते हैं?" अ. बापदादा 7.3.81

"एक होता है नॉलेज के आधार पर प्वाइन्ट देना, दूसरा होता है - अनुभवी मूर्त होकर प्वाइन्ट देना। ड्रामा की प्वाइन्ट के जो अनुभवी होंगे, वह सदा साक्षीपन की स्टेज पर स्थित होंगे। एकरस, अचल और अडोल होंगे।" अ. बापदादा 11.3.81

"ऐसे ही ड्रामा में भी पूरा-पूरा निश्चय चाहिए। सफलता और समस्या दोनों प्रकार की बातें ड्रामा में आती हैं लेकिन समस्या के समय निश्चयबुद्धि की निशानी है - समाधान स्वरूप।... समस्या का काम है आना, निश्चयबुद्धि आत्मा का काम है समाधान स्वरूप से समस्या को परिवर्तन करना। क्योंकि आप हर ब्राह्मण आत्मा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही माया को चेलेन्ज किया है। ... जब चेलेन्ज किया है तो माया सामना तो करेगी ना! भिन्न-भिन्न् समस्याओं के रूप में आपकी चेलेन्ज को पूरा करने के लिए आती है। समस्या आपके लिए नई बात नहीं है - नथिंग न्यू। अनेक बार विजयी बने हैं, बन रहे हैं और आगे भी बनते रहेंगे। यह है ड्रामा में निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा की निशानी।" अ.बापदादा 14.11.02

ये विश्व-नाटक एक खेल है और यह खेल (ड्रामा) सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है, इस सत्य का निश्चय होने से ये सदा सुखमय अनुभव होगा, निश्चिन्त और निर्भय रहेंगे, अथकपन का अनुभव होगा। जो इस नाटक को यथार्थ रीति जानकर, उसके सत्य को अनुभव करके इसे देखता है और पार्ट बजाता है, उसको ये परमानन्दमय अनुभव होता है और उसके जीवन की सफलता में परम सहयोगी है।

"अनुभवी जरूर बनो। जितना अनुभवी मूर्त होंगे, उतना फाउण्डेशन पक्का होगा। माया हिला

नहीं सकेगी। किसी भी प्रकार के विघ्न व समस्या अभी खेल के समान अनुभव होनी चाहिए। वार नहीं है, खेल है। तो खेल समझने से खुशी-खुशी पार कर लेंगे।... ड्रामा में पार्टधारी होने के कारण कोई भी सीन सामने आती है तो ड्रामा के हिसाब से सब खेल है। यह स्मृति रहे तो एकरस रहेंगे, हलचल नहीं होगी।" अव्यक्त बापदादा 4.1.82 पार्टी

ये विश्व-नाटक एक प्रेम कहानी है, सतयुग-त्रेता में आत्माओं का आत्माओं से शुद्ध-पवित्र प्रेम रहता है जिसके कारण वह प्रेम सुखदायी होता है, द्वापर-कलियुग में देहाभिमान रूपी अज्ञानता के कारण उसमें अपवित्रता और स्वार्थ की प्रवेशता हो जाती है, जिसके कारण वह कब सुखदायी और कब दुखदायी हो जाता है और अन्ततः परम दुखमय हो जाता है। संगम पर परमपिता परमात्मा आकर हम आत्माओं को ज्ञान देता है, जिससे आत्माओं का परमात्मा से प्रेम जुट जाता है, जो आत्मा की चढ़ती कला का आधार होता है और सदा सुखदायी है।

ये प्रेम न केवल मनुष्यात्माओं में होता है बल्कि पशु-पक्षी भी इस प्रेम कहानी में भागीदार हैं और वे भी प्रेम का व्यवहार करके अपने प्रेम को प्रगट करते हैं। पशु-पक्षी भी न केवल आपस में ही प्रेम करते बल्कि मनुष्यात्माओं के प्रेम को भी वे अनुभव करते और उस प्रेम के अनुसार उसका प्रत्युत्तर प्रेम से देते हैं।

"ज्ञान कितना सहज है परन्तु पूरी धारणा नहीं कर सकते हैं। बाबा को देखो ड्रामा पर कितना निश्चय है! जो पास हुआ सो ड्रामा। ऐसे नहीं कहना चाहिए ऐसा होता तो यह न करते ... आगे के लिए भल पुरुषार्थ करो, जो कोई भूल न हो।" सा.बाबा 22.2.69 रिवा.

"निश्चयबुद्धि की निशानी है हर दृश्य को निश्चित जानकर सदा निश्चिन्त रहना। उसको क्यों, क्या और कैसे की चिन्ता नहीं होगी। फरिश्तेपन की लास्ट स्टेज है - सदा शुभचिन्तक और निश्चिन्त।" अ.बापदादा 7.2.76

"दुनिया पुरानी हो गई है, नाटक को पुराना नहीं कहेंगे। नाटक तो कब पुराना होता ही नहीं। नाटक तो नित्य नया है। यह तो चलता ही रहता है। बाकी दुनिया पुरानी होती है। हम एक्टर्स तमोप्रधान दुखी हो जाते हैं।" सा. बाबा 3.2.69 रिवा.

"कोई के पार्ट में चेन्ज हो नहीं सकता। यह बना-बनाया खेल है। यह भी किसकी बुद्धि में नहीं बैठता है। बुद्धि में तब बैठे जब पवित्र होकर समझें। अच्छी रीति समझने के लिए सात रोज की भट्ठी है।" सा.बाबा 1.9.71 रिवा.

जिसको ये निश्चय हो जायेगा कि ये विश्व-नाटक अब पूरा हो रहा है, अब घर जाना है, उसे घर जाने की खुशी अवश्य होगी और वह घर जाने की तैयारी अवश्य ही करेगा।

"ब्राह्मणों का मुख्य स्थान कौनसा है, जहाँ बुद्धि को सहज स्थिर कर सको। वह स्थान है - साक्षी दृष्टा। ड्रामा की ढाल व ड्रामा के पट्टे पर हर कर्म और संकल्प चलने के लिए यह साक्षी व दृष्टापन की अवस्था होनी चाहिए।" अव्यक्त बापदादा 19.4.73

आध्यात्म मार्ग और सत्य पथ के पथिक को, ज्ञानी पुरुष को कब इस सत्य को भूलना नहीं चाहिए कि ये सृष्टि सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी अनादि-अविनाशी नाटक है, जो कल्प-कल्प 5000 वर्ष के बाद पुनरावृत्त होता है। इस नाटक में हम कोई भी कर्म करते, संकल्प करते, उसको कोई देखे न देखे, जाने न जाने परन्तु परमात्मा और प्रकृति उसको जानते ही हैं और सृष्टि के नियमानुसार प्रकृति द्वारा उसको उसका फल अवश्य मिलता ही है। इस सत्य को जानकर, उसका अनुभव कर निश्चय कर मनुष्य को सत्य पथ से कभी विचलित नहीं होना चाहिए।

जिसको ये ज्ञान और निश्चय होगा कि ये खेल है, वही साक्षी होकर इस विश्व-नाटक का आनन्द अवश्य लेगा।

इस विश्व-नाटक में समय-समय के हीरो या विशेष पार्टधारी अलग होते हैं, जिस अनुसार उनको मान-शान, पद, साधन-सम्पत्ति प्राप्त होती है, समयानुसार उनको स्वीकार करना और व्यवहार करना ही यथार्थ ज्ञान है।

हम स्थूल या सूक्ष्म ज्ञानेन्द्रियों से जो भी ग्रहण करते हैं, उसका कारण और उनका जीवन पर प्रभाव (Cause Effect) का पूरा ज्ञान और इस विश्व-नाटक के ज्ञान के जो राज़ परमपिता परमात्मा ने हमको समझाये हैं, उनका पूरा ज्ञान, अनुभव और निश्चय होगा तब ही हमारे कार्य उनके अनुरूप होंगे और हमारा ये जीवन सफल होगा, जीवन का सच्चा सुख अनुभव होगा और दिल से निकलेगा "वाह बाबा वाह, वाह ड्रामा वाह, वाह मेरा जीवन वाह, वाह मेरा भाग्य वाह"।

इस विश्व-नाटक के सब रहस्यों को जानना तो मनुष्य के वश की बात नहीं है परन्तु जैसे डेगरे के एक चावल को देखकर सारे डेगरे का पता लग जाता है, उसी प्रकार इसके कुछ मुख्य2 रहस्यों के अध्ययन से इसकी वास्तविकता को समझकर इसका सुख अनुभव किया जा सकता है। अपने मूल स्वरूप में स्थित आत्मा ही इनका सहज स्वभाविक अनुभव करती है और कर सकती है।

"हर एक का वही पार्ट बजता है, जो कल्प-कल्प बजता है। उसमें कोई फर्क नहीं हो सकता। यह सारा बना-बनाया खेल है। कोई पूछते हैं - पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध बड़ी ? अब पुरुषार्थ बिगर प्रालब्ध मिलती नहीं है। ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ से ही प्रालब्ध मिलती है।"

सा.बाबा 27.12.04 रिवा.

"जब कुछ ऐसी बात हो जाती है तो मनुष्य पिछाड़ी में कह देते हैं जो ईश्वर की इच्छा। अब तुम थोड़ेही ऐसे कहेंगे। तुम कहेंगे - भावी ड्रामा की। तुम ईश्वर की भावी नहीं कहेंगे। ईश्वर का भी ड्रामा में पार्ट है। यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है - यह बाप ही समझा सकते हैं। नॉलेजफुल भी बाप है। मनुष्य समझते हैं कि वह सभी के दिलों को जानते होंगे। परन्तु हम जो पाप कर्म करते हैं, उसका दण्ड तो जरूर हमको ही मिलेगा ना। बाप थोड़ेही बैठ दण्ड देगा। यह तो ऑटोमेटिक ड्रामा बना हुआ है, जो चलता ही रहता है।"

सा.बाबा 19.2.69 रिवा.

"ड्रामा में जो होना है, सो होगा ही। समझो ये छत गिर जाती है ... इसमें जरा भी हिलने की दरकार नहीं है। ... एक्सीडेण्ट आदि तो ढेर होते होते रहते हैं, फिर परमात्मा किसकी रक्षा करते हैं क्या ? यह सब ड्रामा में नूँध है। ... जो ड्रामा को नहीं जानते, वे देह को याद कर आंसू बहाते हैं। वे कभी शिवबाबा को याद कर नहीं सकते।"

सा.बाबा 26.6.06 रिवा.

4. सृष्टि-चक्र और पुरुषोत्तम संगमयुग एवं संगमयुग की प्राप्तियों का ज्ञान तथा अनुभव

बाबा ने सारे सृष्टि-चक्र का ज्ञान दिया है, कैसे ये सृष्टि का चक्र सतयुग से लेकर कलियुग तक चलता है, कैसे सतयुग में आत्मायें सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी होते हैं और कैसे सतयुग से कलायें गिरते-गिरते कलियुग के अन्त में कलाहीन नर्क बन जाता है। फिर कैसे ज्ञान सागर, पतित-पावन, परमपिता परमात्मा आकर ज्ञान देकर सर्व आत्माओं को पावन बनाते हैं अर्थात् चढ़ती कला में ले जाते हैं, नर्क से स्वर्ग की रचना रचते हैं अर्थात् नर्क से स्वर्ग की कलम लगाते हैं अर्थात् कलाहीन आत्मओं को फिर से सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बनाते हैं। बाबा का ये दिव्य कर्तव्य संगमयुग पर ही होता है, इसलिए इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है।

सृष्टि-चक्र के ज्ञान होने से ये अनुभव होगा कि हमारे लिए वर्तमान समय संगम युग का समय है अर्थात् हमारे लिए कलियुग दुख का समय पूरा हुआ, सतयुग सुख का समय आने वाला है। जब इस सत्य का निश्चय होगा तो हमारी स्मृति में रहेगा कि अभी हमारा दुख का समय पूरा हुआ, अब सुख का समय सतयुग आने वाला है तो सदा खुशी रहेगी और जहाँ खुशी होगी वहाँ किसी प्रकार की ग्रहचारी आ नहीं सकती।

सृष्टि-चक्र के ज्ञान से हमको स्मृति में रहेगा - अब हम आत्माओं के वापस घर जाने का समय है। जब घर वापस जाना है तो घर की याद सहज रहेगी, घर जाने के लिए क्या-क्या

तैयारी करनी है अर्थात् आत्मायें परमधाम से बिगर देह के रहती हैं, इसलिए अभी हमको देह और देह की दुनिया से बुद्धियोग निकालने का पुरुषार्थ स्वत: चलेगा, जिससे देहाभिमान छूटेगा और आत्मा अपने मूल स्वरूप में सहज स्थित हो जायेगी, जो स्थिति परम-शान्त और परमानन्दमय है।

सृष्टि-चक्र का ज्ञान और उसकी धारणा होगी तो उससे ये अनुभव होगा कि ये कल्प का संगम युग है, अभी ये पुरानी दुनिया विनाश होने वाली है और नई दुनिया आने वाली है तो पुरानी दुनिया से वैराग्य आयेगा और उसका बुद्धि से त्याग होगा और जब पुरानी दुनिया से बुद्धियोग हटेगा, तब ही नई दुनिया से बुद्धियोग लगेगा और दैवी गुणों एवं संस्कारों की धारण स्वभाविक होगी।

सृष्टि-चक्र के विषय में निश्चय हो जाता है और निश्चय होता कि स्वर्ग आने वाला है और कलियुग विनाश होने वाला है तो वैसी ही अभिधारणा बन जाती है और जैसी धारणा होती है वैसे कर्म स्वत: होंगे, उस अनुसार स्वभाव-संस्कार स्वत: होते जायेंगे। जैसे कर्म-संस्कार होते हैं वैसा ही जीवन बन जाता है। इस ईश्वरीय ज्ञान की सफलता ही है आसुरी जीवन से दैवी जीवन में परिवर्तन हो जाना। बाबा ने यह भी बताया है कि सतयुगी स्वराज्य तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। सतयुग आने वाला है तो भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से आत्मा स्वत: मुक्त हो जाती है वर्तमान में यथार्थ पुरुषार्थ सहज और स्वत: हो जाता है।

बाबा ने 76 के विनाश की चर्चा के विषय में 77 में अव्यक्त मुरलियों में ऐसे महावाक्य उच्चारे हैं - यदि तुम्हारे अन्दर ही संशय होगा, भय होगा तो ही मनुष्य पूछेंगे और तुम यथार्थ उत्तर नहीं दे सकेंगे परन्तु बाबा ने जो कहा, उसके निश्चय में आप होंगे, उस निश्चय के अनुरूप तुमने पुरुषार्थ किया होगा तो तुम निश्चिन्त होंगे और कोई की ताकत नहीं जो आपसे पूछे। बल्कि आपके निश्चय और नशे को देखकर वह स्वयं परिवर्तन हो जायेगा।

"भल उतरती कला तो सतयुग-त्रेता में भी है, कलायें तो कम होती हैं परन्तु दुख नहीं होता है क्योंकि प्रालब्ध भोग रहे हैं। भल कहा जाता है सतयुग-त्रेता में प्रारब्ध भोग रहे हैं परन्तु डिटेल में आयेंगे तो सीढ़ी थोड़ा-थोड़ा उतरना होता है। बाकी इतना जरूर कहेंगे कि दुख तब होता है जब तुम तमोप्रधान बनते हो।" सा.बाबा 21.5.71 रिवा.

"तुम से कोई पूछेंगे तुमको क्या मिलता है ? जिसको बड़े2 ऋषि-मुनि आदि कहते थे कि हम रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अन्त को नहीं जानते हैं सो हम जानते हैं। रचयिता बाप के सिवाए रचना के आदि-मध्य-अन्त को कोई समझा न सके।"

सा.बाबा 3.6.71 रिवा.

"बच्चे, सर्वोत्तम ऊंच से ऊंच कमाई करने का यही संगम का समय है। अभी बाप रत्नों से झोली भरते हैं। इसे सम्भालकर धारण करना है।... बाप की श्रीमत पर चलकर सर्वोत्तम बनना है।" अ.बापदादा 14.10.71

"अतीन्द्रिय सुख संगम पर ही गाया जाता है, जब बाप आते हैं तो उनका संग होता है तो सुख भासता है।" सा.बाबा 16.8.69 रिवा.

"ब्राह्मण जीवन है मजे की जीवन, संगमयुग है मजे का युग। बोझ उठाने का युग नहीं है, बोझ उतारने का युग है। तो चेक करो, अपनी तकदीर की तस्वीर नॉलेज के आइने में अच्छी तरह से देखो।" अ.बापदादा 30.11.99

"जरूर वहाँ का कायदा होगा। बच्चा किस आयु में आयेगा। वहाँ सब रेग्यूलर चलता है ना। वह आगे चलकर महसूस होगा। ... वहाँ 150 वर्ष की आयु होती है, तो बच्चा तब आयेगा जब आधा लाइफ से थोड़ा आगे होंगे। ... पहले बच्चे की, फिर बच्ची की आत्मा आती है। विवेक कहता है पहले बच्चा आना चाहिए। पहले मेल, पीछे फीमेल। आठ-दस वर्ष की देरी से आयेंगे। ... रस्म-रिवाज भी जरूर सुनाते जायेंगे। आगे चलकर बहुत सुनायेंगे और सब साक्षात्कार होते रहेंगे।" सा.बाबा 28.6.04 रिवा.

"तुम बेफिकर बादशाह बन जाते हो। ... जिनको कोई भी फिकर होगा, वे बेफिकर बादशाही का मजा नहीं ले सकेंगे। विश्व की राजाई तो 20 जन्म होगी लेकिन यह बेफिकर बादशाही और दिलतख्त इस एक ही युग में एक जन्म के लिए ही मिलता है।"

अ.बापदादा 25.12.89

५. *त्रिलोक का ज्ञान*

अभी बाबा ने हमको तीनों लोकों का ज्ञान दिया है और तीनों लोकों का राज़ समझाया है, जिससे हम तीनों लोकों में भ्रमण कर सकते हैं अर्थात् तीनों लोकों का आनन्द ले सकते हैं। अभी ही इस सत्य ज्ञान के आधार पर हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति का सच्चा सुखद अनुभव होता है, जो परमधाम या ब्रह्मलोक की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से भी अति श्रेष्ठ और सुखमय है।

ब्रह्मलोक है आत्माओं की दुनिया, स्थूल वतन है जीवात्माओं की दुनिया और सूक्ष्म वतन है सूक्ष्म देहधारी देवताओं या फरिश्तों की दुनिया।

ब्रह्मलोक

त्रिलोक्य के ज्ञान से जब ये बुद्धि में रहेगा कि हमारा घर ब्रह्मलोक है और ये साकार लोक पार्ट बजाने के लिए एक ड्रामा स्टेज है, तो घर जाने की खुशी होगी और यह जीवन

सुखमय प्रतीत होगा।

ब्रह्मलोक के ज्ञान में निश्चय से ये स्मृति में रहेगा कि हम आत्मायें ब्रह्म लोक की रहने वाली हैं और इस साकार लोक में पार्ट बजाने आयी हैं और अब हमको वापस घर जाना है, तो इस साकार दुनिया से लगाव टूट जायेगा और जहाँ जाना है, वहाँ सहज बुद्धि जायेगी, जिससे वैसे गुण और संस्कारों की धारणा सहज होगी।

ब्रह्मलोक भूमण्डल के चारो ओर है, केवल एक ही तरफ नहीं है। चित्र तो बाबा ने एक नक्शे मात्र दिखाये हैं, जिससे उसकी वास्तविकता को बुद्धि से समझा जाता है। जैसे दीवाल पर टंगे नक्शे में दिखाते हैं कि उत्तर दिशा ऊपर है, दक्षिण दिशा नीचे की तरफ है परन्तु उनकी वास्तविकता अलग है। ब्रह्मलोक सभी आत्माओं का घर है, इसलिए सभी योनि की आत्मायें ब्रह्मलोक में जाती हैं और जाकर अपने-अपने सेक्शन में निवास करती हैं। भले, बाबा ने अन्य योनियों की आत्माओं के विषय में विस्तार से नहीं बोला है परन्तु बाबा ने कहा है - वह है आत्माओं की दुनिया, सभी आत्माओं का घर। जब वह सभी आत्माओं का घर है तो सभी आत्माओं को वहाँ अपने घर जाना चाहिए और जाती हैं। कल्पान्त में सभी आत्मायें अपने घर ब्रह्मलोक में जाती हैं।

"तुम आत्माओं का घर है मुक्तिधाम अर्थात् निराकारी दुनिया।... उसको कहेंगे स्वीट साइलेन्स होम। वहाँ आत्मायें सुख-दुख दोनों से न्यारी रहती हैं। हम आत्मायें स्वीट साइलेन्स होम की रहने वाली हैं, यहाँ पार्ट बजाने आते हैं - यह बात अच्छी रीति पक्का करना है।"

सा.बाबा 17.11.05 रिवा.

सूक्ष्मवतन

सूक्ष्मवतन के ज्ञान के साथ बाबा ने त्रिमूर्ति अर्थात् ब्रह्मा-विष्णु-शंकर का ज्ञान भी दिया है। सूक्ष्म आकारी तीन देवतायें क्या हैं और उनका इस विश्व-नाटक में क्या अस्तित्व और कर्तव्य है, वह भी बताया है। हर आत्मा स्वयं ही स्वयं के लिए ये तीनों कर्तव्य कैसे करती है, वह भी बताया है।

सूक्ष्मवतन के ज्ञान से अभी कैसे ब्रह्मा बाबा सूक्ष्म वतन में फरिश्ता स्वरूप में है और कैसे कर्तव्य कर रहा है, वह सब बुद्धि में रहेगा तो वैसे गुण-संस्कार धारण करने और कर्तव्य करने में सहज होगा। कैसे बाबा सर्व आत्माओं के कल्याणार्थ कर्तव्य कर रहा है, उसका अपना-पराया कोई नहीं है, वह सब बुद्धि में रहेगा। इसलिए ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बनने का पुरुषार्थ सहज होगा, उसके समान गुण-संस्कार सहज धारण होंगे। बाबा सूक्ष्मवतन से कर्तव्य कर रहा है ऐसे ही सभी आत्माओं को सूक्ष्म वतन से होकर ही मूल वतन जाना होगा। बाबा ने

कहा है सभी आत्माओं के सूक्ष्म शरीर ब्रह्मा बाबा के समान हैं, किस का पार्ट अधिक समय वहाँ रहकर सेवा करने का है और किसी को केवल वहाँ से पास करना होता है परन्तु सूक्ष्म वतन में जाना सभी को है।

सतयुग में भी सूक्ष्मवतन तो अवश्य होगा परन्तु न उसका ज्ञान होगा और न वहाँ कोई पार्ट चलेगा अर्थात् अभी की तरह कोई वहाँ आये-जायेगा नहीं। जैसे अभी आते-जाते हैं, वैसा पार्ट सारे कल्प में नहीं होगा। ये सब पार्ट अभी संगम पर ही चलता है क्योंकि अभी बाबा ने उसका ज्ञान दिया है और वहाँ से सारा कर्तव्य कर और करा रहा है। सभी आत्माओं को सूक्ष्म वतन से पास होकर ही मूलवतन जाना होता है। सूक्ष्म वतन तक हर आत्मा को सूक्ष्म शरीर होगा। जब सूक्ष्म वतन की सीमा को पार कर मूल वतन में प्रवेश करेंगी तब सूक्ष्म शरीर विलीन हो जायेगा। आते समय भी आत्मायें आयेंगी तो उसी वतन से लेकिन ऊपर से आते समय सूक्ष्म शरीर होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है क्योंकि आत्मायें अपने मूल स्वरूप से नीचे उतरती हैं। कोई भी तत्व वा स्थान (Region) कब विनाश नहीं होता है।

"मूलवतन, सूक्ष्मवतन को भी तुम समझ गये हो। तुम जानते हो सूक्ष्मवतन से होकर जब आते हो तो सूक्ष्मवतन का ध्यान ही नहीं रहता है। सिर्फ तुम ब्राह्मण ही यह नॉलेज पाते हो।"

सा.बाबा 17.6.69 रात्रि क्लास रिवा.

स्थूल वतन

सारा खेल इस स्थूल वतन में चलता है। यहाँ पर सभी आत्मायें पंच तत्वों से निर्मित देह धारण कर पार्ट बजाती हैं। प्रकृति और पुरुष का खेल इस सृष्टि रंगमंच पर चलता है, जो अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा।

ये विश्व-नाटक एक अनादि-अविनाशी नाटक है। ये सारा नाटक इस स्थूल वतन में ही चलता है। सारी हिस्ट्री-जाग्राफी इस स्थूल वतन की ही है। जब आत्मा मूल वतन से इस स्थूल वतन में आती है और 5 तत्वों से बनी ये देह धारण करती है तब ही उसकी चेतनता का आभास होता है, संकल्प और कर्म होते हैं। जब कल्पान्त में नाटक का चक्र परिवर्तन होता है तो सभी आत्माओं को पावन बनकर जैसे घर ब्रह्मलोक से आये थे वैसे ही जाना होता है। सारे सम्बन्ध-सम्पर्क, प्राप्ति-अप्राप्ति यहाँ पर पार्ट मात्र है। इसीलिए इस विश्व को एक मुसाफिर खाना, ड्रामा स्टेज, आदि आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। बाबा ने अभी त्रिलोक के विषय में सारा ज्ञान दिया है। इस स्थूल वतन के यथार्थ ज्ञान होने से ये स्मृति में रहेगा कि हम पार्टधारी हैं, हमको पार्ट पूरा करके वापस घर जाना है, यहाँ अपना-पराया कोई नहीं है, यह सब पार्ट मात्र है तो उस स्मृति से यहाँ लगाव नहीं रहेगा और एक बाप, घर और नई दुनिया से

बुद्धियोग सहज लग जायेगा।

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा के रास्ता बताये बिना कोई भी आत्मा न पावन बन सकती है और न वापस घर जा सकती है। ये पावन बनाने का कार्य भी परमात्मा को संगमयुग पर यहाँ आकर ही करना होता है।

कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध का सारा खेल इस स्थूल वतन में ही चलता है। सूर्य, चाँद, तारे आदि सब इस स्थूल वतन में ही होते हैं, जो इस ड्रामा स्टेज को प्रकाशित करते हैं। ये स्थूल वतन आकाश तत्व से आवृत है, उसके चारो तरफ सूक्ष्मवतन और उसके चारो ओर मूलवतन या ब्रह्मलोक है, जो असीम है। परमात्मा सहित सभी आत्माओं को इस स्थूल वतन में पार्ट बजाने आना ही होता है और पार्ट बजाकर जाना ही होता है, इसलिए इसे आने-जाने का खेल भी कहा जाता है। परमात्मा का पार्ट कल्पान्त में ही चलता है।

इस स्थूल वतन में ही सभी आत्माओं को अपने पार्ट और कर्मानुसार सुख-दुख भोगना होता है। मूलवतन में तो कोई अनुभूति होती नहीं है परन्तु स्थूल वतन और सूक्ष्म वतन में अनुभूति होती है। सूक्ष्म वतन में मूवी पार्ट चलता है, वहाँ संकल्प होता है परन्तु आवाज़ नहीं होता है।

स्थूल वतन, सूक्ष्म वतन की सीमा है परन्तु ब्रह्म महतत्व असीम है क्योंकि स्थूल वतन सूक्ष्म वतन से आवृत है और सूक्ष्म वतन ब्रह्म महतत्व से आवृत है।

६. *कल्प-वृक्ष का ज्ञान*

ये सृष्टि एक वृक्ष के समान है, जिसका तना आदि सनातन देवी-देवता धर्म है और शाखायें एवं प्रशाखायें अन्य सभी धर्म हैं। गीता में इस सृष्टि की तुलना एक उल्टे वृक्ष से की गई है, जिसका बीज परमपिता परमात्मा ऊपर परमधाम में रहता है और ये वृक्ष नीचे वृद्धि को प्राप्त होता है। परमात्मा बागवान भी है तो माली भी है, जो इसकी कलम लगाने आता है। हम सब भी परमात्मा के साथ माली हैं और परमात्मा के बगीचे के फूल हैं।

कल्प वृक्ष के ज्ञान के निश्चय से ये स्मृति में रहेगा कि परमपिता परमात्मा इसका बीज है और हम आत्मायें इस कल्प वृक्ष की जड़ें एवं तना हैं, हमारे ऊपर इसका सारा आधार है। जब आत्मा को अपने उत्तरदायित्व का ऐसा ज्ञान होता है तो उसको निभाने के लिए स्वत: बुद्धि में चिन्तन चलता है और उस अनुरूप कर्म-संस्कार बन जाते हैं। उत्तरदायित्व का आभास आत्मा को शक्ति प्रदान करता है। बाबा ने कहा है ये जिम्मेवारी का ताज ही आत्मा को ताजधारी बनाता है।

जब ये ज्ञान और निश्चय होगा कि हम आत्मायें कल्प-वृक्ष की जड़ में बैठे हैं, सर्व आत्माओं के पूर्वज हैं, तो बड़प्पन के संस्कार स्वत: जाग्रत होंगे और अन्य दुखी आत्माओं के प्रति रहम जाग्रत होगा और उस अनुसार कर्म-संस्कार जाग्रत होंगे।

कल्प वृक्ष के ज्ञान में बाबा ने डबल-सोल के पार्ट का, अनेक धर्मों की स्थापना का रहस्य, सनातन देवी-देवता धर्म की यथार्थता का ज्ञान दिया है। इस कल्प वृक्ष के ज्ञान से सर्व धर्म की आत्माओं के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना जाग्रत होती है और विश्व-बन्धुत्व की भावना का निर्माण होता है, जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म की विशेषता है और मूल अभिधारणा है। विश्व-बन्धुत्व की भावना जाग्रत होती है, जो भारतीय सभ्यता का प्राण है।

कल्प वृक्ष के ज्ञान से ही यह पता पड़ता है कि अभी इस वृक्ष की कलम लग रही है। जब कलम लग जाती है तो पुरानी डाली को काट दिया जाता है। इसी तरह इस कल्प वृक्ष की कलम लगने के बाद पुरानी दुनिया का विनाश अवश्यम्भावी है अर्थात् होना ही है, इसलिए इससे ममत्व निकाल जाता है।

दुनिया में विभिन्न धर्मों में अनेक मतभेद हैं, उसके कारण का भी पता पड़ता है। दुनिया में दुख-अशान्ति क्यों और कैसे है, उसकी भी जानकारी होती है।

कल्प-वृक्ष के ज्ञान से हमको अपने धर्म-वंश का पता चलता है और उस पर निश्चय होने से अपने धर्मवंश के अनुरूप धारणायें स्वत: ही आने लगती हैं अर्थात् हमारे दैवी स्वभाव-संस्कार जाग्रत होने लगते हैं, जिससे हमारे कर्मों में परिवर्तन आता है।

कल्प वृक्ष के लिए गायन है कि जो इसके नीचे बैठता है, इसकी छाया में बैठता है, उसकी सर्व मनोकामनायें स्वत: पूर्ण हो जाती है। इस सत्य का अभी ज्ञान हुआ है और जब उस पर पूरा निश्चय हो जाता है तो आत्मा निश्चय के साथ इस कल्प वृक्ष के नीचे बैठते हैं अर्थात् अपनी बुद्धि में इसका यथार्थ ज्ञान रखकर चलते हैं तो हमारी सर्व मनोकामनायें पूर्ण हो जातीहै।

पश्चिम के धर्मों के विस्तार होने वाले धर्मपिताओं का जन्म भारत के पश्चिम में और पूर्व की ओर विस्तार को पाने वाले धर्मपिताओं का जन्म भारत के पूर्व में ही हुआ है और कल्प-वृक्ष में भी वे शाखायें उसी दिशा में दिखाई गई हैं। ये भी ड्रामा का एक राज़ है।

"अभी तुम रचयिता बाप और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। बाबा झाड़ का भी राज़ समझाते हैं और ड्रामा का राज़ भी समझाते हैं। ... सब भगवान के बच्चे हैं तो सब स्वर्गवासी होने चाहिए परन्तु सब तो स्वर्गवासी होते नहीं हैं। सिर्फ देवतायें ही स्वर्गवासी होते हैं।"

सा.बाबा 10.7.06 रिवा.

७. कर्मो का ज्ञान

"तुम बच्चों में कुदृष्टि, क्रोध आदि कुछ नहीं होना चाहिए। अपना ही नुकसान करते हैं। कुदृष्टि होती है तो उसका भी वायब्रेशन आता है। दूसरे को भी कशिश होती है। ... अब बाप बच्चों को कर्म-अकर्म-विकर्म की गति भी समझाते हैं। ... इसलिए बाबा बार-बार समझाते हैं ताकि कोई ऐसे न कहे कि हमको कोई ने समझाया नहीं।"

सा.बाबा 2.2.02 रिवा.

कर्म सिद्धान्त

ये विश्व-नाटक का सारा खेल कर्म-कर्मफल-कर्म अर्थात् पुरुषार्थ-प्रालब्ध-पुरुषार्थ या क्रिया-प्रतिक्रिया के सिद्धान्त पर आधारित सतत गतिशील है, इसलिए इस सृष्टि को कर्मक्षेत्र कहा गया है। कोई भी आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर कर्म के बिना रह नहीं सकती। जीवन को सुखी बनाने के लिए कर्म के नियम-सिद्धान्त को जानना परमावश्यक है। जो कर्म के नियम-सिद्धान्त को जानता है और जानकर उनके विषय में पूर्ण निश्चयबुद्धि होकर अच्छे कर्मों में प्रवृत्त होता है, वही इस विश्व-नाटक में अच्छे कर्मफल अर्थात् सुख को पाता है।

"इसीलिए नाम है - कर्म-क्षेत्र, कर्म-सम्बन्ध, कर्मेन्द्रियाँ, कर्मभोग, कर्मयोग। ... कर्म श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ प्रालब्ध है, कर्म भ्रष्ट होने के कारण दुख की प्रालब्ध है। लेकिन दोनों का आधार कर्म है। कर्म आत्मा का दर्पण है।" अव्यक्त बापदादा 19.3.82

जैसा निश्चय, वैसा कर्म अवश्य होता है, ये अटल सत्य है और जैसा कर्म होता है, वैसा कर्मफल अवश्य होता है। इसलिए हमको श्रेष्ठ फल प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठ कर्म करना ही होगा और श्रेष्ठ कर्म के लिए कर्मों का ज्ञान हमारी बुद्धि में स्पष्ट होना अति आवश्यक है। बाबा हमारे लिए सुख-शान्ति बांधकर परमधाम से नहीं नहीं लाता है। वह आकर हमको श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान देता है और करने की शक्ति प्राप्त करने का रास्ता योग सिखलाता है, जिस ज्ञान-योग के अभ्यास से आत्मा श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होती है और उसके फल स्वरूप सुख-शान्ति प्राप्त करती है।

अकर्म - विकर्म - सुकर्म अर्थात् सुकर्म - अकर्म - विकर्म का चक्र और विधि-विधान अनन्त काल से सृष्टि में चलता आ रहा है, इसके गुह्य रहस्य को अभी बाबा ने बताया है, जिस ज्ञान को पाकर, उसके विषय में निश्चयबुद्धि होने से हमारी विकर्मों में अरुचि और सुकर्मों में अभिरुचि स्वत: जाग्रत होती है।

ये अकर्म, विकर्म, सुकर्म का क्रम इस विश्व-नाटक में सतत प्रभावी है। वास्तविकता

तो ये है कि कोई भी कर्म अकर्म नहीं होता है क्योंकि कोई भी कर्म निष्फल नहीं होता है इसलिए अकर्म का कोई अस्तित्व नहीं है क्योंकि सतयुग-त्रेता में भी सुखों के उपभोग आदि के जो कर्म होते हैं, उनसे आत्मा की उतरती कला तो होती ही है। लेकिन सतयुग-त्रेता में विकार न होने के कारण कोई विकर्म नहीं होता और न ही कर्म की गहन गति का यथार्थ ज्ञान होता है, जिसे जानकर सुकर्म करें, जिससे आत्मा की चढ़ती कला हो। इसलिए वहाँ सुकर्म भी नहीं होता है अर्थात् आत्मा की चढ़ती कला भी नहीं होती। वहाँ भी आत्मा और प्रकृति की कलायें तो गिरती ही हैं इसलिए वहाँ के कर्मों को सुकर्म भी नहीं कहा जा सकता और विकर्म भी नहीं कहा जा सकता इसलिए बाबा ने वहाँ के कर्मों को अकर्म के नाम से सम्बोधित किया है। वास्तव में हर कर्म का फल अवश्य होता है, ये इस विश्व-नाटक में कर्मों का अटल विधान है। इसीलिए गायन है - 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस कीन्ह तासु फल चाखा।" 9तुलसी यह तन खेल है, मन्सा भया किसान। पाप-पुण्य दो बीज हैं, जो जस बुवै सो तस लुनै निदान"। आत्म-स्थिति और एक परमात्मा की याद में किये गये कर्म ही सुकर्म होते हैं और आत्मा की चढ़ती कला का आधार होते हैं। पुरुषार्थ आत्मा का स्वभाविक स्वभाव है और फल उसके कर्म के अनुसार मिलता है। इस विश्व-नाटक की हू-ब-हू पुनरावृत्ति होती है परन्तु इसमें कर्म और कर्म-फल का अद्भुत समन्वय है।

कर्मों का ज्ञान श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देता है और श्रेष्ठ कर्म ही श्रेष्ठ फल का आधार हैं और श्रेष्ठ कर्म ही आत्मा की चढ़ती कला के निमित्त बनते हैं। अज्ञानतापूर्ण अशुभ कर्मों के द्वारा ही आत्मा पर ग्रहचारी आती है, जो आत्मा को दुख देती है और ज्ञानयुक्त श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा आत्मा की ग्रहचारी दूर होती है और आत्मा सुख का अनुभव करती है।

संक्षेप में अकर्म की परिभाषा में यही कहेंगे - वह कर्म जिस जिससे आत्मा को दुख भी न हो अर्थात् जो विकर्म भी न हो और सुकर्म भी न हो अर्थात् जिससे आत्मा की चढ़ती कला भी न हो, उसे अकर्म कहा जायेगा।

कर्म-सिद्धान्त का ज्ञान और उस पर निश्चय होगा तो आत्मा शत्रुता और मित्रता दोनों से परे हो जाती है, जिससे सबके साथ समान व्यवहार स्वत: होता है।

देह से न्यारी स्थिति परम सुखदायी, परमानन्दमय है। साक्षी होकर निर्संकल्प स्थिति में स्थित हो इसका आनन्द अनुभव करना ही संगमयुग की परम प्राप्ति है। अनेक आत्माओं के साथ अनेक जन्मों के अच्छे-बुरे कर्मों के हिसाब-किताब हैं, इसलिए इस सत्य को सदा ध्यान में रख किसके विषय में कुछ सोचना नहीं है। सदा ये स्मृति में रखना है कि परमात्मा और प्रकृति को कोई धोखा नहीं दे सकता है, उसके नियम अटल और न्यायपूर्ण हैं, जिनके अनुसार

हर आत्मा को उसके कर्मानुसार फल अवश्य प्राप्त होता है और होगा। हमारा कर्तव्य है कि हम हर आत्मा के प्रति शुभ संकल्प रखें और साक्षी होकर इस जीवन का सच्चा सुख अनुभव करें।

किन्ही व्यक्तियों के मध्य निर्णय में निमित्त आत्मा अंशमात्र भी स्वार्थपरता के वशीभूत निर्णय करता है, जिससे वे दोनो पक्ष प्रभावित होते हैं, उसका हिसाब किताब उसके साथ बनता है और उसका फल उसे अवश्य ही भोगना पड़ता है अर्थात् उनके साथ हिसाब-किताब चुकाना पड़ता है - ये कर्म और फल का अटल सिद्धान्त है।

जिस बात के विषय में निश्चय होता है, उसके लिए उसके अनुरूप संकल्प और कर्म निश्चित ही होते हैं और जब संकल्प और कर्म होते हैं तो उसका फल भी अवश्य होता है। जिसका निश्चय जितना दृढ़ होता है, संकल्प और कर्म उतने ही उसके अनुरूप होते हैं।

जिसको ये निश्चय होगा कि हर आत्मा को उसके कर्मों का फल अवश्य मिलता है और उसके ही कर्म उसके लिए सुख या दुख का कारण हैं, वह श्रेष्ठ कर्म का पुरुषार्थ अवश्य करेगा और जब कर्म श्रेष्ठ होगा तो कर्मफल भी श्रेष्ठ होगा और जीवन में सदा सुख का अनुभव होगा।

"अधिकार लेने में अब और करने में कब कर लेंगे। लेने में बड़े बन जाते हैं और करने में छोटे बन जाते हैं, इसको कहा जाता है यथा शक्ति आत्मा। ... इसलिए अब यथा शक्ति आत्मा से मास्टर सर्वशक्तिवान बनो। करने वाले बनो तो स्वत: ही शक्तिशाली कर्म का फल शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना का फल स्वत: ही प्राप्त होगा। सर्व प्राप्तियाँ स्वयं ही आपके पीछे परछाई के समान अवश्य आयेंगी। सिर्फ ज्ञान सूर्य की प्राप्त हुई शक्तियों की रोशनी में चलो तो सर्व प्राप्ति रूपी परछाई आपेही पीछे-पीछे आयेगी।"

अ.बापदादा 29.4.84

जब परमात्मा पर निश्चय होता है कि वह हमको देखता है, जानता है तो बुरे संकल्पों और कर्मों पर नियन्त्रण रहता है और अच्छे कर्म स्वत: होते हैं। बाबा के महावाक्य हैं कि मैं बच्चों के संकल्पों को भी जानता हूँ।

जो लोग परमात्मा को जानते-मानते नहीं हैं परन्तु अपने कर्म पर निश्चय और विश्वास रखते हैं और समझते हैं कि हर अच्छे-बुरे कर्म का फल अवश्य ही कर्म के अनुसार मिलता है तो भी बुरे कर्म नहीं होते हैं, अच्छे कर्म ही होते हैं। संसार में कई धर्म भी ऐसे हैं जो परमात्मा में विश्वास नहीं रखते परन्तु कर्म पर विश्वास करते हैं और श्रेष्ठ कर्मों को करके निर्वाण, मोक्ष आदि के लिए पुरुषार्थ करते हैं।

संसार के सभी व्यक्ति स्वार्थपरता से परिपूर्ण हैं और सभी साधन नश्वर हैं, जो कर्ता

के कर्म अनुसार सुखदायी-दुखदायी बनते हैं - इस अविनाशी सत्य पर निश्चय होगा तब ही उनसे बुद्धियोग निकलेगा और एक बाप के साथ बुद्धियोग जुटेगा और बाप से सच्चा सुख अनुभव होगा तथा कर्मों में श्रेष्ठता आयेगी। जब कर्म श्रेष्ठ होगा तो कर्म-फल अवश्य ही श्रेष्ठ होगा और जीवन सफल होगा।

जिनको परमपिता परमात्मा पर, अपने कर्म और भाग्य पर निश्चय और विश्वास होता है, वे किसी अन्य सहारे का आसरा नहीं तकते। वे अपने कर्मों के बल पर जीवन को सफल बनाते हैं।

"चेलेन्ज और प्रैक्टिकल में महान अन्तर है ... ऐसे करने वाली आत्मायें अनेक आत्माओं को वंचित करने के निमित्त बन जाती हैं, पुण्य-आत्मा के बजाये बोझ वाली आत्मायें बन जाती हैं। इस पाप और पुण्य की गहन गति को जानो। ... संकल्प द्वारा भी पाप होता है। संकल्प के पाप का भी प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता है।" अ.बापदादा 3.12.78

"अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। किसी अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है। ... शुभ भावना के बजाये और कोई भी भावना है तो यह भी पाप का खाता जमा होता है क्योंकि यह भी दुख देना है।" अ.बापदादा 3.12.78

जो बात अन्तर-आत्मा सत्य समझती है और निर्णय करती है, वह करना ही चाहिए। कहना हर आत्मा का अधिकार है लेकिन सभ्यता से कहना परम कर्तव्य है। सत्यता को सभ्यता से कहने में कोई भय नहीं होना चाहिए और उसके लिए मृत्यु से भी डरना नहीं चाहिए। याद रखना है - सत्यता की परीक्षा अवश्य होती है।

ब्रह्मा बाप की अन्तरात्मा ने जिसको स्वीकार किया उसको उन्होंने कभी भी किसी के भय से छिपाया नहीं, चाहे वह शासन का भय हो, व्यक्ति का भय हो, समाज का भय हो। सदा निर्भय होकर सभ्यता से सत्यता को उजागर किया। अन्य धर्मों में भी क्राइस्ट, गुरु तेगबहादुर आदि के उदाहरण है। गुरु गोबिन्द सिंह के सुकुमार बच्चों के उदाहरण इतिहास में देदीप्यमान हैं, जिन्होंने सत्य और धर्म के लिए मृत्यु को हँसते हुए वरण कर लिया किन्तु असत्य के आगे सिर नहीं झुकाया। दैहिक और भौतिक स्वतन्त्रता के लिए कर्म करने वाले महाराणा प्रताप, सरदार भगतसिंह जैसे वीरों ने अपने प्राणों का हंसते हुए बलिदान किया परन्तु अपने अभीष्ट कर्म से विमुख नहीं हुए। इसलिए तुमको अपने श्रेष्ठ कर्मों से कब पीछे नहीं हटना चाहिए। बिना किसी की परवाह किये अपना श्रेष्ठ कर्म करते रहना है क्योंकि श्रेष्ठ कर्म का फल अवश्य ही श्रेष्ठ होगा - ये कर्म का अनादि-अविनाशी अटल सिद्धान्त सदा याद रखना है।

इस विश्व-नाटक और कर्म की गहन गति को समझना मनुष्य की शक्ति से परे है परन्तु ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है और कर्म का विधान पूर्ण न्यायपूर्ण है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखता और पार्ट बजाता है, वह इसकी न्यायपूर्णता और परम सुख को अनुभव करता है। समय-समय पर बाबा के द्वारा बताये हुए कर्म के सम्बन्ध में कुछ विधि-विधानों, नियम-सिद्धान्तों का उल्लेख यहाँ किया गया है।

कर्म का विधि-विधान एवं नियम-सिद्धान्त

* निश्चय हो कि हम अपने कर्म के लिए स्वयं ही उत्तरदायी हैं। हमारा ही कर्म हमारे लिए सुख और दुख का मूल कारण है और सभी तो निमित्तमात्र हैं तब कर्मों पर ध्यान रहेगा और उनमें अवश्य ही सुधार होगा। दुनिया में प्रचलित गीता में भी इस विषय में स्पष्ट लिखा है - जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है।

* ये पुरुषोत्तम संगम युग ही सुकर्म करने का युग है, जिससे चढ़ती कला होती है। और तो सभी युगों में देहाभिमान वश विकर्म ही होते हैं, जिससे उतरती कला होती है। भले सतयुग-त्रेता में विकर्म नहीं कहा जाता है क्योंकि देहाभिमान, आत्माभिमान से दबा रहता है परन्तु वहाँ के कर्मों को भी सुकर्म नहीं कहा जा सकता है।

* ये विश्व-नाटक एक कर्मक्षेत्र है, यहाँ कोई भी आत्मा स्थूल या सूक्ष्म कर्म अर्थात पार्ट के बिना रह नहीं सकती और और कोई भी कर्म फलहीन नहीं होता। जो आत्मा जैसा कर्म करती, उस अनुरूप उसका फल अवश्य भोगती है।

* हर आत्मा का अपना कर्म ही उसके सुख-दुख का मूल कारण है, दूसरे तो ड्रामा अनुसार केवल निमित्त कारण बनते हैं। इसीलिए लौकिक गीता में भी कहा है - जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है।

* कर्म एक दर्पण है, जिसमें उसके कर्ता की अन्तर्भावना प्रतिबिम्बित होती है और जो उसकी वंश परम्परा को भी प्रदर्शित करता है एवं भूतकाल और भविष्य का भी साक्षात्कार कराता है। इसलिए हर आत्मा को कोई भी कर्म, कर्म के विधान और सिद्धान्त को समझकर ही करना चाहिए, जिससे उसका फल सुखमय हो।

* साधारण रूप से देखें तो जो कर्म दिल को खाता है वह विकर्म होता है, उसको करने से आत्मा को बचना चाहिए।

"अपने कर्मों पर खबरदारी रखना है। कोई भी पाप कर्म न करना है। ... अगर अपने घाटे

और फायदे का पोतामेल न रखेंगे तो फेल हो जायेंगे। माया ऐसी है जो बहुतों को फेल कर देगी। युद्ध है ना। ... जो कर्म दिल को खाता हो, उसे छोड़ते जाओ।"

सा.बाबा 3.8.68

* पाप कर्म और गलत कर्म करने वाले की सुरक्षा करना या बचाने का प्रयत्न करने वाला भी उस पाप कर्म का भागी होता है। इसी तरह से श्रेष्ठ कर्म करने और श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले को भी उस श्रेष्ठ कर्म के फल में हिस्सा मिलता है।

* पाप कर्म करने वाले को साधन-सम्पत्ति या राय-सलाह के द्वारा पाप कर्म करने में सहयोग करने वाले पर भी पाप-कर्म का बोझ चढ़ता है।

"दान भी पात्र को देना चाहिए। पापात्मा को देने से फिर देने वाले पर भी असर हो जाता है। वह भी पापात्मा बन जाता है। ऐसे को कब नहीं देना चाहिए, जो जाकर उस पैसे से कोई पाप करे।"

सा.बाबा 14.8.69 रिवा.

* हर चेतन्य प्राणी में मन-बुद्धि-संस्कार है और वह अपनी श्रेणी अनुसार कर्म करता है और उसके कर्म अनुसार उसको फल मिलता है और उसके आधार पर उसका जन्म-पुनर्जन्म होता है। सभी चेतन्य प्राणी अपने कर्मानुसार अपनी योनि में ही सुखी-दुखी होते हैं।

* मन्सा-वाचा-कर्मणा आत्मा जो भी कर्म करती, जिससे व्यक्ति सीधा प्रभावित होते हैं, वातावरण प्रभावित होता है, जिससे वर्तमान में या भविष्य में आत्मायें प्रभावित होती अर्थात् सुख-दुख पाते, उसका फल कर्ता आत्मा को सुख या दुख के रूप में अवश्य मिलता है। भल फल के निर्णय में कर्म के स्वरूप से कर्ता की भावना प्रधान होती है। पेड़ लगाने, अस्पताल, धर्मशाला आदि बनाने से अच्छा फल और फेक्टरी के दूषित धुयें, बारूद, गैस आदि से वातावरण को दूषित करने से भी कर्ता को उसका फल अवश्य भोगना पड़ता है।

"गरीब का भावना से दिया गया एक पैसे का फल भी साहूकार के एक हजार रुपये के बराबर हो सकता है ... कोई तो दो पैसा भी देते हैं, बाबा हमारी एक ईट लगा दो, कोई हजार भेज देते हैं। भावना तो दोनों की एक है ना, तो दोनों को बराबर मिल जाता है।"

सा.बाबा 30.11.69 रिवा.

* देश, समाज, संगठन ... के द्वारा कोई अनुचित या अन्यायपूर्ण किये गये कर्म में उस देश या संगठन के लोगों के द्वारा खुशी प्रगट करना भी सामूहिक कर्म हो जाता है और उसका सामूहिक फल सबको अवश्य ही भोगना पड़ता है। आत्मायें जो सामूहिक रूप से भोगना भोग रही हैं, उसके भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कारण अवश्य हैं क्योंकि बिना कारण के कर्म नहीं होता है और बिना कर्म के किसी आत्मा को कोई दुख नहीं मिल सकता है।

* इस जगत में कर्म का अटल सिद्धान्त लागू है, जो स्वत: प्रभावित है, जिसके अनुसार हर आत्मा को अपने कर्म का फल स्वत: मिलता है। परमात्मा कर्म की गुह्य गति का पूर्ण ज्ञाता है। परमात्मा ही आकर कर्म की गुह्य गति का ज्ञान आत्माओं को देता है और श्रेष्ठ कर्मों का रास्ता बताता है, जिस पर चलकर आत्मा सुख-शान्ति पाती है। परमात्मा का फल को देने में कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। फल तो विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार स्वत: मिलता ही है।

"जो पाप कर्म करते हैं, उसका दण्ड तो जरूर मिलेगा ना। बाप थोड़ेही बैठ दण्ड देगा। यह तो ऑटोमेटिक ड्रामा बना हुआ है, जो चलता रहता है। बाप इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।" सा.बाबा 19.2.69 रिवा.

"दूसरी तरफ बाप सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण बच्चों के कल्याण अर्थ ईश्वरीय लॉज (नियम) भी बताते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि-अविनाशी लॉ कौन सा है? ड्रामा के प्लॉन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप वा भोगना - यह ऑटोमेटिकली लॉ अर्थात् नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म के माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता कि इस कर्म का यह लेना वा इस कर्म की ये सजा है, लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी है। ... इसलिए गाया हुआ है - "कर्मों की गति अति गुह्य है।" अ.बापदादा 3.5.77

* ये विश्व "कर्म-फल-कर्म, पुरुषार्थ-प्रालब्ध-पुरुषार्थ, क्रिया-प्रतिक्रिया" के घटना-चक्र पर आधारित एक कर्मक्षेत्र है। यहाँ हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है, जो उसके कर्ता पर उसके अनुरूप ही प्रभावित होती है।

* किसी के द्वारा किये गये पाप कर्म को अच्छा समझकर स्वीकार करने वाले या ऐसे कर्म के कर्ता की महिमा करने वाले पर भी उस पाप कर्म का प्रभाव पड़ता है और उसको भी उसका फल मिलता है।

* दुखी, अशान्त होना भी एक विकर्म है क्योंकि इससे देहाभिमान और दुख के वायब्रेशन प्रवाहित होते हैं, जो उस अनुरूप वातावरण का निर्माण करते हैं, जिससे वह अन्य आत्माओं को भी उस अनुरूप प्रभावित करते हैं अर्थात् दुखी करते हैं। इसलिए बाबा हमको सदा श्रीमत देते हैं - बच्चे, सदा खुश रहो तो तुमको देखकर और भी खुश होंगे।

"श्रेष्ठ संकल्प से वायुमण्डल शुद्ध होता है, तो व्यर्थ से दूषित होता है, जिसका बोझा आत्मा पर चढ़ जाता है।" अ.बापदादा 5.7.74

* ये सृष्टि-चक्र भूत-वर्तमान-भविष्य के घटनाचक्र पर सतत गतिशील है। हर आत्मा का वर्तमान, भूतकाल के कर्म का फल और भविष्य का बीज या आधार-शिला है। वर्तमान ही

हमारे हाथों में है। इसीलिए गायन है - बीती को चितवो नहीं, आगे की धरो न आश ... अर्थात् वर्तमान ही हमारे हाथों में है, जब हम श्रेष्ठ कर्म करके अपने सुखमय भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

* आत्माभिमानी स्थिति में किये गये कर्म अकर्म (सूक्ष्म ह्रास), देहाभिमानी स्थिति में किये गये कर्म विकर्म (आत्मिक शक्ति का तीव्रता से ह्रास) और आत्माभिमानी-परमात्माभिमानी स्थिति में रहकर किये गये कर्म ही सुकर्म (आत्मिक शक्ति का विकास) होते हैं, जो आत्मा की चढ़ती कला एकमात्र आधार हैं। ये ज्ञान ज्ञान-सागर परमात्मा संगम युग में ही देते हैं, तब ही आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला होती है।

"बाप (परमात्मा) को छोड़कर दूसरे को याद करना - यह भी विकर्म है।"

सा.बाबा 5.1.69 रात्रि क्लास

* जो जैसा कर्म करता है, वह उसका वैसा फल अवश्य ही पाता है। भगवानोवाच्य - दुख देंगे तो दुख पायेंगे, सुख देंगे तो सुख पायेंगे।

* हर कर्म कर्ता के संकल्प और भावना से प्रेरित होता है और उसके आधार पर ही उस कर्म का फल निर्धारित होता है। भक्ति में एक का एक गुणा, ज्ञान में एक का सौगुणा अर्थात् ज्ञान से कर्म का फल कई गुणा बढ़ जाता है, जो सिद्धान्त सुकर्म और विकर्म दोनों में लागू होता है।

* बिना कारण के कोई कार्य नहीं हो सकता। इसलिए बिना जाने मन्सा-वाचा किसी सम्बन्ध में कोई गलत निर्णय करने से आत्मा का पाप का खाता बढ़ता है। इसलिए ड्रामा की अटल भावी और जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है के अटल सत्य सिद्धान्त को जानकर साक्षी होकर हर आत्मा के कर्म को देखो और सर्व के प्रति कल्याण की भावना रखकर अपना पुण्य का खाता जमा करो। दूसरे के कर्मों का चिन्तन कर, उसके विषय में निर्णय कर अपना समय और शक्ति व्यर्थ न गँवाओ।

* समर्थ होकर पाप कर्म का प्रतिरोध न करना भी पाप कर्म है। पाप कर्म या पापी की सराहना करना भी पाप कर्म है। असमर्थ होते भी समय पर या यथा स्थान सत्य को प्रगट न करना भी पाप कर्म है। इस विषय में महाभारत में द्रोपदी के चीरहरण के समय का वृतान्त भी इसकी सत्यता को स्पष्ट करता है, जिससे ये स्पष्ट होता कि दुनिया में भी मनुष्यों की ऐसी मान्यता है।

* पाप कर्म से अर्जित धन-सम्पत्ति या साधन का उपभोग भी पाप कर्म है, उससे आत्मा का पाप का खाता बढ़ता है और पुण्य का खाता क्षीण होता है।

* जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है अर्थात् हर आत्मा को अपने ही कर्म का फल सुख या दुख के रूप में मिलता है। श्रेष्ठ कर्म से मित्र बनती है और पाप कर्म से

शत्रु बनती है। सुख और दुख दोनों में ही दूसरे तो केवल निमित्त कारण होते हैं, मूल कारण तो अपने ही पूर्व कर्म होते हैं।

* अज्ञानवश किये गये कर्म के फल और जानकर किये गये कर्म के फल में महान अन्तर होता है।

"अगर बाप (परमात्मा) का बनकर कोई पाप कर्म किया तो सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा।"

सा.बाबा 3.10.97 रिवा.

"बुरा कर्म करने से सौगुणा दण्ड हो जाता है। ज्ञान नहीं तो एक पाप का एक दण्ड। ज्ञान में आने के बाद फिर ऐसे कोई विकर्म करते हैं तो सौगुणा पाप लगता है।"

सा.बाबा 24.11.69 रिवा.

इस सम्बन्ध में कर्म के विधि-विधान के ज्ञाता परमात्मा के महावाक्य हैं - ट्रिबुनल ब्राह्मण बच्चों के लिए बैठेगी, अज्ञानी आत्माओं के लिए नहीं।

* यदि हम कोई अच्छा या बुरा कर्म करते हैं और उसे देखकर या सुनकर दूसरे भी करते हैं तो उनके द्वारा किये गये कर्म के फल में भी हम भागीदार बनते हैं।

* कल्प का संगमयुग ही सुकर्म करने का युग है, जो सारे कल्प के भाग्य का आधार है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा पिता की याद में किये गये कर्म ही सुकर्म हैं और आत्मा की चढ़ती कला का आधार हैं।

बाबा ने कहा है यदि ब्राह्मण आत्मा किसी ब्राह्मण आत्मा के प्रति कुदृष्टि रखता या कुदृष्टि जाती तो ये महापाप के खाते में जमा होता है।

"अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। किसी अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है। ... शुभ भावना के बजाये और कोई भी भावना है तो यह पाप का खाता जमा होता है क्योंकि यह भी दुख देना है।"

अ.बापदादा 3.12.78

* इस विश्व-नाटक में कर्म के अनादि-अविनाशी, अटल सिद्धान्त के अनुसार हर आत्मा को अपने अच्छे-बुरे कर्म का फल अवश्य मिलता है।

* हम दूसरे के लिए अशुभ या बुरा सोचते हैं, हीन भावना रखते तो ये भी पाप-कर्म है और उसका असर हमारे ऊपर भी अवश्य होगा।

* विश्व-नाटक में किसी आत्मा को उतना ही उपभोग करने का अधिकार है, जिससे उसकी कार्य क्षमता बढ़ती है, कार्यक्षमता की रक्षा होती है या अति आवश्यक है, उससे अधिक उपभोग पाप के खाते में ही जमा होता है, जिसका पश्चाताप रोग-शोक के रूप में मनुष्य को

करना ही पड़ता है। दूसरे के संसाधनों का उपयोग-उपभोग भी कर्मों का हिसाब-किताब बनाता है और कर्म-बन्धन का कारण बनता है। बुद्धिमान ज्ञानी पुरुष इस सत्य को जानकर जीवन में इसका अवश्य ध्यान रखते हुए ही हर कर्म करते हैं।

"बाबा हमेशा कहते मांगो मत। ... दाता के बच्चे हो ... और किससे लेंगे तो उनकी याद आती रहेगी। ... औरों से मांगो मत। नहीं तो देने वाले को भी नुकसान पड़ जाता है क्योंकि वह शिव बाबा के भण्डारे में नहीं दिया। देना चाहिए शिवबाबा के भण्डारे में।"

सा.बाबा 25.1.72 रिवा.

"बाप (परमात्मा) कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति का ज्ञान देते हैं। अगर बाप की श्रीमत पर चलते रहें तो कब विकर्म न हो।" सा.बाबा 1.10.97 रिवा.

* कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता है परन्तु कारण का चिन्तन न कर एकाग्रता से कार्य में बुद्धि लगाने वाले के कार्य अवश्य ही सफल होते हैं।

"जो बात अच्छी न लगे वह करनी नहीं चाहिए। अच्छे-बुरे को तो अब समझते हो, आगे नहीं समझते थे। ... अब अच्छी रीति पुरुषार्थ कर कर्मातीत बनना है।"

सा.बाबा 11.12.2000 रिवा.

* यह सृष्टि कर्मक्षेत्र है, कर्मातीत बनने के बाद कोई आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती है।

* सर्वशक्तिवान, दाता-विधाता, सर्वज्ञ परमात्मा का बनकर अल्पज्ञ यथाशक्ति सम्पन्न् मनुष्यात्माओं से किसी प्रकार की अपेक्षा रखना, मांगना भी परमात्मा की निन्दा कराना है, उसका दण्ड भी आत्मा को पश्चाताप के रूप में भोगना पड़ता है क्योंकि ये भी परमात्मा और ज्ञान की निन्दा कराना है। सेवा के लिए प्रेरणा देना अलग बात है परन्तु उसमें भी स्वार्थ भावना रखी तो दण्ड भोगना ही पड़ेगा।

* बिना सोचे-विचारे कोई कर्म कर लेना, जिससे किसी आत्मा को दुख हो तो वह भी पाप है और उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है। रामायण के पात्र राजा दशरथ और श्रवण कुमार का वृतान्त इसका उदाहरण है, जिससे अनुभव होता कि दुनिया वालों में भी इस तरह की मान्यतायें हैं।

* दूसरों को शिक्षा देना और स्वयं न करना भी पाप-कर्म है, उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना पड़ता है क्योंकि इससे स्वत: सिद्ध होता है कि वह उस कर्म की गति और उसके शुभाशुभ परिणाम को जानता है परन्तु करता नहीं है।

"बुरा काम हुआ तो फौरन बताओ तो आधा माफ हो जायेगा। ऐसे नहीं कि मैं कृपा करूँगा।

क्षमा वा कृपा पाई की भी नहीं होगी। सबको अपने आपको सुधारना है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे और पास्ट का भी योगबल से कटता जायेगा।"

सा.बाबा 5.5.05 रिवा.

Q. ट्रिबुनल में सबके लिए कोई निश्चित आत्मायें ही होंगी या हरेक के लिए ट्रिबुनल में अलग-अलग कोई विशेष आत्मायें होंगी ? अन्त समय अपने विकर्मों का साक्षात्कार उन निमित्त बनी हुई आत्माओं के समक्ष होना ही ट्रिबुनल की सजा है या धर्मराज पुरी में कोई अलग से ट्रिबुनल होगी ?

हर आत्मा को अपने कर्मों अनुसार अन्त में साक्षात्कार स्वत: ही होता है या स्मृति आती है, जिससे वह अपने कर्मों का पश्चाताप करता है। जैसे श्रवणकुमार की मृत्यु के विषय में अन्त समय राजा दशरथ का पश्चाताप। अन्त समय जब आत्मा बाह्य संकल्प-विकल्पों से मुक्त होती है तो ये सब स्मृतियां और साक्षात्कार होते हैं।

"जो विकर्म किये हैं, उनकी सजा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही पड़ती है। कर्मभोग अन्त तक भोगना ही है, उसमें माफी नहीं मिल सकती है। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है।" सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

* परमात्मा पिता से प्रतिज्ञा करके तोड़ना भी परमात्मा और ज्ञान का अपमान करना है, ये भी विकर्म है, जिसका दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है।

* तन-मन-धन परमात्मा बाप को समर्पित करके वापस लेना या लेने का संकल्प करना भी विकर्म है, उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना पड़ता है। इसके विषय में भक्ति मार्ग के शास्त्रों में अनेक वृतान्त हैं।

* जानकर या अलबेलेपन से यज्ञ की साधन-सम्पत्ति का नुकसान करना भी विकर्म है, उसका भी दण्ड आत्मा को भोगना पड़ता है।

* यज्ञ के Behalf पर किसी व्यक्ति से व्यक्तिगत लाभ उठाना भी यज्ञ की चोरी है और उसका भी दण्ड पश्चाताप के रूप में आत्मा को भोगना ही पड़ता है।

* बाबा के महावाक्यों के अनुसार हम जो पुरुषार्थ कर सकते हैं और वह नहीं करते तो यह भी एक प्रकार से पाप के खाते में जमा होता है और उसका दण्ड भी आत्मा को पश्चाताप के रूप में भोगना पड़ता है।

* विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार सर्व जीवात्मायें पृथ्वी-पुत्र हैं और प्रकृति उनकी पालना करती है। कोई भी मनुष्य किसी निरीह प्राणी को दुख देता है, उनको मारकर खाता है तो उनको प्रकृति से उस कर्म के फलस्वरूप दुख अवश्य भोगना पड़ता है। जैसे राजा समर्थ

होता है, प्रजा की रक्षा करना राजा का धर्म है, ऐसे ही निरीह प्राणियों को दुख देने के बदले उनको मारने वाले को दण्ड अवश्य देते हैं।

"कर्म और कर्म के फल के बन्धन में फंसने के कारण कर्म-बन्धनी आत्मा अपनी ऊंची स्टेज को पा नहीं सकती है। ...ज्ञानस्वरुप होने के बाद वा मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो योगयुक्त नहीं है वह कर लेते हो, तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पदमागुणा ज्यादा है। ... इसलिए इसमें भी अन्जान नहीं रहना है कि यह छोटी-छोटी गलतियां हैं। यह तो होंगी ही।" अ.बापदादा 20.5.72

* ड्रामा अनुसार कोई भी कर्म फल के बिना नहीं होता अर्थात् हर कर्म का फल अवश्य होता है और कोई भी फल कर्म के बिना नहीं मिलता अर्थात् किसी भी आत्मा को कोई भी अच्छा या बुरा फल मिल रहा है, वह उसके पूर्व कर्मों का परिणाम है। इसलिए किसी की प्राप्तियों से न ईर्ष्या हो, न घृणा हो और न आलोचना हो। ये भी एक प्रकार से विकर्म हो जाता है। इस सत्य को जानकर श्रेष्ठ कर्म करने का पुरुषार्थ ही श्रेष्ठ फल की आधार शिला है। फल की इच्छा करने से फल नहीं मिलेगा, कर्म करने से ही फल मिलेगा।

"यह निश्चित है कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सिर्फ कर्म और फल के, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के, निमित्त और निर्माण के, कर्म फिलॉसाफी के, अनुसार निमित्त बन कार्य कर रहे हैं। भावी अटल है लेकिन सिर्फ आप श्रेष्ठ भावना द्वारा, भावना का फल अविनाशी प्राप्त करने के निमित्त बने हुए हैं।" अ.बापदादा 20.1.86

"पाप और पुण्य की गहन गति को जानो। ... संकल्प द्वारा भी पाप होता है। संकल्प के पाप का भी प्रत्यक्षफल प्राप्त होता है। संकल्प में स्वयं की कमजोरी, किसी भी विकार का, पाप के खाते में जमा होती है।" अ.बापदादा 3.12.78

कर्म पर निश्चय माना - हमको जो सुख या दुख मिल रहा है, वह हमारे ही पूर्व कर्मों का परिणाम है, दूसरा कोई व्यक्ति कारण नहीं है और भविष्य में जो मिलेगा वह भी हमारे ही संचित या वर्तमान में किये गये कर्मों का परिणाम होगा, इसलिए किसी व्यक्ति को दोष देने के बजाये अपने कर्म का सुधार करना ही हमारे लिए कृत्य है और हितकर है।

ड्रामा की अनादि-अविनाशी नूँध और कर्म का विधान इस विश्व-नाटक रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं, जो साथ-साथ चलते हैं। हर कर्म से आत्मा के आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब पूरे भी होते हैं तो नये बनते भी हैं। कल्पान्त में जन्म-जन्मान्तर के हिसाब-किताब चुक्ता करके आत्मायें घर जाती हैं। इसलिए अभी सभी आत्माओं को अपने सर्व विकर्मों के हिसाब-किताब पूरे करने हैं और श्रेष्ठ कर्म करके सतयुग के लिए सुखदायी हिसाब-किताब

बनाने हैं। कर्म के विधि-विधान को जानने वाली ज्ञानी आत्मा को कब किसके पार्ट, हिसाब-किताब, सुख-दुख को देखकर आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए और किसी घटना को देखकर अपने संकल्प को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। किसके कर्म को देखकर किसके प्रति घृणा-राग-द्वेष की भावना भी नहीं होना चाहिए क्योंकि भावना से भी आत्मा का आत्माओं के साथ हिसाब-किताब बन जाता है।

निष्काम कर्म का राज़

निष्काम कर्म का बहुत महत्व है, इसलिए निष्काम कर्मयोग का भी गायन है परन्तु प्रश्न है - क्या कोई कर्म निष्काम होता है ? यदि होता है तो कब और कैसे ? इसका राज़ अभी परमात्मा ने बताया है।

निष्काम सेवाधारी एक परमात्मा ही है क्योंकि वह निराकार है, सुख-दुख दोंनों के प्रभाव से मुक्त है। आत्माओं को अपने कर्म का फल अवश्य मिलता है, इसलिए परमात्मा कहते हैं - तुम निष्काम होकर श्रेष्ठ कर्म करते रहो।

"राइट हेण्ड सेवाधारी अर्थात् सदा निष्काम सेवाधारी। ... गुप्त सेवाधारी अर्थात् निष्काम सेवाधारी। तो एक हैं निष्काम सेवाधारी, दूसरे हैं नामधारी सेवाधारी। ... जो निष्काम सेवाधारी हैं, वे अविनाशी नाम कमाने वाले सेवाधारी हैं, उनके दिल का आवाज दिल तक पहुँचता है।"

अ.बापदादा 22.2.86

"सभी आत्माओं का बाप एक है, वह अभी आया हुआ है परन्तु सब तो मिल भी नहीं सकेंगे। इम्पॉसिबुल है। ... याद फिर भी पतित-पावन को ही करते हैं। ... एक बाप ही है जो तुम बच्चों को पढ़ाकर विश्व का मालिक बनाते हैं, खुद नहीं बनते हैं। इसलिए उनको कहा जाता है - निष्काम सेवाधारी। मनुष्य कहते हैं - हम फल की आश नहीं रखते, निष्काम सेवा करते हैं परन्तु ऐसे होता नहीं है। ... कर्म का फल अवश्य मिलता है।"

सा.बाबा 21.5.05 रिवा.

"ड्रामा में विजयमाला की नूँध है तो जरूर एक-दो के नज़दीक आयेंगे तब तो माला बनेंगी। ... जो श्रेष्ठ कर्म की पूँजी जमा होती है, तो वह समय पर काम आती है। कोई न कोई विशेष पुण्य की पूँजी जमा होने के कारण विशेष पार्ट है (गुल्जार दादी का)।"

अ.बापदादा 23.3.88 दादियों से

कर्म के विधि-विधान के सम्बन्ध में ये तो नाम-मात्र या अंश-मात्र ही बातें हैं। कर्म का विधि-विधान तो अति गुह्य है, जो यथार्थ रूप में परमात्मा ही जानता है।

विकर्म और विकर्म विनाश की प्रक्रिया

विश्व-नाटक में समयानुसार विकर्मों का विधि-विधान भी नूँधा हुआ है तो विकर्म विनाश का विधि-विधान भी नूँधा हुआ है, जिस विधि-विधान को ज्ञान सागर परमात्मा आकर बताते हैं, जिसको जानकर आत्मायें विकर्मों का संचित खाता खत्म करके पावन बनती हैं और अगले कल्प के लिए सुकर्मों का खाता जमा करती हैं।

"बेहद का बाप कहते हैं - बच्चे, मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम्हें इस दादा वा मम्मा को भी याद नहीं करना है। ... गायन है - सतगुरु मिला दलाल। सतगुरु कोई दलाल नहीं है। सतगुरु तो निराकार है। ... वर्सा तो बाप से ही मिलना है।"

सा.बाबा 9.2.05 रिवा.

"एक होता है डायरेक्ट विकर्म विनाश की स्टेज में स्थित हो फुल फोर्स से विकर्मों का नाश करना, दूसरा तरीका है जितना-जितना शुद्ध संकल्प वा मनन की शक्ति से अपनी बुद्धि को बिजी रखते हो, ... बुद्धि में यह भरने से वह पहले वाला स्वयं ही निकल जायेगा।"

अ.बापदादा 4.7.71

"विकर्म विनाश और शक्ति भरने की दो विधियां हैं। एक होता है पहले सारा निकाल कर फिर भरना, दूसरा होता है भरने से निकालना। अगर खाली करने की हिम्मत नहीं है तो दूसरा भरते जाने से पहला आप ही खत्म हो जायेगा।"

अ.बापदादा 4.7.71

सुकर्म करने का विधि-विधान

सुकर्म करने का विधि-विधान भी परमात्मा ही आकर बताते हैं, जिसको समझकर आत्मायें सुकर्म करती हैं और सुकर्मों का खाता जमा करती है। दुनिया में बहुत से कर्म ऐसे हैं, जिनको आत्मायें सुकर्म समझती हैं परन्तु वे विकर्म ही होते हैं। यथा किसी कन्या की शादी कराना आदि। वास्तविकता तो ये है कि सुकर्म पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होते हैं, जिससे आत्माओं की चढ़ती कला होती है।

जो कर्म स्व के या सर्व के कल्याणार्थ किया जाता है और जिससे आत्मायें एवं प्रकृति पावन बनती है, उस कर्म को सुकर्म कहा जाता है। सुकर्म करने के लिए कर्म का ज्ञान अर्थात् कर्म और कर्म-फल (Cause and effect) का ज्ञान और कर्म करने की शक्ति का होना अति आवश्यक है, जो संगमयुग पर परमात्मा ही देते हैं।

ये सुकर्म की प्रक्रिया संगम पर ही चलती है, जब ज्ञान सागर परमात्मा इस धरा पर आते हैं और आत्माओं को अकर्म-विकर्म-सुकर्म की गहन गति का ज्ञान देते हैं और कर्मयोग

की शिक्षा देते हैं। इस योग की प्रक्रिया से आत्मायें और प्रकृति दोनों पावन होते हैं। आत्माओं में आत्मिक भावना जाग्रत होती है, जिससे आत्मायें स्व-कल्याण और विश्व-कल्याण की भावना से कर्म करते हैं।

"यह सब ड्रामा में नूँध है, फिकर की कोई बात नहीं है। नहीं तो स्थापना कैसे होगी। दूसरी बात यह भी है कि जो करेगा, वह पायेगा। ... किसको दान नहीं करेंगे तो फल भी कैसे मिलेगा। ... किसी न किसी को सन्देश सुनाकर फिर भोजन खाना चाहिए।"

सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

"अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना है क्योंकि यह कर्म-क्षेत्र है, कर्म-भूमि है, इसमें जो बोयेंगे सो पायेंगे। यह भी इसका नियम है। बाप कहते हैं - इस लॉ को तो मैं भी ब्रेक नहीं कर सकता हूँ भल मैं वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ।" मातेश्वरी 24.6.65

"दूसरी तरफ बाप सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण बच्चों के कल्याणार्थ ईश्वरीय लॉज भी बताते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि लॉ कौन सा है ? ड्रामा प्लॉन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप वा भोगना - यह ऑटोमेटिकली लॉ अर्थात् नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म के माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता कि इस कर्म का यह लेना (प्राप्ति) वा इस कर्म की ये सजा है। लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी है। .. इसलिए गाया हुआ है - "कर्मों की गति अति गुह्य है"।"

अ.बापदादा 3.5.77

"हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करने से कभी भी कोई कर्म विकर्म नहीं हो सकता। सदा सुकर्म होगा। ... ऐसे ही साक्षी-दृष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म-बन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे।" अ.बापदादा 30.1.79

"पॉवरफुल योग वाले के सामने मुश्किल हो ही नहीं सकती।... ब्राह्मण जीवन है मजे की जीवन, संगमयुग है मजे का युग, बोझ उठाने का युग नहीं है। बोझ उतारने का युग है।"

अ.बापदादा 30.11.99

"बाप रास्ता बताते हैं। अपने ऊपर कृपा, रहम करना है। टीचर तो पढ़ाते हैं, आशीर्वाद तो नहीं करेंगे। आशीर्वाद, कृपा, रहम आदि माँगने से मरना भला। कोई से पैसा भी नहीं माँगना चाहिए। बच्चों को सख्त मना है। कोई से पैसा मांगना, यह भी पाप है। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार, जिन्होंने कल्प पहले बीज बोया है, वर्सा पाया है, वे आप ही करेंगे। कोई भी काम के लिए मांगो नहीं। न करेगा तो न पायेगा। ... जिसको करना होगा, वह आप ही करेगा। तुमको माँगना नहीं है। कल्प पहले जितना जिन्होंने किया है, ड्रामा उनसे करायेगा। मांगने की क्या

दरकार है। कई बुद्धू बच्चियाँ हैं, जो मांगती हैं। बाबा तो हुण्डी भरते रहते हैं सर्विस के लिए।"

सा.बाबा 29.10.69 रिवा.

"बाप को याद करने से थक जाते हैं तो विकर्म विनाश भी नहीं होंगे। विकर्म रह जायेंगे तो फिर सजा खानी पड़ेगी, पद भी कम हो जायेगा। दिन प्रतिदिन इनका भी बहुतों को साक्षात्कार होता रहेगा। बाप को किसी भी बात का ख्याल नहीं रहता है। जानते हैं यह तो ड्रामा है।"

सा.बाबा 26.11.69 रिवा.

"जब कुछ ऐसी बात हो जाती है तो मनुष्य पिछाड़ी में कह देते हैं जो ईश्वर की इच्छा। अब तुम थोड़ेही ऐसे कहेंगे। तुम कहेंगे - भावी ड्रामा की। तुम ईश्वर की भावी नहीं कहेंगे। ईश्वर का भी ड्रामा में पार्ट है। यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है - यह बाप ही समझा सकते हैं। नॉलेजफुल भी बाप है। मनुष्य समझते हैं कि वह सभी के दिलों को जानते होंगे। परन्तु हम जो पाप कर्म करते हैं, उसका दण्ड तो जरूर हमको ही मिलेगा ना। बाप थोड़ेही बैठ दण्ड देगा। यह तो ऑटोमेटिक ड्रामा बना हुआ है, जो चलता ही रहता है।"

सा.बाबा 19.2.69 रिवा.

"कोई पाई-पाई जमा करते हैं तो लाख हो जाता है। तो पाई की चोरी भी लाखों की हो जाती है। सभी कायदे बाप समझा देते हैं। ईश्वर का राइट हैण्ड है धर्मराज। यह हिसाब-किताब ऑटोमेटिकली चलता रहता है। जो जैसा कर्म करते हैं, वह भोगते हैं। ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 14.12.69 रिवा.

"63 जन्मों के हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज हो सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं - इस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं। ... याद रखो - सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी तो सत्य के साथ की नाँव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती।"

अ.बापदादा 3.5.77

ड्रामा की अनादि-अविनाशी नूँध और कर्म का विधान इस विश्व-नाटक रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं, जो साथ-साथ चलते हैं। हर कर्म से आत्मा के आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब पूरे भी होते हैं तो नये बनते भी हैं। कल्पान्त में जन्म-जन्मान्तर के हिसाब-किताब चुक्ता करके आत्मायें घर जाती हैं। इसलिए अभी सभी आत्माओं को अपने सर्व विकर्मों के हिसाब-किताब पूरे करने हैं और श्रेष्ठ कर्म करके सतयुग के लिए सुखदायी हिसाब-किताब बनाने हैं। कर्म के विधि-विधान को जानने वाली ज्ञानी आत्मा को कब किसके पार्ट, हिसाब-किताब, सुख-दुख को देखकर आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए और किसी घटना को देखकर अपने संकल्प को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। किसके कर्म को देखकर किसके प्रति घृणा-राग-

द्वेष की भावना भी नहीं होना चाहिए क्योंकि भावना से भी आत्मा का आत्माओं के साथ हिसाब-किताब बन जाता है।

"हिम्मते बच्चे मदद दे खुदा" - इस राज भूल जाते हैं। यह एक ड्रामा की गुह्य कर्मों की गति है। अगर यह विधि और विधान नहीं होता तो सभी विश्व के पहले राजा बन जाते। ... नम्बरवार बनने का विधान इस विधि के कारण ही बनता है। ... निमित्त मात्र यह विधान ड्रामा में नूँधा हुआ है।"

अ.बापदादा 22.11.87

"अगर किसी की कोई बुराई चित्त पर है तो उसका चित्त सदा प्रसन्नचित्त नहीं रह सकता और चित्त पर धारण की हुई बातें वाणी में जरूर आयेंगी। ... लेकिन कर्मों की गति का गुह्य रहस्य सदा सामने रखो। ... कर्मों का यह पक्का नियम है अथवा कर्मों की फिलॉसाफी है कि आज आपने किसकी ग्लानि की तो आपकी कल कोई दुगुनी ग्लानि करेगा।"

अ.बापदादा 21.11.92

"कर्मों का यह पक्का नियम है अथवा कर्मों की फिलॉसाफी है कि आज आपने किसकी ग्लानि की तो आपकी कल कोई दुगुनी ग्लानि करेगा। ... तो कर्मों की गति क्या हुई ? बुराई लौटकर कहाँ आई ?"

अ.बापदादा 21.11.92

"कर्मों की गहन गति क्या हुई ? ... कई कहते हैं - हमने किसको कहा नहीं लेकिन वे कह रहे थे तो मैंने भी हाँ में हाँ कर दिया। ... हाँ में हाँ मिलाना, यह भी कर्मों की गति के प्रमाण पाप में भागी बनना है।"

अ.बापदादा 21.11.92

"फौरन फल नहीं निकलता है तो अधीर्य नहीं होना है कि फल तो निकलता ही नहीं। सभी फल फौरन नहीं मिलते हैं। कोई-कोई बीज फल तब देता है जब नेचुरल वर्षा होती है। पानी देने से भी नहीं निकलता है। यह भी ड्रामा की नूँध है। ... कोई नेचुरल केलेमिटीज होंगी, जब ड्रामा का सीन बदलने वाला होगा तो वह नेचुरल वायुमण्डल, वातावरण उस बीज का फल निकालेगी।"

अ.बापदादा 11.7.71

"हर एक का वही पार्ट बजता है, जो कल्प-कल्प बजता है। उसमें कोई फर्क नहीं हो सकता। यह सारा बना-बनाया खेल है। कोई पूछते हैं - पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध बड़ी ? अब पुरुषार्थ बिगर प्रालब्ध मिलती नहीं है। ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ से ही प्रालब्ध मिलती है।"

सा.बाबा 27.12.04 रिवा.

"देवताओं को वहाँ पता थोड़ेही रहता है कि हमने यह राज्य कैसे पाया? ... ये बड़ी समझने की गुह्य बातें हैं। समझदार ही समझें। बाकी जो बूढ़ी मातायें हैं, उनमें इतनी बुद्धि तो है नहीं। यह भी ड्रामा प्लैन अनुसार हर एक का अपना पार्ट है। ऐसे

तो नहीं कहेंगे - हे ईश्वर बुद्धि दो। हम सबको एक जैसी बुद्धि दें तो सब नारायण बन जायें।" सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

"अज्ञान काल में मनुष्य समझते हैं कि ईश्वर ही दुख-सुख देते हैं। परन्तु बाप ईश्वर यह धन्धा नहीं करते हैं। यह तो कर्मों अनुसार ड्रामा बना हुआ है। जो जैसा कर्म करता है, ऐसा फल पाता है। इस समय कर्म बनाने की बात है, कर्म कूटने की बात नहीं।"

सा.बाबा 4.8.71 रिवा.

"कब पतित भी यहाँ छिपकर आते हैं। वे अपना ही नुकसान कर लेते हैं। अपने को ठगते हैं। बाप को तो ठगने की बात ही नहीं। ... कहेंगे ड्रामा अनुसार इनकी तकदीर में नहीं है तो भगवान भी क्या करे।" सा.बाबा 20.8.71 रिवा.

"दुनिया में रिकार्ड रखने के कई साधन हैं। बाप के पास साइन्स के साधनों से भी रिफाइन साधन हैं, जो स्वत: ही कार्य करते रहते हैं। ... अव्यक्त वतन के साधन प्रकृति से परे हैं, इसलिए वे परिवर्तन में नहीं आते हैं। ... बापदादा याद और सेवा दोनों का ही रिकार्ड देखते हैं।" अ.बापदादा 20.2.88

"अज्ञान काल में मनुष्य समझते हैं कि ईश्वर ही दुख-सुख देते हैं। परन्तु बाप ईश्वर यह धन्धा नहीं करते हैं। यह तो कर्मों अनुसार ड्रामा बना हुआ है। जो जैसा कर्म करता है, ऐसा फल पाता है। इस समय कर्म बनाने की बात है, कर्म कूटने की बात नहीं।"

सा.बाबा 4.8.71 रिवा.

"कब पतित भी यहाँ छिपकर आते हैं। वे अपना ही नुकसान कर लेते हैं। अपने को ठगते हैं। बाप को तो ठगने की बात ही नहीं। ... कहेंगे ड्रामा अनुसार इनकी तकदीर में नहीं है तो भगवान भी क्या करे।" सा.बाबा 20.8.71 रिवा.

""हिम्मते बच्चे मदद दे खुदा" - इस राज भूल जाते हैं। यह एक ड्रामा की गुह्य कर्मों की गति है। अगर यह विधि और विधान नहीं होता तो सभी विश्व के पहले राजा बन जाते। ... नम्बरवार बनने का विधान इस विधि के कारण ही बनता है।... निमित्त मात्र यह विधान ड्रामा में नूँधा हुआ है।" अ.बापदादा 22.11.87

"कोई पाई-पाई जमा करते हैं तो लाख हो जाता है। तो पाई की चोरी भी लाखों की हो जाती है। सभी कायदे बाप समझा देते हैं। ईश्वर का राइट हैण्ड है धर्मराज। यह हिसाब-किताब ऑटोमेटिकली चलता रहता है। जो जैसा कर्म करते हैं, वह भोगते हैं। ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 14.12.69 रिवा.

"दूसरी तरफ बाप सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण बच्चों के कल्याणार्थ

ईश्वरीय लॉज भी बताते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि लॉ कौन सा है ? ड्रामा प्लॉन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप वा भोगना - यह ऑटोमेटिकली लॉ अर्थात् नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म के माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता कि इस कर्म का यह लेना (प्राप्ति) वा इस कर्म की ये सजा है। लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी है। .. इसलिए गाया हुआ है - "कर्मों की गति अति गुह्य है"।"

अ.बापदादा 3.5.77

"हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करने से कभी भी कोई कर्म विकर्म नहीं हो सकता। सदा सुकर्म होगा। ... ऐसे ही साक्षी-दृष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म-बन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे।"

अ.बापदादा 30.1.79

विकर्म और विकर्म विनाश की प्रक्रिया

विश्व-नाटक में समयानुसार विकर्मों का विधि-विधान भी नूँधा हुआ है तो विकर्म विनाश का विधि-विधान भी नूँधा हुआ है, जिस विधि-विधान को ज्ञान सागर परमात्मा आकर बताते हैं, जिसको जानकर आत्मायें विकर्मों का संचित खाता खत्म करके पावन बनती हैं और अगले कल्प के लिए सुकर्मों का खाता जमा करती हैं।

"बेहद का बाप कहते हैं - बच्चे, मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम्हें इस दादा वा मम्मा को भी याद नहीं करना है। ... गायन है - सतगुरु मिला दलाल। सतगुरु कोई दलाल नहीं है। सतगुरु तो निराकार है। ... वर्सा तो बाप से ही मिलना है।"

सा.बाबा 9.2.05 रिवा.

"एक होता है डायरेक्ट विकर्म विनाश की स्टेज में स्थित हो फुल फोर्स से विकर्मों का नाश करना, दूसरा तरीका है जितना-जितना शुद्ध संकल्प वा मनन की शक्ति से अपनी बुद्धि को बिजी रखते हो, ... बुद्धि में यह भरने से वह पहले वाला स्वयं ही निकल जायेगा।"

अ.बापदादा 4.7.71

"विकर्म विनाश और शक्ति भरने की दो विधियां हैं। एक होता है पहले सारा निकाल कर फिर भरना, दूसरा होता है भरने से निकालना। अगर खाली करने की हिम्मत नहीं है तो दूसरा भरते जाने से पहला आप ही खत्म हो जायेगा।"

अ.बापदादा 4.7.71

८. योग का ज्ञान

योग का ज्ञान, पुरुषार्थ और अनुभव

इस सत्य का ज्ञान और निश्चय हो कि हमारे संकल्प से उत्पन्न हर वायब्रेशन का प्रभाव सारे विश्व के वातावरण पर पड़ता है, तो स्वत: ही अपने संकल्प पर ध्यान रहेगा। योगयुक्त स्थिति में जो वायब्रेशन निर्माण करते हैं वह सारे विश्व के वातावरण को योगयुक्त बनाता है, जिसके परिणाम स्वरूप हमारे सुख का निर्माण होता है और परमात्मा की याद अर्थात् योग के अतिरिक्त जो भी वायब्रेशन निर्माण करते हैं वह विश्व के वायुमण्डल को दूषित करते है, जिसके परिणाम स्वरूप हमारे लिए दुख का निर्माण होता है। इस सत्य का ज्ञान और निश्चय होगा, तब ही हमारी चेतना योग के प्रति जाग्रत होगी और योग सिद्ध होगा।

योग शब्द प्राय: आत्म कल्याण के लिए ही प्रयोग किया जाता है, इसलिए योग की बहुत महिमा है। परन्तु यथार्थ योग क्या है, उसका यथार्थ ज्ञान मनुष्यों को नहीं है, जो परमात्मा अभी संगमयुग पर आकर बताते हैं। योग अर्थात् विज्ञान। विज्ञान अर्थात् ज्ञान से भी परे, निर्संकल्प स्थिति, बीज रूप स्थिति, बिन्दुरूप स्थिति में स्थित आत्मा को परमात्मा की मधुर याद, जो स्थिति परम शान्तिमय और परमानन्दमय है।

"ज्ञान और विज्ञान। पढ़ाई को नॉलेज कहा जाता है। विज्ञान क्या चीज है, किसको भी पता नहीं है। विज्ञान है ज्ञान से भी परे।" सा.बाबा 29.3.02 रिवा.

योग मार्ग में दो प्रकार के योगों का गायन है। एक है हठयोग और दूसरा है राजयोग। हठयोग में भक्तियोग, सांख्ययोग, तन्त्र योग, हठयोग आदि आदि हैं, जिनसे आत्मा को अल्पकाल के लिए शान्ति और सुख की प्राप्ति तो होती है लेकिन परिणाम में आत्मा की उतरती कला ही होती है और मन में चाहना बनी ही रहती है। दूसरा है राजयोग, जो परमात्मा आकर सिखाते हैं, जिससे आत्मा पावन बनती है और आत्मा की चढ़ती कला होती है, जिससे आत्मा की सर्व चाहनायें पूरी होती है और आत्मा को सदाकाल के लिए प्राप्ति होती है। सदाकाल अर्थात् कल्पान्त के लिए।

बाबा ने योग वास्तविक अर्थ क्या है, योग की जीवन में क्या उपयोगिता है, कैसे योग का प्रभाव जड़-जंगम-चेतन पर पड़ता है, योग और ज्ञान का क्या सम्बन्ध है - इस सम्बन्ध में विस्तार से समझाया है और हमारे योग की सफलता कैसे हो, उसके लिए विस्तार से ज्ञान दिया है, जिससे हमारा योग एक परमात्मा के साथ रहे और जीवन सफल हो।

योग अर्थात सम्बन्ध अर्थात याद। योग आत्मा का स्वभाविक स्वभाव है। सारे कल्प

आत्माओं का आत्माओं से, वस्तु और साधनों से योग रहा परन्तु संसार के सभी व्यक्ति और वस्तुयें पतनोन्मुख हैं, इस कारण उनके साथ योग से आत्मिक शक्ति का पतन अर्थात् उतरती कला ही होती है। एक परमात्मा ही ऐसी सत्ता है, जिसके साथ योग से ही आत्मा की चढ़ती कला होती है क्योंकि परमात्मा अविनाशी है और सदा पावन है, इसलिए इसको ही सच्चा योग कहा जाता है और अज्ञान काल में भी आत्मायें चढ़ती कला अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का लक्ष्य लेकर विभिन्न प्रकार की साधनायें करती हैं, जिन साधनाओं को भी भक्ति मार्ग में योग नाम से पुकारा जाता है। यथा हठयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, राजयोग आदि आदि। इन सबमें राजयोग का विशेष महत्व है और आज भी भारत के प्राचीन राजयोग का सारे विश्व में महत्व है। बाप जो योग सिखलाते हैं, वही सत्य राजयोग है, जो आत्मा की चढ़ती कला का आधार है। बाकी तो सारे कल्प में जिन योगों को योग की संज्ञा दी जाती है, वे सब वियोग ही हैं क्योंकि उनसे न तो आत्मा की चढ़ती कला होती है और न ही परमात्मा से मिलन होता है। इसलिए वे सभी वियोग ही हैं क्योंकि उनको करते हुए भी आत्मिक शक्ति का पतन ही होता गया है।

हमारा योग कैसे सिद्ध हो, उसके लिए बाबा ने मुरलियों में विभिन्न बातों का ज्ञान दिया है, जिनको यथार्थ रीति समझकर, निश्चय करके पूरी रीति पालन करें तो योग में कोई कठिनाई नहीं आ सकती है। यथा बाबा ने कहा है - जब हम किसी की दी हुई वस्तु को प्रयोग करते हैं तो उसकी याद अवश्य आती है और उसके साथ योग हो जाता है, जो आत्मिक पतन का कारण बन जाता है। जब इस सत्य पर हमको निश्चय हो जाता है तो हम इन बातों से बच जाते हैं और एक परमात्मा के साथ योग रहे, उसका ध्यान रखते हैं, जिससे हमारी चढ़ती कला होती है। योग की सिद्धि के लिए बाबा ने ऐसी अनेक बातों का ज्ञान दिया है परन्तु या तो हम उनको सही रीति से समझते नहीं हैं या जीवन में उनकी उपयोगिता को स्वीकार नहीं करते हैं या उनकी सत्यता पर निश्चय नहीं करते हैं, जिससे उन नियम-संयम का पालन नहीं करते, इसलिए योग की सिद्धि में कठिनाई आती है। योग की सिद्धि के लिए बाबा ने खान-पान, रहन-सहन, संग आदि की शुद्धि के लिए भी विस्तार से बताया है। यदि हम इसमें ढील करेंगे तो योग की जो और जितनी सफलता हम चाहते हैं वह नहीं होगी।

भय-चिन्ता, राग-द्वेष, अपने-पराये की भावना वाला कब योग-साधना नहीं कर सकता है क्योंकि योग-साधना के लिए निर्संकल्प-निर्विकल्प स्थिति चाहिए। भय-चिन्ता, राग-द्वेष से प्रभावित आत्मा के संकल्प-विकल्प अवश्य चलेंगे। यथार्थ ज्ञान आत्मा को भय-चिन्ता, राग-द्वेष, अपने-पराये की भावना से मुक्त करता है, जिससे आत्मा निर्संकल्प-निर्विकल्प

होकर योग-साधना कर सकता है, जिससे देहाभिमान नष्ट होता है और आत्मिक स्वरूप की जाग्रति होती है।

वास्तव में देह मे रहते आत्मा की कभी भी निर्संकल्प स्थिति होती नहीं है, आत्मा में कुछ न कुछ संकल्प रहता ही है। इसलिए बाबा ने इस सम्बन्ध में कहा है - देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने बिन्दुरूप आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर बिन्दुरूप परमात्मा की याद में स्थित हो जाना ही निर्संकल्प स्थिति है, जो परमशान्तिमय है, जिसको ही बीजरूप स्थिति, मुक्त स्थिति कहा जाता है। जीवन में रहते ये मुक्ति का अनुभव परम शान्तिमय है और मुक्ति का यथार्थ अनुभव है। इसमें ही विकर्म विनाश होते हैं।

निर्विकल्प स्थिति की दो स्थितियां हैं। एक देह से न्यारे होकर अपने सूक्ष्म स्वरूप में स्थित होकर अव्यक्त रूपधारी ब्रह्मा बाबा के साथ विश्व कल्याण का संकल्प करना, विश्व-भ्रमण करना और दूसरी विश्व-नाटक को यथार्थ रीति समझ कर साक्षी होकर इसको देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना, जिससे आत्मा में कोई विकल्प उत्पन्न न हो। ये स्थिति ही यथार्थ जीवनमुक्ति के अनुभव की स्थिति है, जो परमानन्दमय और परम सुखमय है।

इस सत्य का अनुभव और निश्चय करने वाला ही निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकता है, जो परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से भी अति श्रेष्ठ है क्योंकि परमधाम में देह न होने के कारण मुक्त होते भी मुक्ति का कोई अनुभव नहीं और सतयुग में जीवनमुक्त होते भी जीवनबन्ध का ज्ञान न होने से जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव का कोई विशेष महत्व नहीं है। महत्व अभी के अनुभव का है। "कोई कहे मैं 6-8 घण्टा योग में रहता हूँ तो बाबा मानेगा नहीं। ... मुरली सुनना याद नहीं है। यह तो धन कमाते हो। याद में तो सुनना बन्द हो जाता है।... मुरली सुनने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। ... याद से ही सतोप्रधान बनेंगे।" सा.बाबा 29.1.04 रिवा.

"बाप कहते हैं - जो भी आकारी, साकारी वा निराकारी चित्र हैं, उन्हें तुमको याद नहीं करना है। तुमको तो लक्ष्य दिया जाता है एक विचित्र बाप को याद करने का। मनुष्य तो चित्र देखकर याद करते हैं। बाबा तो कहते हैं - चित्रों को देखना अब बन्द करो, यह सब है भक्ति मार्ग। ... संगमयुग पर हैं पारसबुद्धि। बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो, बुद्धियोग ऊपर में लटकाओ। जहाँ जाना है, उनको ही याद करना है। एक बाप, दूसरा न कोई।"

सा.बाबा 5.6.02 रिवा.

अन्य सभी योग तो किसी न किसी व्यक्ति के द्वारा सिखाये गये हैं और उनमें किसी न किसी प्रकार से कोई न कोई व्यक्ति या वस्तु का आधार अवश्य है, जो आधार अवश्य ही

याद आता है। योग के अनादि सिद्धान्त अनुसार आत्मा का जिसके साथ योग होगा, उसके गुण-धर्म-संस्कार उस पर अवश्य प्रभावित होंगे। इस कारण आधा कल्प से विभिन्न प्रकार के योगों की साधना करते भी आत्माओं का पतन ही हुआ है क्योंकि उनमें किसी न किसी प्रकार से व्यक्ति से सम्बन्ध रहा है। परन्तु ये बात भी स्मरणीय है कि जब मनुष्य अच्छे लक्ष्य को लेकर किसी योग की साधना करता है तो उसका अच्छा फल अवश्य होता है, इसलिए उसके आत्मिक पतन की गति मन्द अवश्य पड़ती है और उससे आत्मा को अल्पकाल का सुख भी मिलता है लेकिन आत्मा की चढ़ती कला नहीं हो सकती। ये परमात्मा के द्वारा सिखाया राजयोग ही सत्य योग है, जिससे आत्मा पावन बन सकती है और आत्मा की चढ़ती कला का आधार है। अन्य कोई भी योग चढ़ती कला का आधार नहीं है और न ही आत्मा और विश्व को पावन बना सकता है। जब योग के विषय में इस अनादि सत्य का निश्चय होगा तब ही हमारा और सब से बुद्धियोग टूटेगा और एक परमात्मा से योग जुटेगा।

योग को प्राया: लोग एक कठिन साधना समझते हैं परन्तु वास्तविकता तो ये है कि योग एक आनन्द है, परम प्राप्ति है, बोझ या बन्धन नहीं। इसीलिए "योगानन्द" शब्द का प्रयोग किया जाता है। योग ही जीवन है, वियोग ही मृत्यु है। योगानन्द ही सच्चा सुख है और भविष्य के सुख का आधार है। सुख के सम्बन्ध में अर्थशास्त्र में उपयोगिता ह्रास नियम का एक सिद्धान्त है, जिसके अनुसार जितना 2 हम किसी चीज का उपभोग करते हैं, उतना उससे प्राप्त उपयोगिता घटती जाती है और एक समय आता जब उससे अरुचि हो जाती है लेकिन योगानन्द ऐसा आनन्द है, जितना ही हम उसकी गहराई में जाते हैं, उसका उपभोग करते हैं, उतनी उसमें रुचि और बढ़ती जाती है, उतनी उसकी उपयोगिता बढ़ती जाती है।

"कई समझते हैं हम अपने को आत्मा समझ शान्त में बैठते हैं। परन्तु इससे भी कोई पाप भस्म नहीं होगा। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा निश्चय कर फिर मुझे याद करो। ... जितना प्यार से बाबा को याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे और फिर वर्सा भी मिलेगा।"

सा.बाबा 20.6.72 रिवा.

"मीठे बच्चे, तुमको याद शिवबाबा को ही करना है। इन मम्मा-बाबा को भी याद नहीं करना है। इन ब्रह्मा को भी याद किया तो भी समय निष्फल गया ... किसी भी स्थूल चीज व देहधारी व्यक्ति को याद नहीं करना है।" सा.बाबा 5.11.97 रिवा.

"बाप को छोड़कर दूसरे को याद करना, यह भी विकर्म है।"

सा.बाबा 5.1.69 रात्रि क्लास

"पवित्रता ही योगी जीवन का आधार है। ... जहाँ अपवित्रता का अंश है, वहाँ पवित्र बाप की

याद जो है, जैसा है, वैसे नहीं आ सकती।" अ.बापदादा 1.3.99

"बाप तो कहते हैं तुम इन ब्रह्मा के शरीर को भी याद नहीं करो। शरीर के भान में आने से पूरा ज्ञान उठा नहीं सकेंगे ... विकर्माजीत कैसे बनेंगे। योग में रहें तो पाप भी न करें। नहीं तो उस पाप का सौगुणा दण्ड हो जाता है।" सा. बाबा 25.11.72 रिवाइज

"योग में रहने से ही तुम्हारी कमाई होगी। बाप कहते हैं - हे नींद को जीतने वाले, ऐसे मत समझो नींद फिटने से माथा खराब होगा। यह तो कमाई है ना। बाप बेहद का पुरुषार्थ कराते हैं। सवेरे उठो। अपने लिए ही पुरुषार्थ करते हो। तुम जानते हो, जितना योग में रहेंगे, फिर निरोगी काया मिलेगी।" सा.बाबा 28.11.73 रिवाइज

योग से आत्मा के पावन बनने के अतिरिक्त और क्या 2 काम होते हैं?

योग से शारीरिक-मानसिक रोग से बचाव और रोग का निदान भी होता है। योग से आने वाली घटनाओं का आभास और उनसे सुरक्षा भी होती है। योग से स्वयं भी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हैं और दूसरों को अनुभव करा सकते हैं।

बीजरूप अर्थात् बिन्दु रूप स्थिति क्या है?

* बीजरूप स्थिति अर्थात् चेतन हो परन्तु चेतना न हो अर्थात् देह में रहते आत्मा को संकल्प-विकल्प न उठे। परन्तु यथार्थता ये है कि देह में रहते चेतना या संकल्प शत प्रतिशत मर्ज नहीं हो सकता। सूक्ष्म में संकल्प रहता ही है, जिसके आधार पर आत्मा को परमशान्ति, परमानन्द की अनुभूति होती है। इसलिए संकल्प को शत प्रतिशत समाप्त नहीं किया जा सकता है परन्तु उसको न्यूनतम किया जाता सकता है।

* समस्त चेतना को समेटकर चेतन आत्मा में स्थित हो जाना ही सुसुप्त अवस्था या डेड साइलेन्स की अवस्था है। समस्त झाड़ के ज्ञान से अपने को समेटकर आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना ही बीज रूप स्थिति है और सर्व पुरुषार्थ का सार है।

"व्यक्तियों को तो बदलना है ही लेकिन साथ में प्रकृति को भी बदलना है। प्रकृति को मुख का कोर्स तो नहीं करायेंगे। ... योगबल से बदलेंगे ना। ... संकल्प भी जब शान्त हो जाते हैं, एक ही संकल्प "बाप और आप", इसी को योग कहते हैं। ... ज्ञान के मनन को योग नहीं कहेंगे। जब पॉवरफुल योग में बैठते हो तो संकल्प भी शान्त हो जाते हैं, सिवाए एक संकल्प "बाप और आप"।" अ.बापदादा 15.11.89 बाम्बे ग्रुप

"सन्देशी पूरी रिपोर्ट दे सकती है कि किसकी बुद्धि बाहर भटकती है, कौन क्या करते हैं, किसको झुटका आता है, सब बता सकती है।" सा.बाबा 8.5.04 रिवा.

"जैसे और लोग कहते हैं - हम कैसे निश्चय करें, ऐसे यहाँ भी हैं। अगर पूरा निश्चय होता तो

बाप को बहुत प्यार से याद करते-करते अपने में बल भरते, बहुत सर्विस करते क्योंकि सारे विश्व को पावन बनाना है ना। योग में भी कमी है तो ज्ञान में भी कमी है।"

सा.बाबा 07.9.04 रिवा.

"जितना मुझ बाप को याद करेंगे तो और सब भूल जायेंगे। कोई भी याद नहीं रहेगा। परन्तु वह अवस्था तब हो जब पक्का निश्चय हो। निश्चय नहीं तो याद भी ठहर नहीं सकती।"

सा.बाबा 17.6.04 रिवा.

परमात्मा के हर गुण-कर्तव्य-शक्ति का अनुभव और उसका निश्चय होने से ही परमात्मा की याद स्थिर होती है और यही आत्मा के कल्याण का मार्ग है। जब परमात्मा पर पूर्ण निश्चय होगा तो उसकी याद स्थिर होती है और उसकी मदद अवश्य मिलेगी। जब परमात्मा की मदद का अनुभव होता है तो उनकी याद दृढ़ होती है और जीवन परमानन्दमय अनुभव होता है।

"जैसे और लोग कहते हैं - हम कैसे निश्चय करें कि भगवान आते हैं? ऐसे यहाँ भी हैं। अगर पूरा निश्चय होता तो बाप को बहुत प्यार से याद करते-करते अपने में बल भरते, बहुत सर्विस करते क्योंकि सारे विश्व को पावन बनाना है ना। योग में भी कमी है तो ज्ञान में भी कमी है।"

सा.बाबा 07.9.04 रिवा.

"जितना मुझ बाप को याद करेंगे तो और सब भूल जायेंगे। कोई भी याद नहीं रहेगा। परन्तु वह अवस्था तब हो जब पक्का निश्चय हो। निश्चय नहीं तो याद भी ठहर नहीं सकती।"

सा.बाबा 17.6.04 रिवा.

"जो अच्छे निश्चयबुद्धि हैं, वे बाप की याद कभी भूलते नहीं हैं।... ड्रामा में ऐसी युक्ति रची हुई है, जो श्रीमत पर चलते हैं, वे ही ऊंच पद पा सकते हैं। बाकी सब सजायें खाकर शान्तिधाम अथवा पावन दुनिया में जायेंगे। ... ड्रामा अनुसार फिर भी गीता के भगवान का नाम ऐसे ही बदलना है।"

सा.बाबा 16.6.06 रिवा.

९. *पवित्रता*

पवित्रता मानव जीवन का श्रृंगार है और सुख-शान्ति की जननी है। पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य केवल काम-वासना या काम विकार में न जाने को ही नहीं कहा है बल्कि ब्रह्मचर्य का वास्तविक अर्थ है ब्रह्म के समान आचरण। ब्रह्म में पूर्ण पवित्र आत्मा ही रह सकती है। पूर्ण पवित्र अर्थात् जिसमें देहाभिमान तो दूर की बात है परन्तु देहभान का भी अंश न हो। साधारण भाषा में ब्रह्मचर्य का अर्थ काम-वासना से दूर और काम-विकार में न जाने को ही

माना जाता है, इसलिए ही धर्म-पिताओं, सन्यासियों, कन्याओं की महानता है। पवित्रता आध्यात्मिक पुरुषार्थ का लक्ष्य है और ये ब्रह्मचर्य की धारणा उस पुरुषार्थ की प्रथम सीढ़ी है अर्थात् इसके बिना आध्यात्मिक पुरुषार्थ सम्भव नहीं है। पवित्रता का ज्ञान, पवित्रता का महत्व, पवित्रता के लिए क्या पुरुषार्थ करना है, उसके विषय में परमात्मा पिता ने विस्तार से बताया है, इसलिए ही परमात्मा को पतित-पावन कहा जाता है।

पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्माचारी। गायन है कि ब्रह्मचर्य के बल से ही देवताओं ने मृत्यु को जीता है। पवित्रता या ब्रह्मचर्य बन्धन नहीं है परन्तु आत्मा का श्रृंगार है। ये परमपिता परमात्मा का हम आत्माओं को परम उपहार है और जीवन के सर्व सुखों का आधार है।

"जो बाप को प्यार से याद करते हैं, बाप भी उनको प्यार से याद करते हैं। जो मुझे न भी याद करते हैं, मैं उनको भी याद करता हूँ क्योंकि मुझे तो सभी को घर वापस ले जाना है।"

सा.बाबा 12.12.68

मन्सा-वाचा-कर्मणा ब्रह्मचर्य ब्राह्मण जीवन की आधार-शिला है, जिसका वरदान हर ब्राह्मण-आत्मा को पतित-पावन परमात्मा पिता ने ब्राह्मण जन्म लेते ही दिया है। पवित्रता का शिलान्यास पतित पावन शिवबाबा ने हरेक ब्राह्मण के जीवन में किया है, इसके आधार पर ही इस ब्राह्मण-जीवन का ये सुन्दर-सुखमय भवन खड़ा हुआ है और इस जीवन की सफलता आधारित है। इस सत्य को अनुभव करना और निश्चय करना ही इस ब्राह्मण-जीवन की सफलता का आधार है। इस सत्य पर निश्चय होने के कारण उसकी धारणा इस जीवन में सहज हो जाती है और जो इस निश्चय से डगमग हो जाता है, उसके लिए ये धारणा असम्भव ही हो जाती है।

जिसको ये निश्चय होगा कि पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है अर्थात् सुख-शान्ति का आधार है तो वह पवित्रता के लिए अवश्य ही पुरुषार्थ करेगा और जब पुरुषार्थ करेगा तो सफलता भी अवश्य होगी अर्थात् ब्रह्मचर्य की धारणा करना सहज होगा, जिससे जीवन में सुख-शान्ति का अनुभव अवश्य होगा।

पवित्रता ब्राह्मण आत्माओं को परमात्मा का परम वरदान है। इसलिए पवित्रता की सहज धारणा के लिए बाबा के कुछ अमूल्य महावाक्यों को सदा जीवन में जाग्रत रखें -

"संगमयुग पर विशेष वरदाता बाप से दो वरदान सभी बच्चों को मिलते हैं। एक सहजयोगी भव, दूसरा पवित्र भव। ... ऐसे ब्राह्मण जीवन का स्वांस है पवित्रता। ... वरदाता और वरदानी आत्मायें दोनों सदा कम्बाइण्ड रूप में रहें तो पवित्रता की छत्रछाया स्वत: रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिवान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है।"

अव्यक्त बापदादा 6.1.82

"पवित्रता-ब्राह्मण जीवन की महानता है। ऐसी महान चीज को अपनाने में मेहनत नहीं करो, हठ से नहीं अपनाओ। मेहनत और हठ निरन्तर नहीं हो सकता। ... पवित्रता अपनी निजी वस्तु है। अपनी चीज को अपनाने में मेहनत क्यों? ... अपनी चीज का नशा होता है।"

अव्यक्त बापदादा 6.1.82

"स्वमान में स्थित हो जाओ। स्वमान क्या है? "मैं परम पवित्र आत्मा हूँ।" सदा अपने इस स्वमान के आसन पर स्थित होकर हर कर्म करो तो सहज वरदानी हो जायेंगे।"

अव्यक्त बापदादा 6.1.82

जिसको निश्चय होगा कि पवित्रता हमारी बहुमूल्य सम्पत्ति है और परमपिता परमात्मा का वरदान है, वह कब इसको गँवायेगा नहीं। जो पुरुषार्थ करता, उसको परमात्मा का सहयोग अवश्य मिलता और वह सफलता भी अवश्य पाता है। इसीलिए निश्चयबुद्धि विजयी गाया हुआ है। पवित्रता आत्मा की बहुमूल्य पूँजी है और सर्व सुखों का आधार है। जिसको इस सत्य का निश्चय होगा, वह उसकी हर कीमत पर रक्षा करेगा।

आत्मायें जब इस धरा पर आती हैं, तो पूर्ण पवित्र होती हैं और जब वापस घर जाती हैं तो भी पूर्ण पवित्र होकर ही जायेंगी। कोई भी अपवित्र आत्मा घर परमधाम जा नहीं सकती। जो आत्मायें अपने पुरुषार्थ से पवित्र बनेंगी, वे इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अनुभव करेंगी और जो अपने पुरुषार्थ से पवित्र नहीं बनती, उनको अन्त में सजा खाकर पवित्र बनना होता है अर्थात् समय और परिस्थितियां पवित्र बनाती है, जिससे वे इस जीवन के सच्चे सुख से भी वंचित रह जाती हैं तथा भविष्य में भी सतयुगी-त्रेतायुगी सुख से भी वंचित रह जाती हैं।

"अगर अवित्रता का कोई कार्य होता है तो यह बड़ा पाप है। इस पाप की सजा बहुत कड़ी है।... हो गया, ऐसे छूटेंगे नहीं। इसमें अलबेले नहीं बनो। कोई भी ब्राह्मण चाहे सरेण्डर है, चाहे सेवाधारी है, चाहे प्रवृत्ति वाला है। इस बात में धर्मराज भी नहीं छोड़ेगा, ब्रह्मा बाप भी धर्मराज को साथ देगा। इसलिए कुमार कुमारियां कहाँ भी हो, मधुबन में हो, सेन्टर पर हो लेकिन इसकी चोट, संकल्प मात्र की चोट बहुत बड़ी चोट है।... बापदादा ऑफीशियल इशारा दे रहा है। इसमें नहीं बच सकेंगे। इसका हिसाब अच्छी तरह से लेंगे। कोई भी हो। इसलिए सावधान, अटेन्शन! दोनों कान खोल कर सुनना। वृत्ति में भी टचिंग नहीं हो। दृष्टि में भी टचिंग नहीं। संकल्प में नहीं तो वृत्ति-दृष्टि क्या है! सम्पन्नता का समय समीप आ रहा है, बिल्कुल प्योर बनने का। उसमें यह चीज तो पूरा ही सफेद कागज पर काला दाग है।"

अ.बापदादा 15.11.03

द्वितीय अध्याय (IInd Chapter)

निश्चयबुद्धि, आध्यात्म और मानव जीवन का चरमोत्कर्ष

वर्तमान समय आध्यात्म के चरमोत्कर्ष का समय है और ये ब्राह्मण जीवन मानव जीवन के चरमोत्कर्ष का जीवन है क्योंकि अभी ही परमपिता परमात्मा आकर आत्माओं से मिलते हैं और जीवन के सर्वश्रेष्ठ सुख, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराते हैं। परमात्मा आकर सर्वश्रेष्ठ ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखलाते हैं, जो आत्मा की चढ़ती कला का मूलाधार है। इस ब्राह्मण जीवन को चोटी कहा जाता है। अभी ही आत्मा को परमात्म-मिलन और सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव होता है। मुक्तिधाम में मुक्ति का और जीवनमुक्तिधाम में जीवनमुक्ति का वास्तविक अनुभव ही नहीं होगा क्योंकि मुक्ति धाम में तो आत्मा को अनुभव का साधन देह ही नहीं होती है और न ही संकल्प होता है। जीवनमुक्तिधाम में जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध का ज्ञान ही नहीं रहता है, इसलिए जीवनमुक्ति के उस अनुभव का कोई महत्व नहीं है। अभी ही जीवनमुक्त और जीवनबन्ध दोनों का ज्ञान और अनुभव है, इसलिए अभी का जीवनमुक्ति का अनुभव ही यथार्थ अनुभ्छाव है। यही समय चढ़ती कला का समय है, सतयुग प्रथम जन्म के प्रथम सेकेण्ड से ही उतरती कला आरम्भ हो जाता है, भले ही उस समय आत्मा को उतरती कला का अनुभव नहीं होता है। इस श्रेष्ठतम समय के महत्व को जानकर, उसको अनुभव कर, उस पर निश्चय कर उसका लाभ उठाने वाले की विजय निश्चित है, इसमें अंशमात्र भी संदेह नहीं है। सफलता ऐसी निश्चयबुद्धि आत्मा का जन्मसिद्ध अधिकार है।

जैसे स्थूल धन से अनेक कार्य किये जा सकते हैं, अनेक साधन-सुविधायें प्राप्त की जा सकती हैं, स्वास्थ्य के लिए चिकित्सा आदि की सुविधायें प्राप्त की जा सकती हैं, सम्बन्धों में मधुरता का साधन भी धन बनता है आदि आदि। उसी प्रकार ज्ञान धन से भी ये सब कार्य किये जा सकते हैं। देह से न्यारे होकर सच्चे सुख का अनुभव किया जा सकता है, भाई-भाई की दृष्टि से सम्बन्धों में मधुरता लाई जा सकती है, देह से न्यारी स्थिति द्वारा अनेक दैहिक-मानसिक व्याधियों से बच सकते हैं और यदि कोई व्याधि आ गई तो उसका निदान किया जा सकता है। रोग होते भी देह से न्यारे होकर उसके दुख-दर्द से मुक्त हो सकते हैं। जो सुख साधन-सुविधाओं से भी नहीं प्राप्त हो सकता है, उससे अधिक सुख ज्ञान धन से प्राप्त किया जा सकता है। स्थूल धन से जो सुख प्राप्त होता है वह अल्पकाल के लिए होता है परन्तु ज्ञान अविनाशी धन है और उससे जो सुख मिलता है वह भी अविनाशी अर्थात् चिर-स्थाई होता है।

देह से न्यारे होकर हम अनेक ऐसी प्राप्तियाँ कर सकते हैं, जो स्थूल धन से कभी भी सम्भव नहीं है जैसे मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव आदि। इस सत्य का अनुभव और निश्चय करने वाला ही इसका लाभ उठा सकता है। निश्चय के आधार पर ब्राह्मण जीवन में और क्या-क्या प्राप्तियां होती है और प्रभाव होते हैं, जिनका हमारे आध्यात्मिक जीवन की सफलता से घनिष्ट सम्बन्ध है, उनमें से कुछ विषयों पर विचार करेंगे -

१. निश्चयबुद्धि और धर्मराज़, धर्मराजपुरी एवं धर्मराज की सजायें

Q. क्या धर्मराज सजायें देता है ? उसका कोई अलग स्वरूप है, कोई अलग धर्मराजपुरी है, जहाँ आत्माओं के कर्मों का निर्णय होता है और उनकी सजायें मिलती हैं ? ... वास्तविकता क्या है ?

वास्तविकता को देखा जाये तो न तो धर्मराज का कोई अलग अस्तित्व और न ही अलग कोई धर्मराज पुरी है। ब्रह्मा तन में अवतरित हुए परमात्मा का ही अन्त में धर्मराज का स्वरूप बन जाता है क्योंकि जब परमात्मा सारा ज्ञान दे देता है तो अन्त समय साक्षी होकर धर्मराज के रूप में कर्मों का हिसाब-किताब करता है और आत्मायें अन्त समय स्थूल और सूक्ष्म शरीर से अपने कर्मों का हिसाब-किताब पूरा करती हैं, उसको भोगती हैं। परन्तु ये कटु सत्य है कि विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार हर जन्म के अन्त समय और कल्पान्त में हर आत्मा के किये हुए कर्मों का दृश्य सामने आता है और उसको उसके अनुसार फल की अनुभूति होती है। ये बात विकर्मों के विषय में विशेष लागू होती है। जो बातें भक्ति मार्ग में कही गई हैं, उनका ज्ञान मार्ग से कुछ न कुछ बीज रूप में सम्बन्ध अवश्य है। बाबा ने भी इसके सम्बन्ध में अनेक बातें कही हैं।

"ऊंच से ऊंच बाप है, उनके साथ धर्मराज भी है। धर्मराज द्वारा बहुत कड़ी सजा खाते हैं। ... बाबा के पास पूरा हिसाब रहता है। ... धर्मराज पूरा हिसाब लेंगे।"

सा.बाबा 4.7.05 रिवा.

धर्मराजपुरी के विधि-विधान

जैसे दुनिया में पाप-कर्म की सजा के लिए विधि-विधान हैं, वैसे इस विश्व में भी विकर्मों की सजाओं के अदृश्य विधि-विधान, जिनके अनुसार हर आत्मा को अपने कर्मों का फल स्वत: ही मिलता है। परमात्मा कोई हिसाब रखता नहीं है लेकिन हर आत्मा का सेकेण्ड बाई सेकेण्ड का कर्म और उसका फल नूँधा हुआ है और नूँध होता रहता है। परमात्मा, प्रकृति और आत्मायें हर आत्मा के कर्म के गवाह बनते हैं अर्थात् सजा के समय उनका साक्षात्कार होता है।

"चलते-फिरते भी विचार-सागर मन्थन करते रहना है। ... योग नहीं होगा तो एकदम गिर पड़ेंगे। ... कई बच्चे डिससर्विस कर अपने को श्रापित करते हैं। ... भूल का पश्चाताप करते हैं। फिर भी पश्चाताप से कोई माफ नहीं हो सकता है।"

सा.बाबा 4.7.05 रिवा.

"इस जन्म में कोई पाप कर्म तो नहीं किये हैं? ... इस जन्म के पाप बाप को बता दो तो हल्के हो जायेंगे, नहीं तो दिल अन्दर खाता रहेगा। ... हमारा बच्चा बनकर फिर भूल करने से सौगुणा वृद्धि हो जाती है।" (सौगुणा दण्ड पड़ जाता है)

सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

"बहुतों को बहुत खराब ख्यालात आते हैं, फिर इनकी सजा भी बहुत कड़ी है।... अवस्था गिर जाती है। अवस्था का गिरना ही सजा है।"

सा.बाबा 7.12.04 रिवा.

"बेकायदे चलन से नुकसान बहुत होता है। हो सकता है फिर कड़ी सजायें भी खानी पड़े। अगर अपने को सम्भालेंगे नहीं तो बाप के साथ-साथ धर्मराज भी है, उनके पास बेहद का हिसाब-किताब रहता है।" सा.बाबा 7.12.04 रिवा.

"अभी थोड़े समय में धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे। ... फिर अनुभव करेंगे कि एक संकल्प की भूल से एक का सौगुणा दण्ड कैसे मिलता है।"

अ.बापदादा 22.10.70

"जरा भी सम्पूर्ण आहुति की कमी रह गयी तो सम्पूर्ण सफलता नहीं होगी। जितना और इतना का हिसाब है। हिसाब करने में धर्मराज भी है। उनसे कोई भी हिसाब रह नहीं सकता। ... सिर्फ निश्चय और हिम्मत चाहिए। निश्चय वालों की विजय कल्प पहले भी हुई थी और अभी भी हुई पड़ी है।" अ.बापदादा 25.1.70

"मैं निराकार रूप में तो कुछ देख नहीं सकता हूँ। आरगन्स बिगर आत्मा कुछ भी कर न

सके। ... यह तो अन्धश्रृद्धा है, जो कहते हैं ईश्वर सब कुछ देखता है। ... अच्छा या बुरा काम हर एक ड्रामा अनुसार करते हैं। मैं थोड़ेही बैठ इतने करोड़ों मनुष्यों का हिसाब रखूँगा। मुझे शरीर है तब सब कुछ करता हूँ। करन-करावनहार भी तब कहते हैं, जब शरीर में आते हैं। नहीं तो कह न सकें। ... पार्ट बिगर कोई कुछ कर न सके। शरीर बिगर आत्मा कुछ कर नहीं सकती।" सा.बाबा 1.2.05 रिवा.

बाबा ने ये भी कहा है कि धर्मराज की ट्रिबुनल भी ब्राह्मणों के लिए ही बैठेगी क्योंकि उनको बाबा ने सारा ज्ञान दिया फिर भी उन्होंने नहीं माना और विकर्म किये।

"यह सब वायदे बाप के पास चित्रगुप्त के रूप में हिसाब के खाते में नूँधे हुए हैं। ... पत्र जो लिखकर दिया वह पत्र वा संकल्प सूक्ष्मवतन में बापदादा पास सदा के लिए रिकार्ड में रह गया।" अ.बापदादा 31.3.86

"चोरी की, उसका सौगुणा दण्ड हो ही जाता है। बाप जानकर क्या करेंगे। ... ईश्वर का बच्चा बनकर फिर चोरी करता, शिवबाबा जिनसे इतना वर्सा मिलता है, उनके भण्डारे की चोरी करता है, यह तो बहुत बड़ा पाप है।" सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

"लगाव वाले को धर्मराज को सलाम भरना ही पड़ेगा। लगाव वाले सम्पूर्ण फर्स्ट जन्म का राज्यभाग्य पा न सकें। इसी प्रकार पुराने स्वभाव वाले नये जीवन, नये युग का सम्पूर्ण और सदा सुख का अनुभव नहीं कर पाते। ... अब सभी प्रकार के लगाव और स्वभाव को समाप्त करो।" अ.बापदादा 15.7.73

"अभी फिर भी कोई व्यर्थ अथवा अशुद्ध संकल्प चलने की प्रत्यक्ष रुप में कोई सजा नहीं मिल रही है, लेकिन थोड़ा आगे चलेंगे तो कर्म की तो बात ही छोड़ो लेकिन अशुद्ध वा व्यर्थ जो संकल्प हुआ, किया उसकी सजा का भी अनुभव करेंगे।"

अ.बापदादा 3.5.72

"सूक्ष्म सजायें सूक्ष्म में मिलती रहती हैं और दिन प्रतिदिन ज्यादा मिलती जायेंगी लेकिन ईश्वरीय मर्यादाओं के प्रमाण कोई भी अगर अमर्यादा का कर्तव्य करते हैं, मर्यादा का उल्लंघन करते हैं तो ऐसी अमर्यादा से चलने वाले को स्थूल सजायें भी भोगनी पड़ेंगी।"

अ.बापदादा 3.5.72

धर्मराज की सजायें और सजाओं से बचने की विधि

बाबा ने ये भी ज्ञान दिया है कि धर्मराज पुरी की सजायें क्या हैं और कैसे धर्मराज की सजाओं से बच सकते हैं, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना चाहिए।

"पुरुषार्थ सजाओं से बचने का करना है। नहीं तो बाप के आगे सजा खानी पड़ेगी। ... बाप के साथ धर्मराज भी तो है ना। वह तो जन्मपत्री जानते हैं। ... बाप का बनने के बाद यह विचार हर बच्चे को आना चाहिए कि हम बाप का बने हैं तो स्वर्ग में चलेंगे ही परन्तु हम स्वर्ग में क्या बनेंगे।"

सा.बाबा 1.3.05 रिवा.

"स्वयं ही स्वयं का जज बनो। धर्मराजपुरी में जाने से पहले जो स्वयं, स्वयं का जज बनता है, वह धर्मराजपुरी की सजा से बच जाता है। ... सोच-समझ कर कर्म करो। ... कर्म से पहले संकल्प उत्पन्न होता है। यह संकल्प बीज है। ... यह संकल्प जीवन का श्रेष्ठ खजाना है।"

अ.बापदादा 27.9.75

"शरीर तो जड़ है, उसमें जब चेतन्य आत्मा प्रवेश करती है, उसके बाद गर्भ में सजा खाने लगती है। आत्मा सजा खाती है। सजायें भी कैसे खाती है? भिन्न-भिन्न शरीर धारण कर जिन-जिन को जिस रूप से दुख दिया है, वह साक्षात्कार करते जाते हैं और दण्ड मिलता जाता है। त्राहि-त्राहि करते हैं, इसलिए गर्भ जेल कहते हैं। ड्रामा कैसा अच्छा बना हुआ है।"

सा.बाबा 19.5.72 रिवा.

"जन्म-जन्मान्तर का बोझा सिर पर है। साक्षात्कार कराते सजा देते जायेंगे। बहुत सजायें हैं, जिनका पारावार नहीं। एक-एक जन्म के पापों का साक्षात्कार कराकर सजा देते हैं। वह तो जैसे जन्म-जन्मान्तर की सजायें हो गई। होता बिजली मुआफिक है परन्तु उसकी भासना ऐसी होती है जैसे कि सेकण्ड में हजारों वर्ष की सजा खाते हैं।"

सा.बाबा 5.12.73 रिवा.

धर्मराज की ट्रिबुनल

कर्म का फल तो हर आत्मा को मिलता ही है, यह इस विश्व-नाटक का अनादि नियम है परन्तु जो आत्मा जानते हुए, परमात्मा के मना करने पर भी कोई गलत कर्म करता है, उसके लिए ट्रिबुनल बैठती है और उसका कई गुणा दण्ड मिलता है। जिसके लिए बाबा ने कई बार कहा है कि ट्रिबुनल उन बच्चों के लिए बैठेगी, जिनको बाबा ने ज्ञान दिया है, सावधान किया है फिर भी वे विकर्म करते हैं, बाप का नाम बदनाम करते हैं। बाबा ने ये भी कहा है कि उस समय धर्मराज ये सब साक्षात्कार करायेगा कि तुमको ब्रह्मा द्वारा अमुख रूप से, अमुख स्थान पर सावधान किया, फिर भी तुमने पाप कर्म किये, अब उन कर्मों की सजा खानी ही पड़ेगी। कर्म के विधि-विधान अनुसार विधान को जानते हुए विकर्म करना, परमात्मा के मना करने पर भी विकर्म करना, उसकी सजा अधिक मिलती है, यह राज़ भी ड्रामा में नूँधा हुआ है कि ऐसे कर्मों का अन्त समय साक्षात्कार होता है, जिससे पश्चाताप की महसूसता बढ़ जाती है।

"तुम्हारे लिए तो ट्रिब्युनल बैठेगी। खास उन बच्चों के लिए जो सर्विस लायक बनकर फिर ट्रेटर बन जाते हैं। ... दान देकर फिर बहुत खबरदार रहना है। फिर ले लिया तो सौगुणा दण्ड पड़ जाता है।" सा.बाबा 3.11.04 रिवा.

"बाप कहते हैं - एक-दो से सेवा मत लो। कोई अहंकार नहीं आना चाहिए। दूसरे से सेवा लेना, यह भी देह-अहंकार है। बाबा को समझाना तो पड़े ना। नहीं तो जब ट्रिबुनल बैठेगी तब कहेंगे, हमको पता थोड़ेही था कायदे-कानून का। इसलिए बाप समझा देते हैं, फिर साक्षात्कार कराये सजा देंगे।" सा.बाबा 5.3.2001 रिवा.

"श्रीमत पर न चलते तो नाम बदनाम करते हैं। भल बच्चे हैं परन्तु बच्चों को ऐसे थोड़ेही छोड़ेंगे। हाँ ट्रिबुनल बैठती है बच्चों को तो और ही कड़ी सजा मिलती है क्योंकि धोखा देते हैं। ... बाप तो उस समय मुस्कराते हैं। कहते हैं इनको कुल्हाड़ी से टुकड़ा-टुकड़ा करो। फांसी की सजा देने वाले रोते हैं क्या ? ऐसे थोड़ेही बच्चों पर दया कर देंगे।"

सा.बाबा 22.11.73 रिवा.

कुछ धर्मों में मृत्यु के बाद शव को जलाते हैं और कुछ धर्मों में दफनाते हैं अर्थात् कब्रदाखिल करते हैं। जो कब्रदाखिल करते उनकी मान्यता है कि क्यामत के समय परमात्मा आकर उनको जगाते हैं और उनके कर्मों का हिसाब-किताब करते हैं। इस सत्य का भी अभी पता पड़ा कि अपने आत्मिक स्वरूप को भूलकर देहाभिमान के वशीभूत होना ही वास्तव में कब्रदाखिल होना है और अभी विनाश के समय परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देकर इस देहाभिमान से जगाते हैं और पावन बनाते हैं। यह सब ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है और हम सभी आत्माओं को देहाभिमान रूपी कब्र से जगाया है और हमको अपने कर्मों के हिसाब-किताब चुक्ता करने का रास्ता बता रहा है, उसके अनुसार जो अपने हिसाब-किताब को चुक्ता नहीं करेंगे, उनका हिसाब-किताब विनाश के समय धर्मराज के दरबार में पूरा होगा अर्थात् अन्त समय सजायें खाकर पूरा करना होगा।

"अभी है ही कयामत का समय। सबका हिसाब-किताब चुक्तू होता है। ... यह बना-बनाया अनादि ड्रामा है, जिसको साक्षी होकर देखते हैं कि कौन अच्छा पुरुषार्थ करते हैं। ... माया का तूफान अथवा कुसंग पीछे हटा देता है, खुशी गुम हो जाती है।"

सा.बाबा 20.1.05 रिवा.

"धर्मराज भी बिगर साक्षात्कार सजा नहीं देते हैं। प्रूफ तो चाहिए ना। वे भी समझते हैं - बरोबर मैंने बाप को छोड़कर यह कुकर्म किया। बदनामी कराने से फिर बहुतों पर आफतें आ जाती हैं। ... सारा दण्ड बदनामी कराने वालों पर पड़ जाता है।"

सा.बाबा 22.6.06 रिवा.

Q. धर्मराज की सजाओं का क्या विधि-विधान है, साक्षात्कार क्या और कैसे होता है ? भक्ति मार्ग में भी राजा दशरथ का उदाहरण है। अन्त समय ड्रामा अनुसार सब साक्षात्कार होता है और पश्चाताप करना पड़ता है।

"इन्द्र सभा में कोई परी किसी विकारी को छिपाकर ले आई तो इन्द्र सभा में बांस आने लगी। तो ले आने वाली पर दण्ड पड़ गया, वह पत्थर बन गई। ऐसे कुछ कहानी है। बाप पारसनाथ बनाते हैं फिर अगर अवज्ञा की तो पत्थर बन जाते हैं।... बाबा कोई यह श्राप नहीं देते हैं परन्तु यह तो एक लॉ है।"

सा.बाबा 22.6.06 रिवा.

२. *निश्चय बुद्धि और सेवा - ज्ञान सेवा, यज्ञ की स्थूल सेवा और मन्सा सेवा।*

"बाबा का सारा दिन ख्याल चलता रहता है। ... इतनी विशाल बुद्धि से युक्ति रचनी चाहिए। सर्विस का शौक रखना चाहिए। खर्चा तो करना ही है। बाकी तुमको भीख मांगने की दरकार नहीं है। आप ही हुण्डी भर जायेगी। ड्रामा में नूँध है। बच्चों की बुद्धि चलनी चाहिए।"

सा.बाबा 20.11.01 रिवा.

इस ज्ञान मार्ग का सेवा एक मुख्य विषय है और भविष्य प्रालब्ध का मुख्य आधार है। इस अध्यात्मिक जीवन में पूर्ण सफलता पाने के लिए सेवा में सफलता महत्वपूर्ण है। सेवा के आधार पर ही हमारे भविष्य के सम्बन्ध बनते हैं और भविष्य प्राप्ति का आधार है। इस सत्य का निश्चय वाला ही दिल से सेवा कर सकेगा और सेवा का यथार्थ फल खुशी अनुभव करेगा।

सेवा के मुख्य तीन स्वरूप हैं - ज्ञान सेवा, यज्ञ की स्थूल सेवा, मन्सा सेवा। बाबा ने कहा है - सेवा में सफलता अर्थात विजय प्राप्त करने के लिए मंसा-वाचा-कर्मणा तीनों रूप से साथ-साथ सेवा हो।

जब ये निश्चय हो जाता है कि हम सभी आत्मायें एक परमात्मा की सन्तान हैं, अन्य सभी आत्मायें हमारे प्रिय भाई हैं, तो उनके कल्याण की भावना स्वत: जाग्रत हो जाती है और उसके लिए त्याग भी सहज हो जाता है। भाई-भाई की दृष्टि से सेवा करने से स्वयं को भी अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है और जिसकी सेवा करते हैं, उसको भी अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है और ये सुख की अनुभूति करना और कराना ही सच्ची सेवा है और इस

ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार है। भक्ति में भी यज्ञ की स्थूल सेवा को भी महान सेवा समझते हैं, यज्ञ की सेवा करने में अपना भाग्य समझते हैं और ये यज्ञ तो परमपिता परमात्मा का रचा हुआ है। जब यह निश्चय होता है तो सेवा में विशेष रुचि होती है और सेवा करने में विशेष खुशी का आभास होता है। जीवन में खुशी सबसे बड़ी प्राप्ति और विजय है। वास्तव में विजय की चाहना भी खुशी के लिए ही होती है। बाबा ने कहा है ये सेवा, सेवा नहीं है ये मेवा है, प्राप्ति है।

जब ये निश्चय होता है कि परमात्मा नई सृष्टि का रचता है और हम उसके बच्चे हैं तो उसके कर्तव्य में हमारी रुचि स्वत: ही होगी और ये ईश्वरीय सेवा का कार्य हमारे से स्वत: ही होगा, उसके बिगर हम रह नहीं सकेंगे।

आत्मा पर सेवा कोई बन्धन या बोझ नहीं है, ये तो ब्राह्मण जीवन का निजी कर्तव्य है और ब्राह्मण जीवन की सुरक्षा के लिए एक कवच है, जो हमारे इस जीवन की रक्षा करती है। सेवा भी आध्यात्मिक उन्नति का एक अंग है।

सेवा में सफलता पाने के लिए वाचा-कर्मणा सेवा के साथ 2 मन्सा सेवा परमावश्यक है। मन्सा सेवा जो हम करते हैं, उसका प्रभाव होगा या नहीं होगा - ये तो प्रश्न ही नहीं है। जो भी कार्य योगयुक्त होकर किया जाता है, उसका फल अवश्य ही अच्छा होता है। होगा या नहीं होगा का संकल्प उठना भी निश्चय की कमी है, एक प्रकार का संशय है। जहाँ यथार्थ निश्चय नहीं, संशय है तो संशयबुद्धि विनश्यन्ति अर्थात् असफलता ही होगी अर्थात् पूर्ण विजय नहीं होगी अथवा कभी होगी भी और कभी नहीं भी होगी। निश्चय में ही विजय है। सेवा की सफलता का मापदण्ड सेवा करने वाले की शक्ति, स्थिति और लगन पर निर्भर करता है और लगन का आधार निश्चय है। मन्सा सेवा की सफलता के लिए करने वाले में पवित्रता, एकाग्रता, शुभ चिन्तन, शुभ चिन्तक वृत्ति होनी चाहिए, जिसका आधार भी निश्चय है। इस बात का भी अवश्य ध्यान रखना है कि मन्सा सेवा भी ड्रामा की सीमा के अन्दर ही प्रभावित होगी अर्थात् सफल होगी, इसलिए आवश्यकता से अधिक आशावान भी नहीं होना है और असफलता को देखकर हतोत्साहित भी नहीं होना है। सदा निश्चय बुद्धि होकर की गई सेवा सदा ही सफल है।

सेवा के लिए ही बाबा ने मुरलियों में लाइट-हाउस और सर्च-लाइट बनकर सेवा करने के लिये कहा है। अर्थात् हमारी मन्सा दूसरों के लिए लाइट-हाउस, सर्चलाइट के समान मार्ग पदर्शित करे।जिसको ये समझ में आ जाता और निश्चय हो जाता कि ये ज्ञान धन है, इससे अविनाशी कमाई होती है, जो जन्म-जन्मान्तर तक साथ रहने वाली है, उसका बुद्धियोग अल्पकाल की कमाई से स्वत: हट जाता है और इस कमाई में लग जाता है। वह ज्ञान, गुण,

शक्तियों को धारण करने और दूसरों को दान करने के बिना रह नहीं सकता। वह भूतकाल को भूल जाता है और भविष्य के प्रति भी आश्वस्त रहता है। वह इस जीवन में ज्ञान-धन का सच्चा सुख पाता और भविष्य के लिए भी स्थूल धन जमा करता है क्योंकि ये ज्ञान धन ही भविष्य के स्थूल धन का आधार है। ज्ञान को धारण करना और दान करना ही उसको बढ़ाना है। ज्ञान-धन के बिना संसार की सम्पूर्ण सम्पत्ति भी एक व्यक्ति को सन्तोष प्रदान नहीं कर सकती। ज्ञान धन वाला जहाँ है, वहीं सन्तुष्टता का अनुभव करता है। यही मानव जीवन की सच्ची विजय है।

जब तक हमको ये निश्चय नहीं कि यज्ञ में तन-मन-धन से जो सेवा करते हैं या किससे कराते हैं या निमित्त बनते हैं तो उसका फल भी हमको मिलेगा ही तब तक हम यज्ञ की यथार्थ सेवा नहीं कर सकते हैं। यथा यदि हमने किसकी दिल से सेवा की, फिर वह व्यक्ति कहाँ भी जाये तो भी हमारा वर्तमान और भविष्य के लिए उसके साथ सम्बन्ध जुट ही गया और उससे हमको रिटर्न मिलेगा ही। यदि हमारी प्रेरणा से किसने यज्ञ में धन से सेवा की तो भी हमारे भाग्य में उसका फल जमा हो ही गया। भले ही उसने डायरेक्ट बड़े यज्ञ में सहयोग किया हो। जब तक इस सत्य का निश्चय नहीं तब तक लोभ-मोह के वशीभूत हम जिज्ञासु या धन में फंसे रहेंगे और हमारी सेवा सफल नहीं होगी या हमको यज्ञ सेवा में अभीष्ट सफलता नहीं मिलेगी।

सेवा की सफलता में योगबल या मन्सा सेवा का बहुत महत्व है। मन्सा सेवा एक अमोघ अस्त्र है, जो कभी निष्प्रभावी हो नहीं सकता। इस सम्बन्ध में संकल्प करने की गुंजाइश नहीं है। इसलिए बाबा सदा योग का प्रयोग करने के लिए कहता है। जब तक ये भावना है कि मन्सा सेवा का हमको प्रयोग (Experiment) करना है, तब तक इस अस्त्र पर पूरा निश्चय नहीं है, इसलिए उसका फल भी वैसा ही होगा अर्थात् हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। परन्तु जब ये निश्चय और स्मृति रहेगी कि सत्य बाप ने जो कहा वह शत प्रतिशत सत्य है, उसमें होगा या नहीं होगा का प्रश्न ही नहीं है। जो इस दृढ़ निश्चय से मन्सा सेवा करता अर्थात् मन्सा शक्ति का प्रयोग अर्थात् उपयोग (Utilise) करता है, उसकी मन्सा सेवा या योगबल की सेवा अवश्य सफल होती है। प्रयोग शब्द के दो अर्थ होते हैं। एक प्रयोग अर्थात् Utilise और दूसरा प्रयोग अर्थात् Experiment. अब बाबा ने किस भाव से योग का प्रयोग करने को कहा है, वह अपनी समझ की बात है।

संकल्प एक ऐसा ब्रह्मास्त्र है, जो अचूक है और दुनिया के किसी भी कोने में अपने लक्ष्य को भेदन कर सकता है अर्थात् आत्मा को प्रेरित करता है परन्तु उसका विधि-विधान

जितना यथार्थ होगा, उसका प्रभाव उतना ही प्रभावशाली होगा। बाबा की याद में शुभ-भावना और शुभ-कामना से संकल्प करना ही मन्सा सेवा का यथार्थ विधि-विधान है।

"पवित्र बनने बिगर तो घर चल नहीं सकेंगे। याद से पवित्र बन गये और फिर मेरे घर आ जायेंगे। कितना नशा रहना चाहिए कि हम ब्राह्मण इस विश्व की सेवा कर रहे हैं! कितना खुशी में रहना चाहिए, बाबा हमको पढ़ाते हैं!"

सा.बाबा 11.9.69 रिवा.

"उस गवर्मेन्ट से तो इस गवर्मेन्ट की कमाई बहुत ऊंच है। भगवान पढ़ाते हैं, जिससे तुम 21 जन्मों के लिए वैकुण्ठ का मालिक बनते हो। ... जिनको पक्का निश्चय है, वह तो कहेंगे हम इसी सेवा में लग जायें। परन्तु पूरा नशा चाहिए।"

सा.बाबा 6.7.2000 रिवा.

"वेश्याओं को भी आत्मा समझकर उठाओ, फिर घृणा नहीं आयेगी।"

सा. बाबा 25.2.69 रिवा.

"तुम्हें किसी भी बात में संशय नहीं आना चाहिए। अगर दिल में संशय आया तो सर्विस अच्छी तरह नहीं कर सकेंगे। अन्दर घुटका खाते रहेंगे।... बाबा की मुरली सुनेंगे तो उत्साह में आयेंगे।"

सा.बाबा 11.8.2001 रिवा.

३. *निश्चय बुद्धि और चरित्र उत्थान अर्थात् दैवी गुण*

चरित्र आत्मा की सबसे बड़ी पूँजी है। जिस व्यक्ति का चरित्र चला गया उसका सब कुछ चला गया। चरित्र आत्मा की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति है और जीवन की सफलता में उसका विशेष महत्व है। चरित्र मनुष्य को सर्वत्र सहयोग करता है और परमात्मा के निकट लाने में भी सहयोगी है। चरित्र का प्रभाव मनुष्य के कर्मों पर पड़ता है और कर्म के अनुसार फल अवश्य मिलता है, जो मानव जीवन की सफलता और असफलता को प्रदर्शित करता है। जिस व्यक्ति को इस सत्य पर निश्चय हो जाता है, वह अपनी चरित्र रूपी पूँजी की पूरी रक्षा करेगा और कभी कोई भ्रष्टाचार का कार्य नहीं करेगा।

जिसको परमात्मा पर निश्चय होता है तो उसके द्वारा उच्चारे महावाक्यों पर भी अवश्य ही निश्चय होता है। बाबा ने अभी ज्ञान दिया है कि भविष्य में आने वाली दुनिया दैवी दुनिया होगी, जहाँ दैवी गुणों वाले मनुष्य ही होंगे, इसलिए उस दुनिया में जाने के लिए दैवी गुण अवश्य धारण करने हैं। जिनको इस सत्य का निश्चय हो जाता है, उसके जीवन दैवी गुणों की धारण सहज होती जाती है और आसुरी गुणों से बुद्धि हट जाती है।

जिसको निश्चय हो जाता है कि ये परमात्मा का यज्ञ है और हर आत्मा को अपने कर्म का फल अवश्य मिलेगा तो उससे कोई भ्रष्ट कर्म हो नहीं सकता। यदि होता है तो ये सिद्ध करता है कि निश्चय में कमी है अर्थात् संशय है और संशयबुद्धि विनश्यन्ति गाया हुआ है अर्थात् वह अपने श्रेष्ठ पद को गँवा देता है।

"अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। किन्ही अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है। ... शुभ-भावना के बजाये और कोई भी भावना है तो यह भी पाप का खाता जमा होता है क्योंकि यह भी दुख देना है।" अ.बापदादा 3.12.78

"आंखें बहुत धोखा देती हैं, उन पर गुस्सा करो, अपने को दण्ड दो कि हमारी क्रिमिनल दृष्टि क्यों जाती है। अपने को सुधारो अन्यथा पछताना पड़ेगा।"

सा.बाबा 17.7.68

* सन्तुष्टता बहुत श्रेष्ठ दैवी गुण है और जीवन की महान प्राप्ति है। ब्राह्मण आत्माओं को सन्तुष्टता का विशेष वरदान पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा द्वारा मिलता है। सन्तुष्टता का आधार है परमपिता परमात्मा और उनसे प्राप्त विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान है। जिसने इस सत्य को अनुभव कर निश्चय कर लिया, वह इस परमप्राप्ति को अवश्य प्राप्त करेगा अर्थात् सन्तुष्टता को अवश्य धारण करेगा।

"प्रत्यक्षता का आधार है सत्यता और निर्भयता - जब आत्म ज्ञान वाली आत्मायें ... अपनी अल्प मत को प्रत्यक्ष करने में निर्भय होती हैं। झूठ को सच करके सिद्ध करने में अटल और अचल रहती हैं तो सर्वज्ञ बाप के श्रेष्ठ मत व अनादि आदि सत्य को प्रत्यक्ष करने में संकोच करना भी भय है।" अ.बापदादा 28.12.78

श्रेष्ठ चरित्र के निर्माण के लिए सत्य ज्ञान परमावश्य है। भय मनुष्य को अनेक अनैतिक कर्म करने के लिए प्रेरित करता है। सत्य ज्ञान और परमात्मा का साथ आत्मा को निर्भय बनाता है और ऐसी निर्भय और चरित्रवान आत्मा की श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्ति अवश्य होती है। कर्म ही आत्मा के चरित्र का दर्पण हैं।

इच्छा अच्छा बनने नहीं देगी अर्थात् इच्छा वाला अच्छा बनने का पुरुषार्थ नहीं कर सकेगा क्योंकि उसकी मन-बुद्धि इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही बिजी रहती है। कामना सामना करने नहीं देगी अर्थात् कामना वाला माया का और मायावी मनुष्यों का सामना नहीं कर सकेगा।

४. *निश्चय बुद्धि और जीवन यात्रा*

यह विश्व "जन्म-जीवन-मृत्यु-जन्म" का एक चक्र है, जो सदा गतिशील है। परमात्मा को छोड़कर सभी आत्मायें इस चक्र में आती हैं। इसकी सफलता के लिए न जीवन के प्रति मोह या लगाव हो और न ही जीवन के प्रति उदासीनता या हताशा हो। सच्चा ज्ञानी आत्मा मृत्यु से भी भयभीत नहीं होता। उसके लिए जीवन और मृत्यु समान सुखदायी होती है। उसकी न सुख-साधन-सम्पत्ति के प्रति आसक्ति होती और न ही उनसे वैराग्य या घृणा होती। वह सदा साक्षी होकर इस विश्व-नाटक का आनन्द लेता है और ये आनन्द लेना ही संगमयुगी जीवन की सफलता है। इसकी सफलता में मनुष्य के निश्चय का बड़ा महत्व है। यथार्थ जीवन वह है, जहाँ जीवन और मृत्यु समान सुखदायी हो। इसीलिए ज्ञानी आत्मा के लिए गायन है कि उसके लिए मान-अपमान, निन्दा-स्तुति ... जीवन-मृत्यु समान होता है अर्थात् समान सुखदायी होता है।

हर आत्मा के जीवन का कोई न कोई लक्ष्य होता है, जिसके अनुरूप उसका पुरुषार्थ चलता है। यदि निश्चय हो गया कि मेरा ड्रामा में ... ये पार्ट है, तो उसी अनुसार कर्म अवश्य होता है। जैसे बाबा को निश्चय हुआ कि मैं श्रीकृष्ण या नारायण बनूँगा, मुझको सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा समान बनना है तो वैसा पुरुषार्थ होने लगा और बाबा ने स्वरूप बनकर दिखाया। दुनिया में भी जिसका जैसा निश्चय होता है और संकल्प दृढ़ होता है तो उस अनुरूप पुरुषार्थ चलता है और अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर ही लेता है। इसलिए जीवन को एक यात्रा भी कहा जाता है।

इस जीवन यात्रा के समयानुसार तीन पहलू हैं।

A. जीवनमुक्त देवताई जीवन - ये सतयुगी-त्रेतायुगी जीवन है, जो जीवन मुक्त अवस्था है परन्तु इसमें न भूतकाल अर्थात् संगमयुग का ज्ञान होता और न भविष्य अर्थात् जीवनबन्ध का ज्ञान होता है। इसमें सुख साधनों की भरमार होती है, देहभान होता लेकिन देहाभिमान नहीं, इसलिए कोई विकर्म न होने के कारण दुख का नाम निशान नहीं होता है। सर्वत्र सुख-शान्ति, सम्पन्नता होती है। इसमें अपना-पराया तो होता है लेकिन मित्र-शत्रु नहीं होता। आत्मिक शक्ति का ह्रास अवश्य होता परन्तु ह्रास की गति मन्द होती है, इसलिए दो युगों में आत्मा की चार कलायें कम होती हैं।

B. जीवनबन्ध तमोप्रधान मानवीय जीवन - इस जीवन में देहाभिमान का प्रभाव होने के

कारण जीवन में विकारों की प्रवेशिता हो जाती है, जिसके कारण विकर्म होते हैं और विकर्मों के फलस्वरूप जीवन में दुख-अशान्ति के बीज अंकुरित होने लगते हैं। जीवनमुक्त अवस्था से आने के कारण उसका सूक्ष्म आकर्षण भी रहता है और विकारों की प्रवेशता के कारण दुख-अशान्ति भी अनुभूति भी होने लगती है, जिससे मुक्त होने के लिए भक्ति भावना जाग्रत होती है और भक्ति मार्ग का आरम्भ होता है। यहाँ से ही अन्य धर्म पिताओं का आना आरम्भ हो जाता है। आत्मा मुक्तिधाम की रहने वाली है, जिसके कारण मुक्ति का सूक्ष्म ज्ञान होता, वह आकर्षण आत्मा को खींचता है। यहाँ मनुष्य सुकर्म-विकर्म, सुख-दुख के झूले में झूलता रहता है। यहाँ से अपने-पराये के साथ मित्र-शत्रु की भावना भी जाग्रत हो जाती है। विकारों की प्रवेशता के कारण आत्मिक शक्ति के पतन की गति तीव्र हो जाती है।

C. सदाबहार संगमयुगी जीवन अर्थात् ब्राह्मण जीवन

"रुहानी बाप रुहानी बच्चों को समझाते हैं, पढ़ाते हैं तो बच्चों को कितना फखुर होना चाहिए।... तुम अपने को इतना ऊंच नहीं समझते हो, जितना बाप तुमको ऊंच समझते हैं। तुम बच्चों को बहुत नशा रहना चाहिए क्योंकि तुम बहुत ऊंच कुल के हो।"

सा.बाबा 19.8.04 रिवा.

भाषण करना, किताब लिख देना, धन का संग्रह कर लेना ... बड़ी बहादुरी नहीं है परन्तु यथार्थ ज्ञान की यथार्थ धारणा द्वारा देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अर्थात् अपने अनादि-आदि स्वरूप में स्थित निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति द्वारा मुक्ति-जीवनमुक्ति को अनुभव करना और औरों को कराना बड़ी बहादुरी है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा द्वारा साक्षी होकर जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करना बड़ी बहादुरी है, जो ब्राह्मण जीवन की सच्ची सफलता है। ये मुक्ति-जीवनमुक्ति का अलौकिक अनुभव इस पुरुषोत्तम संगम युग पर ही हो सकता है। ये संगमयुगी मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से भी पद्मगुणा श्रेष्ठ है। जिसको इसकी श्रेष्ठता का ज्ञान और निश्चय होता है, वही इसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करके इसका अनुभव कर सकता है। जो ये अनुभव करने और कराने में बिजी रहता है, उसी का ये ब्राह्मण जीवन सफल है।

जो आत्मा ईश्वरीय प्राप्तियों की अनुभूति होगी और उसकी खुशी और नशे में रहेगी, उसको ये संगमयुग कभी भी भारी नहीं लगेगा, वह कब भी इससे ऊबेगा नहीं। ये संगम का समय ही परमशान्ति, परमानन्द और परम सुख को अनुभव करने का है, जिसको इस सत्य ज्ञान, अनुभव और निश्चय होगा, वही इस समय का लाभ उठाकर परमशान्ति, परमानन्द और

परम सुख का अनुभव कर सकेगा। साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखना और इसके सुख को अनुभव करना इस संगमयुग की विशेष प्राप्ति है और परमपिता परमात्मा का हम आत्माओं को परम वरदान है, जो सर्व सुखों का आधार है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने वाला कभी भी राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा के वशीभूत हो नहीं सकता क्योंकि उसका जीवन सदा प्रेम, आनन्द, सुख-शान्ति से भरपूर रहेगा।

"निश्चय बुद्धि की पहली निशानी क्या है? निश्चय बुद्धि अर्थात् सदा निश्चिन्त। ... विनाश हो न हो वा कब होगा - यह चिन्ता ब्राह्मण जीवन में क्यों? क्या ब्राह्मण जीवन हीरे तुल्य जीवन, बाप से मिलन मनाने की जीवन, चढ़ती कला की जीवन, सर्व खजानों से सम्पन्न होने वाली जीवन, सर्व अनुभूति सम्पन्न जीवन अच्छी नहीं लगती है? ... भक्ति मार्ग में यही पुकारा कि यह अतीन्द्रिय सुख की जीवन के दिन एक से चौगुने हो जायें और अब थक गये हो।"

अ.बापदादा 14.12.78

संगमयुगी जीवन में ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव होता क्योंकि अभी वर्तमान के साथ भूतकाल और भविष्य का भी ज्ञान होता है। इस जीवनबन्ध और जीवनमुक्ति के ज्ञान के साथ जो मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होता है, वह अति श्रेष्ठ है और इस ब्राह्मण जीवन में ही सम्भव है। इस समय ही विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान होता, परमपिता परमात्मा का सानिध्य होता, उसका मार्ग दर्शन मिलता, उसकी छत्रछाया में पालना होती है। ये जीवन अपने-पराये, मित्र-शत्रु से परे साक्षी स्थिति की जीवन है। ये समर्पित ब्राह्मण जीवन परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण हीरे तुल्य है परन्तु कई भाई-बहनें इन्द्रिय सुखों के आकर्षण, भौतिकता की चकाचौंद से भ्रमित होकर इसके यथार्थ महत्व को न समझने के कारण भटक जाते हैं और इससे थक जाते हैं। बाबा ने भी 99-2000 की अव्यक्त मुरली में कहा है - मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव अभी ही है, मुक्तिधाम में मुक्ति का अनुभव नहीं होगा और स्वर्ग में भी जीवनमुक्ति का अनुभव नहीं होगा क्यों उसके विपरीत जीवनबन्ध का ज्ञान नहीं है।

अभी परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों को रचा है। परमात्मा और ब्रह्मा बाबा की पालना ही ब्राह्मणों के जीवन का आधार है, उनको फॉलो करना, उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलना ही ब्राह्मणों के जीवन की सफलता का एकमात्र आधार है। जितना उन पर निश्चय होगा, उतना ही उनके महावाक्यों पर निश्चय होगा और जितना ही निश्चय होगा, उतना ही वह कर्म में होगा और कर्म की श्रेष्ठता ही जीवन का सफलता का आधार है। परमात्मा ने हम

ब्राह्मणों को ब्रह्मा द्वारा रचा है, ये दोनों हमारे माता-पिता हैं, हम सब ब्राह्मण आत्मायें आपस में भाई-भाई और भाई-बहन हैं, ये पक्का निश्चय होने से पवित्रता की धारणा सहज होती और जहाँ पवित्रता है, वहाँ सफलता गले का हार है।

पवित्र आत्मा को सर्व प्राप्तियाँ स्वत: होती हैं। सन्यासी पवित्र रहते हैं तो उनको जंगल में भी जीवन निर्वाह के साधन सहज ही मिलते हैं। सभी उनको माथा झुकाते हैं। हमारी पवित्रता तो उनसे कितनी श्रेष्ठ है, इस सत्य का अनुभव करके इस जीवन को सफल करना और सर्व को सफल करने का रास्ता बताने में ही इस ब्राह्मण जीवन की सफलता है। ये ब्राह्मण जीवन इस कल्प वृक्ष का फल है और भावी कल्प वृक्ष का बीज है। इसके महत्व को जान, इसके सुख और उत्तरदायित्व को अनुभव करो और पालन करो तो ही ये जीवन सदा सफल है।

शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा को फालो करना ही ब्राह्मणों की सफलता का आधार है। इसलिए ही बाबा ने कहा है - "एक बाप को ही देखो, एक से ही सुनो, एक के ही संग में रहो .. खान-पान भी शुद्ध हो ... सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ ही रखो तब ही विजय माला में आ सकेंगे।"

भगवानोवाच्य - "विजय तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।" जब परमात्मा और परमात्मा के इन महावाक्यों पर निश्चय होता है तो उसी अनुसार संकल्प और कर्म होते हैं, जिनका परिणाम सदा ही सफल और सुखदायी होता है।

हम सब ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण हैं, ब्रह्मचर्य ब्राह्मण जीवन की मुख्य धारणा है। बिना ब्रह्मचर्य के ब्राह्मण जीवन की परिकल्पना ही निराधार है। बाबा भी कहते हैं जो ब्राह्मण बनकर विकार में गया, वह ब्राह्मण नहीं शूद्र है, ऐसा बच्चा मुआ भला। जब ये निश्चय हो जाता है कि हम ब्राह्मण ब्रह्मा के बच्चे हैं, तो ये निश्चय होने से ब्रह्मचर्य की धारणा सहज हो जाती है। ब्रह्मचर्य आध्यात्मिक पुरुषार्थ और पुरुषार्थ की सफलता का मूलाधार है। जिसने काम पर विजय प्राप्त कर ली, उसके लिए जीवन में और सब विजय बहुत सहज हैं। गीता में भी है - काम महाशत्रु है, इसको जीतो।

विषय-वासना का सुख आत्मा को तब ही प्रभावित करता है या आकर्षित करता है, जब उसके निश्चय में होता है कि ये भी एक सुख है और जीवन के लिए आवश्यक है परन्तु ये ही मनुष्य के दुख का मूल कारण है, इसलिए बाबा ने इसे विष की संज्ञा दी है। जिनको ये निश्चय हो जाता है कि ये विष है, मृत्यु-दुख का कारण है, वह सदा इसके प्रभाव से बचकर

रहता है, जिससे उनको काम-वासना को जीतना सहज हो जाता है। ऐसे साधक के लिए पवित्रता वरदान हो जाती है, जिससे वे ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अतीन्द्रिय सुख अनुभव करते हैं। जो ये समझते हैं कि ये विषय-वासना भी एक विशेष सुख है या ये स्वाभाविक है, ब्रह्मचर्य की पालना से बीमार हो जायेंगे या बीमार होते हैं तो समझते हैं इसका कारण ब्रह्मचर्य की धारणा है और ऐसा सोचकर निश्चय-संशय के झूले में झूलते रहते हैं, उनके लिए काम वासना को जीतना बहुत कठिन होता है और ये ब्राह्मण जीवन भार अनुभव होने लगता है और ऐसे निश्चय-संशय के झूले में झूलने वाला इस ब्राह्मण जीवन के सच्चे सुख से वंचित हो जाता है और एक दिन इस गर्त में गिर ही पड़ता है।

* जिनको इस सत्य का निश्चय हो गया कि ब्रह्चर्य जीवन की सर्वोत्तम धारणा है और परमप्राप्ति का आधार है और परमात्मा का हम आत्माओं को सर्वश्रेष्ठ वरदान है, उनके लिए इसकी धारणा सहज हो जायेगी और जिनको निश्चय हुआ कि हमारी बीमारी का कारण पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य की धारणा है, तो उनके अन्दर काम की चेष्टा अवश्य ही होगी और उनकी दृष्टि-वृत्ति उसकी सन्तुष्टि के लिए होने लगेगा। यज्ञ में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो इस निश्चय के पतन से ही इस श्रेष्ठ जीवन से हाथ धो बैठे और अनेकों ने तो लज्जावश जीवघात करके अपनी जीवनलीला को ही समाप्त कर दिया।

* इस ब्राह्मण परिवार में निश्चय के द्वारा विजय और उल्टे निश्चय के कारण हार होने के अनेक उदाहरण हैं। जिनको निश्चय हुआ कि बाइस्कोप, टी.वी. पतन का कारण है और उन्होंने उसको छोड़ दिया, तो उनका जीवन पतनोन्मुख से उत्थानोन्मुख हो गया और अनेक ऐसे भी उदाहरण हैं कि जिनको निश्चय हुआ कि ये मनोरंजन का साधन है, जीवन के लिए आवश्यक है, हितकर है, इससे अनेक शिक्षायें मिलती हैं तो अनेकों का जीवन उत्थानोन्मुख से पतनोन्मुख हो गया। भगवानोवाच्य - बाइस्कोप, टी.वी. पतन का कारण हैं, नर्क के द्वार हैं और इनको देखने वालों में बहुधा काम की चेष्टा अवश्य होने लगती है। यदि काम की चेष्टा न भी हो तो समय तो बरबाद हो ही जाता है और संगमयुग का समय अमूल्य है। मुरली और योग ही आत्मा के मनोरंजन का साधन है और आत्मा की चढ़ती कला का आधार है। जिनको मुरली और योग से मनोरंजन नहीं होता वे ही वाह्य साधनों में मनोरंजन ढूँढते हैं। परन्तु ये याद रहे तो बाप सत्य है और उसका हर महावाक्य सत्य है। भले ही उसके महावाक्यों की सत्यता हम आज अनुभव नहीं करें परन्तु कल अवश्य ही अनुभव करेंगे।

* एक बाप की याद रहे, साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखें और ज्ञान का चिन्तन चलता रहे तो सदा ही अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती रहेगी और ये ब्राह्मण जीवन परमानन्दमय

अनुभव होगा। यही ब्राह्मण जीवन की सफलता है, जिसके आगे सभी भौतिक सफलतायें नगण्य हैं। यदि ज्ञान के प्रकाश में देखें तो सभी भौतिक सफलताओं का अन्तिम परिणाम तो असफलता ही है अर्थात् दुख-अशान्ति ही है। अन्तिम सफलता तो बाबा की याद में ही है, उनकी याद में ही अविनाशी अतीन्द्रिय सुख है। कहाँ कहाँ किसके जीवन में जो विजय दिखाई देती है, वह अस्थाई ही होती है और वह भी हार ही है क्योंकि वह भी जीवन की अन्तिम विजय में बाधक बन जाती है। पुरुषार्थी उसे ही अन्तिम विजय समझकर असली विजय से वंचित रह जाते हैं।

"गायन है अतीन्द्रिय सुख की भासना गोप-गोपियों से पूछो। तुम अपने दिल से पूछो कि हम उस भासना में रहते हैं? यह है ईश्वरीय मिशन।" सा. बाबा 9.2.69 रिवा.

"इस समय तुम बच्चों को देवताओं से भी जास्ती खुशी होनी चाहिए क्योंकि तुमको लॉटरी मिलती है। भगवान पढ़ाते हैं।" सा. बाबा 21.2.69 रिवा.

"तुम्हारा यह जीवन अमूल्य गाया हुआ है। देवताओं का नहीं, मनुष्यों का अमूल्य जीवन है। कौन से मनुष्यों का? तुम ब्राह्मणों का। बाप तुमको बच्चा बनाकर फिर कितनी मेहनत कर रहा है।" सा.बाबा 27.8.69 रिवा.

"ब्राह्मण जीवन का आन्तरिक वर्सा है - सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता। बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने को खुश करना - यह भी अपने को धोखा देना है।"

अ.बापदादा 1.3.99

"थोड़ा सा दुख-दर्द का अनुभव और बढ़ने दो फिर देखना आपके सेकण्ड के दर्शन, सेकण्ड की दृष्टि के लिए कितना प्यासे बनकर आपके सामने आते हैं।... ऐसे समय पर अपनी श्रेष्ठ जीवन और श्रेष्ठ प्राप्ति का महत्व आप बच्चों में भी उस समय ज्यादा पहचानेंगे। ... अभी बापदादा द्वारा सहज और बहुत खज़ाना मिलने के कारण कभी-कभी स्वयं की और खज़ाने की वेल्यू को साधारण समझ लेते हो लेकिन एक-एक महावाक्य, एक-एक सेकण्ड, ब्राह्मण जीवन का एक-एक स्वास कितना श्रेष्ठ है, वह आगे चलकर ज्यादा अनुभव करेंगे।"

अ.बापदादा 14.2.84

"यथार्थ निश्चय है कि मैं परमात्मा बाप का बन गया। स्वयं को भी आत्मा स्वरूप में जानना, मानना, चलना और बाप को भी जो है, जैसा है वैसे जानना। ये है यथार्थ निश्चय।... ज्ञान अच्छा है, परिवार भी अच्छा है, वायुमण्डल भी अच्छा है - ये है दूसरा नम्बर।... यथार्थ निश्चय बुद्धि सदा विजयी होते हैं। ... अगर पवित्रता स्वप्न मात्र भी हिलाती है, हलचल में आती है तो समझो नम्बरवन फाउण्डेशन कच्चा है। क्योंकि आत्मा का स्वधर्म पवित्रता है, अपवित्रता

परधर्म है। जब स्वधर्म का निश्चय हो गया तो परधर्म हिला नहीं सकता। ... बाप सर्वशक्तिवान है लेकिन मेरे को माया हिला रही है तो कौन मानेगा कि आपका बाप सर्वशक्तिवान है। ... अनुभव करो कि सर्वशक्तिवान बाप साथ है। बस एक बात भी अनुभव की तो सब में पास हो जायेंगे।""

अ.बापदादा 4.12.95

"तुम बच्चों का जास्ती इन्ट्रेस्ट सूक्ष्मवतन की बातों में नहीं होना चाहिए। ... तुम स्टूडेण्ट्स की बुद्धि में यह सारी नॉलेज होनी चाहिए ना। खुशी रहती है कि हम कितनी कमाई करते हैं। ... भगवान हमको पढ़ा रहे हैं और क्या चाहिए! जब कि हम विश्व के मालिक बनते हैं तो खुशी क्यों नहीं रहती है या निश्चय में कहाँ संशय है।"

सा.बाबा 13.7.2000 रिवा.

"बापदादा का सदा हाथ और साथ है तो सदा मायाजीत हैं।... अपने मस्तक पर सदा ही बाप की दुआओं का हाथ अनुभव करो। तो जिसके ऊपर परमात्मा का हाथ है, वह विघ्न-विनाशक होगा ना। जिसके ऊपर परमात्म-दुआओं का हाथ है, वह सदा निश्चिन्त रहता है।"

अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी

"सबसे कड़ी भूल है, जो देहाभिमान में आ जाते हो, अपने को आत्मा निश्चय नहीं करते हो, सच नहीं बताते हो।"

सा.बाबा 25.1.72 रिवा.

"ये सृष्टि एक खेल है। माया की परीक्षायें व परिस्थितियाँ भी एक खेल हैं। अगर खेल समझेंगे तो परेशान नहीं होंगे।"

अ.बापदादा 8.7.73

"औरों से मांगो मत। नहीं तो देने वाले को भी नुकसान पड़ जाता है क्योंकि वह शिवबाबा के भण्डारे में नहीं दिया। देना चाहिए शिव बाबा के भण्डारे में।"

सा.बाबा 25.1.72 रिवा.

"बच्चे देखते हो विनाश सामने खड़ा है। यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि कब होगा, क्या होगा। आयेगा तो अचानक। ... अचानक भंभोर को आग लगनी है।"

सा.बाबा 8.3.72 रिवा.

"हरेक बच्चा हाईएस्ट है और अविनाशी खजानों से रिचेस्ट है।... एक-एक श्रेष्ठ संकल्प कितना बड़ा खजाना है! समय भी बड़ा खजाना है, संकल्प भी बड़ा खजाना है। सर्व शक्तियाँ बड़े से बड़ा खजाना है। हरेक ज्ञान-रत्न कितना बड़ा खजाना है! हर एक गुण कितना बड़ा खजाना है!"

अ.बापदादा 30.11.99

"सफलता ब्राह्मणों का जन्मसिद्ध अधिकार है। सफलता सहज अनुभव होती है या मेहनत के बाद? प्रत्यक्ष फल अभी प्राप्त होता है या भविष्य फल की उम्मीदों पर चलते हो?"

अ. बापदादा 28.1.76

"वरदान भूमि पर रहने वालों को सदा सन्तुष्ट रहने का वरदान मिला हुआ है ना। जो जितना अपने को सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न अनुभव करेंगे, वह सदा सन्तुष्ट होंगे। अगर जरा भी कमी की महसूसता हुई तो जहाँ कमी है, वहाँ असन्तुष्टता है।"

अ.बापदादा 26.1.83 मधुबन निवासियों से

जो सुख साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने और परमात्मा की याद में है, वह इन्दीय भोगों और साधनों में कदापि सम्भव नहीं है। यह अनुभूति और निश्चय इस ब्राह्मण जीवन का आधार है। इस सत्य का ज्ञान, उसका अनुभव और उसमें निश्चय ही पुरुषार्थी ब्राह्मण जीवन की सच्ची सफलता का आधार है।

"ऐसा हुआ तो ये व्यर्थ संकल्प ज्ञान मार्ग में एक बड़ा मानसिक रोग है, जो अज्ञानता जनित है। इसके कारण ही आत्मा व्यर्थ चिन्तन, व्यर्थ संग्रह, व्यर्थ सम्बन्धों में भटकता है और अपने समय-शक्ति को नष्ट करता है। परमपिता परमात्मा के गुण-कर्तव्यों का ज्ञान, उसका अनुभव और ड्रामा के यथार्थ ज्ञान का अनुभव और निश्चय से ही इस मानसिक रोग का निदान सम्भव है और इस रोग के निदान के बाद ही आत्मा सच्चे सुख का अनुभव कर सकती है। जिसको परमपिता परमात्मा के गुण-कर्तव्यों और ड्रामा की यथार्थता का ज्ञान है, उसका अनुभव है और परमात्मा की श्रीमत पर यथार्थ रीति चलते हैं, उनका कभी स्वप्न में भी अहित नहीं हो सकता - यह दृढ़ निश्चय ही ब्राह्मण जीवन की सफलता का मूलाधार है।

"रुहानी बाप रुहानी बच्चों को समझाते हैं, पढ़ाते हैं तो बच्चों को कितना फखुर होना चाहिए। ... तुम अपने को इतना ऊंच नहीं समझते हो, जितना बाप तुमको ऊंच समझते हैं। तुम बच्चों को बहुत नशा रहना चाहिए क्योंकि तुम बहुत ऊंच कुल के हो।"

सा.बाबा 19.8.04 रिवा.

इस संगमयुगी ब्राह्मण जीवन के दो स्वरूप हैं - एक है समर्पित जीवन और दूसरा है घर-गृहस्थ में रहते हुए ट्रस्टी जीवन। दोनों ही प्रकार के जीवन का अपना-अपना महत्व और स्थान है। समर्पित जीवन वाले शासन तन्त्र में अपनी त्याग-तपस्या, सेवा और श्रेष्ठ कर्मों अनुसार सुख-साधन और ऊंच पद पाते हैं और ट्रस्टी जीवन वाले प्रजा में अपने पुरुषार्थ, त्याग-तपस्या, सेवा और श्रेष्ठ कर्मों के अनुसार सुख-साधन और ऊंच पद पाते हैं। बाबा ने कहा है कहाँ-कहाँ राजायें भी प्रजा से कर्जा लेते हैं अर्थात् प्रजा वाले भी राजतन्त्र से श्रेष्ठ होते हैं और हो सकते हैं।

A. निश्चय और समर्पित जीवन

जिनको निश्चय हो जाता है कि ये ब्राह्मण जीवन और ये ईश्वरीय कर्तव्य अति महान है और सवोत्तम जीवन है, वे सब तरफ से बुद्धि समेटकर परमात्मा की शरण में आ जाते हैं और इस ईश्वरीय कर्तव्य में लग जाते हैं। इस त्याग के फल स्वरूप वे भविष्य नई दुनिया में शासन तन्त्र में अपने पुरुषार्थ अनुसार पद पाते हैं। परन्तु सबकुछ छोड़कर बाबा की शरण में आने के बाद भी अपने विकर्मों को भस्म करने के लिए पुरुषार्थ तो करना ही पड़ता है और अपने स्वभाव-संस्कार को बदलने के लिए भी पुरुषार्थ तो अवश्य ही करना पड़ता है। यज्ञ में अन्दर आने के बाद भी आत्मा कर्म तो करती ही है। उसमें जिसको जितना बाप पर और उसके ज्ञान पर निश्चय होता है, वह उतनी अच्छी रीति बाप की श्रीमत पर चलता है और ये ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ता है और उस अनुसार ऊंच पद पाता है।

जो एक परमपिता परमात्मा को देख, उसके ज्ञान को समझकर, एक परमात्मा पर विश्वास करके, उसके सहारे विश्व-कल्याण की सेवा की भावना से ओतप्रोत होकर अपने को समर्पित करते हैं, वे सच्चे समर्पित हैं और उनको कभी भी कोई वस्तु या व्यक्ति आकर्षित नहीं कर सकता। परन्तु जो किसी व्यक्ति, साधन-सत्ता, किसी स्थान विशेष, कार्य विशेष के लिए समर्पित होते तो उनकी वह सीमा है और उनको अन्तिम मंजिल तक पहुँचने के लिए किसी न किसी रूप में विघ्न और पश्चाताप का सामना अवश्य करना होता है। वे परमात्मा की उतनी मदद को भी अनुभव नहीं करते, परमात्मा उनके लिए उत्तरदायी भी नहीं बनता क्योंकि वे व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष, कार्य विशेष की सीमा में बँधे हुए हैं, उसके सहारे हैं परन्तु उनके उस कर्म के अनुसार उनको अल्प काल का फल अवश्य मिलता है। इस सत्य को जानकर एक परमात्मा के सहारे, उसके लिए समर्पण होने वाले सदा निश्चयबुद्धि विजयन्ति होते हैं। वे सदा निश्चिन्त, निर्भय, निर्संकल्प, निर्विघ्न रहते हैं और जीवन में परमानन्द का अनुभव करते हैं। लौकिक गीता में भी है - देवताओं को भजने वाले देवताओं के लोक में और मेरे को भजने वाले मेरे लोक को प्राप्त होते हैं। इसीलिए किसी कवि ने कहा है - करु बहिंयां बल आपनो ... मरे प्यास। सच्चा समर्पण अर्थात् जो यम-नियमों, पर पूरा चले और श्रीमत का पूरा पालन करे।

यज्ञ एक संगठन है, जिसके सभी आत्मायें घटक हैं। हर आत्मा अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखती है। स्वतन्त्रता और कर्तव्य की मर्यादा को समझकर कर्तव्य-पथ का निर्णय करना हर आत्मा का स्वतन्त्र अधिकार है और उसकी रक्षा करना उसका कर्तव्य है। अधिकार और कर्तव्य जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं, जो समानान्तर चलते हैं।

"तन-मन-धन, समय और सम्बन्ध सब अर्पण।... मुख्य बात है ही मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्पों-विकल्पों को समर्पण करना।... जब तक यह वायदा नहीं किया कि जो सोचेंगे, जो बोलेंगे, जो सुनेंगे, जो करेंगे वह श्रीमत के बिना नहीं करेंगे।"

अ.बापदादा 3.10.69

"जो बलि चढ़ जाता है, उसको रिटर्न में क्या मिलता है? बलि चढ़ने वालों को ईश्वरीय बल बहुत मिलता है। ... खुद को बदलकर औरों को बदलना है, यह है निश्चय की छाप।"

अ.बापदादा 28.9.69

"अपनी मूरत को देखने के लिए अपने पास दर्पण रखना चाहिए। ... जो अर्पणमय होगा, उनके पास ही दर्पण रहेगा। अर्पण नहीं तो दर्पण भी अविनाशी नहीं रह सकता। ... अव्यक्त मिलन का अनुभव भी वही कर सकता जो अव्यक्त स्थिति में होगा।"

अ.बापदादा 17.5.69

"जो जैसा कर्म करते हैं वह भोगते हैं। ड्रामा में नूँध है। बाबा यह भी समझाते हैं कपड़े आदि कुछ भी चाहिए तो शिवबाबा के यज्ञ से लो। और कोई से लेंगे तो वह याद आयेगा, तुम्हारा नुकसान हो जायेगा। इसमें लाइन बहुत क्लीयर होनी चाहिए क्योंकि अभी हम वापस जा रहे हैं। ऐसा न हो कहीं दिल लग जाये और तकदीर बिगड़ जाये।"

सा.बाबा 14.12.69 रिवा.

"भल सरेण्डर हैं परन्तु जब तक पुण्यात्मा बन औरों को न बनायें तब तक ऊंच पद पा नहीं सकते।... कल्याणकारी जरूर बनना है।"

सा.बाबा 14.9.05 रिवा.

"बलिहार अर्थात् सर्वन्श समर्पित। चाहे देहभान में लाने वाले विकारों का वंश हो, चाहे देह के सम्बन्ध का वंश, चाहे देह के विनाशी पदार्थों की इच्छाओं का वंश। ... मधुबन में रहना, सेन्टर पर रहना तो समर्पण की एक सीढ़ी है लेकिन समर्पण की मंजिल है तीनों ही वंश सहित अर्पित।"

अ.बापदादा 27.12.87

"समर्पित अर्थात् न हद का मैंपन और न हद का मेरापन।... एक साक्षी-दृष्टा बनकर अपने आपको सर्टीफिकेट दो, दूसरा जिन साथियों के साथ कार्य करते हो उनका सर्टीफिकेट चाहिए और तीसरा दादियों का सर्टीफिकेट चाहिए। चौथा बाप का चाहिए क्योंकि बाप सबके मन की गति को देखते हैं।"

अ.बापदादा 4.9.05 समर्पित भाई-बहनें

"चाहे प्रवृत्ति में हो, चाहे सेन्टर पर हो लेकिन दिल से कहा - "मेरा बाबा" तो बाबा ने अपना बनाया। यह दिल का सौदा है। मुख का स्थूल सौदा नहीं है। सरेण्डर माना श्रीमत के अण्डर

रहने वाले।" अ.बापदादा 20.3.87

"इसमें माया के तूफान की तो बात ही नहीं है। समझो यह मेरी भूल है, मैं श्रीमत पर नहीं चलता हूँ। ... नहीं चल सकते हो तो गृहस्थ व्यवहार में रहते पुरुषार्थ करो। अगर यहाँ रहते डिस्सर्विस की तो जो कुछ थोड़ा रहा हुआ होगा, वह भी खत्म हो जायेगा। ... बाबा सब कायदे-कानून बता देते हैं, जिससे कोई ट्रिब्युनल में यह न कहे कि हमको पता थोड़ेही था।"

सा.बाबा 20.03.06 रिवा.

"इस मधुबन के लिए ही गायन है कि कोई ऐसा-वैसा यहाँ पांव नहीं रख सकता। मधुबन है सौभाग्य की लकीर। ... इसके अन्दर कोई आ नहीं सकता। भले कोई अपना शीश भी उतार कर रख दे। साकार रूप में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है। आगे चलकर जब लोगों का रोना देखेंगे तब आप लोगों को उसकी वेल्यू का मालूम पड़ेगा।... ड्रामा में इतने ऊंच भाग्य को सदैव सामने रखना।" अ. बापदादा 6.12.69

"मधुबन के फूलों में क्या विशेषतायें होनी चाहिए ? पहली विशेषता है मधुरता। ... मधुरता से ही मधुसूदन का नाम बाला करेंगे। ... तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए, फिर इससे सारी बातें आ जायेंगी। ... ये दो विशेषतायें धारण करनी है - मधुरता और बेहद की वैराग्य वृत्ति। दूसरे शब्दों में कहेंगे स्नेह और शक्ति।" अ. बापदादा 9.11.69

"मधुवन निवासियों से मधुवन की शोभा है। फिर भी बहुत लकी हो। अपने को जानो या न जानो फिर भी लकी हो। स्थान के महत्व को, संग के महत्व को, वायुमण्डल के महत्व को भी जानो तो एक सेकेण्ड में महान बन जायेंगे।"

अ.बापदादा 22.11.72 मधुबन वासियों

"इस मधुवन का नाम है महायज्ञ, परिवर्तन भूमि और वरदान भूमि। तो जैसा नाम वैसा काम करो। ... इस भूमि के महत्व को भी अच्छी रीति जानो। इस भूमि को साधारण भूमि नहीं समझना। ... महान बनना अर्थात् महत्व को जानना।"

अ.बापदादा 24.10.75

"एक-एक कदम सामने लाओ, उठना-बैठना, चलना, बोलना, सम्बन्ध-सम्पर्क में आना - सब में ब्रह्मा बाप के समान है। ... मधुवन वालों को इसमें सर्टीफिकेट लेना है। ... ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि में रहने वालों के प्रति यह विशेष श्रेष्ठ आश है कि मधुबन की एक-एक ब्राह्मण आत्मा, श्रेष्ठ आत्मा हर कर्म में ब्रह्मा बाप के कर्म का दर्पण हो।"

अ.बापदादा 24.9.92 मधुबन वालों से

"जो सदा बिजी रहते हैं, वे बहुत लकी हैं, इसलिए अपने को फ्री नहीं करना। ... बिजी रहना

खुशनसीबी की निशानी है।"

अ.बापदादा 24.9.92 मधुबन वालों से

Q. वर्तमान समय यज्ञ में अनेक भाई-बहनें अपने को असुरक्षित क्यों अनुभव करते हैं और उसके कारण अनेक अनैतिक अर्थात् यज्ञ की मर्यादा के विपरीत कर्म क्यों करते हैं?
ये वर्तमान समर्पित ब्राह्मण जीवन का गम्भीर प्रश्न है, जिस पर विचार करना हर समर्पित भाई-बहन का नैतिक कर्तव्य है।

जीवन की असुरक्षितता के अनुभव के कारण

1. अज्ञानता एवं बाह्यमुखता अर्थात् यथार्थ ज्ञान के अनुभव की कमी और वाह्य जगत के सुख-साधनों में, चिन्तन में अधिक बुद्धि का जाना।
2. जो पावर में हैं, वे उस पावर के आधार पर सत्ता और साधनों का उपभोग कर रहे हैं और जिनके पास सत्ता नहीं है, वे जीवन में हीनता अनुभव कर रहे हैं और अपने को असुरक्षित समझ अनैतिक रूप से साधन-सम्पत्ति को प्राप्त करने का पुरुषार्थ कर रहे हैं।
3. समर्पित जीवन के महत्व और प्राप्ति से अनभिज्ञता

"जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और भी करेंगे" - यज्ञ का ये सिद्धान्त भूल गया है और हम परमपिता परमात्मा के पास Insure हैं, परमात्मा हमारा संरक्षक है, ये निश्चय खत्म होता जा रहा है।

वीर पुरुष ही आध्यात्म के सच्चे सुख अर्थात् अतीन्द्रिय सुख को अनुभव कर सकते हैं। समर्पित जीवन की सच्ची सफलता के लिए तो हमको भगवान और भाग्य पर अटल निश्चय-विश्वास-भरोसा रखकर अभीष्ट पुरुषार्थ करना चाहिए या बाहर हो स्वतन्त्रता से कमाई करते हुए अभीष्ट पुरुषार्थ करना चाहिए। भयभीत होकर जीवन जीना कोई परमात्मा के पास समर्पित जीवन नहीं है। ये तो जीवन में दासता के बीज बोना है। वह कभी भी जीवन के सच्चे सुख को अनुभव नहीं कर सकता है। अनैतिक रूप से साधन-सम्पत्ति का संग्रह करने में पाप भी अधिक है और बाद में उसका दुरुपयोग भी भविष्य को अन्धकारमय बनाने वाला है। हम भाग्य विधाता बाप के पास समर्पित हैं, भाग्य हमारे साथ है। विश्व-नाटक की सत्यता को समझकर निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प, निराधार हो अपने निराकारी आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम शान्ति का अनुभव करना, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा करना और साक्षी

होकर इस विश्व-नाटक को देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए जीवन में सच्चे सुख-शान्ति का अनुभव करना ही इस समर्पित जीवन की विशेषता और सफलता है।

हम प्रबन्धन को चैलेन्ज नहीं कर सकते अर्थात् किसी को दोष नहीं दे सकते। हम अपने पुरुषार्थ के लिए स्वयं ही उत्तरदायी हैं और हमको अपना पुरुषार्थ करके जीवन को सफल बनाना है। जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आपही अपना शत्रु है, इस अटल सत्य पर निश्चय रखकर पुरुषार्थ करने वाले के जीवन में सफलता अवश्य होती है।

B. *निश्चय और घर-गृहस्थ रहते ट्रस्टी जीवन*

दूसरा है घर-गृहस्थ रहते ट्रस्टी जीवन। जो बाबा के ज्ञान को समझकर ब्राह्मण बनते हैं, उनमें जो दैहिक सम्बन्धों के कारण, उत्तरदायित्व के कारण, अपने स्वभाव-संस्कार को समझते हुए इतना साहस नहीं कर पाते कि यज्ञ में समर्पित हो जायें या वे समझते हैं कि हम लौकिक कमाई करते हुए अधिक सेवा कर सकते हैं तो वे समर्पित नहीं होते परन्तु अपना सारा कार्य व्यवहार बाबा की श्रीमत पर करते हैं, जिससे वे प्रजा में अपने पुरुषार्थ अनुसार ऊंच पद पाते हैं। इसमें भी जिसको जितना बाबा पर और ज्ञान पर निश्चय होता है, वह उतना ही बाबा की श्रीमत पर चल पाता है और जीवन को सफल-सुखमय अनुभव करता है।

इस प्रकार हम देखें तो इस ब्राह्मण जीवन की सफलता में निश्चय का बड़ा महत्व है। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि बाहर वाले भी यहाँ रहने वालों से ऊंच पद पा सकते हैं। अनेक बार बाबा ने उदाहरण भी दिये हैं कि कहाँ कहाँ राजायें भी प्रजा से कर्ज लेते हैं, अच्छे साहूकारों के पास भी दास-दासियाँ होती हैं। यहाँ रहने वाले भी जो पुरुषार्थ नहीं करते हैं, वे पहले दास-दासी बनते हैं और बाद में कुछ राजाई पद मिल जाता है।

* निश्चय न केवल हमको ब्राह्मण बनाकर रखता परन्तु ब्राह्मण जीवन का परम सुख का अनुभव भी आत्मा निश्चय के आधार पर ही करती है। निश्चय न केवल परमात्मा में परन्तु परमात्मा की हर बात में निश्चय ही ब्राह्मण जीवन में सुख अनुभव कराता है।

"आज बापदादा सर्व बच्चों के ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन देख रहे थे। फाउण्डेशन है निश्चयबुद्धि। जहाँ निश्चय है वहाँ हर संकल्प में, हर कार्य में विजय हुई पड़ी है। सफलता जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में स्वत: और सहज प्राप्त होती है।"

अ.बापदादा 14.11.02

"अपने को ट्रस्टी समझकर धन्धा आदि करो तो ममत्व मिट जायेगा। यह बाबा लेकर क्या

करेंगे! इसने तो अपना सब कुछ छोड़ा ना।"

सा.बाबा 20.1.05 रिवा.

"जब लौकिक कार्य भी बाप की श्रीमत प्रमाण करते हो जिसकी श्रीमत है, वही याद आयेगा ना! इसलिए बापदादा कहते लौकिक कार्य करते भी सदा अपने को ट्रस्टी समझो। ट्रस्टी भी हो और वारिस भी हो। चाहे कहाँ भी रहते हो लेकिन मन से समर्पित हो तो वारिस हो।"

अ.बापदादा 23.12.87 पार्टी

"ट्रस्टी बनकर रहो तो सदा हल्के रहेंगे। साफ दिल मुराद हासिल। श्रेष्ठ संकल्पों की सफलता जरूर होती है। ... कोई भी आये तो आपके भण्डारे से खाली न जाये।"

अ.बापदादा 25.12.82

"मेरा बाबा" और मैं बाबा का यह कार्य कर रही हूँ। ट्रस्टी होकर कार्य करो। ट्रस्टी को कभी कोई बोझ नहीं होता है। न बोझ होगा और न भूलेंगे।"

अ.बापदादा 12.11.92

"परिवार को ट्रस्टी बनकर सम्भालते हो या गृहस्थी बनकर सम्भालते हो? ट्रस्टी अर्थात् तेरा और गृहस्थी अर्थात् मेरा। ... ट्रस्टी जीवन कितनी प्यारी है, सम्भालते हुए भी कोई बोझ नहीं, सदा हल्के।... जरा भी दुख की लहर संकल्प में भी आती है तो जरूर कहाँ धोखा खाया है। चेक करो।"

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 4

"ब्रह्मा भोजन भी बाप ही ब्राह्मण बच्चों को खिलाता है। चाहे लौकिक कमाई भी करके पैसे जमा करते, उससे भोजन मंगाते हो लेकिन अपनी कमाई भी पहले बाप की भण्डारी में डालते हो। भण्डारी भोलानाथ का भण्डारा बन जाता है। इस विधि को कब भूलना नहीं। ... ट्रस्टी अर्थात् तेरा और गृहस्थी अर्थात् मेरा।"

अ.बापदादा 7.3.88

"मेरा बाबा और मैं बाबा का यह कार्य कर रही हूँ। ट्रस्टी होकर कार्य करो। ट्रस्टी को कभी कोई बोझ नहीं होता है। न बोझ होगा और न भूलेंगे।"

अ.बापदादा 12.11.92

"अगर बाप में पूरा निश्चय है तो पूरा श्रीमत पर चलना पड़े। हर एक की नब्ज़ देखी जाती है, उस अनुसार फिर राय भी दी जाती है। बाबा ने भी बच्चे को कहा - अगर शादी करनी हो तो जाकर करो, बहुत मित्र-सम्बन्धी आदि बैठे हैं, वे शादी करा देंगे।... पूछते हो, अगर नहीं रह सकते तो जाकर शादी करो।"

सा.बाबा 16.02.06 रिवा.

"कदम-कदम पर बाप से राय लेनी पड़े। सरेण्डर हो जाये तो फिर बाप कहेंगे - अब ट्रस्टी बनो। बाबा की राय पर चलो। अपना पोतामेल बतायेंगे तब तो बाबा राय देंगे।"

सा.बाबा 4.01.06 रिवा.

"बच्चे समझ सकते हैं कि कौन-कौन कितना श्रीमत पर चलते हैं। श्रीमत मिलती है सर्विस करने की। ... बाबा तुमको मकान आदि बनाने के लिए कभी मना नहीं करते हैं। तुम अपने ही घर में एक कमरे में हॉस्पिटल-कम-युनिवर्सिटी बना दो।"

सा.बाबा 6.5.06 रिवा.

५. *निश्चय और श्रीमत*

परमात्मा ज्ञान का सागर, सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ है, वही विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता है, इसलिए वही किसी कार्य के आदि-मध्य-अन्त को जानता है, इसलिए वही किसी कार्य की सफलता के लिए मत दे सकता है। श्रीमत मगवत् गीता में भी उनकी श्रीमत का गायन है। श्रीमत इस ब्राह्मण जीवन का मूलाधार है और ब्राह्मण जीवन की सफलता का एकमात्र साधन है। जो बाबा की श्रीमत पर यथार्थ रीति चलते हैं, उनके जीवन में असफलता आ नहीं सकती। श्रीमत क्या है, उसका निर्णय करना भी एक महत्वपूर्ण विषय है, जो श्रीमत के राज़ को जान लेता है, वही उस पर चलकर इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकता है, जीवन को सफल बना सकता है।

जिसको स्वयं पर निश्चय है, परमात्मा पर निश्चय है और मनमत-परमत के दुष्परिणाम को जानते हैं, वे मनमत-परमत छोड़कर परमात्मा की श्रीमत पर चलते हैं। जो निश्चयबुद्धि होकर श्रीमत पर चलते हैं, उनके हर कदम में सफलता निश्चित है। जिसको परमात्मा पर निश्चय होगा, उसको उसके द्वारा दी गई मत, उसके महावाक्यों पर अवश्य ही निश्चय होगा और जिसको उसकी श्रीमत पर निश्चय होगा, वह श्रीमत अवश्य ही चलेगा क्योंकि हर मनुष्य सुख-शान्तिमय जीवन चाहता है। परमात्मा ज्ञान का सागर, सर्वज्ञ है तो वह जो मत देगा, उस पर चलने में सदा ही कल्याण है अर्थात् जीवन में सच्चे सुख का अनुभव होगा। बाबा ने हम बच्चों को जीवन के हर क्षेत्र और हर कार्य के लिए मुरलियों में श्रीमत दी है।

श्रीमत क्या है?

श्रीमत पर चलने के लिए श्रीमत क्या है, कैसे मिलती है, उसका निर्णय करना एक रहस्मय पहेली है। जो इस पहेली के हल को जानता है, वही श्रीमत ले सकता है और उस पर चलकर जीवन के सच्चे सुख को अनुभव कर सकता है। वास्तव में शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के मुख कमल से मुरलियों में जो महावाक्य उच्चारे हैं, सम्मुख में जो राय दी है या अव्यक्त रूप में देते हैं, वही यथार्थ श्रीमत है। शिवबाबा ने साकार ब्रह्मा तन से या अव्यक्त रूप से मुरलियों में जो श्रीमत दी है, उसके आधार पर देश-काल-परिस्थिति के अनुसार वास्तविकता को समझना

ही श्रीमत है। दूसरे कोई भी भाई-बहनें उस श्रीमत की स्मृति ही दिला सकते हैं, परन्तु उनकी मत को श्रीमत नहीं कहा जा सकता है। इसके लिए अव्यक्त बाबा ने भी एक मुरली में कहा है। परन्तु किसी देश, काल और परिस्थिति में जहाँ इन दोनों रूपों से समझकर कृत्य-अकृत्य का निर्णय नहीं कर पाते या ले नहीं सकते वहाँ निमित्त व्यक्ति के द्वारा दी गई मत भी श्रीमत ही कही जायेगी परन्तु ये भी निश्चय हो कि बाबा ने उसको निमित्त बनाया है और श्रीमत लेने वाले ने बाबा की याद में उससे श्रीमत ली हो तो उसके लिए भी बाबा उत्तरदायी है। जहाँ ये भी सम्भव नहीं है वहाँ निमित्त स्थान यथा बाबा के कमरे में बाबा की याद में बैठ कर बाबा की याद में एकाग्र होकर मत लेना भी अच्छा है तो वह भी श्रीमत के अनुरूप ही काम करेगी। किसी विशेष परिस्थिति में जहाँ ये सब सम्भव नहीं है वहाँ किसी भी स्थान पर योग में बैठकर बाबा की प्रेरणा को लेना और समझना भी अच्छा है और वह भी श्रीमत के समान ही सही मार्ग प्रदर्शना करेगा। इस प्रकार श्रीमत का भी निर्णय देश, काल और परिस्थिति के आधार पर होता है और उस अनुसार ही बाबा उत्तरदायी होता है। परन्तु ये विचारणीय बात है कि उस समय हमारी परमात्मा में पूर्ण निष्ठा और विश्वास होना चाहिए। जो परमात्मा में निष्ठा और विश्वास रखता है, उसको वह सदा, सर्वदा और सर्वत्र मदद करता है और कोई न कोई कारण ऐसा बन जायेगा, जिससे उसको सही मार्ग-प्रदर्शना मिल जायेगी, जिससे उसको कोई धोखा नहीं हो सकता है। परमात्मा बुद्धिमानों की बुद्धि है, जो उसके ऊपर श्रृद्धा-विश्वास रखता है, वह उसके साथ है और मार्ग-प्रदर्शना अवश्य करता है।

जिसको जितना परमात्मा पर निश्चय होगा, उतना ही उसके द्वारा प्राप्त श्रीमत पर निश्चय दृढ़ होगा और उसी अनुसार ही संकल्प और कर्म होंगे और जैसे संकल्प और कर्म होंगे, उस अनुसार ही कर्म-फल होगा अर्थात् जीवन की सफलता-असफलता होगी। परमात्मा पर निश्चय से परमात्मा की मदद के भक्ति मार्ग में भी अनेकानेक उदाहरण है।

"अगर एक बाप से सर्व प्राप्ति का सम्बन्ध, सर्व सम्बन्धों का अनुभव और सदा सहारे-दाता का अटल विश्वास और निश्चय है तो बापदादा निराकार-आकार होते भी स्नेह के बन्धन में बाँधे हुए हैं। ... भक्ति मार्ग में भी मीरा को साक्षात्कार ही नहीं लेकिन साक्षात् आनुभव हुआ तो क्या ज्ञान सागर के डायरेक्ट ज्ञान स्वरूप बच्चों को साकार रूप में सर्व प्राप्ति के आधार मूर्त, सदा सहारे-दाता बाप का अनुभव नहीं हो सकता। फिर सर्वशक्तिवान को छोड़कर यथा-शक्ति आत्माओं को सहारा क्यों बनाते हो। यह भी एक गुह्य कर्मों का हिसाब बुद्धि में रखो। कर्मों का हिसाब कितना गुह्य है - इसको जानो।" अव्यक्त बापदादा 8.4.82

"सदा निश्चय हो कि जो साकार की मुरली है, वही मुरली है और जो मधुबन से श्रीमत मिलती

है, वही श्रीमत है। बाप सिवाए मधुवन के और कहीं मिल नहीं सकता। सदा एक बाप की पढ़ाई में निश्चय हो।" अव्यक्त बापदादा 11.4.82 पार्टियों के साथ

"पहले तो तुमको यह निश्चय चाहिए कि हमको पढ़ाते कौन हैं, यह है श्री श्री शिवबाबा की मत।... बाबा युक्तियाँ तो सब बतलाते हैं परन्तु कोई विश्वास भी रखे ना।"

सा.बाबा 25.1.2001 रिवा.

* जब ये निश्चय होता है कि परमात्मा हमारा पिता है, वह ब्रह्मा तन में आया है। ब्रह्मा भी हमारा पिता है तो उसके प्रति हमारी श्रृद्धा-भावना स्वत: जाग्रत होती है, उसके शब्दों में विश्वास होता है और जीवन में धारणा होती है, जो ब्राह्मण जीवन की सफलता का मूलाधार है। शिवबाबा की मत तो मशहूर है ही लेकिन ब्रह्मा की मत भी नामीग्रामी है। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि यदि ब्रह्मा कोई मत देता है और उससे कोई अहित हो जाता है, उल्टा हो जाता है तो मैं उसको सुल्टा कर दूँगा क्योंकि मैं ने इनको निमित्त बनाया है। सत्यता तो ये है कि ब्रह्मा की मत से भी हम बच्चों का कोई अहित नहीं हो सकता, इसलिए निश्चयबुद्धि होकर दोनों बाप की मत को श्रीमत समझकर चलना हमारे लिए सदा कल्याणकारी है।

* जब निश्चय हो जाता है कि बाबा की मुरली अनेक रतनों की खान है, ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार है, ब्राह्मणों के जीवन के लिए जीयदान है तो मुरली के प्रति स्वत: श्रृद्धा-भावना जाग्रत होती है और मुरली में रस आता है, सुख का अनुभव होता है तो मुरली कभी नागा नहीं होती है और मुरली से समयानुसार यथोचित मार्ग-दर्शना अवश्य मिलती है। परन्तु जब ये निश्चय हो जाता है कि अमुख भाई-बहन का क्लास अच्छा है, उससे हमारी उन्नति होगी तो उसके प्रति श्रृद्धा-भावना हो जाती है और उसके लिए बाबा की मुरली को भी नागा कर देते हैं परन्तु उसका क्लास नागा नहीं करते। जब निश्चय हो जाता है कि अमुख महात्मा या संस्था का साहित्य बहुत अच्छा है, उससे अच्छी बातें सीखने को मिलती है और उन्नति होती है तो उसमें इतनी रुचि हो जाती है और उसमें इतना लगाव हो जाता है जो बाबा की मुरली की भी परवाह नहीं करते। परन्तु ये अटल सत्य है कि दुनिया में कोई भी व्यक्ति या उसके द्वारा दिया ज्ञान या उसकी मत चढ़ती का आधार न ही है और न ही हो सकता है तथा न ही किसी व्यक्ति या संस्था का साहित्य चढ़ती कला में ले जा सकता है। मानव जीवन की सफलता और चढ़ती कला का आधार एकमात्र परमात्मा ही है और उसके द्वारा दी गई मत ही है, उस मत को ही श्रीमत कहा जा सकता है।

* ये श्रीमत है, इसमें ही कल्याण है... ये निश्चय होगा तब ही उसकी पालना सम्भव होगी और उसमें सफलता होगी। यदि पूरा निश्चय नहीं होगा अर्थात् निश्चय-संशय के झूले में झूलते होंगे

तो सफलता हो भी सकती और नहीं भी हो सकती है। होगी भी तो पूरी सफलता नहीं होगी, पूरी सन्तुष्टता नहीं होगी।

"कई कुमारियाँ अथवा कुमार कहते हैं - बाबा मात-पिता बहुत नाराज होते हैं शादी न करने पर। बाबा कहते हैं जाकर शादी करो। पूछते हो ना, तो खुद तुम्हारी दिल है। ... बाबा की याद में तुम्हारा गला भी कट जाये तो भी तुम बहुत ऊंच पद पा लेंगे। मार से डरना न है।"

सा.बाबा 20.6.72 रिवा.

"जो जैसा कर्म करते हैं वह भोगते हैं। ड्रामा में नूँध है। बाबा यह भी समझाते हैं कपड़े आदि कुछ भी चाहिए तो शिवबाबा के यज्ञ से लो। और कोई से लेंगे तो वह याद आयेगा, तुम्हारा नुकसान हो जायेगा। इसमें लाइन बहुत क्लीयर होनी चाहिए क्योंकि अभी हम वापस जा रहे हैं। ऐसा न हो कहीं दिल लग जाये और तकदीर बिगड़ जाये।"

सा.बाबा 14.12.69 रिवा.

"बच्चे को शादी कराना गोया रौरव नर्क में ढकेलना है। समझना है कि इसमें हम मदद करता हूँ, तो यह भी पाप चढ़ता है। पापात्मा बन जाता हूँ। बुद्धि से काम लेना चाहिए ना। मुरली में खबरदार रहने की तो सब बातें आती हैं। कोई पाप किया तो वह सौगुणा हो जाता है। ज्ञान में आकर फिर ऐसा पाप करे, बच्चे को खुश करने के लिए तो दोष आ जाता है। यह है किसका खून करना। ... अपने हाथों से बच्चों का खून न करना है। बाबा से पूछेंगे तो बाबा कहेंगे भल कराओ। ज्ञानवान खुद समझते हैं, वे कब पूछेंगे नहीं। बच्ची की तो शादी करानी ही है। आपेही जाकर डूबती है, उसको तो कराना पड़े। बच्चा तो भल खराब हो जाये, उसका ख्याल नहीं रहेगा।"

सा.बाबा 20.12.69 रिवा.

"बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं कि मैं तुमको ऐसा कर्म करना सिखाता हूँ जो कि विकर्म नहीं बने। किसी को दुख नहीं दो, पतित मनुष्य का अन्न नहीं खाओ, विकार में मत जाओ।"

सा.बाबा 11.8.69 रिवा.

"दान भी पात्र को देना चाहिए। पापात्मा को देने से फिर देने वाले पर भी असर हो जाता है। वह भी पापात्मा बन जाता है। ऐसे को कब नहीं देना चाहिए जो जाकर उस पैसे से कोई पाप करे।"

सा.बाबा 14.8.69 रिवा.

"कोई भी गुरु गोसाई आदि का फोटो भी न रखना है। इसलिए बाबा फोटो निकालने को भी मना करते हैं। फोटो में तुम इस मम्मा-बाबा को देखते रहेंगे और ही वह समय तुम्हारा नुकसान हो जायेगा। बाबा-मम्मा का चित्र देखने लग पड़ेंगे, शिव बाबा भूल जायेगा। तुम आत्माओं को तो निराकार बाप को याद करना है। इसलिए मैं फोटो आदि देखता हूँ तो फाड़ भी देता हूँ।

समझते हैं यह मम्मा-बाबा के फोटो देखते रहते हैं। मरने समय अगर उनको ही देखते रहे तो दुर्गति हो जायेगी। तुमको याद करना है एक शिव बाबा को। उसका फोटो निकल नहीं सकता। इसलिए बाबा को यह फोटो आदि निकालना अच्छा नहीं लगता है। परन्तु क्या करें, बच्चे नाराज न हो जायें इसलिए खुश कर लेते हैं। परन्तु समझते हैं इनका शिव बाबा से योग टूटा हुआ है, तब कहते हैं बाबा हमारे साथ फोटो निकालो। वह गुरु लोग तो बहुत खुश होते हैं। बाबा को यह फोटो आदि निकालना अच्छा नहीं लगता। कहाँ साकार में फंस कर मर न जायें।"

सा. बाबा 16.7.72 रिवाइज

"समझो अचानक छत गिर पड़ती है, कोई मर पड़ते हैं तो कहेंगे भावी। .. ड्रामा में जो पार्ट मिला हुआ है, वह बजाना है। .. समझो ये बाबा भी चला जाये, तुम बच्चों को तो नॉलेज मिली हुई है। शिव बाबा से वर्सा लेना है न कि इनसे।"

सा. बाबा 25.6.72 रिवा.

"अगर एक बाप से सर्व प्राप्तियों का, सर्व सम्बन्धों का और सदा सहारे-दाता का अनुभव है और उस पर अटल विश्वास और निश्चय है तो बापदादा निराकार-आकार होते भी स्नेह के बन्धन में बाँधे हुए हैं। ... भक्ति मार्ग में भी मीरा को साक्षात्कार ही नहीं लेकिन साक्षात् आनुभव हुआ तो क्या ज्ञान सागर के डायरेक्ट ज्ञान स्वरूप बच्चों को साकार रूप में सर्व प्राप्ति के आधार मूर्त, सदा सहारे-दाता बाप का अनुभव नहीं हो सकता। फिर सर्वशक्तिवान को छोड़कर यथा-शक्ति आत्माओं को सहारा क्यों बनाते हो। यह भी एक गुह्य कर्मों का हिसाब बुद्धि में रखो। कर्मों का हिसाब कितना गुह्य है - इसको जानो।"

अ.बापदादा 8.4.82

"पहले तो तुमको यह निश्चय चाहिए कि हमको पढ़ाते कौन हैं, यह है श्री श्री शिवबाबा की मत। ... बाबा युक्तियाँ तो सब बतलाते हैं परन्तु कोई विश्वास भी रखे ना।"

सा.बाबा 25.1.2001 रिवा.

"तुम्हारी भी नजर आत्मा पर ही पड़नी चाहिए। आत्मा भृकुटी के बीच में है। शरीर पर नजर पड़ने से ही विघ्न आते हैं। आत्मा से बात करनी है, आत्मा को ही देखना है। ... बहुत अच्छे-अच्छे, नामीग्रामी हैं, उनको भी संशय आ जाता है। कब-कब एक-दो में बात करते हैं - हमको तो यह बातें समझ में नहीं आती हैं, हम कहाँ फँस तो नहीं पड़े हैं, कोई जादूगरी तो नहीं है। समझ लेना चाहिए संशय बुद्धि विनश्यन्ति, निश्चयबुद्धि विजयन्ति।"

सा.बाबा 15.12.69 रिवा.

"जो पक्के निश्चयबुद्धि बन जाते हैं वे कोई की परवाह नहीं करते। बिल्कुल ही नष्टोमोहा हो

जाते हैं। एकदम नष्टोमोहा सेकेण्ड में। जो स्वर्गवासी नहीं बनते तो जहन्नुम में जाने दो। राजाई को भी थूक मार देंगे। भक्ति मार्ग में मीरा का मिसाल है। ... कहेंगी हमको तो पवित्र बनना है, फट से कहेंगी हमको राजाई की कोई परवाह नहीं है। जैसे उन राजाओं की रानियों को परवाह नहीं रही, छोड़ दिया। वैसे अब रानियाँ निकलेंगी, जो राजाओं की परवाह नहीं करेंगी। बस हम तो स्वर्ग की मालिक बनती हैं। भक्ति मार्ग में राजाओं का नाम है, जिन्होंने सन्यास किया है। अभी यह तो है ज्ञान मार्ग।"

सा.बाबा 14.4.73 रिवा.

"कौरव गवर्मेन्ट की विनाश काले विप्रीत बुद्धि। बाप कहते हैं मैं सत्य कहता हूँ उन्होंका विनाश हो जायेगा और तुम्हारी है बाप से प्रीत बुद्धि। तुम विश्व पर राज्य पाते हो। कई बच्चे डरपोक भी बहुत हैं। समझते हैं हम ऐसा लिखेंगे तो गवर्मेन्ट जेल में डाल देगी। इसी डर से अगर लिखेंगे तो सचमुच जेल में चले जायेंगे। निडर होकर लिखेंगे तो कब जेल में डाल न सकेंगे।"

सा.बाबा 3.5.71 रिवा.

"ऐसा निश्चयबुद्धि जो पाँव भी कोई हिला न सके।... ऐसे निश्चयबुद्धि सदा निश्चिन्त रहते हैं। अगर जरा भी कोई चिन्ता है तो निश्चय में कमी है।... चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी है, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी है, चाहे बाप में निश्चय की कमी है।... ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है।"

अ.बापदादा 13.01.86 पार्टी I

"जिनको निश्चय हो जाता है, उनको किसी की परवाह नहीं रहती है। मनुष्य अपने हाथ-पांव वाला है ना। ... अपने को स्वतन्त्र रख सकते हैं। क्यों न हम बाप से अमृत लेकर अमृत का ही दान करूँ।"

सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

"तुम जानते हो भल कितने भी विघ्न पड़ें तो भी स्वर्ग की स्थापना जरूर होनी है। यह बना-बनाया ड्रामा है, इसमें संशय की बात ही नहीं।... बाप जो समझाते हैं, उसको अच्छी रीति मन्थन कर धारण करना है।"

सा.बाबा 26.9.05 रिवा.

"कई हैं, जो निश्चय से पढ़ते थे, संशय आने से पढ़ाई छोड़ दी। निश्चय कैसे हुआ, फिर संशयबुद्धि किसने बनाया? ... यह बड़ा इमतहान है, इसमें बहुत साहस चाहिए। एक तो निश्चयबुद्धि का साहस चाहिए, दूसरा माया से युद्ध है।"

सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"ब्राह्मणी कैसी भी हो परन्तु यह पढ़ाई है बाप की, पढ़ाने वाला वह सुप्रीम टीचर है। अटेन्शन पढ़ाई पर होना चाहिए। ... बाप से निश्चय ही टूट पड़ता है तो फिर पढ़ाई छोड़ देते हैं। ... अन्त तक जब तक जीना है, पढ़ना जरूर है।"

सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"निश्चय की परख तूफान के समय होती है। ... मैं कौनसी आत्मा हूँ, वह नशा और वह स्वमान समय पर अनुभव हो, इसको कहते हैं निश्चयबुद्धि विजयी। कोई पेपर है ही नहीं और कहे - मैं तो पास विद् ऑनर हो गया तो कोई उसको मानेगा ? ... ऐसे समय पर अपने निश्चय का फाउण्डेशन को चेक करो।" अ.बापदादा 27.12.87

"निश्चयबुद्धि और रुहानी नशे में रहने वाले की विशेषतायें ... जितना ही श्रेष्ठ नशा, उतना ही निमित्त भाव, ... निमित्त भाव के कारण निर्मान भाव ... जितनी निर्मान बुद्धि होगी, उतना ही नव-निर्माण करने वाली बुद्धि होगी। ... निमित्त, निर्मान और निर्माण।"

अ.बापदादा 27.12.87

"निश्चयबुद्धि की भाषा में सदा मधुरता तो कामन बात है लेकिन उदारता होगी। ... उदारता अर्थात् दूसरों को आगे रखना। जैसे ब्रह्मा बाप ने ... जितना स्वयं इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति में रहते, उतना बाप और परिवार अच्छा योग्य समझकर उसको ही पहले रखते हैं। ... उदारता, सन्तुष्टता और सर्व के कल्याण की भाषा होगी।"

अ.बापदादा 27.12.87

"निश्चय की निशानियाँ - जैसा निश्चय वैसा कर्म,... हर कर्म और संकल्प में सहज विजय... श्रेष्ठ भाग्य, श्रेष्ठ जीवन, बाप और परिवार के सम्बन्ध-सम्पर्क में संशय संकल्पमात्र भी नहीं होगा... क्वेश्चन मार्क समाप्त, हर बात में बिन्दु बन बिन्दु लगाने वाले... बेफिकर बादशाह की स्थिति सहज और स्वत: अनुभव हो, ... निश्चयबुद्धि अर्थात् सदा बाप पर बलिहार जाने वाले, ... सदा निश्चिन्त, ... सदा रुहानी नशे में और उसे देखकर औरों को यह रुहानी नशा अनुभव होगा।" अ.बापदादा 27.12.87

"सबसे श्रेष्ठ सितारा है सफलता का सितारा। ... "कर सकेंगे या नहीं कर सकेंगे" का संकल्प भी नहीं - उनके जीवन में असफलता का अंश-मात्र भी नहीं होगा। जैसे स्लोगन है - सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, ऐसे वह स्वयं प्रति सफलता अधिकार के रूप में अनुभव करेंगे। ... परिस्थिति भी स्वस्थिति के उड़ती कला का साधन बन जायेगी।"

अ.बापदादा 23.1.87

"निश्चय सदा ही निश्चिन्त बनाता है। ...जब निश्चिन्त होते हैं तो बुद्धि जजमेन्ट यथार्थ करती है। ... यथार्थ निर्णय का आधार है - निश्चयबुद्धि, निश्चिन्त। ... जब निर्णय यथार्थ होगा तो विजयी अवश्य होंगे।" अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 2

"निश्चय की पहचान परिस्थिति के समय पर ही होती है। परिस्थिति सामने आये और परिस्थिति के समय निश्चय की स्थिति स्थिर रहे, तब कहेंगे निश्चयबुद्धि विजयी। तीनों में निश्चय पक्का

चाहिए। बाप में, अपने आप में और ड्रामा में। ... विजय का तिलक सदा मस्तक पर लगा हुआ है।"

अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 4

"जो प्रीत बुद्धि हैं, वे विजयन्ति और जो विप्रीत बुद्धि हैं, वे विनश्यन्ति हो जाते हैं। ... कितना जबरदस्त खज़ाना मिलता है, ऐसे बाप को थोड़ेही छोड़ना चाहिए। ... निश्चयबुद्धि विजयन्ति, संशयबुद्धि विनश्यन्ति।"

सा.बाबा 24.8.05 रिवा.

"ज्ञान में तीन का महत्व है। त्रिकालदर्शी भी बनते हो, तीनों कालों को जानते हो या सिर्फ वर्तमान को ही जानते हो ? ... जो हो गया वह भी अच्छा, जो हो रहा है वह भी अच्छा और जो होने वाला वह और भी अच्छा होगा। ... जो विश्व का कल्याण करने वाला है, उसका अकल्याण हो नहीं सकता। यह पक्का निश्चय रखो।"

अ.बापदादा 26.3.93

"बाप का डायरेक्शन मिला हुआ है - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा जानकर मुझे याद करो।... वह बाप निराकार है, गीता का भगवान है, वही सर्व का सद्गतिदाता है, वह इस समय सद्गति करने का पार्ट बजा रहे हैं।... निश्चय हो, बाप से लव हो तो समझे हमको कदम-कदम श्रीमत पर चलना है।"

सा.बाबा 14.4.06 रिवा.

"परमात्म की बात तो आँख बन्द कर माननी चाहिए, भल उसमें नुकसान हो वा फायदा हो। परन्तु ऐसे निश्चयबुद्धि हैं नहीं।... हमेशा समझो कि शिवबाबा ही कहते हैं, रेस्पान्सिबुल शिवबाबा है।... ड्रामा में नूँधा हुआ है, इस निश्चय वाला कभी हिलेगा नहीं।"

सा.बाबा 8.4.06 रिवा.

"निश्चय रखो कि अनेक बार के विजयी हैं। ... आप हो बेफिकर बादशाह। जब बाप बैठा है तो बच्चे बेफिकर होते हैं। तो बेफिकर बादशाह बन गये हो।"

अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 4

"इसमें निश्चय बड़ा अडोल चाहिए। शिवबाबा से तो कभी कोई भूल हो न सके, इनसे हो सकती है। तुम शिवबाबा की श्रीमत समझकर चलो तो उल्टा भी सुल्टा हो जायेगा।"

सा.बाबा 19.01.06 रिवा.

"तुमको बाप समझाते हैं तो तुम कितना रिफ्रेश होते हो। ... जो इन बातों को नहीं जानते, उनको भी समझाना चाहिए, ताकि वे भी तुम्हारे जैसा रिफ्रेश हो जायें। अपना फर्ज है सबको पैग़ाम देना। ... यही याद दिलाना है कि बाप और वर्से को याद करो।"

सा.बाबा 20.01.06 रिवा.

"शिवबाबा है रुहानी बाप और प्रजापिता ब्रह्मा है जिस्मानी बाप। ... शिवबाबा खुद कहते हैं - मैं इस ब्रह्मा तन में आता हूँ तब तो इस ब्राह्मण धर्म की स्थापना होती है। ... निश्चयबुद्धि बच्चे

बाप की आज्ञा पर चलेंगे क्योंकि श्रीमत से ही श्रेष्ठ बन सकते हैं।"

सा.बाबा 3.5.06 रिवा.

"अभी तुम हो संगमयुग पर। यह भी कोई नहीं जानते कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। ... बाप श्रीमत देते हैं - बच्चे, मुझे याद करो। यह है बाप का बड़ा फरमान। पुरा निश्चय हो तब तो बाप के फरमान पर चलें ना। ... देवताओं की विकारी दृष्टि कभी हो नहीं सकती। ज्ञान से फिर दृष्टि बदल जाती है। सतयुग में ऐसे थोड़ेही प्यार करेंगे, डांस करेंगे। वहाँ प्यार करेंगे परन्तु विकार की बांस नहीं होगी। ... देह की तरफ बिल्कुल दृष्टि न रहे। वह कर्मातीत अवस्था अभी बनानी है। अभी तक ऐसा नहीं है कि सिर्फ आत्मा को ही देखते हैं। ... जिनको पूरा निश्चय नहीं, वे पूरा पढ़ भी न सकें। पवित्र बन न सकें।"

सा.बाबा 17.6.04 रिवा.

"कितना वण्डरफुल खेल है। कभी किसी बात में संशय नहीं होना चाहिए। बापदादा में जरा भी संशय नहीं लाना चाहिए। कदम-कदम पर श्रीमत लेनी है। नहीं तो माया नुकसान करा देती है।"

सा.बाबा 29.6.06 रिवा.

"दुख देते नहीं लेकिन ले तो लेते हो ना। व्यर्थ संकल्प चलने का कारण ही यह है कि व्यर्थ दुख ले लिया, सुन लिया तो दुखी हुए। सुनी हुई बात न चाहते भी मन में चलती है। ... ये छोटी-छोटी अवज्ञायें मन को भारी बना देती हैं, इसलिए उड़ नहीं सकते। यह बहुत गुह्य गति है।"

अ.बापदादा 17.12.89

"यह बहुत गुह्य गति है। जैसे पिछले जन्मों के पाप कर्मों के बोझ आत्मा को उड़ने नहीं देते। ऐसे इस जन्म की छोटी-छोटी अवज्ञाओं का बोझ, जैसी स्थिति चाहते हो, वह अनुभव करने नहीं देता। ... अवज्ञाओं का बोझ सदा समर्थ बनने नहीं देता।"

अ.बापदादा 17.12.89

6. निश्चय और पुरुषार्थ एवं परीक्षा अर्थात् पढ़ाई एवं परीक्षा

ये सृष्टि एक कर्मक्षेत्र है, जहाँ आत्मा कर्म के बिना रह नहीं सकती। पुरुषार्थ अर्थात् आत्मोन्नति के लिए प्रयत्न करना आत्मा का स्वभाविक कर्म है, जो निरन्तर चलता रहता है परन्तु जब आत्मा आत्म-कल्याण की उत्कृष्ट भावना से प्रयत्न करता है, उसको आध्यात्मिक जीवन में पुरुषार्थ की संज्ञा दी जाती है। पुरुषार्थ में निश्चय का बड़ा महव्त है। जैसा निश्चय होता है, वैसा पुरुषार्थ स्वत: होता है।

अभी हम आत्माओं को परमात्मा के द्वारा सत्य ज्ञान मिला है, जिसके आधार पर पुरुषार्थ करते हैं। पुरुषार्थ की आधार-शिला ही निश्चय है। जिसको ये निश्चय होता है कि हम आत्मा हैं, वही आत्म-कल्याण के लिए पुरुषार्थ करता है। भक्ति में भी जप-तप, हठयोग, सन्यास आदि आत्मा-कल्याण के निश्चय सं प्रेरित होकर करते हैं। भक्ति के फल स्वरूप भगवान मिलता है। जब भगवान मिल जाता है और उस पर निश्चय हो गया तो उसके बताये गये मार्ग पर चलने से, पुरुषार्थ करने से विजय निश्चित है। होगी या नहीं होगी, इसका भी प्रश्न नहीं। होगी या नहीं होगी का संकल्प ही सिद्ध करता है कि यथार्थ निश्चय नहीं है, संशय है और संशय बुद्धि विनाश को ही पाता है।

ये अनादि-अविनाशी ड्रामा है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है परन्तु इसमें पुरुषार्थ और प्रालब्ध अर्थात् कर्म और कर्म-फल का विधान अविनाशी नूँधा हुआ है। ड्रामा में पुरुषार्थ और प्रालब्ध का अनूठा सन्तुलन है। पुरुषार्थ आत्मा का स्वभाव है। कोई भी आत्मा जो इस कर्म-क्षेत्र पर आई, वह कर्म के बिना रह नहीं सकती। लेकिन जो कर्म आत्मा के कल्याण की भावना से प्रेरित हो किया जाता है, उसे ही पुरुषार्थ की संज्ञा दी जाती है। पुरुषार्थ अर्थात् पुरुष के अर्थ। जो अपने पुरुषार्थ और फल पर अटल निश्चय और विश्वास रखते हैं, उनको परमात्मा की मदद भी अवश्य मिलती है। इसी लिए बाबा ने कहा है हिम्मते बच्चे, मदद दे बाप। किसी कवि ने भी कहा है - "करु बहियाँ बल आपनी छाड़ि बिरानी आश, जाके आंगन है नदी सो कस मरे प्यास।"

इस संगम युग पर किये गये पुरुषार्थ का फल भविष्य में तो मिलेगा ही लेकिन संगम पर जो फल मिलता है, वह भविष्य के फल से कई गुणा श्रेष्ठ है। केवल भविष्य की आश रखकर संगम के फल की अनुभूति को गँवा नहीं देना है। संगम की विजय पर ही भविष्य की विजय आधारित है। अव्यक्त बाबा ने भी एक पार्टी से मिलते समय कहा था - "भविष्य के दिलासे पर चल रहे हो या अभी भी प्रालब्ध का अनुभव कर रहे हो ? अभी की प्रालब्ध भविष्य से कई गुणा श्रेष्ठ है।" जिसको इस सत्य पर निश्चय होगा, वही संगमयुग के सच्चे सुख को अनुभव कर सकेगा।

जीवन के अभीष्ट लक्ष्य के लिए देह से न्यारे अपने मूल स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ अति आवश्यक है। इस पुरुषार्थ में व्यर्थ चिन्तन सबसे बड़ी बाधा है। सत्य यह है कि पवित्र आत्मा को समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: आता है और उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होगी, इसके लिए चिन्ता करना व्यर्थ है। भूतकाल के लिए भी गायन है - बनी बनाई ... होये। इस सत्य पर निश्चय से व्यर्थ चिन्तन पर सहज ही विजय होगी

और जब व्यर्थ चिन्तन नहीं होगा तो शुभ चिन्तन अवश्य ही होगा और उसका फल भी शुभ ही होगा।

एकाग्रता और एकान्त का आध्यात्मिक जीवन की सफलता में विशेष महत्व है, जिसको इसका ज्ञान होगा और उस पर निश्चय होगा, वही एकान्तवासी बन एकाग्र बुद्धि से इस जीवन के सच्चे सुख का अनुभव कर सकेगा और सफलता को प्राप्त कर सकेगा। एकाग्रता और एकान्तवास में अनेक सुसुप्त शक्तियाँ स्वत: जाग्रत होती हैं, अनेक सुन्दर और रहस्यमय अनुभव होते हैं, अनेक प्रेरणायें मिलती हैं, जो जीवन की सफलता में परमोपयोगी होती हैं। इससे मनुष्य अनेक विकर्मों से बच जाता है। इस सत्य के निश्चय वाले का ही इसके लिए पुरुषार्थ चलेगा और प्राप्ति का अनुभव होगा।

पुरुषार्थ की सफलता अवश्य होती है, ये इस विश्व-नाटक का अटल विधान है, इस सत्य पर सदा निश्चय रखना चाहिए परन्तु ड्रामा का फेक्टर भी महत्वपूर्ण है, इसलिए समय की प्रतीक्षा भी अवश्य करनी चाहिए। परीक्षाओं और परिस्थितियों को देखकर कब हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। जीवन रूपी गाड़ी के पुरुषार्थ और प्रालब्ध सतत गतिशील दो पहिये हैं, जो ड्रामा अनुसार साथ-साथ और समानान्तर चलते हैं और इसको अपने गन्तव्य अर्थात मुक्ति-जीवनमुक्ति के लक्ष्य अर्थात् विजय तक ले जाते हैं। जिसको इस सत्य का निश्चय होगा, वह कब पुरुषार्थ में हतोत्साहित नहीं होगा।

पुरुषार्थ और परीक्षा

ये ईश्वरीय ज्ञान एक पढ़ाई है और पढ़ाई में परीक्षा भी अवश्य होती है, जिसको पास करने से ही क्लास आगे बढ़ते हैं। अच्छे विद्यार्थी परीक्षा के लिए प्रतीक्षा करते हैं कि परीक्षा हो और हम आगे क्लास में जायें। वे कभी परीक्षा से घबराते नहीं हैं। इसलिए परीक्षाओं से घबराना नहीं है बल्कि ये निश्चय रखना है कि ये परीक्षायें ही हमको आगे बढ़ाने वाली हैं, हमको अनुभवी बनाने वाली हैं।

आध्यात्म मार्ग पर पुरुषार्थ करने वालों के लिए भी गायन है कि परमात्मा कोई वरदान देने से पहले भक्त की परीक्षा अवश्य लेते हैं कि वह सच्ची दिल से भक्ति करता है या दिखावे से करता है। हम भी पुरुषार्थ करते हैं तो बाबा परीक्षा भी अवश्य लेता है कि दिल सच्ची है, बाबा से आन्तरिक प्रेम है या दिखावा है। सच्ची दिल वाले ही बाबा को प्रिय हैं और जो बाबा को प्रिय हैं, बाबा उनको अवश्य मदद करता है और जिसको ये निश्चय हो कि सर्वशक्तिवान बाप हमारा मददगार है तो वह कब फेल नहीं हो सकता है! ऐसे निश्चय वाला कब अपने मार्ग में पीछे नहीं हट सकता, माया से हार नहीं खा सकता। ऐसे दृढ़ निश्चय वाले

पुरुषार्थी की विजय निश्चित है।

हमारे निश्चय की भी परीक्षा अवश्य होती है। परीक्षा में पास होने पर ही निश्चयबुद्धि विजयी का विधान ड्रामा में नूँधा हुआ है। यज्ञ की आदि स्थापना का समय और बेगरी पार्ट इतिहास इसका साक्षी है। विजय से पहले निश्चय और पुरुषार्थ की परीक्षा होना भी इस अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक का अटल विधि-विधान है, जिसका अनुभव प्राया: हर ब्राह्मण आत्मा को है। ड्रामा का ये विधान आदि से ही कार्य कर रहा है और आगे भी करता रहेगा। इस सत्य का हमको सदा निश्चय रखना है। वास्तविकता तो ये है कि निश्चय की परीक्षा और विजय का क्रम हर क्षण चल रहा है और हमारी दृष्टि-वृत्ति, शब्द, कर्म हमारे पुरुषार्थ में भूमिका निभाते हैं और उसके अनुसार फल मिलता है। ये जड़-चेतन प्रकृति इसकी गवाही देते हैं जिसके आधार पर फल अर्थात् विजय सन्तुष्टि, खुशी, नशे के रूप में प्राप्त होती है।

"कुछ भी हो जाये, ये पेपर पास करना है। बात नहीं है, पेपर है। तो पेपर पास करने में खुशी होती है ना, क्लास आगे बढ़ते हैं। ... ये पेपर तो आयेंगे। पेपर ही अनुभव में आगे बढ़ाते हैं।"

अ.बापदादा 1.3.99

"यहाँ कोई ऐसे हैं जो थोड़ा ही कुछ ठीक न मिला तो एकदम भाग जावें, राजाई को भी ठोकर मार दें। बीच में बेगरी का पार्ट चला। यह भी परीक्षा हुई थी। बहुत चले गये। इस सभी में शिव बाबा का क्या राज़ था, वह भी गुड़ जाने, गुड़ की गोथरी जाने। कितने डर के मारे भाग गये।"

सा.बाबा 21.11.72 रिवाइज

निश्चय और निश्चय की परख (कसौटी)

जिसको जिस बात पर निश्चय हो जाता है, वह दृढ़ संकल्प और निर्भय होकर निश्चय और विश्वास के साथ उस सत्य को दूसरे के सामने रखता है, उसके अनुसार कर्म करता है। उसके मन में अंशमात्र भी भय या संशय नहीं होता है, जिससे उसके संकल्प और कर्म स्वत: उस निश्चय के अनुसार होते हैं, जिनका प्रभाव सामने वाली आत्माओं पर भी अवश्य पड़ता है और वे उसकी मान्यता को स्वीकार कर लेती हैं।

जिसको ये निश्चय हो जायेगा कि परमपिता परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, वह सत्य है और वह दुनिया की किसी भी वस्तु या व्यक्ति से अधिक सुखदायी है और महत्वपूर्ण है, उसकी बुद्धि और कहाँ जा नहीं सकती, उससे कोई अकर्तव्य हो नहीं सकता।

जो सच्चे दिल से परमात्मा पर समर्पण है, उनकी वह अवश्य मदद करता है। कोई भी व्यक्ति उसको गिरा नहीं सकता, झुका नहीं सकता परन्तु हमको अपने में और परमात्मा में

अटल विश्वास और निश्चय रखना है, कभी भी भयभीत होकर किसी ईश्वरीय नियम-मर्यादा का उलंघन नहीं करना है, पुरुषार्थ में पीछे नहीं हटना है। ये भी निश्चय रखना है कि निश्चय, विश्वास और पुरुषार्थ की परीक्षा अवश्य होती है।

ज्ञानी आत्मा को किसी व्यक्ति के विषय में और किसी बात के विषय में चिन्ता नहीं करनी चाहिए। जो हुआ, वह बच नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा है और जो होगा वह भी अवश्य अच्छा होगा।

जीवात्म अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है, जो परमात्मा की छत्रछाया में है और सत्य के पथ पर है, उसकी विजय निश्चित है। जो अधर्म और असत्यता के पथ पर है, उसे अपने कर्म के लिए पश्चाताप अवश्य करना होगा। ज्ञानी आत्मा का कर्तव्य है साक्षी होकर सब पार्ट को देखना और सर्व के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखना। न काहू से दोस्ती और न काहू से वैर। इस सत्य पर निश्चय और विश्वास रखने वाला ही श्रेष्ठ पुरुषार्थ करते हुए इस विश्व-नाटक और इस ईश्वरीय जीवन के सच्चे सुख का अनुभव विजय के रूप में करता है। सदा निश्चय रखना है कि हर बात में और हर सेकेण्ड हमारी परीक्षा हो रही है और हमको उसमें पास होना है। परीक्षा में पास होने के लिए बुद्धि सदा बाप की याद में रहे। गायन है - जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेगा आंधी और तूफान। गगन चूर हो जाये, जमीं चाहे सागर में धस जाये, तूफानों की गोद में चाहे सारा जग सो जाये, पर कदम न रुकने पाये। जो ऐसे निश्चयवान है, वे ही अन्त तक विजयी रहते हैं और विजयमाला का दाना बनते हैं।

* निश्चय रहे कि हर क्षण हमारे निश्चय की परीक्षा हो रही है और उसका परीक्षा फल ही हमारे भविष्य के भाग्य का निर्णय और निर्माण कर रहा है। निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

अच्छे पुरुषार्थी को इस सत्य को सदैव स्मृति में रखना है कि किया हुआ पुरुषार्थ कब व्यर्थ नहीं जाता, भले ही वह पुरुषार्थ कर अपने निर्धारित लक्ष्य को न भी प्राप्त कर पाये परन्तु किये हुए पुरुषार्थ का फल तो मिलता ही है। इसलिए आत्मा को कब भी हताश होकर पुरुषार्थ को नहीं छोड़ना चाहिए।

"पुरुषार्थ करना भी ड्रामा में नूँध है और सफलता प्राप्त होना भी निश्चित है। सिर्फ निश्चय को देखने के लिए बीच-बीच में हलचल होती है। ... यज्ञ की हिस्ट्री को देखो - आदि से सेवा की हिस्ट्री में जब भी कोई हलचल हुई है तो सफलता योग के प्रयोग की विशेषता से ही हुई है।"

अ.बापदादा 9.3.94 दादियों से

"पुरुष बनकर रथ द्वारा कर्म कराना - इसको कहा जाता है पुरुषार्थ।... जब तक अल्पकाल

के आधारों का सहारा है, तो बाप का सदा सहारा अनुभव नहीं हो सकता।... बाप का सहारा छत्रछाया है और अल्पकाल की बातें धोखेबाज़ हैं।"

अ.बापदादा 14.4.94

"कई हैं, जो निश्चय से पढ़ते थे, संशय आने से पढ़ाई छोड़ दी। निश्चय कैसे हुआ, फिर संशयबुद्धि किसने बनाया? ... यह बड़ा इमतहान है, इसमें बहुत साहस चाहिए। एक तो निश्चयबुद्धि का साहस चाहिए, दूसरा माया से युद्ध है।"

सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"ब्राह्मणी कैसी भी हो परन्तु यह पढ़ाई है बाप की, पढ़ाने वाला वह सुप्रीम टीचर है। अटेन्शन पढ़ाई पर होना चाहिए। ... बाप से निश्चय ही टूट पड़ता है तो फिर पढ़ाई छोड़ देते हैं। ... अन्त तक जब तक जीना है, पढ़ना जरूर है।"

सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"कोई भी कारण से बाप को छोड़ा तो कम्बख्त कहेंगे। ... संशयबुद्धि बनकर पढ़ाई छोड़ देते तो जन्म-जन्मान्तर के लिए अपना खून कर देते हैं।"

सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"यादगार है ना कि रावण सम्प्रदाय ने पांव हिलाने की कोशिश की लेकिन जरा भी हिला न सके। ... यह मेरा ही यादगार है, ऐसा निश्चय बुद्धि बनने से विजय अवश्य प्राप्त होगी।"

अ.बापदादा 24.5.71

"यहाँ भी बाबा ने 15 दिन का प्रोग्राम दिया था ढोढा और छाछ खाने का। और कुछ भी नहीं बनता था। बीमार आदि सबके लिए यही बनता था। किसको कुछ भी हुआ नहीं, और ही बीमार बच्चे भी तन्दुरुस्त हो गये। बाबा देखते थे आसक्ति टूटी हुई है! यह नहीं होना चाहिए या यह होना चाहिए। चाहना को चुहरा कहा जाता है। यहाँ तो बाप कहते हैं - मांगने से मरना भला। बाप ही जानते हैं - बच्चों को क्या देना है। जो कुछ देना होगा, वह खुद ही देंगे। यह सब ड्रामा बना हुआ है।"

सा.बाबा 8.5.04 रिवा.

"जब सर्वशक्तिमान बाप साथ है तो सर्वशक्तिमान के आगे अपवित्रता आ सकती है? ... जो स्वभाव-संस्कार कमजोर होंगे, वहीं माया अपना गेट बना लेती है। ... चाहे स्टूडेण्ट हो, चाहे टीचर हो लेकिन माया दोनों में रॉयल रूप से आने का फुल पुरुषार्थ करती है। ... मददगार जिज्ञासु है या बाप है? उस समय कौन दिखाई देता है - जिज्ञासु या बाप?"

अ.बापदादा 4.12.95

"अगर आपको निश्चय है कि सर्वशक्तिवान बाप साथ है तो बाप किसी न किसी को निमित्त बना

ही देता है। ... अगर योग्य है, चान्स मिलता है तो खुशी से करो लेकिन ये संकल्प करना कि हमें चान्स मिलना चाहिए, ... यह भी मांगना है।" अ.बापदादा 4.12.95

"जो फाइनल नम्बर मिलेंगे, उसमें ये नहीं होगा कि इसने कितने भाषण किये या इसने कितने स्टूडेण्ट वा सेन्टर बनाये हैं लेकिन योग्य कितनों को बनाया है ... फाइनल नम्बर जितनों को सुख दिया, जितना स्वयं शक्तिशाली रहे, उस प्रमाण मिलेंगे। इसलिए चाहिए-चाहिए खत्म करो। नहीं तो योग नहीं लगेगा।" अ.बापदादा 4.12.95

"ज्ञानी अर्थात् समझदार। समझदार की निशानी है कभी भी धोखा नहीं खाना और योगी की निशानी है - सदा क्लीन और क्लियर बुद्धि। ... सेवाधारी की निशानी है - सदा निमित्त और निर्माण भाव। ... सदा अनुभव करो - सर्वशक्तिवान बाप साथ है। बस एक बात भी अनुभव किया तो सबमें पास हो जायेंगे।" अ.बापदादा 4.12.95

"तुम बच्चे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। तुम कितने सौभाग्यशाली हो। ... परीक्षा भी होनी ही चाहिए कि ये ब्राह्मण है वा नहीं है। अगर तुम ब्रह्मा के बच्चे हो तो सृष्टि चक्र को जरूर जानते होंगे।" सा.बाबा 15.6.06 रिवा.

"बाप रास्ता बताते हैं। अपने ऊपर कृपा, रहम करना है। टीचर तो पढ़ाते हैं, आशीर्वाद तो नहीं करेंगे। आशीर्वाद, कृपा, रहम आदि माँगने से मरना भला। कोई से पैसा भी नहीं माँगना चाहिए। बच्चों को सख्त मना है। कोई से पैसा मांगना, यह भी पाप है। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार, जिन्होंने कल्प पहले बीज बोया है, वर्सा पाया है, वे आप ही करेंगे। कोई भी काम के लिए मांगो नहीं। न करेगा तो न पायेगा। ... जिसको करना होगा, वह आप ही करेगा। तुमको माँगना नहीं है। कल्प पहले जितना जिन्होंने किया है, ड्रामा उनसे करायेगा। मांगने की क्या दरकार है। कई बुद्धू बच्चियाँ हैं, जो मांगती हैं। बाबा तो हुण्डी भरते रहते हैं सर्विस के लिए।" सा.बाबा 29.10.69 रिवा.

"बाप को याद करने से थक जाते हैं तो विकर्म विनाश भी नहीं होंगे। विकर्म रह जायेंगे तो फिर सजा खानी पड़ेगी, पद भी कम हो जायेगा। दिन प्रतिदिन इनका भी बहुतों को साक्षात्कार होता रहेगा। बाप को किसी भी बात का ख्याल नहीं रहता है। जानते हैं यह तो ड्रामा है।" सा.बाबा 26.11.69 रिवा.

"पुरुषार्थ करना भी ड्रामा में नूँध है और सफलता प्राप्त होना भी निश्चित है। सिर्फ निश्चय को देखने के लिए बीच-बीच में हलचल होती है। ... यज्ञ की हिस्ट्री को देखो - आदि से सेवा की हिस्ट्री में जब भी कोई हलचल हुई है तो सफलता योग के प्रयोग की विशेषता से ही हुई है।" अ.बापदादा 9.3.94 दादियों से

"पुरुष बनकर रथ द्वारा कराना - इसको कहा जाता है पुरुषार्थ। ... जब तक अल्पकाल के आधारों का सहारा है, तो बाप का सदा सहारा अनुभव नहीं हो सकता। ... बाप का सहारा छत्रछाया है और अल्पकाल की बातें धोखेबाज़ हैं।"

अ.बापदादा 14.4.94

"कई हैं, जो निश्चय से पढ़ते थे, संशय आने से पढ़ाई छोड़ दी। निश्चय कैसे हुआ, फिर संशयबुद्धि किसने बनाया? ... यह बड़ा इमतहान है, इसमें बहुत साहस चाहिए। एक तो निश्चयबुद्धि का साहस चाहिए, दूसरा माया से युद्ध है।"

सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"ब्राह्मणी कैसी भी हो परन्तु यह पढ़ाई है बाप की, पढ़ाने वाला वह सुप्रीम टीचर है। अटेन्शन पढ़ाई पर होना चाहिए। ... बाप से निश्चय ही टूट पड़ता है तो फिर पढ़ाई छोड़ देते हैं। ... अन्त तक जब तक जीना है, पढ़ना जरूर है।"

सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"कोई भी कारण से बाप को छोड़ा तो कम्बख्त कहेंगे। ... संशयबुद्धि बनकर पढ़ाई छोड़ देते तो जन्म-जन्मान्तर के लिए अपना खून कर देते हैं।"

सा.बाबा 20.9.05 रिवा.

"जो तकदीर में होगा ... नहीं, इसको तमोप्रधान पुरुषार्थ कहा जाता है। सतोप्रधान पुरुषार्थ उसको कहेंगे जो बाप से पूरा वर्सा लेने की प्रतिज्ञा करते हैं।... आठ घण्टा तुम इस ईश्वरीय सर्विस में दो ... अमृतवेले की याद अच्छा असर करती है। बाबा बहुत करके रात को जागते रहते हैं। सूक्ष्म सर्विस में थकावट नहीं होती। कमाई में तो खुशी होगी।"

सा.बाबा 20.6.06 रिवा.

"बापदादा ने सुनाया है - लास्ट में फाइनल पेपर का क्वेश्चन ही यह होगा - "एक सेकेण्ड में फुल स्टॉप", इसी में नम्बर मिलेंगे।... और कोई याद न आये बस फुल स्टॉप। एक बाप और मैं, तीसरी कोई बात नहीं। ... लॉस्ट पेपर अचानक आना है और अचानक के कारण ही तो नम्बर बनेंगे ना।"

अ.बापदादा 15.11.89 बाम्बे ग्रुप

७. *निश्चय और साक्षी स्थिति*

साक्षी स्थिति अर्थात् इस विश्व-नाटक में सफलतापूर्वक पार्ट बजाते भी इसकी किसी भी घटना के अच्छे-बुरे प्रभाव से मुक्त अर्थात् मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय,

लाभ-हानि, अपने-पराये सब में समान भाव और समान स्थिति।

वास्तव में साक्षी स्थिति में स्थित होना स्वत: में जीवन की बहुत बड़ी विजय है। जो साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखता है, वह सदा ही इसका परम-सुख पाता है। परन्तु साक्षी स्थिति हो कैसे ? ये एक गम्भीर प्रश्न है। वास्तव में साक्षी स्थिति में वही रह सकता है, जिसकी बुद्धि में आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र का ज्ञान यथार्थ रीति में हो और उसमें उसको पूर्ण निश्चय हो। परमात्मा इसका पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह सदा ही साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखता है। परमात्मा ही संगमयुग पर आकर इस सत्य ज्ञान को देकर हम आत्माओं को साक्षी स्थिति में स्थित होने का पाठ पढ़ाता है। परमात्मा से इस पाठ को पढ़कर अर्थात् इस ज्ञान को समझकर, उसका अनुभव कर उसमें पूर्ण निश्चय, श्रृद्धा-भावना रखने से ही साक्षी स्थिति में स्थित होना सम्भव है। साक्षी स्थिति के लिए ड्रामा का यथार्थ ज्ञान परमावश्यक है। जो आत्मा स्व-स्थिति में स्थित होकर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखेगी और पार्ट बजायेगी उसको निश्चित ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव होगा क्योंकि साक्षी होने से इसके अच्छे-बुरे प्रभाव से मुक्त रहेंगे और जो अच्छे-बुरे के प्रभाव से मुक्त होगा, वही संकल्प-विकल्प से मुक्त होगा, जो मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव के परमावश्यक है।

"तुमको कोई आंसू न आना चाहिए, साक्षी होकर देखना चाहिए। जानते हो ड्रामा है। इसमें रोने की क्या दरकार ? पास्ट का प्रजेन्ट में कब विचार भी न करना चाहिए। तुम आगे बढ़ते बाप को याद करते रहो और सभी को रास्ता बताते रहो।"

सा.बाबा 25.9.71 रिवा.

"वाह बाबा और वाह ड्रामा के गीत गाते रहो तो सदा लगन में मगन रहेंगे क्योंकि लगन में मगन वही रह सकता है जो साक्षी होकर हर पार्ट बजाता है।"

अ.बापदादा 20.6.77

"बच्चों को ड्रामा पर पक्का रहना है। पक्के रहेंगे तो उस समय ही फिकर से फारिग हो जायेंगे।"

सा.बाबा 23.12.69 रात्रि क्लास रिवा.

"श्रीमत पर न चलते तो नाम बदनाम करते हैं। भल बच्चे हैं परन्तु बच्चों को ऐसे थोड़ेही छोड़ेंगे। हाँ ट्रिबुनल बैठती है, बच्चों को तो और ही कड़ी सजा मिलती है क्योंकि धोखा देते हैं।... बाप तो उस समय मुस्कराते हैं। कहते हैं इनको कुल्हाड़ी से टुकड़ा-टुकड़ा करो। फांसी की सजा देने वाले रोते हैं क्या ? ऐसे थोड़ेही बच्चों पर दया कर देंगे।"

सा.बाबा 22.11.73 रिवाइज

"ब्राह्मणों का मुख्य स्थान कौनसा है, जहाँ बुद्धि को सहज स्थिर कर सको। वह स्थान है -

साक्षी दृष्टा। ड्रामा की ढाल व ड्रामा के पट्टे पर हर कर्म और संकल्प चलने के लिए यह साक्षी व दृष्टापन की अवस्था होनी चाहिए।" 19.4.73 अव्यक्त बापदादा

विभिन्न महापुरुषों ने, साधु-सन्तों, विद्वानों ने साक्षी स्थिति में रहने के लिए इशारा किया है परन्तु यदि सही रीति देंखें तो कोई भी साक्षी स्थिति में स्थित नहीं हो सकता। ड्रामा का ज्ञान ही साक्षी स्थिति का मूलाधार है। बिना ड्रामा के ज्ञान के साक्षी स्थिति में स्थित होना असम्भव ही है। वास्तव में एक परमात्मा ही पूर्ण रूप से साक्षी है क्योंकि वह निराकार और ड्रामा के ज्ञान का पूर्ण ज्ञाता है। साक्षी होने के कारण वह निष्कामी है और विश्व-नाटक की चढ़ती कला और उतरती कला दोनों से परे है, सदा एकरस है। बाकी और सभी आत्माओं में जितनी-जितनी इस ड्रामा के ज्ञान की धारणा है, उतना ही वे साक्षी स्थिति में रहती हैं। वास्तव में हर आत्मा इस विश्व की घटनाओं से कुछ न कुछ प्रभावित अवश्य होती हैं, जिसके अनुसार ही उनकी चढ़ती कला या उतरती कला होती है। परमात्मा कल्पान्त में आकर जब इस विश्व-नाटक का ज्ञान देता है, तब अन्य आत्मायें भी अपने पुरुषार्थ अनुसार इस ज्ञान को धारण कर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाते भी मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती हैं। इस सत्य पर निश्चय कर पुरुषार्थ कर विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर, अनुभव कर और निश्चय कर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक का सुख अनुभव करो, यही इस जीवन की परम प्राप्ति और विजय है।

८. निश्चय, विनाश एवं विजय

आध्यात्मिक जीवन की सफलता के पुरुषार्थ में वैराग्य बहुत महत्वपूर्ण है। अल्प काल के वैराग्य में मृत्यु और सदा काल के वैराग्य के लिए सृष्टि के विनाश का घटक बहुत महत्वपूर्ण है। इससे आत्मा में वैराग्य जाग्रत होता है और आत्मा अपने अभीष्ट लक्ष्य के लिए प्रयत्नशील होती है अर्थात् बुरे कर्मों से बचने, बुरे कर्मों का खाता खत्म करने और अच्छे कर्मों का खाता जमा करने का पुरुषार्थ करता है।

शिवबाबा ने सृष्टि के विनाश के लिए यज्ञ के आरम्भ से ही बताया है, ब्रह्मा बाबा को विनाश और स्थापना का साक्षात्कार कराया, अन्य आत्माओं को भी दिव्य-दृष्टि से या दिव्य-बुद्धि से साक्षात्कार कराया। जिन्होंने बाबा के महावाक्यों पर निश्चय किया, उन्होंने तो अपनी तैयारी की और अपनी अवस्था को उस अनुसार बनाया, जो आज सफलतापूर्वक यज्ञ में अपना पार्ट बजा रहे हैं और यज्ञ की सफलता को देख खुश हो रहे हैं और जिनको पूरा निश्चय

नहीं हुआ अर्थात् जो निश्चय और संशय के झूले में झूलते रहे, वे विनाश को पाये अर्थात् इसके सच्चे सुख से दूर हो गये। विनाश तो निश्चित है लेकिन इस विश्व-नाटक में निश्चित तिथि (Fix Date) नहीं बताई जा सकती क्योंकि निश्चित तिथि बताने का ड्रामा में विधान नहीं है। वास्तविकता तो ये है कि निश्चित तिथि बताने से इसका वास्तविक सुख अनुभव नहीं होगा, न ही यथार्थ पुरुषार्थ होगा और जब यथार्थ पुरुषार्थ नहीं होगा तो फल भी यथार्थ नहीं मिलेगा। अचानक के आधार पर ही इसमें नम्बरवार पास होते हैं और नम्बरवार राजधानी बनती है और ये विश्व-नाटक चलता है। यदि परमात्म निश्चित तिथि बता भी दे तो उस पर निश्चय कैसे करेंगे, उसका प्रमाण क्या होगा। साथ ही निश्चित तिथि बताने से या तो आत्मायें हताश होकर पुरुषार्थहीन जायेंगी या उद्दण्ड होकर गलत कामों में प्रवृत्त हो जायेंगी।

"अभी तो देखो कितने पाप करते रहते हैं। बम्ब गिराया, सभी को मार दिया। कितना बड़ा पाप है। परन्तु बाबा कहते हैं यह विनाश करते हैं, यह तो बाप के प्रेरे हुए हैं। इसलिए इन पर कोई दोष नहीं लगता। यह तो प्रेरे हुए हैं। नहीं तो विनाश कैसे हो ? बड़े कायदे कानून हैं। फिर भी इन सभी बातों को भूल मोस्ट बिलवेड बाप को याद करना अच्छा है।"

सा.बाबा 11.3.73 रिवा.

"बच्चे देखते हो विनाश सामने खड़ा है। यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि कब होगा, क्या होगा। आयेगा तो अचानक। उनके पहले अपने बाप से वर्सा ले लो। ऐसे नहीं बतायेंगे कि फलानी तारीख को होगा। अचानक भंभोर को आग लगनी है।... योग में रह विकर्म विनाश करने में टाइम लगता है।"

सा.बाबा 8.3.72 रिवा.

"जैसे तुमको निश्चय है वैसे आगे चलकर बहुतों को होगा। ... उस समय तुम्हारी अवस्था भी बहुत अच्छी होगी। साक्षात्कार भी करेंगे। कल्प-कल्प जैसे विनाश हुआ है, वैसे होगा। जिनमें निश्चय होगा, चक्र का ज्ञान होगा, वे खुशी में रहेंगे।"

सा.बाबा 14.4.04 रात्रि क्लास रिवा.

"परमात्म कार्य सफल हुआ ही पड़ा है, ऐसे निश्चय बुद्धि, निश्चित भविष्य को जानने वाले निश्चिन्त आत्मायें हो। लोग कहते हैं वा डरते हैं कि विनाश होगा और आप निश्चिन्त हो कि नई स्थापना होगी।"

अ.बापदादा 20.1.86

"जब तक सतोप्रधान नहीं बने हैं, तब तक घर वापस जा नहीं सकते हैं। लड़ाई का भी इससे कनेक्शन है ना। लड़ाई लगेगी ही तब, जब तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सतोप्रधान बनेंगे। ... जब तक विनाश नहीं हुआ, तब तक तुम कर्मातीत अवस्था को पा नहीं सकेंगे। भल कितना भी माथा मारो।... विनाश से पहले कोई कर्मातीत अवस्था को पाये, ऐसा ड्रामा में हो

नहीं सकता।" सा.बाबा 10.8.04 रिवा.

"अभी तुम हो संगमयुग पर। यह भी कोई नहीं जानते कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। ... बाप श्रीमत देते हैं - बच्चे, मुझे याद करो। यह है बाप का बड़ा फरमान। पूरा निश्चय हो तब तो बाप के फरमान पर चलें ना। ... देवताओं की विकारी दृष्टि कभी हो नहीं सकती। ज्ञान से फिर दृष्टि बदल जाती है। सतयुग में ऐसे थोड़ेही प्यार करेंगे, डांस करेंगे। वहाँ प्यार करेंगे परन्तु विकार की बांस नहीं होगी। ... देह की तरफ बिल्कुल दृष्टि न रहे। वह कर्मातीत अवस्था अभी बनानी है। अभी तक ऐसा नहीं है कि सिर्फ आत्मा को ही देखते हैं। ... जिनको पूरा निश्चय नहीं, वे पूरा पढ़ भी न सकें। पवित्र बन न सकें।"

सा.बाबा 17.6.04 रिवा.

"परमात्म कार्य सफल हुआ ही पड़ा है, ऐसे निश्चय बुद्धि, निश्चित भविष्य को जानने वाले निश्चिन्त आत्मायें हो। लोग कहते हैं वा डरते हैं कि विनाश होगा और आप निश्चिन्त हो कि नई स्थापना होगी।" अ.बापदादा 20.1.86

"जब तक सतोप्रधान नहीं बने हैं, तब तक घर वापस जा नहीं सकते हैं। लड़ाई का भी इससे कनेक्शन है ना। लड़ाई लगेगी ही तब जब तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सतोप्रधान बनेंगे। ... जब तक विनाश नहीं हुआ, तब तक तुम कर्मातीत अवस्था को पा नहीं सकेंगे। भल कितना भी माथा मारो।... विनाश से पहले कोई कर्मातीत अवस्था को पाये, ऐसा ड्रामा में हो नहीं सकता।" सा.बाबा 10.8.04 रिवा.

"जैसे तुमको निश्चय है वैसे आगे चलकर बहुतों को होगा। ... उस समय तुम्हारी अवस्था भी बहुत अच्छी होगी। साक्षात्कार भी करेंगे। कल्प-कल्प जैसे विनाश हुआ है, वैसे होगा। जिनमें निश्चय होगा, चक्र का ज्ञान होगा, वे खुशी में रहेंगे।"

सा.बाबा 14.4.04 रात्रि क्लास रिवा.

"जब वहाँ से आत्माओं का आना पूरा हो जायेगा, तुम कर्मातीत अवस्था को पायेंगे, फिर तुम आत्माओं को भी शरीर छोड़ जाना है। उनका आना, तुम्हारा जाना होगा। समझ की बात है ना। हम पहले-पहले जाकर वहाँ रहेंगे। हमारे होते कोई वहाँ रहना नहीं चाहिए।"

सा.बाबा 28.7.06 रिवा.

"अभी तुम सारे ड्रामा के खेल को जान गये हो। समझते हो यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। ... तुम इस खेल को पूरा जान गये हो।... तुमको निश्चय है कि हम इस भारत को श्रेष्ठाचारी जरूर बनायेंगे, तब तो भ्रष्टाचारी दुनिया का विनाश होगा।"

सा.बाबा 25.7.06 रिवा.

९. निश्चय और मृत्यु-विजय

आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है। शरीर तो आत्मा ड्रामा में पार्ट बजाने के लिए लेती है और बदलती है। जब शत प्रतिशत निश्चय हो जाता है कि हम अविनाशी आत्मा हैं, विनाशी देह नहीं हूँ, देह तो हमारा वस्त्र है तो देहाभिमान छूट जाता है और जीवात्मा मृत्यु-दुख से मुक्त हो जाता है और इसी जीवन में जीवनमुक्ति के सच्चे सुख का अनुभव करता है। जब आत्मिक स्वरूप भूलता है, तब देहाभिमान आता है और देहाभिमान आने से मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख उत्पन्न होता है। बाबा ने आत्मा के सत्य ज्ञान को देकर इस मृत्यु दुख से मुक्त कर दिया है। जिनको आत्मा की अविनाश्यता पर पूरा निश्चय है और अपने उस स्वरूप में स्थित रहते हैं, वे ही इस दुख से मुक्त हो जीवनमुक्ति के सच्चे सुख का अनुभव करते हैं। बाबा मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है और बाप अभी मिला है तो ये अनुभव भी अभी ही होना है परन्तु जिनको इस सत्य पर निश्चय होगा वे ही इसका अनुभव कर सकेंगे।

ये जीवन जन्म-जीवन-मृत्यु और फिर जन्म का एक घटना-चक्र है, जो सतत चलता रहता है। मृत्यु जीवन का एक अभिन्न अंग है, जो अपरिहार्य है अर्थात् जिसको टाला नहीं जा सकता है। मृत्यु के लिए कोई न कोई कारण अवश्य बनता है। सत्य ज्ञान के निश्चय और योग-साधना द्वारा मनुष्य मृत्यु को टाल तो नहीं सकता लेकिन मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त हो सकता है।

"आत्मा का इस शरीर में बहुत मोह पड़ गया है, इसलिए थोड़ी बीमारी आदि होती है तो डर लगता है कि शरीर न छूट जाये। अज्ञान काल में डर रहता है। इस समय जबकि संगमयुग है तो तुम जानते हो कि अब वापस घर जाना है बाप के पास जाना है, तो डर की क्या बात है? जब तुम आत्मायें पवित्र बन जाते हो, फिर तो तुमको सुख ही मिलता है, दुख की वहाँ बात ही नहीं। इस समय है ही दुखधाम। यह 5 तत्व भी खींचते हैं, ऊपर से नीचे आकर पार्ट बजाने के लिए। प्रकृति का आधार तो जरूर लेना पड़ता है। नहीं तो खेल चल न सके। खेल बना भी है सुख और दुख का।"

सा.बाबा 27.4.69 रिवा.

"अभी तो आत्मा पतित है इसलिए 5 तत्वों का यह पुतला है, इससे ममत्व हो गया है, आधा कल्प से। इसको छोड़ने की दिल नहीं होती है। नहीं तो विवेक कहता है कि यह शरीर छूट जाये तो हम बाबा के पास चले जायें। अभी पुरुषार्थ करते हो कि हमको पावन बनकर बाबा के पास जाना है।... अभी शरीर में मोह है तो डाक्टर आदि को बुलाते हैं। तुमको तो और ही खुशी होनी चाहिए कि हम जाते हैं बाबा के पास।"

सा.बाबा 27.4.69 रिवा.

"अभी तुम काल पर जीत पहन रहे हो। वहाँ कब अकाले मृत्यु होती नहीं। जैसे सर्प पुरानी खाल छोड़ नई ले लेता है वैसे तुम भी पुरानी देह बदली कर नई ले लेंगे। ऐसी अवस्था यहाँ बनानी है। ... अन्त में और कोई की याद न रहे।"

सा.बाबा 19.1.71 रिवा.

अभी बाबा ने मृत्यु-विजय का बहुत सहज पुरुषार्थ बताया है - अपने आत्मिक स्वरूप को पहचान कर देह और देह की दुनिया की वास्तविकता को समझकर उससे बुद्धियोग निकालकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर एक निराकार शिव बाबा को और अपने निराकारी घर परमधाम को याद करना। इस दुनिया से बुद्धि योग निकालकर मरजीवा बन जाना। जो जितना अपने आत्मिक स्वरूप का निश्चय कर बाबा के महावाक्यों पर निश्चय करके, इस स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करता है, वह उतना ही मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त होकर इस जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति के सच्चे सुख को अनुभव है।

* मृत्यु अर्थात् पुरानी देह का त्याग और जन्म अर्थात् भविष्य नये जन्म की वेला का घनिष्ट सम्बन्ध है। मृत्यु सुखमय है तो भविष्य जन्म भी सुखमय होगा और मृत्यु दुखमय तो भविष्य जन्म भी दुखमय ही होगा। दोनो का आदि-अन्त एक ही बिन्दु है। इसलिए बाबा कहते हैं - तुमको यहाँ मृत्यु पर विजय प्राप्त करना है।

* अज्ञानता और विकर्मों के फल स्वरूप मृत्यु जीवात्मा के लिए महान दुख और भय का कारण है। देह और देह की दुनिया से न्यारा होने का अभ्यास ही इनसे मुक्ति का साधन है। देह को धारण करना और त्याग करना तो जीवात्मा का स्वभाविक कर्म है, इसकी वास्तविकता को जानकर निश्चयबुद्धि आत्मायें, जो देह और देह की दुनिया से न्यारा होने का सफल अभ्यास करती हैं, उनको कब मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय प्रभावित नहीं कर सकता। इसलिए ही अव्यक्त बापदादा देह में रहते देह से न्यारा होने की ड्रिल कराते हैं और सदा करने की श्रीमत देते हैं।

* देह से न्यारा होने का ऐसा अभ्यास हो कि जब जीवन की सर्व इच्छाओं-आशायें से बुद्धि हट जाये और संकल्प करते ही एक सेकेण्ड में इस देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने अनन्त अजर-अविनाशी स्वरूप में स्थित हो जायें। यही मृत्यु-विजय है, जीवन की अन्तिम सफलता है और सुखी जीवन का आधार है।

१०. निश्चय और स्वर्ग - नर्क

स्वर्ग और नर्क दो शब्द कहे जाते हैं परन्तु स्वर्ग-नर्क है क्या और कहाँ है, इस सत्य का ज्ञान किसको भी नहीं है। बहुधा मनुष्य समझते हैं कि स्वर्ग-नर्क इस दुनिया से परे कोई स्थान हैं। परन्तु अभी बाबा ने स्वर्ग-नर्क का यथार्थ ज्ञान दिया है कि स्वर्ग नर्क इस दुनिया की दो अवस्थायें हैं, जिनके आधार ही यह विश्व-नाटक दो भागों में विभाजित है। सृष्टि-चक्र अर्थात् कल्प का पहला आधा भाग स्वर्ग और बाद का आधा भाग नर्क कहलाता है अर्थात् स्वर्ग नई दुनिया और नर्क पुरानी दुनिया को कहा जाता है। अब प्रश्न उठता है कि ऐसी कौनसी सीमा-रेखा (Border line) है जो स्वर्ग-नर्क का विभाजन करती है। इस बात पर हम विचार करेंगे तो देखेंगे कि योगबल और भोगबल ही ये वह सीमा-रेखा है, जिसके द्वारा स्वर्ग-नर्क का विभाजन होता है। जब जीवात्मा में योगबल अर्थात् आत्मिक बल है तो यह सृष्टि स्वर्ग कहलाती है और जब भोगबल अर्थात् देहाभिमान के वशीभूत विकारों का बल आरम्भ होता है तो यही सृष्टि नर्क कहलाती है। जहाँ योगबल है, वहाँ सुख है और जहाँ भोगबल है, वहाँ दुख अवश्य होगा क्योंकि भोगबल का आधार है देहाभिमान। भले सतयुग-त्रेता में आत्मा का परमात्मा से योग नहीं होता है लेकिन योग के द्वारा जमा की हुई शक्ति वहाँ काम करती है, जो शनैः-शनैः क्षीण होती जाती है और द्वापर से देहाभिमान आत्मा पर प्रभावी हो जाता है और योगबल से जो कार्य होता है, वह करने में आत्मा असमर्थ हो जाती है और भोगबल का प्रारम्भ होता है। जिनको इस वास्तविकता पर निश्चय होता है, वे ही स्वर्ग के लिए यथार्थ पुरुषार्थ कर सकते हैं अन्यथा भोग को छोड़कर योग मार्ग पर चलना कठिन है और ज्ञान में चलने वालों में भी यदि इस पूरा निश्चय नहीं है तो वे भी यथार्थ पुरुषार्थ नहीं कर सकते और पुरुषार्थ नहीं तो प्रालब्ध कहाँ ?

योगबल और भोगबल का मूल टेस्ट योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति का है। जब योग बल से सन्तानोत्पत्ति तो स्वर्ग है और भोगबल अर्थात् काम विकार से सन्तानोत्पत्ति तो दुनिया नर्क कहलाती है। स्वर्ग में सन्तानोत्पत्ति योगबल से और नर्क में सन्तानोत्पत्ति भोगबल से होती है। सन्तानोत्पत्ति के विषय में भी बाबा ने पपीता, मोर आदि के अनेक उदाहरण दिये हैं और अनेक प्रथाओं का भी वर्णन किया है।

स्वर्ग की पहले मान्यता क्या थी, अभी स्वर्ग क्या है। स्वर्ग कहाँ है, अमृत्व क्या है, स्वर्ग में विधि-विधान क्या होंगे, स्वर्ग ही नर्क कैसे बनता है, कारण क्या हैं। योग बल का स्वर्ग में क्या उपयोग है। इन सब बातों पर बाबा ने ज्ञान दिया है फिर भी बाबा ने कहा है कि जो रस्म-रिवाज वहाँ की होगी, वह वहाँ चलकर देखेंगे, लेकिन ये सत्य है कि जो यहाँ के रीति-रस्म हैं, वे वहाँ नहीं होंगे। नहीं तो स्वर्ग-नर्क का अन्तर ही क्या है ? स्वर्ग-नर्क का वर्णन प्रायः

सभी धर्मों में है परन्तु भारत ही स्वर्ग बनता है और पूरा नर्क भी भारत ही बनता है। इसीलिए बाबा ने कहा है कि स्वर्ग-नर्क की कहानी या ये ड्रामा भारत पर ही बना हुआ है। और धर्म और देश तो बाई-प्लॉट्स हैं। इन सब बातों पर जिसको निश्चय होगा, वही इस नर्क से उपराम होकर स्वर्ग के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकेगा।

११. *निश्चय और सुख-दुख एवं अतीन्द्रिय सुख*

ये विश्व-नाटक सुख और दुख का एक खेल है। मनुष्य की जीवन के प्रति आकर्षण में सुख की इच्छा और देह के लगाव का महत्वपूर्ण स्थान है। सतयुग-त्रेता में सतोप्रधान और सतो इन्द्रीय सुख तथा द्वापर और कलियुग में रजो और तमोप्रधान इन्द्रिय सुख होते हैं और दोनों में ही दैहिक आकर्षण प्रधान होता है क्योंकि इन्द्रियों सुखों के उपभोग के लिए देह ही आधार है। चाहे सतोप्रधान इन्द्रीय सुख हों या तमोप्रधान इन्द्रीय सुख हों परन्तु दोनों ही आत्मिक शक्ति को क्षीण करते हैं। संगम पर होता है अतीन्द्रिय सुख, जिसमें आत्मा की भूमिका प्रधान होती है, जो आत्मिक शक्ति को बढ़ाने वाला है। अतीन्द्रिय सुख का आधार परमात्मा का सानिध्य अर्थात् योग, ईश्वरीय ज्ञान, ईश्वरीय सेवा तथा ईश्वरीय गुणों की धारणा है। इसीलिये बाबा ने कहा है - जितना योग में रहेंगे, उतना विकर्म विनाश होंगे और खुशी होगी। ज्ञान रतन है, ज्ञान धन है, इसका जितना चिन्तन करेंगे, धारणा करेंगे, उतना अतीन्द्रिय सुख अनुभव होगा। ईश्वरीय गुणों को धारण करने से कर्म श्रेष्ठ होते हैं और सर्व आत्माओं के प्रति आत्मिक स्नेह बढ़ता है, जो आत्मा को सुख प्रदान करता है। सेवा के लिए भी बाबा ने कहा है - सेवा करना अर्थात् मेवा खाना। ज्ञान, गुण, शक्तियों को धारण करने में सेवा बहुत सहयोगी है। ईश्वरीय पढ़ाई के ये चार मुख्य विषय हैं, इन चारो ही प्रकार से आत्मा अतीन्द्रिय सुख के अनुभव में निमग्न रहती है, जिससे वह इन्द्रीय सुखों से सहज ही विमुक्त हो जाती है और जो इस अटल सत्य को अनुभव नहीं करता, उसकी इन्द्रिय सुखों में बुद्धि अवश्य जाती है। जब बुद्धि इन्द्रिय सुखों में जायेगी तो आत्मा उनके लिए चेष्टा अवश्य करेगी, जो आत्मिक शक्ति के पतन का कारण बन जाता है और आत्मा अपने श्रेष्ठ लक्ष्य से भटक जाती है। इसलिए आध्यात्मिक जीवन के पुरुषार्थी को अपने पुरुषार्थ में सच्ची सफलता पाने के लिए अर्थात् सच्चा सुख पाने के लिए इस सत्य को अनुभव करके उनमें निश्चय और विश्वास अति आवश्यक है।

जिनको आत्मा, परमात्मा और परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान में निश्चय होता है, वे ही इन्द्रिय सुखों से उपराम होकर अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति के लिए पुरुषार्थ करते हैं और

उसका अनुभव करते हैं क्योंकि अतीन्द्रिय सुख के लिए इन्द्रियों से परे अर्थात् देह से न्यारा होना परमावश्यक है। जो अतीन्द्रिय सुख को एक बार अनुभव कर लेता है, वह उसके लिए पुरुषार्थ अवश्य करता है और एक बार ये अनुभव कराना परमात्मा का काम है। परमात्मा सभी आत्माओं को वर्से के रूप में ये अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराता है और जो इसे अनुभव करके उसके लिए पुरुषार्थ करता है, उसका ये सुख उत्तरोत्तर वृद्धि पाते हुए स्थाई हो जाता है और जो अनुभव करके किसी न किसी कारण से संशय में आ जाता है, उसका ये अनुभव क्षीण हो जाता है और उसका इन्द्रीय सुखों के प्रति आकर्षण बढ़ जाता है, जो अन्ततः दुख का कारण बनते हैं। ज्ञान मार्ग अर्थात् परमात्मा की गोद में जन्म लेकर माया की गोद में जाने का मुख्य कारण इन्द्रीय सुखों का आकर्षण ही है।

"निश्चय बुद्धि विजयन्ति" अर्थात् निश्चय है तो सुख और संशय है तो दुख अवश्य होगा। निश्चय अर्थात् आत्मा, परमात्मा और ड्रामा का यथार्थ ज्ञान और उसमें निश्चय, विश्वास, श्रृद्धा-भावना और उसकी धारणा।

ये कल्प का अन्तिम समय और अन्तिम शरीर है, इसमें आत्मा के सारे कल्प के हिसाब-किताब भी चुक्तू होने हैं। इसलिए रोग-शोक, सुख-दुख, सम्बन्धों में कटुता आना स्वभाविक है। इस समय सम्पूर्ण स्वास्थ्य की परिकल्पना करना एक बड़ी भूल होगी परन्तु आत्मा स्व-स्थिति में स्थित होकर रोग-शोक होते भी सदा सुखी और हर्षित स्थिति प्राप्त कर सकती है। बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसको यथावत् धारण कर देह से न्यारी स्थिति में स्थित हो जाओ तो रोग-शोक होते भी ये जीवन परम शान्तिमय, परमानन्दमय और परम सुखमय अनुभव होगा, सदा मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति होगी। ये जीवन सारे कल्प में सर्वश्रेष्ठ जीवन है और कल्प का फल है - इस सत्य पर निश्चय करके इसे सफल करो और जीवन के सच्चे सुख को अनुभव करो।

"समझ मिल जाती है तो फिर रात-दिन खुशी रहनी चाहिए। हम ईश्वर की सन्तान हैं। वहाँ विष्णु के दैवी सन्तान को इतनी खुशी नहीं होगी, जितनी खुशी अभी है। देवतायें ईश्वरीय सन्तान से ऊंचे नहीं हैं। तो ईश्वरीय सन्तान को कितनी खुशी होनी चाहिए।"

सा.बाबा 11.3.72 रिवाइज

"बच्चों को एक दिन भी मुरली मिस न करनी चाहिए। बाबा के पास आते हैं तो पहले पूछता हूँ - मुरली सुनी है। मुरली सुनों फिर मिलूँगा। बच्चों में शौक होना चाहिए।... कोई समय ऐसी अच्छी प्वाइन्ट निकलती है जो झट कोई को तीर लग जाये।... वास्तव में तुम बच्चों की खुशी का सारा आधर इस पर है। कमाई भी इसमें है। गाया भी हुआ है कि अतीन्द्रिय सुख गोप-

गोपियों से पूछो। गोप-गोपियाँ तुम हो। .. बाकी कृष्ण ने किसको सुख नहीं दिया।"

सा. बाबा 16.4.72 रात्रि क्लास रिवा.

"बच्चे कहते हैं बाबा खुशी नहीं रहती। अरे बाबा तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं और तुम कहते हो खुशी नहीं रहती! तो जहाँ से खुशी मिले वहाँ जाकर धक्का खाओ। डायरेक्शन पर अमल नहीं करते हो तो खुशी फिर कहाँ से आयेगी। जब कोई दुख हो तो बाबा को लिखो हमारा मन भटक रहा है। फिर बाबा सवाल पूछेंगे क्या तुम बाप को भूल जाते हो। जरूर कहाँ बुद्धि फंसी हुई है।... तुम्हारा तो इन्जाम है - मेरा तो एक शिव बाबा, दूसरा न कोई।"

सा. बाबा 7.7.72 रिवाइज

बाबा के महावाक्य हैं और विश्व-नाटक का अटल सत्य है - "जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा", जिनको ज्ञान सागर परमात्मा के इन महावाक्यों पर निश्चय है, उनका कब बुरा हो नहीं सकता। चेक करो - हमारा ऐसा निश्चय है।

बाबा ने जो दिया, वह इस जगत के किसी भी भौतिक साधन और सम्पत्ति से अनन्त गुणा श्रेष्ठ है - जो इस सत्य का अनुभव करते और निश्चय करते, उनको इस जगत के कोई भी व्यक्ति, साधन या सम्पत्ति आकर्षित नहीं कर सकते। परमात्म-प्राप्तियाँ अनन्त हैं, उनसे प्राप्त सुख अनन्त है, जो उस सुख को अनुभव कर लेता है, उसको कभी अप्राप्ति का अनुभव हो नहीं सकता है। अप्राप्ति की अनुभूति दुख का मूल कारण है।

"सदा उमंग और उत्साह में रहने वाली आत्माओं को, एक बल एक भरोसे में रहने वाले बच्चों को, हिम्मते बच्चे मदद दे बाप का सदा ही अनुभव होता रहता है। "कार्य सफल होना ही है" यह है हिम्मत। इस हिम्मत से मदद के पात्र स्वत: ही बन जाते हैं।"

अ.बापदादा 26.2.83

देह से न्यारे होकर अपने अनन्त स्वरूप में स्थित होने से और न्यारे होकर परमपिता परमात्मा के सानिध्य से जो सुख प्राप्त होता है, वह परम-सुख है और वह संसार के सर्व सुखों से श्रेष्ठ है। निर्भय-निश्चिन्त आत्मा ही उस सुख को प्राप्त कर सकता है और निर्वैर, निर्लोभ, निष्काम, निर्मान, निर्विकार आत्मा ही निर्भय-निश्चिन्त रहकर देह से न्यारेपन का अनुभव कर सकता है।

वास्तव में इस ज्ञान मार्ग में भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति का कोई स्थान नहीं है। अगर अज्ञानतावश अंशमात्र भी भविष्य के प्रति भय-चिन्ता-आशंका है माना परमपिता परमात्मा पर, अपने कर्म पर, अपने भाग्य पर निश्चय-विश्वास नहीं है और जहाँ परमपिता परमात्मा पर और अपने कर्म-फल पर निश्चय-विश्वास नहीं तो वहाँ दुख-अशान्ति, भय-चिन्ता अवश्य होगी

इसलिए ही संशयबुद्धि विनश्यन्ति गाया हुआ है।

अब वापस घर जाने का समय है। जब घर वापस जाना है तो घर की याद सहज रहेगी और देहाभिमान छूटेगा, जिससे अपने मूल स्वरूप में सहज स्थित हो सकेंगे और जीवन में सच्चे सुख का अनुभव करेंगे।

जब विश्व-नाटक का ज्ञान होगा, उस पर निश्चय होगा तो बुद्धि में रहेगा कि ये कल्प का संगम युग है, अभी ये पुरानी दुनिया विनाश होने वाली है और नई दुनिया आने वाली है तो पुरानी दुनिया से स्वत: वैराग्य आयेगा और उसका बुद्धि से त्याग होगा तथा नई दुनिया से बुद्धियोग लगेगा। नई दैवी दुनिया से बुद्धियोग लगने से दैवी गुणों एवं संस्कारों की धारणा अवश्य होगी और जीवन सुखमय अनुभव होगा, सदा खुशी रहेगी। जहाँ खुशी होगी, वहाँ किसी प्रकार की ग्रहचारी आ नहीं सकती।

निश्चय न केवल हमको ब्राह्मण बनाकर रखता परन्तु ब्राह्मण जीवन का परम सुख का अनुभव भी आत्मा निश्चय के आधार पर ही करती है। निश्चय न केवल परमात्मा में परन्तु परमात्मा की हर बात में निश्चय ही ब्राह्मण जीवन में सुख अनुभव कराता है।

"ब्लेसिंग प्राप्त होने के कारण सफलता सदा जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में अनुभव करते रहेंगे। पता नहीं क्या होगा, सफलता होगी वा नहीं होगी ... यह पता नहीं का संकल्प परिवर्तन हो मास्टर त्रिकालदर्शी स्थिति का अनुभव करेंगे। "विजय हुई पड़ी है" - यह निश्चय और नशा सदा अनुभव होगा।" अ.बापदादा 6.11.87

"तुम जानते हो हम यहाँ पार्ट बजाने आये हैं, फिर जाना है, यह खुशी है। शान्ति की खुशी नहीं है। इसमें मज़ा आता है। ... पार्ट बजाना ही है। यहाँ आते ही हैं कर्म करने के लिए। ... अब बाप कहते हैं - बच्चे देही-अभिमानी बनो।"

सा.बाबा 6.6.06 रिवा.

"गीता में भी है भगवान हमको ऐसा स्वराज्य देते हैं, जिसको कोई ले न सके ... आत्मा को कितनी खुशी होनी चाहिए। निश्चय तो है ना। निश्चय नहीं है तो वे स्वर्ग में चलने के लायक नहीं हैं।" सा.बाबा 20.7.06 रिवा.

१२. *निश्चय और ब्रह्मचर्य व्रत*

निश्चय बुद्धि विजयन्ति। ब्रह्मचर्य की धारणा में निश्चय का बहुत महत्व है। जिसको निश्चय होगा कि ब्रह्मचर्य इस जीवन में सम्भव है और योगी जीवन की सफलता का मूलाधार है, वह सहज ही इसकी धारणा कर सकता है। जैसा निश्चय होता है वैसी अभिधारणा बनती है और

संकल्प-विकल्प उत्पन्न होते हैं और उन संकल्पों के अनुसार शरीर में ग्रन्थियाँ प्रभावित होती हैं और रस स्राव करती हैं, जिसका शुभाशुभ प्रभाव शरीर पर पड़ता है और उस अनुसार जीवन बन जाता है। इस प्रक्रिया का ब्रह्मचर्य व्रत के पालन में भी मुख्य प्रभाव है।

ब्रह्मचर्य ब्राह्मण जीवन की मूल धारणा है, आध्यात्मिक जीवन की सफलता का मूलाधार है, सुखमय जीवन की आधार शिला है, धर्म स्थापना के लिए ब्रह्मचर्य मूल धारणा है, सतयुग में भोगबल या विकार होता ही नहीं है, सन्तान भी योगबल से पैदा होती है आदि आदि सत्यों का जब ज्ञान और उस पर निश्चय हो जाता है तो जीवन में विकारी संकल्प स्वत: समाप्त हो जाते हैं। जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है तो अन्य आत्माओं को भी उनके मूल स्वरूप में देखती है, जिससे उस अनुसार ही संकल्प चलते हैं, जिसके फलस्वरूप शरीर में विकारोत्तेजक रसों का स्राव स्वत: बन्द हो जाता है, जिससे वर्तमान जीवन की विकारी प्रक्रियायें जैसे स्वप्न-दोष, एम.सी. आदि भी नहीं होते हैं। बाबा ने भी इस विषय में कहा भी है कि सतयुग में ये किचड़पट्टी आदि नहीं होती है। परन्तु जब मनोवैज्ञानिक और मेडिकल साहित्य, वर्तमान के दूषित साहित्य आदि पढ़ते हैं, चित्रों आदि को देखते हैं, जो देहाभिमान पर आधारित हैं तो उनकी मान्यताओं में बुद्धि जाती है और उन पर निश्चय दृढ़ होता जाता है कि ये जीवन की स्वभाविक क्रियायें हैं तो बाबा के महावाक्यों में निश्चय डगमग हो जाता है और उस अनुसार संकल्प उत्पन्न होने लगते हैं और जब संकल्प उत्पन्न होते हैं तो उससे ग्रन्थियाँ वैसे ही रस स्राव करती हैं और स्वप्नदोष, एम.सी जैसी विकारी क्रियायें स्वभाविक जान पड़ती हैं। फिर उनको हठ से या लोक-लाज से रोकने का प्रयत्न करते हैं, जिससे अनेक प्रकार की घृणित बीमारियाँ पैदा होती हैं। वर्तमान में ये प्रभाव दुनिया में भी और अपने ब्राह्मण परिवार के अनेक भाई-बहनों के जीवन में भी स्पष्ट देखने में आता है। उनके लिए इस ब्राह्मण जीवन के नियम-संयम पालन करना कठिन हो जाता है, जिससे अनेक अकृत्य होने लगते हैं।

भले ही वर्तमान समय में स्वास्थ्य और बीमारियों के निदान के लिए मेडिकल साइन्स बहुत सहयोगी है और उसका सहारा लेना ही पड़ता है और लेना भी चाहिए परन्तु हमको ये कभी नहीं भूलना चाहिए कि मनोविज्ञान और मेडिकल विज्ञान, उसके साहित्य और मान्यताओं की रचना देहाभिमान पर आधारित है और देहाभिमानी व्यक्तियों की बुद्धि और अनुभव की देन है। देहाभिमानी व्यक्ति को आत्मा और आत्मिक शक्तियों का ज्ञान ही नहीं है तो वे आत्मा की उन्नति का रास्ता कैसे जान सकते हैं और जो खुद ही आत्मिक उन्नति का रास्ता नहीं जानते हैं तो हमको कैसे बता सकते हैं। यदि वे बता सकते तो इस दुनिया का ऐसा पतन नहीं होता और परमात्मा को आने की आवश्यकता ही नहीं होती। ये कार्य तो परमात्मा का ही है और

वह ही बता सकता है। परमात्मा जो बता रहा है, वही हम आत्माओं के लिए हितकर है और आत्माओं की उन्नति के लिए यथार्थ है। इसलिए हमको अपने सत्य पथ में कभी भी संशय नहीं लाना चाहिए, उससे भटकना नहीं चाहिए।

ब्रह्मचर्य के विषय में "निश्चय बुद्धि विजयन्ति" का प्रभाव अपने यज्ञ के आदि रत्नों, अनेक पुराने भाई-बहनों, अनेक सन्यासियों और भक्तों के जीवन में भी देखने में आता है। दुनिया में कई पतिव्रता बहनें बाल-विधवा हो जाती परन्तु निश्चय के आधार जीवन पर्यन्त उसका निर्वाह करती हैं, उनकी किसी भी व्यक्ति की तरफ बुद्धि नहीं जाती है, जिसके कारण उनको इसमें सफलता मिलती है, भले ही कर्म के फलस्वरूप विधवापन का दुख उनको सहन करना ही पड़ता है। हमको तो बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसमें ऐसे किसी दुख की सम्भावना ही नहीं है। बाबा कहता भी है कि परमात्मा ही सर्व आत्माओं का पति है।

जब मनुष्यात्मा किसी लक्ष्य विशेष के प्रति एकाग्र हो जाता है, जिससे दूसरी बातों की तरफ ध्यान ही न जाये, संकल्प ही न उठे, तो भी विकार कारक ये क्रियायें समाप्त हो जातीं हैं अर्थात् ग्रन्थियों से वह रस स्राव नहीं होता, जिससे भी विकार की प्रवृत्ति उस समय तक बन्द रहती है। हठयोग में भी ऐसे उदाहरण हैं, जिनसे ये सिद्ध होता है कि आध्यात्म-पथ के पथिक के लिए ये क्रियायें स्वभाविक नहीं हैं।

जब हमको निश्चय होता है कि परमात्मा हमारे साथ है, हमको देख रहा है तो विकारी संकल्प नहीं उठता, जिससे शरीर में ये विकारी प्रक्रियायें नहीं होतीं हैं। इसके अनेक उदाहरण हैं - वर्तमान में अपने यज्ञ-इतिहास के हीरो पार्टधारी आदरणीय दादा विश्वरतन, जो हमारे अग्रज और आदर्श हैं उनका जीवन, व्यवहार और अनुभव हमारे सम्मुख है, जिनको बाबा ने उनकी धारणाओं के आधार पर सुखदेव के नाम से भी सम्बोधित किया है। उनके जीवन से हम सभी परिचित हैं। बड़ी दादियों और अनेक भाई-बहनों का जीवन भी उदाहरण स्वरूप हैं। उनके जीवन की ये सफलता उनके दृढ़ निश्चय और विश्वास का ही परिणाम है।

ब्रह्मचर्य की धारणा में निश्चय का महत्वपूर्ण स्थान है। एक बाप के बच्चे भाई-बहन होते हैं तो दोनों को निश्चय होता है कि हम भाई-बहन हैं और भाई-बहन का विकार में जाना सामाजिक और नैतिक रूप से अपराध है, गलत है। तो बहन सुन्दर और युवा होते भी उसके प्रति दृष्टि-वृत्ति खराब नहीं होती है और दूसरी लड़की उतनी सुन्दर न होते भी उस पर विकारी दृष्टि-वृत्ति हो जाती है। हम सब एक परमात्मा और साकार ब्रह्मा बाबा के बच्चे भाई-बहन हैं, यह संगम धर्माऊ युग है, इसमें विकार में जाना सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक दृष्टि से अपराध है - ये निश्चय रहे तो कब भी विकारी दृष्टि-वृत्ति नहीं होगी।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा में ये स्वप्नदोष या एम.सी. की प्रवृत्ति नहीं होती और दुनिया के रीति-रिवाज भी ये सिद्ध करते हैं कि ये स्वप्नदोष, एम.सी. की प्रवृत्ति स्वभाविक नहीं है, यथार्थ नहीं है बल्कि अशुद्ध है इसलिए शुभ कार्यों हिस्सा लेने के लिए उनको निषेघ है। यज्ञ में भी पहले इन परिस्थितियों में बहनें भोग लगाने के समय भी क्लास में नहीं बैठती थीं। दुनिया में भी किसी शुभ कार्य में या शुभ स्थान अर्थात मन्दिरों आदि में ऐसी स्थिति में नहीं जाते हैं। तीर्थ यात्रा के समय भी ऐसी बातों को अशुभ मानते हैं। तो सतयुग में जब हम स्वयं ही देवता स्वरूप में होंगे तो ये प्रक्रियायें निरन्तर स्वभाविक कैसे हो सकती हैं? परन्तु क्या होगा, कैसे होगा वह तो वहाँ पर ही समझेंगे परन्तु बाबा ने इसके विषय में अनेक बातें कहीं हैं, जिससे ये स्पष्ट होता है कि ये बातें सतयुग में नहीं होंगी। जब हमको इन सत्यों पर निश्चय हो जाता है तो ये प्रक्रियायें नहीं होती है और इस ब्राह्मण जीवन में ब्रह्मचर्य सहज हो जाता है।

जहाँ स्त्री-पुरुष में ये प्रक्रियायें होती हैं, उनको सूक्ष्मता से चेक करेंगे तो ये स्पष्ट हो जायेगा कि हमारी दृष्टि-वृत्ति, स्मृति, खान-पान, व्यवहार, नियम-संयम में कहाँ न कहाँ काम विकार की रग नीहित है अर्थात् कोई न कोई आकर्षण अवश्य है। जहाँ ये प्रक्रियायें होंगी वहाँ काम की चेष्टा अवश्य होगी। इसलिए दुनिया में भी माता-पिता जब कन्या में ये देखते तो उसकी शादी के लिए पुरुषार्थ करते हैं। यदि हमारे जीवन में ये प्रक्रियायें हैं तो हम सूक्ष्मता से चेक करेंगे तो देखेंगे कि बाबा ने इसके लिए जो श्रीमत दी है, उसका कहाँ न कहाँ उल्लंघन अवश्य होता है। बिना इसके ये प्रक्रियायें हो नहीं सकतीं। मनुष्य कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों से जो भी ग्रहण करता है, उसका प्रभाव अवश्य होता है। ब्रह्मर्य जीवन की सच्ची सफलता के लिए इस सत्य को जानकर इसका परहेज रखना अर्थात् खानपान, व्यवहार में अति आवश्यक है। बाबा ने कई बार मुरलियों में स्पष्ट कहा है कि ये दोनों प्रक्रियायें काम विकार का ही अंश हैं।

इस विकारी दुनिया में भी जिन कुमार-कुमारियों का वातावरण अपेक्षाकृत शुद्ध, जिनके सामने कोई कामोत्तेजक चर्चा, क्रिया-कलाप, सिनेमा आदि नहीं होते हैं, कोई अशलील साहित्य आदि नहीं पढ़ते हैं, बचपन से ही भक्ति भावना होती है, उनके जीवन ये स्वप्नदोष और एम.सी. जैसी क्रियायें बहुत देर से होती हैं और जो ऐसे दूषित वातावरण, संग में रहते, सिनेमा आदि देखते, अशलील साहित्व आदि पढ़ते हैं, उनके जीवन में ये क्रियायें जल्दी आरम्भ हो जाती हैं। ये इस बात को सिद्ध करता है कि ये क्रियायें भी वातावरण, संगम, खानपान पर आधारित हैं।

इस सत्य को भी बुद्धि में अवश्य रखना है कि अभी हम देहाभिमान जीवन से देही-अभिमानी जीवन में जा रहे हैं और जब तक देहाभिमान है तब तक कुछ न कुछ ये बातें जीवन में होंगी, इसलिए उनसे डरना भी नहीं है और हतोत्साहित भी नहीं होना है, परन्तु इनको स्वभाविक या नेचुरल या आवश्यक मान लेने की भूल कभी नहीं करनी है। यदि कोई ऐसी भूल करता है तो वह अपने लिए आपही अपनी कब्र खोदता है देहाभिमानी व्यक्ति के लिए ये स्वभाविक है परन्तु देही-अभिमानी के लिए ये स्वभाविक नहीं हैं। जिसका इस सत्य पर यथार्थ निश्चय होगा, उसके लिए इनको जीतना कठिन नहीं है और जिसको उल्टा निश्चय हो गया अर्थात् जिसने इनको स्वभाविक मान लिया, उसके लिए काम विकार को जीतना बहुत कठिन काम हो जायेगा और ये ब्राह्मण जीवन एक भार अनुभव होने लगेगा।

वास्तविकता तो ये है कि मनुष्य विषय-भोग को एक सुख समझते हैं और जब इसे सुख निश्चय करते हैं तो उसके अनुरूप प्रवृत्ति होना स्वभाविक है। परन्तु सत्य ये है कि विषय-भोग में सुख नहीं है, वह तो परम दुख का कारण है अर्थात् जिसे हम सुख समझते हैं उसका अन्तिम परिणाम दुख ही है। जब हम इसको दुख का कारण समझेंगे तो इससे निश्चित ही इससे बुद्धि हट जायेगी और ये सहज अनुभव होगा अर्थात् हमारी काम विकार पर विजय निश्चित ही होगी।

विषय-वासना का सुख जीवात्मा को तब ही प्रभावित करता है या आकर्षित करता है, जब ये निश्चय होता है कि ये एक विशेष सुख है, आनन्द है, जीवन के लिए आवश्यक है। ऐसे निश्चय वाले की दृष्टि-वृत्ति ऐसी जगह जाती ही रहेगी, जो काम वासना की तृप्ति के साधन हैं और शरीर के अन्दर ऐसे संकल्प और प्रक्रियायें होती रहेंगी, जो काम-वासना के कारण हैं और जब वे प्रक्रियायें या द्रव्य अन्दर स्रवित होंगे तो वह कामभोग के बिना रह नहीं सकेगा। परन्तु ज्ञान सागर बाबा ने इसे विष की संज्ञा दी है। जिनको ये निश्चय हो जाता है कि ये विष है, मृत्यु-दुख का कारण है, उनको काम-वासना को जीतना सहज हो जाता है और उनके लिए पवित्रता ईश्वरीय वरदान सिद्ध होती है और वे ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अतीन्द्रिय सुख अनुभव करते हैं परन्तु जो निश्चय-संशय के झूले में झूलते रहते हैं, उनके लिए काम वासना को जीतना बहुत कठिन होता है। भक्ति मार्ग में भी गायन है कि देवताओं ने ब्रह्मचर्य के बल से मृत्यु को जीता है। ब्रह्मचर्य आत्मा की एक बहुमूल्य सम्पत्ति है, परमात्मा का वरदान है, उसकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है।

यदि सही आत्मिक स्थिति है तो विषय वासना जाग्रत हो नहीं सकती। यदि कोई यह भी कहे कि सतयुग में भी सन्तानोत्पत्ति की यही विधि होगी तो भी भाई-बहन तो विकार में नहीं

जा सकते। हम सभी एक ब्रह्मा बाप के बच्चे भाई बहन हैं। फिर प्रश्न उठता है कि स्वर्ग और नर्क में अन्तर क्या है ?

"सतयुग में विष से जन्म नहीं होता। नहीं तो उन्हों को निर्विकारी कह न सकें।"

सा.बाबा 22.1.72 रिवा.

"वह तो वाइसलेस दुनिया थी। वहाँ विकारी बनना नहीं होता। कहते हैं तब बच्चे कैसे पैदा होंगे। अरे वह तो जो रसम होगी, वैसे होंगे। बच्चे तो जरूर पैदा होते हैं। परन्तु वह तो है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। समझो योग बल से पैदा होते हैं। पहले साक्षात्कार होता है। मुख का प्यार होता है। इसलिए कहा जाता है मुखवंशावली। यह बड़ी गुह्य बातें हैं। नये को इन बातों में नहीं लाना है।"

सा.बाबा 28.11.73 रिवा.

ब्राह्मण जीवन की सफलता में ब्रह्मचर्य, ज्ञान-योग की पढ़ाई, सेवा, खान-पान-व्यवहार एवं सन्तोष की मुख्य भूमिका है। ब्रह्मचर्य ब्राह्मण जीवन की मुख्य धारण और ब्राह्मण जीवन का आधार है। ब्राह्मण बनने के बाद एक बार भी विकार में गया तो वह अपनी वह शान पुन: नहीं पा सकता क्योंकि ये आत्मा की अपूर्णनीय (Irrecoverable) क्षति है और पवित्र ब्राह्मण जीवन पर काला दाग़ है। स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा को साथ रख अपने जीवन व्यवहार को ऐसा बनायें जो न हमारे अन्दर काम-वासना जाग्रत हो और न दूसरे की हमारे प्रति काम-वासना जाग्रत हो। साथ ही हमको ऐसा वातावरण का निर्माण करना है जो दूसरी आत्माओं को भी ये जीवन का सच्चा कवच प्राप्त हो अर्थात् जीवन के सच्चे सुख का प्रशस्त मार्ग मिले।

शारीरिक व्याधि भोग और सम्बन्धों की कटुता आदि के समय कर्मभोग की यथार्थता को जान उनको सहन करते हुए परमात्मा पर श्रृद्धा-भावना स्थिर रखना और अपने अभीष्ट लक्ष्य के लिए सदा प्रयत्नशील रहने वाले ही ब्रह्मचर्य को पालन करके अपने इस ब्राह्मण जीवन की सच्ची सफलता को पाते हैं।

जब मन-बुद्धि विकारी इन्द्रियों में एकाग्र होती है तो इनर्जी अधोगामी होती है और मनुष्य विषय-भोग के बिना रह नहीं सकता परन्तु जब मन-बुद्धि आत्मा में एकाग्र होती है अर्थात् आत्मिक होती है तो इनर्जी ऊर्ध्वगामी होती है अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों से प्रवाहित होती है। इन दोनों ही क्रियाओं में निश्चय की अहम् भूमिका है और ये योगी जीवन की सफलता का आधार है।

"बाप कहते हैं - पवित्र बनो, काम महाशत्रु है। शंकराचार्य तो कब नहीं कहेंगे। वह तो पुजारी है ना। डरना थोड़ेही है। इसमें कोई संशय आदि की बात ही नहीं। बाप कहते हैं - मैं आया हूँ

कोसखाने (हेल) को हेविन बनाने। ... बाप समझाते हैं - यह कोसखाना बन्द करो। पावन बनने बिगर वापस कब जा नहीं सकेंगे।" सा.बाबा 6.4.69 रिवा.

"कोई-कोई कहते हैं इस समय जबकि तमोप्रधान दुनिया है, पवित्र रहना - यह तो असम्भव है। उन बेचारों को पता ही नहीं पड़ता कि अभी संगमयुग है। बाबा ही पवित्र बनाते हैं। इन्हों का मददगार परमपिता परमात्मा है।" सा.बाबा 2.9.71 रिवा.

"कई कुमारियाँ अथवा कुमार कहते हैं - बाबा मात-पिता बहुत नाराज़ होते हैं शादी न करने पर। बाबा कहते हैं जाकर शादी करो। पूछते हो ना, खुद तुम्हारी दिल है। .... बाबा की याद में तुम्हारा गला भी कट जाये तो भी तुम बहुत ऊंच पद पा लेंगे। मार से डरना न है। शिव बाबा को याद करते रहो। मर भी गये तो तुम्हारा बहुत ऊंच पद होगा। तुम सभी से आगे चले जायेंगे।" सा.बाबा 20.6.72 रिवा.

"स्वयं को आत्मा-स्वरूप में जानना, मानना और चलना तथा बाप को भी जो है, जैसा है, वैसे जानना - यह है यथार्थ निश्चय। ... अगर यथार्थ निश्चय है तो मुख्य पवित्रता को धारण करने में मुश्किल नहीं लगेगा। अगर पवित्रता स्वप्न मात्र भी हिलाती है, हलचल में आती है तो समझो यथार्थ निश्चय का फाउण्डेशन कच्चा है क्योंकि पवित्रता आत्मा का स्वधर्म है, अपवित्रता परधर्म है।" अ.बापदादा 4.12.95

ब्रह्मचर्य की वास्तविकता पर विचार करें तो ब्रह्मचर्य की धारणा करना जीवात्मा की शान है और Graceful life का आधार है। जिसके लिए बाबा बाबा ने अनेक बार कहा है कि सन्यासी पवित्र रहते, इसलिए ही उनकी महिमा होती है; कन्याओं के पैर पूजते हैं; देवताओं की पूजा होती है। कहा गया है - देवताओं ने ब्रह्मचर्य के बल से ही मृत्यु को जीता है। इन सब सत्यों पर निश्चय होगा तो ब्रह्मचर्य की धारणा सहज होगी।

१३. A. *निश्चय बुद्धि, अन्न और मन*

इस मानव जीवन के दो पक्ष हैं, एक है मनोमय अर्थात् मन-बुद्धि-संस्कार सहित आत्मिक स्वरूप, जिसकी उन्नति-अवनति का आधार ज्ञान है और दूसरा अन्नमय अर्थात् स्थूल शरीर, जिसका आधार भोजन है। जैसी आत्मा की स्थिति होती है, उस अनुसार उसके संकल्प होते हैं और उन संकल्पों के अनुसार वायब्रेशन्स प्रवाहित होते हैं, जिनका प्रभाव उसकी दृष्टि-वृत्ति से, स्पर्श से अन्य स्थूल पदार्थों व चेतन आत्माओं पर अवश्य पड़ता है। इसलिए बाबा सदैव कहते हैं कि किसी अपवित्र, विकारी आत्मा के हाथ का बनाया हुआ, स्पर्श किया हुआ अन्न न खाओ, यदि किसी विशेष परिस्थिति में स्वीकार भी करना पड़े तो जब

भोजन स्वीकार करो तो पहले दृष्टि देकर बाबा की याद में स्वीकार करो क्योंकि हमारी बुद्धि में बाबा की याद होगी तो उसके प्रभाव से भोजन भी पवित्र हो जायेगा अर्थात् उसका प्रभाव अपेक्षाकृत कम होगा।

जैसे मन का प्रभाव अन्न पर होता है वैसे ही अन्न का प्रभाव मन पर होता है। जैसा अन्न हम खायेंगे, उस अनुसार ही हमारा मन और बुद्धि बनेगी क्योंकि अन्न का प्रभाव हमारे मन को भी प्रभावित करता है, इसलिए सदैव पवित्र अन्न खाने से मन पवित्र रहता है, जिससे हमारे संकल्प और कर्म भी पवित्र होते हैं। पवित्र अन्न के निर्णय में कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है। पवित्र अन्न अर्थात् शुद्ध-पवित्र पदार्थों से निर्मित किया हुआ हो, पवित्र-योगी आत्माओं के द्वारा बनाया हुआ हो, पवित्र वातावरण में बनाया हुआ हो, पवित्र स्थिति में अर्थात् बाबा की याद में स्वीकार करें। जब इन सब बातों का ध्यान रखेंगे तब ही अन्न का मनवांछित प्रभाव हमारे जीवन पर होगा और हमारी अवस्था उड़ती कला की होगी। इस सम्बन्ध में हठयोग के प्रणेता महर्षि पातन्जलि के पातन्जलि योगदर्शन के एक भाष्य-कर्ता ने अपने भाष्य में लिखा है - यदि योगी के हाथ का भोजन भोगी खाये तो एक दिन भोगी योगी हो जायेगा और यदि भोगी के हाथ का भोजन एक योगी खाता रहे तो एक दिन योगी भोगी अवश्य बन जायेगा।

अन्न के सम्बन्ध में बाबा ने ये भी कहा है कि किसी पतित का दिया हुआ अन्न, पतित के द्वारा दिये गये धन से खरीदा अन्न भी तुम्हारे पेट में नहीं जाना चाहिए। इसलिए ऐसे देने वालों की पहले सेवा करो, फिर वे कुछ देते हैं तो ही उसे स्वीकार करो। यदि कोई ऐसा धन आता है तो जहाँ तक सम्भव हो, उसको सेवा में लगाओ परन्तु भोजन में प्रयोग नहीं करो। इसलिए ही बाबा ने मुरलियों में कहा है कि सन्यासी पतितों का अन्न खाते हैं तो उनको पतितों के पास जन्म लेना होता है क्योंकि उसका भी हिसाब-किताब बनता है।

इस सन्दर्भ में एक बात विशेष ध्यान में रखनी है कि इस विश्व की हर क्रिया चक्रवत चलती है। आत्मा का प्रभाव जड़ तत्वों पर और जड़ तत्वों का प्रभाव आत्मा अवश्य पड़ता है। मनुष्य का जैसा भोजन, दृष्टि-वृत्ति-स्मृति, पठन-पाठन, संग होगा, उसकी उस अनुसार प्रतिक्रिया जीवन पर होती है और वह भविष्य जीवन का आधार बनता है।

इसलिए प्राय: आध्यात्मिक जगत के सभी साधक अन्न की शुद्धि का अवश्य ध्यान रखते हैं और साधारण जीवन व्यतीत करने वाले ग्रहस्थ भी अन्न की परहेज अवश्य रखते हैं। इसलिए ही ब्राह्मण, वैष्णव आदि शुद्रों के हाथ का भोजन स्वीकार नहीं करते हैं। परन्तु आजकल मनुष्य की जाति-पांति का इतना महत्व नहीं है क्योंकि ऊंचे कुल वालों का खान-

पान, रहन-सहन भी शूद्रों जैसा हो गया है और कहाँ-कहाँ तो उनसे भी बदतर हो गया है। अभी हम परमात्मा की सन्तान बने हैं और परमात्मा ने ब्राहम्ण और शूद्र जीवन की यथार्थता का ज्ञान हमको दिया है और ज्ञान देकर हमको सच्चा ब्राह्मण बनाया है। इसलिए अपने ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए अन्न का परहेज अवश्य रखना चाहिए।

जिसको अन्न का मन पर और मन का अन्न पर पड़ने वाले प्रभाव का ज्ञान होगा, उस पर निश्चय होगा, वह उसका पूरा परहेज अवश्य रखेंगे और जो पूरा परहेज रखेंगे, उनके जीवन में सफलता अवश्य होगी। उनको ये आध्यात्मिक जीवन अति सहज अनुभव होगा और वे सदा सफलता के पथ पर अग्रसर होंगे। जो इसमें बेपरवाह रहते हैं, वे बहुधा इस ब्राह्मण जीवन के सफल निर्वाह में फेल हो जाते हैं। अन्न यदि जानकर खाया तो उसका प्रभाव और बिना जाने खाने का प्रभाव अलग-2 होता है। इसके विषय में बाबा ने अनेक मुरलियों में अनेक रूप से समझाया है, जो बाबा के उन महावाक्यों पर निश्चय करते हैं, वे ही इस जीवन में सफल होते हैं।

"शुद्ध अन्न पेट में पड़ता है तो ब्रह्मा का, कृष्ण का, शिवबाबा का साक्षात्कार हो सकता है।... शिवबाबा को याद करते भोजन बनायेंगे तो बहुतों का कल्याण हो सकता है। उस भोजन में ताकत भर जाती है।... ब्रह्मा भोजन का गायन भी है ना।"

सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

"यह नॉलेज कितनी वण्डरफुल है, जिसको तुम्हारे सिवाए कोई नहीं जानते हैं। बाप की याद में रहने बिगर धारणा भी नहीं होगी। खान-पान आदि का भी फर्क पड़ने से धारणा में फर्क पड़ जाता है। इसमें प्योरिटी बड़ी अच्छी चाहिए।"

सा.बाबा 22.1.05 रिवा.

"वाणी द्वारा भी उल्टा संग का रंग लग जाता है। इससे भी अपने को बचाना और फिर अन्न का संगदोष भी है। अगर कब भी किसके भी समस्या अनुसार वा कोई सम्बन्धी के स्नेह के वश भी अन्नदोष में आ गई तो यह अन्न भी अपने मन को संग के रंग में ला देता है।"

अ.बापदादा 11.6.71

"कहा जाता है - खुशी जैसी खुराक नहीं। तुम बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। ... खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा, सूक्ष्म खायेंगे। यह भी एक कायदा है।... ये ज्ञान की बातें तो बड़ी खुशी से सुननी-सुनानी चाहिए।"

सा.बाबा 29.5.04 रिवा.

"सभी से ग्लानि की चीज है विकार। सन्यासियों में भी थोड़ा क्रोध रहता है क्योंकि "जैसा अन्न वैसा मन", गृहस्थियों का ही खाते हैं। कोई अनाज नहीं खाते, पैसे तो लेते हैं ना। पतितों का

उसमें भी असर तो रहता है ना।" सा.बाबा 2.8.71 रिवा.

"तुम हो ब्राह्मण, तुमको शूद्र के हाथ का खाना नहीं है। बाप को याद जरुर करना है। लाचारी हालत में खाओ तो भी याद कर खायेंगे तो ताकत भर जायेगी। परन्तु तुम याद कर खाते कहाँ हो।" सा.बाबा 18.6.71 रिवा.

"हम विश्व के मालिक थे, अभी फिर बन रहे हैं।... यह सब बातें तुम बच्चों की ही बुद्धि में हैं तो तुमको कितनी खुशी रहनी चाहिए। यह बातें सुनकर फिर दूसरों को भी सुनानी हैं।... भोजन भी तुम योग में रहकर बनाओ और खिलाओ तो बुद्धि इस तरफ खिंचेगी।"

सा.बाबा 7.11.05 रिवा.

"अगर धन भी अशुद्ध आता है तो वह अशुद्ध धन खुशी को गायब कर देता है, चिन्ता लाता है ... और शुद्ध अन्न मन को शुद्ध बना देता है, इसलिए धन भी शुद्ध हो जाता है। याद के अन्न का महत्व है। ... याद में बनाया हुआ और याद में स्वीकार करने वाला अन्न दवाई का भी काम करता है और दुआ का भी काम करता है।" अ.बापदादा 16.2.88

"देवताओं को भोग हमेशा पवित्र ही लगाया जाता है, तो तुम भी पवित्र खाओ। ... वहाँ तेल आदि होता नहीं। ... तुम बच्चों को बहुत नशा रहना चाहिए। अभी हमको बाबा लेने के लिए आया है। बाप से हमको स्वर्ग का वर्सा मिलना है।"

सा.बाबा 13.02.06 रिवा.

जीवात्मा जो अन्न ग्रहण करती हॅ, उसका प्रभाव जीवन पर पड़ता है, ऐसे ही बुद्धि द्वारा आत्मा जो ग्रहण करती है, उसका प्रभाव भी जीवन पर पड़ता है। आत्मा सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों (आंख, कान, स्वचा आदि) से जो ग्रहण करता है, वह अन्दर हज़म होता है अर्थात् संकल्प में चलता है और उसका प्रभाव हमारे अन्त:पटल पर पड़ता और फिर हमारे भविष्य कर्म, संस्कारों और जीवन को प्रभावित करता है। इसलिए बाबा ने इन सब बातों के लिए श्रीमत दी है। इसलिए बाबा ने स्पर्श आदि की भी परहेज बताई है। दूसरे के विस्तर पर या दूसरों के प्रयोग किये हुए वस्त्र आदि के प्रयोग के लिए भी बाबा ने परहेज बताई है क्योंकि इन सबका जीवन पर प्रभाव पड़ता है। जिसको बाबा के महावाक्यों पर निश्चय होगा, वही उनके महत्व को समझेगा और जीवन धारण करेगा।

"जैसे मलेच्छ भोजन की बदबू समझ में आ जाती है, वैसे मलेच्छ संकल्प रूपी आहार स्वीकार करने वाली आत्माओं के वायब्रेशन से बुद्धि में स्पष्ट टचिंग होती है।"

अ.बापदादा 28.10.75

"बाबा हम आपकी श्रीमत पर जरूर चलेंगे। ऐसे-ऐसे अपने अन्दर अपने से बातें करनी होती हैं। ... हम कल्प-कल्प आपको भूल जाते हैं... याद से ही बाप का वर्सा मिलेगा।... यह रुहानी भोजन मिलता है, उसको फिर उगारना चाहिए।"

सा.बाबा 5.01.06 रिवा.

B. *निश्चयबुद्धि और संग*

जैसे ब्राह्मण जीवन की सफलता और असफलता में अन्न का महत्व है वैसे ही संग का भी गहरा प्रभाव है। संग के लिए गायन है - संग तारे, कुसंग बोरे अर्थात् अच्छा संग उन्नति का आधार बनता है और बुरा संग गिरावट का कारण बनता है। संग केवल स्थूल में ही नहीं होता है लेकिन मन से भी संग होता है। जीवात्मा जिसको याद करता है, वह सूक्ष्म में उसके साथ रहता है, उसके गुण धर्म उस पर प्रभावित होते हैं और जीवात्मा जिसके स्थूल में संग में रहता है, तो जब वह स्थूल में साथ नहीं होता है तो उसकी स्मृति आती रहती है। इसलिए इस दोनों प्रकार के संग की बहुत परहेज चाहिए। परचिन्तन भी एक प्रकार का कुसंग ही है। इसलिए परमपिता परमात्म की याद को सत्संग कहा जाता है।

गलत स्थान में जाने का भी अवस्था पर असर हो जाता है क्योंकि वहाँ का दूषित वातावरण आत्मा को प्रभावित करता है। वह भी कुसंग ही है।

"एक होता रियल लव, दूसरा होता है आर्टिफिशियल लव। बाप से लव तब हो, जब अपने को आत्मा समझें। ... एक तो बाजार की छी-छी गन्दी चीजें न खाओ और मामेकम् याद करो। ... संग भी अच्छा चाहिए, जिसको बाइसकोप की आदत पड़ी वे पतित बनने बिगर रह नहीं सकेंगे।" सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

"जो समीप रहने वाले होते हैं, उनमें समीप रहने वाले के गुण स्वत: और सहज ही आ जाते हैं। इसलिए कहा जाता है कि संग का रंग अवश्य लगता है।... वैसे ही कुसंग में रहने वाली आत्माओं का मायावी रंग भी छिप नहीं सकता।" अ.बापदादा 19.4.73

"चाहे मन्सा संकल्प में, चाहे सम्पर्क वा सम्बन्ध में किसी भी प्रकार से माया का जरा भी इफेक्ट होने का कारण डिफेक्ट होता है। ... संगदोष, अन्नदोष न हो, उसके तरीके जानते हो तो अपने को इफेक्ट-प्रूफ भी कर सकते हो। ... अगर सदा ज्ञान अर्थात् सेन्स में रहे तो सेन्सीबुल कभी किसके इफेक्ट में नहीं आता है।" अ.बापदादा 26.6.72

"अगर बुद्धि की लगन सदा एक के संग में है तो अनेक संग का रंग लग नहीं सकता। बुद्धि की लगन कम होने का कारण अनेक प्रकार के संग के आकर्षण अपनी तरफ खींच लेते हैं।"

अ.बापदादा 22.6.71

"कई प्रकार के आकर्षण पेपर के रुप में आयेंगे लेकिन आकर्षित न होना। ... माया संकल्पों के रुप में भी अपने संग का रंग लगाने की कोशिश करती है। तो इस व्यर्थ संकल्पों के वा माया के आकर्षण के संकल्पों में कभी फेल नहीं होना।" अ.बापदादा 11.6.71

"बुरा न देखना, न सुनना, न बोलना, न सोचना। अगर इस आज्ञा को सदैव स्मृति में रखेंगे तो फिर सदा हंस बनकर बाप जो सर्व गुणों का सागर है, उस सागर के किनारे पर सदैव बैठे रहेंगे।" अ.बापदादा 11.6.71

"तो सदा संगदोष से बचना है और ईश्वरीय संग में रहना है। एक संग छोड़ना है और एक संग जोड़ना है। ईश्वरीय संग सिर्फ शरीर से नहीं होता लेकिन बुद्धि द्वारा भी ईश्वरीय संग में रहना है।" अ.बापदादा 11.6.71

"अगर एक का संग है तो अनेक संगदोष से छूट जाएंगे। संगदोष कई प्रकार के दोष पैदा कर देते हैं। इसलिए इसका बहुत ध्यान रखना। एक बाप दूसरे हम, तीसरा न कोई जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सदैव आप लोगों के मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा।"

अ.बापदादा 25.3.71

"वृति और स्मृति दोनों ही पुरूषार्थ में आगे बढ़ने में सहयोगी होते हैं। स्मृति बनती हैं संग से और वृति बनती है वातावरण व वायुमण्डल से।... तो आप लोगों को अमृतवेले से लेकर रात तक सारा दिन यही श्रेष्ठ संग हैं, शुद्ध वातावरण है और शान्त वायुमण्डल है।... तो स्मृति और वृति सहज ही श्रेष्ठ हो सकती है।" अ.बापदादा 20.2.74

"तुम हो अभी संगमयुग पर, पुरुषोत्तम बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। विकारी पतित मनुष्यों से तुम्हारा कोई कनेक्शन नहीं है। हाँ, अभी कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है, इसलिए कर्म सम्बन्धों से भी दिल लग जाती है। ... बाप से लव नहीं, लव सारा मित्र-सम्बन्धियों में चला जाता है।... कहाँ वह जंक खाया हुआ संग और कहाँ यह संग।"

सा.बाबा 23.9.05 रिवा.

"ब्राह्मण जीवन में ऐसे पवित्र बनते हो जो शरीर और प्रकृति को भी पवित्र बना देते हो।... सबसे अच्छे ते अच्छा रंग कौनसा है? बाप के संग का रंग। जैसा संग होता है, वैसा रंग लगता है।... बाप के संग में रहो तो रंग आप ही लग जायेगा।"

अ.बापदादा 7.3.93

"सिवाए ज्ञान के और कुछ सुनाते हैं तो समझो - यह हमारा दुश्मन है। हमको दुर्गति में ले जाते हैं। ... तुमको एक बाप से ही सुनना है।... बाप आये हैं मनुष्य से देवता बनाने तो उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए।" सा.बाबा 21.03.06 रिवा.

"अपनी कमजोरी मुश्किल बना देती है, बाकी मुश्किल है नहीं। कमजोर क्यों होते हैं क्योंकि कोई न कोई विकारों के संगमदोष में आ जाते हैं। सत का संग किनारे हो जाता है और दूसरा संगदोष लग जाता है।" अ.बापदादा 4.12.91 पार्टी 2

टी.वी., बाइसकोप, पठन-पाठन आदि भी कुसंग ही है। इसके लिए बाबा ने कहा है बाइसकोप सबसे गन्दी चीज है। बाइसकोप देखने वालों में विकार की चेष्टा अवश्य होगी। ब्रह्मा बाबा ने अपना भी अज्ञानकाल का अनुभव सुनाया है कि कैसे बाइसकोप बुद्धि को खराब करके अपने अभीष्ट लक्ष्य से भ्रमित कर देता है। टी.वी. के लिए भी बाबा कहते टी.वी, टी.बी. है। दोनों के लिए बाबा ने मना की है। अब ये हर एक के अपने पुरुषार्थ पर है, जो जितना इन सबका महत्व समझकर श्रीमत का पालन करेगा, वह उतना माया के वार से बचेगा और इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अनुभव करेगा। मनुष्य जो देखता, उसका चिन्तन अवश्य चलता है, जिससे उतना समय बाप की याद भी नहीं रहती और जिसका चिन्तन होता है, उसका प्रभाव कर्मेन्द्रियों पर अवश्य होता है।

"सबसे गन्दी बीमारी है बाइसकोप। अच्छे बच्चे भी बाइसकोप में जाने से खराब हो जाते हैं। इसलिए ब्रह्मा कुमार-कुमारियों को बाइसकोप में जाना मना है। ... यह है बेहद का बाइस्कोप। बेहद के बाइस्कोप से ही फिर यह हद के झूठे बाइस्कोप निकले हैं।"

सा.बाबा 7.10.05 रिवा.

"फिल्मी कहानियों की किताबें, नॉविल्स आदि भी बहुत पढ़ते हैं। बाबा बच्चों को खबरदार करते हैं - कभी भी कोई नॉविल्स आदि नहीं पढ़ना है।... कोई बी.के. भी नॉविल्स पढ़ते हैं। इसलिए बाबा सब बच्चों को कहते हैं - कभी भी किसको नॉवेल्स पढ़ता देखे तो झट उठाकर फाड़ दो। इसमें डरना नहीं है। तुम्हारा काम है एक-दो को सावधान करना। ... फिल्मी कहानियां, नॉवेल्स पढ़ना-सुनना बेकायदे है।"

सा.बाबा 5.11.05 रिवा.

"समझकर उस खुशी से समझाना चाहिए। परन्तु यह उमंग उनको आयेगा, जो तकदीरवान होंगे। दुनिया के मनुष्य तो रत्नों को भी पत्थर समझकर फेंक देंगे।... अभी तुम डायरेक्ट ज्ञान सागर से सुनते हो तो फिर और कुछ भी सुनने की दरकार ही नहीं है।"

सा.बाबा 27.8.05 रिवा.

अन्न और संग के विषय में बाबा सारी बातें समझाई हैं, जो उन महावाक्यों पर निश्चय कर उनका पालन करता है, उसका ही ये ब्राह्मण जीवन सफल होता है।

१४. निश्चय बुद्धि और कर्मभोग

दैहिक एवं मानसिक व्याधि तथा उपचार

बाबा ने हमको हमारे 84 जन्मों की कहानी बताई है। जिसके अनुसार हमारे अनेक आत्माओं और प्रकृति के साथ अनेक जन्मों के हिसाब-किताब हैं, जिनके फलस्वरूप मानसिक या दैहिक व्याधि का आना स्वभाविक है क्योंकि अभी आत्मा के प्रकृति और आत्माओं के साथ के सर्व हिसाब-किताब चुक्ता होते हैं। कर्मभोग की वेदना से मुक्त होने का सहज उपचार वैद्यराज परमात्मा ने हमको बताया है, जिससे हम उसकी वेदना से मुक्त हो सकते हैं। सर्व मानसिक और दैहिक व्याधियों की वेदना से मुक्त होने का एकमात्र सफल उपचार है देह से न्यारे अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जाना क्योंकि आत्मिक स्वरूप सर्व व्याधियों से मुक्त है। बहुत समय पहले से जब कर्मभोग की वेदना नहीं है, उस समय का देह से न्यारे होने का किया हुआ अभ्यास ही कर्मभोग के समय उसकी वेदना से राहत देता है, वेदना या कर्मभोग के समय ये अभ्यास सम्भव नहीं है।

वास्तविकता को देखा जाये तो व्याधि का आना और वेदना की महसूसता ही हमको उसके उपचार के लिए बाध्य करती है, जो बाध्यता अनेक आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब को चुक्ता करने का आधार बनती है। सबके साथ के हिसाब-किताब चुक्ता होने के बाद ही उसका पूर्ण निदान सम्भव है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो सर्व आत्माओं के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना के वायब्रेशन देना भी एक सफल उपचार है, हिसाब-किताब चुक्ता करने का पुरुषार्थ है।

बाबा ने ये भी कहा है - ये कर्मभोग हमारे कर्मों का ही फल है और हमको ही उसको चुक्ता करना है - इस सत्य का ज्ञान बुद्धि में होगा, उस पर निश्चय होगा तो कर्मभोग की वेदना कम हो जायेगी। जब दूसरों को उसका कारण समझते हैं या ऐसे ही कर्मभोग आ गया, ये अभिधारणा होती तो थोड़ा कर्मभोग भी बड़ा महसूस होता है। बाबा ने हमको कर्मभोग का कारण और निवारण दोनों बताये हैं।

हमारे तन के आरोग्यता में, रोगों में और उनके निदान में हमारे मन के संकल्पों और हमारी स्थिति का बड़ा महत्वपूर्ण प्रभाव है। जैसे हमारे संकल्प होते हैं, उस अनुसार शरीर की ग्रन्थियों से रस-स्राव होते हैं, जो हमारे दैहिक स्वाथ्य के कारण भी बनते हैं और अनेकानेक रोगों के निदान का आधार भी बनते हैं। जब मनुष्य भय-चिन्ता, राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा, दुख-अशान्ति, काम-वासना आदि से ग्रसित होता है तो उस समय जो रस-स्राव होता है, वह

अनेकानेक रोगों का कारण बनता है और जब मनुष्य विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान, प्रभु-स्मृति, योग-साधना के द्वारा आत्मिक शक्ति से सम्पन्न होता है तो वह निर्भय-निश्चिन्त, शान्त, पवित्रता, आत्मिक-प्रेम आदि से भरपूर होता है, उस समय उसकी ग्रन्थियों से जो रस-स्राव होते हैं, उससे अनेकानेक रोगों का निदान होता है। परन्तु इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि यह जीवन अनेक जन्मों के कर्मों के फलस्वरूप अस्तित्व में आया है और इस कल्प में अन्तिम जन्म है, जिसमें हमारे अनेक जन्मों में अनेक आत्माओं और प्रकृति के साथ के हिसाब-किताब हैं, वे भी पूरे होने हैं और ड्रामा का पार्ट भी है तथा समयानुसार वर्तमान वातावरण में अनेक प्रकार के जो संक्रमण हैं, वातावरण में वृत्तियों का जो संक्रमण है वह भी आत्मा को उसके कर्मों अनुसार प्रभावित करते हैं और दैहिक बीमारियों का कारण बनते हैं। इसलिए किसी व्यक्ति के या अपने जीवन के रोगों आदि को देखकर भ्रमित नहीं होना है, अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होना है, आश्चर्यचकित नहीं होना है। सत्य सदा ही सत्य है। अति आशावान भी नहीं होना है और निराशा को भी जीवन में नहीं लाना है। विश्व-नाटक में देह रूपी वस्त्र बदलना अनिवार्य और स्वभाविक क्रिया है, जिसका कोई न कोई निमित्त कारण तो बनता ही है, इसलिए तमोप्रधान समय के अनुसार बीमारी-कर्मभोग तो आता ही है और आना ही है। निदान के लिए यथोचित उपचार भी करना है और योगबल से चुकता भी करना है।

बाबा ज्ञान का सागर है और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता होने के कारण हमारे अनेक जन्मों की कर्म-कहानी को जानता है। हमारी दैहिक और मानसिक व्याधियों का कारण जानते हुए हम उससे कैसे सहज मुक्त हो सकें, उसके विषय में भी बाबा ने ज्ञान दिया है और उसके निदान के विषय में श्रीमत दी है, उस श्रीमत को पालन करने से हम सहज उनसे मुक्त हो सकते हैं। शूली जैसा कर्मभोग कांटा बन जाता है। मम्मा-बाबा के उदाहरण हमारे सामने हैं और अनेक मुरलियों में बाबा ने इसके लिए ज्ञान दिया है और ब्रह्मा बाबा का उदाहरण भी दिखाया है। बाबा के बताये इन सत्यों को समझकर निश्चयबुद्धि होकर चलने वाला सहज ही कर्मभोग से निदान पा लेता है।

सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा की स्मृति से समस्त मानसिक रोगों और अनेक दैहिक रोगों का निदान होता है और आत्मा निरोगी बन जाती है। हमको ईश्वरीय शक्ति और अपनी आत्मिक शक्ति को पहचान कर उसका सदुपयोग करके निरोगी बनना चाहिए। जिसको इस सत्य का निश्चय होगा, उस पर श्रद्धा और विश्वास होगा, वही उसका लाभ उठा सकेगा अर्थात् उसको अवश्य ही इसमें सफलता मिलेगी।

"ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक साकार रूप में प्रक्टिकल की।... सदा

अढ़ाई-तीन बजे उठकर स्वयं प्रति तपस्या की, संस्कार भस्म किये तब कर्मातीत बनें, फरिश्ता बनें ... लास्ट तक बिना आधार के तपस्वी रूप में बैठे, आंखों में चश्मा नहीं डाला। यह सूक्ष्म शक्ति है।" अ.बापदादा 31.12.05

"बाप जो समझाते हैं, उसको उगारना चाहिए। यह भी बाप ने समझाया है - कर्मभोग की बीमारी उथल खायेगी, माया सतायेगी परन्तु मूँझना नहीं चाहिए। बीमारी में तो मनुष्य और ही भगवान को जास्ती याद करते हैं।... तुम और सब बातें भूल मुझे याद करो।"

सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

"वाह-वाह के गीत गाओ। ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह, हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह-वाह! यह भी बोझ उतरता है।... मेरा ही हिसाब है! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है।" अ.बापदादा 30.11.99

"कोई बीमारी वा दुख आदि है तो तुम सिर्फ याद में रहो। यह हिसाब-किताब अभी ही चुक्तू करना है। ... गाया जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं।"

सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

"इस समय के इस एक जन्म (पुरुषार्थ का फल) का अनेक जन्मों तक चलता है और वह अनेक जन्मों का (खाता) एक जन्म में खत्म होता है। तो अनेक जन्मों का हिसाब-किताब एक जन्म में खत्म करने के कारण कब-कब वह फोर्स रूप में आता है। ... जब साक्षी होकर देखने लग पड़ते तो यह व्याधि बदलकर खेल रूप में हो जाती है।"

अ.बापदादा 23.3.70

"मुख्य शक्तियाँ हैं - तन की, मन की, धन की और सम्बन्ध की। चारो ही आवश्यक हैं। ... तन का हिसाब-किताब होते भी स्व-स्थिति के कारण स्वस्थ अनुभव करता है। उनके मुख पर, चेहरे पर बीमारी के कष्ट के चिन्ह नहीं रहते। ... बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। वह कभी भी बीमारी के कष्ट का अनुभव नहीं करेगा, न दूसरे को कष्ट सुनाकर कष्ट की लहर फैलायेगा।"

अ.बापदादा 29.10.87

"यह पुराना शरीर है, कुछ न कुछ कर्मभोग चलता रहता है। इसमें बाबा मदद करे, यह उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। ... बाप कहेंगे यह तुम्हारा हिसाब-किताब है। अपनी आप ही मेहनत करो, कृपा मांगो नहीं। जितना बाप को याद करेंगे, इसमें ही कल्याण है।"

सा.बाबा 18.1.05 रिवा.

"जब कर्मभोग का जोर होता है। कर्मेन्द्रियां बिल्कुल कर्मभोग के वश अपने तरफ आकर्षण

करें, जिसको कहा जाता है बहुत दर्द है। ... ऐसे समय कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाले, साक्षी हो कर्मेन्द्रियों को भोगवाने वाले जो होते हैं, उनको ही अष्ट रत्न कहा जाता है, जो ऐसे समय विजयी बन दिखाते हैं।" अ.बापदादा 4.12.72

"इस अलौकिक जीवन में आत्मा और प्रकृति दोनों की तन्दुरुस्ती आवश्यक है। जब आत्मा स्वस्थ है तो तन का हिसाब-किताब वा तन का रोग शूली से से कांटा बन जाता है। ... उसके लिए वरदान अर्थात् दुआ दवाई का काम कर देती है। ... तन की शक्ति आत्मिक शक्ति के आधार पर सदा अनुभव कर सकते हो।"

अ.बापदादा 29.10.87

"बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। ... कर्मयोगी परिवर्तन की शक्ति से कष्ट को सन्तुष्टता में परिवर्तन कर सन्तुष्ट रह औरों में भी सन्तुष्टता की लहर फैलायेगा। ... अर्जी डालने वाले कभी भी सदा राजी नहीं रह सकते हैं।"

अ.बापदादा 29.10.87

"निराकारी और साकारी दोनों स्वरुप की स्मृति से स्वत: ही समर्थी-स्वरुप बन जायेंगे अर्थात् हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस का अनुभव हर समय होगा। चाहे शरीर का कर्मभोग शूली से कितना भी बड़े रुप में हो लेकिन सदा अपने को साक्षी समझने से कर्मभोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग शूली से कांटे समान अनुभव होगा।"

अ.बापदादा 27.1.76

कर्मभोग होते भी उसकी वेदना से मुक्त होगा। इसीलिए कहा गया है -Events can't be changed but we can change our attitude towards events. अर्थात् जब यथार्थ ज्ञान होता है और आत्मिक स्थिति होती है तो कर्मभोग होगा परन्तु उसकी वेदना की महसूसता नहीं होगी या कम से कम होगी।

"अशरीरीपन का अभ्यास होने के कारण शूली से कांटा अनुभव होता है और फालो फादर होने के कारण विशेष आज्ञाकारी बनने के कारण प्रत्यक्ष फल के रूप में बाप से विशेष दिल की दुआयें प्राप्त होती है। ... जो कर्मभोग को शूली से कांटा बना देती हैं।"

अ.बापदादा 18.12.87

"जो विकर्म किये हैं, उनकी सजा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही पड़ती है। कर्मभोग अन्त तक भोगना ही है, उसमें माफी नहीं मिल सकती है। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है।"

सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

"शरीर बीमार हो लेकिन शरीर की बीमारी से मन डिस्टर्ब न हो। सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगा। मन की खुशी से शरीर को भी चलाओ तो दोनों एक्सरसाइज हो जायेंगी। खुशी है दुआ और एक्सरसाइज है दवाई। तो दुआ और दवा दोनों होने से सहज हो जायेगा।" अ.बापदादा 9.1.83

"बीमारी में भी खुशी से इतना तो कह सकते हो कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बीमारी में ही अवस्था की परख होती है।"

सा.बाबा 21.11.05 रिवा.

"दुनिया वाले डरते हैं और आप और ही निर्भय होते हैं।... ड्रामा अनुसार यह सभी और ही मजबूत करते हैं। ... बीमारी बापदादा को तो खेल लगता है। जब ब्रह्मा बाप ने क्रास किया है तो आप सबको भी क्रास तो करना ही है।... ये क्रास करेंगे तो क्रास पर नहीं चढ़ेंगे।"

अ.बापदादा 20.12.92 दादियों से

A. निश्चय और दैहिक व्याधि एवं उपचार

मनुष्य के निश्चय का शारीरिक व्याधियों की उत्पत्ति और उनके निदान से भी गहरा सम्बन्ध है। अच्छे व्यक्ति के निश्चय में ये भावना उत्पन्न हो जाये कि वह बीमार है तो बीमार हो जाता है और अनेक बीमार व्यक्ति भी अपने निश्चय के बल से अनेक व्याधियों से छुटकारा पा लेते हैं। बाबा ने भी कहा है कि तुम कभी बीमारी का चिन्तन मत करो तो बीमारी आपही चली जायेगी।

जिनको निश्चय है कि योग से सर्व व्याधियों का निदान हो सकता है, उसकी सर्व व्याधियों का निदान योग द्वारा अवश्य होगा। निदान का विधि-विधान क्या होगा, वह अलग बात है। बाबा कब-कब बीमारी के निदान की युक्ति भी बता देते हैं या अपने आप योग में कोई निदान की युक्ति टच हो जाती है, जिससे उस बीमारी का निदान हो जाता है। बाबा की याद में दवाई आदि खाने से भी उस दवाई का प्रभाव बदल जाता है। योग-युक्त व्यक्ति के वृत्ति-वायब्रेशन से डाक्टर को भी कोई विशेष उपचार टच हो सकता है। परन्तु हमको योग के उपचार पर शत-प्रतिशत निश्चय हो। तो अपने निश्चय को चेक करो कि हमको ऐसा शत प्रतिशत निश्चय है। परन्तु हमको ये नहीं भूल जाना चाहिए कि ये सब उपचार हमारे अनेक आत्माओं के हिसाब-किताब और ड्रामा के पार्ट की सीमा तक ही होने हैं और होंगे।

"समझाया गया है जो नम्बरवन में पुण्यात्मा बनता है वही फिर नम्बरवन पापात्मा भी होता होगा। उनको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी क्योंकि शिक्षक बनते हैं, सिखलाने के लिए। तो जरूर मेहनत करनी है। बीमारी आदि होती है तो अपने ही कर्म का भोग कहा जाता है। अनेक

जन्मों के विकर्म किये हुए हैं, इस कारण भोगना होती है। इसलिए कभी भी इससे डरना नहीं है। खुशी से पास करना है क्योंकि अपना ही किया हुआ हिसाब-किताब है। प्रायश्चित होता ही है बाप की याद से।"

सा.बाबा 23.6.72 रिवा.

B. निश्चय और मनोव्याधि एवं मनोचिकित्सा

जैसे दैहिक कर्मभोग आत्मा को दुखी करता है, वैसे ही मानसिक रोग भी आत्मा को दुखी करते हैं। मानसिक रोग, शारीरिक रोग से भी अधिक दुखी करने वाले हैं। ज्ञान सागर परमात्मा ने मानसिक रोगों के विषय में भी ज्ञान भी दिया है और उसके लिए अनेक उपचार भी बताये हैं। सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा की स्मृति से समस्त मानसिक रोगों और अनेक दैहिक रोगों का निदान होता है और आत्मा निरोगी बन जाती है, ये अटल सत्य है। हमको ईश्वरीय शक्ति और अपनी आत्मिक शक्ति को पहचान कर उसका सदुपयोग करके निरोगी बनना चाहिए। जिसको अपनी मानसिक शक्ति और उसके प्रभाव पर निश्चय होगा, उस पर श्रृद्धा और विश्वास होगा, वही उसका लाभ उठा सकेगा।

मनोव्याधियों का कारण और मनोचिकित्सा दोनों का आधार निश्चय ही है अर्थात् अज्ञानतावश किसी भय, किसी गलत बात आदि के विषय में निश्चय कर लेने से मनोव्याधियाँ उत्पन्न होती हैं और उनके निदान के लिए मनोचिकित्सक जो युक्ति या दवाई बताते हैं, उस पर निश्चय होने पर ही उस व्याधि का निदान हो सकता है। परमात्मा सबसे बड़ा मनोचिकित्स है, वह जो निदान बताता है, उससे आधे कल्प के लिए दैहिक एवं मनोव्याधियों का उपचार हो जाता है। दुनिया में भी मनोचिकित्सक अनेक असाध्य रोगों का निदान भी करते हैं परन्तु उसका आधार भी निश्चय ही होता है।

वास्तव में मानव जीवन की आधे से अधिक दैहिक बीमारियों का कारण मानसिक स्थिति ही है। परमपिता परमात्मा वैद्यराज है और वह समस्त दैहिक एवं मनोव्याधियों का सहज निवारण करता है। जिस व्यक्ति को जितना ही उसके ऊपर और उसके बताये उपचार पर निश्चय होता है और निश्चय करके उसको याद करता है, उसके बताये उपचार को निश्चय और श्रृद्धा-भावना से करता है, उनकी श्रीमत पर चलता है, उतना ही वह उससे लाभ पाता है। लौकिक दुनिया में भी किसी डाक्टर अथवा किसी दवाई पर निश्चय है तो वह अधिक प्रभाव करती है और रोग का निदान सहज होता है और यदि निश्चय नहीं तो अच्छे डाक्टर की दवाई भी काम नहीं करती।

मनुष्य के निश्चय का संकल्प पर और संकल्प का देह पर तुरन्त प्रभाव पड़ता है।

यज्ञ के इतिहास में भी ऐसे अनेक उदाहरण हैं। जैसे बेगरी पार्ट के समय निश्चय के कारण ही बीमारी के विपरीत भोजन ढोढ़ा और छाछ खाते हुए भी जिन्होंने निश्चय से खाया उन पर उस भोजन का विपरीत प्रभाव पड़ने की अपेक्षा उसने दवाई का काम किया और वे पहले से भी स्वस्थ हो गये।

निर्संकल्पावस्था और शवासन श्रेष्ठ एक्सरसाइज है, जिससे अनेक असाध्य रोगों का निदान सम्भव है। इनसे मानसिक सन्तुलन होता है, जिससे दैहिक और मानसिक स्वास्थ्य का लाभ होता है। ईश्वरीय ज्ञान निर्संकल्पावस्था का मूलाधार है।

तन-मन की आरोग्यता में हमारे संकल्पों का प्रभाव

हमारे तन के आरोग्यता में, रोगों में और उनके निदान में हमारे मन के संकल्पों और हमारी स्थिति का बड़ा महत्वपूर्ण प्रभाव है। जैसे हमारे संकल्प होते हैं, उस अनुसार शरीर की ग्रन्थियों से रस-स्राव होते हैं, जो हमारे दैहिक स्वाथ्य के कारण भी बनते हैं और अनेकानेक रोगों के निदान का आधार भी बनते हैं। जब मनुष्य भय-चिन्ता, राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा, दुख-अशान्ति, काम-वासना आदि से ग्रसित होता है तो उस समय जो रस-स्राव होता है, वह अनेकानेक रोगों का कारण बनता है और जब मनुष्य विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान, प्रभु-स्मृति, योग-साधना के द्वारा आत्मिक शक्ति से सम्पन्न होता है तो वह निर्भय-निश्चिन्त, शान्त, पवित्रता, आत्मिक-प्रेम आदि से भरपूर होता है, उस समय उसकी ग्रन्थियों से जो रस-स्राव होते हैं, उनसे अनेकानेक रोगों का निदान होता है। परन्तु इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि यह जीवन अनेक जन्मों के कर्मों के फलस्वरूप अस्तित्व में आया है और इस कल्प में अन्तिम जन्म है, जिसमें हमारे अनेक जन्मों में अनेक आत्माओं और प्रकृति के साथ के हिसाब-किताब हैं, वे भी पूरे होने हैं और ड्रामा का पार्ट भी है तथा समयानुसार वर्तमान वातावरण में अनेक प्रकार के जो संक्रमण हैं, वातावरण में वृत्तियों का जो संक्रमण है वह भी आत्मा को उसके कर्मों अनुसार प्रभावित करते हैं और दैहिक बीमारियों का कारण बनते हैं। इसलिए किसी व्यक्ति के या अपने जीवन के रोगों आदि को देखकर भ्रमित नहीं होना है, अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होना है, आश्चर्यचकित नहीं होना है, संशय में नहीं आना चाहिए। सत्य सदा ही सत्य है। अति आशावान भी नहीं होना है और निराशा को भी जीवन में नहीं लाना है। विश्व-नाटक में देह रूपी वस्त्र बदलना अनिवार्य और स्वभाविक क्रिया है, जिसका कोई न कोई निमित्त कारण तो बनता ही है, इसलिए तमोप्रधान समय के अनुसार बीमारी-कर्मभोग तो आता ही है और आना ही है। निदान के लिए यथोचित उपचार भी करना है और योगबल से

चुक्ता भी करना है। मम्मा-बाबा के उदाहरण हमारे सामने हैं और अनेक मुरलियों में बाबा ने इसके लिए श्रीमत भी दी है और ब्रह्मा बाबा का उदाहरण भी दिया है।

वर्तमान में समर्पित भाई-बहनों में मुख्य व्याधि और उसका निदान

A. वर्तमान में समर्पित भाई-बहनों के विषय में देखने-सुनने, बात करने पर एक मुख्य बात सामने आती है कि अधिकांश भाई-बहनें अपने भविष्य के प्रति चिन्तित और आशंकित हैं, अपने को असुरक्षित अनुभव करते हैं, जिसके कारण वे इस सर्वोत्तम ईश्वरीय जीवन का सच्चा सुख अनुभव नहीं कर पा रहे हैं और अनेक अनैतिक कार्यों में प्रवृत्त हैं। कई इन्द्रिय सुखों की ओर आकर्षित होकर अनेक अनैतिक कार्य कर रहे हैं और अपना पाप का खाता बढ़ा रहे हैं। यदि गम्भीरता से विचार किया जाये तो अनुभव होगा कि उनकी आशंका का मूल कारण है ईश्वरीय ज्ञान और कर्म के अटल विधि-विधान के प्रति निश्चय में कमी अर्थात् संशय। जो समर्पित भाई-बहनें इस व्याधि से ग्रसित हैं कि हमारा भविष्य क्या होगा, आपत्ति काल में कोई हमारा सहयोग देगा या नहीं देगा, वे इस चिन्ता से चिन्तित हैं और इस चिन्ता के कारण परमात्मा से भी उनका बुद्धियोग टूट जाता है। वे इस चिन्ता का निदान करने के लिए प्रयत्नशील तो रहते हैं परन्तु बाबा से बुद्धियोग टूटा होने के कारण उसमें सफल नहीं होते हैं, जिससे वे अनेक अनैतिक कार्यों में प्रवृत्त होकर इस अमूल्य जीवन के सच्चे सुख से दूर हो जाते हैं।

ऐसे भाई-बहनों में कुछ तो ऐसे हैं, जो यज्ञ से प्राप्त साधन-सम्पत्ति से सम्पन्न हैं और उनके साथी-सहयोगी हैं, उनका सहारा लेकर कुछ हद तक अर्थात् अल्पकाल के लिए इस व्याधि से मुक्त हो जाते हैं। कुछ इस व्याधि से व्यथित होकर अवसर पाकर विभिन्न प्रकार के अनैतिक साधनों और तरीकों से साधन-सम्पत्ति का संग्रह करते, विभिन्न व्यक्तियों से मर्यादा के विपरीत अनैतिक सम्बन्ध जोड़ते रहते, जिन सम्बन्धियों को छोड़कर सर्वशक्तिवान पर विश्वास-निश्चय कर समर्पण हुए, उनके साथ पुन: सम्बन्ध जोड़ते, आदि आदि कर्म कर रहे हैं या करने के लिए बाध्य हो रहे हैं। कुछ अपने अन्धकारमय भविष्य के प्रति चिन्तित देखने में आते हैं और साधन-सम्पत्ति, सम्बन्धों की चाहना में अपना समय और शक्ति गँवा रहे हैं और वर्तमान संगमयुग के सर्वोत्तम सुख के सुअवसर को व्यर्थ गँवा रहे हैं।

इस प्रकार देखें तो वे कर्म के अटल सिद्धान्त को भूलकर जो कार्य कर रहे हैं, वही उनके उज्ज्वल भविष्य को अन्धकार बना रहा है। ये उनके निश्चय की कमी है अर्थात संशय है, जो उनके वर्तमान जीवन को दुखी बना रहा है और भविष्य जीवन के लिए भी दुख का बीज

बो रहा है। यदि हम विश्व के इतिहास और इस ईश्वरीय यज्ञ के इतिहास की विभिन्न घटनाओं को देखें तो हम इस सत्य का अनुभव करेंगे कि अनेक ऐसे व्यक्ति हैं भी और हुए भी हैं जो साधन-सम्पत्ति से अति सम्पन्न, जिनके अनेक साथी-सहयोगी, सम्बन्धी होते भी उन्होंने अति पीड़ा सही है और दुखी होकर देह का त्याग किया है, जबकि अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिनके पास साधन सम्पत्ति न होते भी उन्होंने शान्त और सुखमय स्थिति में परमात्मा की याद में देह का त्याग किया है। बाबा ने अनेक मुरलियों में अनेक सन्यासियों के विषय में ऐसी बातों का वर्णन किया है कि कैसे उन्होंने बैठे-बैठे देह का त्याग किया। सत्यता तो ये है कि परमात्मा और मनुष्य के श्रेष्ठ कर्मों का फल ही आपत्तिकाल में उसका सच्चा सहयोगी बनता है।

उपर्युक्त भाई-बहनों के अतिरिक्त यज्ञ में ऐसे भी अनेक परम भाग्यशाली भाई-बहनें हैं, जो परमात्मा पर अटल निश्चय और विश्वास रखते और उनके बताये गये नियम-संयम और मर्यादाओं का पालन करते हुए परमानन्द का अनुभव करते हुए अपने जीवन को धन्य-धन्य मानते हैं और गीत गाते हैं - "पाना था सो पा लिया ...।" अपने दृढ़ निश्चय के आधार पर ही वे जीवन का ऐसा श्रेष्ठ अनुभव करते हुए जीवन की सच्ची सफलता का अनुभव करते हैं और परमात्मा की भूरि-भूरि महिमा गाते हैं, जिसने उनको ऐसा जीवन प्रदान किया।

इस तथ्य की अन्तर्तह में जाकर देखें तो यह सत्य सामने आता है कि मनुष्य को उसके किये गये श्रेष्ठ कर्मों का कर्म-फल और परमात्मा ही ऐसे साथी हैं जो उसको सदा, सर्वदा और सर्वत्र साथ देते हैं और दे सकते हैं। इस सत्य से प्रेरित होकर जाने-अन्जाने परमात्मा पर और अपने पुरुषार्थ पर श्रृद्धा-भावना, विश्वास और निश्चय करके ही सन्यासी, सन्यास करते; तपस्वी, तपस्या करते; भक्त, भक्ति करते; योगी, योग साधना करते हैं। ये ब्राह्मण जीवन भी एक सन्यास ही है, जिसको बाबा ने बेहद के सन्यास की संज्ञा दी है। परमात्मा की तो सर्व आत्माओं के ऊपर सदा छत्रछाया है और वह सदा सर्वदा सबको सहयोग करता ही है परन्तु बाबा ड्रामा और पुरुषार्थ को सदा आगे रखता है। इस विश्व-नाटक का सत्य सिद्धान्त भी यही है कि हर आत्मा को उसके कर्म का फल ही साथ देता है। इस कटु सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि ये विश्व-नाटक विविधता पूर्ण है, जिसके कारण साधन-सम्पत्ति, सुविधायें एक समान सबको प्राप्त नहीं हो सकती हैं, इसलिए उनके समानता की परिकल्पना भी व्यर्थ है परन्तु जिनके कर्म श्रेष्ठ हैं, उनको समय पर आवश्यक साधन का मिलना इस विश्व नाटक का विधान है। जो परमात्मा को पहचान कर, उस पर निश्चय करके सुकर्मों में प्रवृत्त रहते, बिना किसी प्रलोभन के अपना भविष्य श्रेष्ठ बनाने के लिए स्वेच्छा से सन्यास करते हैं, वे कभी भी ऐसे अनैतिक कर्मों की ओर प्रेरित नहीं होंगे, जिनके कारण उनका लक्ष्य अधूरा रह

जाये। इस कटु सत्य सत्य को भी सदा ध्यान में रखना चाहिए कि परमात्मा और कर्म-फल के सिवाए आपत्ति काल में कोई साथ नहीं देगा। हमारा कर्म ही हमारे भविष्य का निर्माण करेगा। बेगरी पार्ट के समय में भी ब्रह्मा बाबा के इस दृढ़ निश्चय ने यज्ञ को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया कि सर्वशक्तिवान बाबा हमारे साथ है, उसका ये यज्ञ है, वह अवश्य ही सफल होगा। जिन्होंने बाबा के इस निश्चय का अनुसरण किया और साथ निभाया और अपने निश्चय में अटल रहे वे इस परीक्षा में सफल हुए। उनके इस निश्यचय के कारण ही यज्ञ की सफलता हुई और आज भी हो रही है और भविष्य में भी होती रहेगी। यज्ञ की इस सफलता को देखकर वे स्वयं भी खुश हैं और अन्य भी उससे लाभान्वित हो रहे हैं। कबीरदास ने भी कहा है - साई खड़ा बजार में सबकी चिन्ता लेय, जिसकी जैसी चाकरी (आवश्यकता और कर्म) उसको वैसा देय। जो उस पर निश्चय और विश्वास रखते वे कभी असफल नहीं हो सकते हैं।

जो व्यक्ति अल्पज्ञ व्यक्तियों और नश्वर वस्तुओं का सहारा लेते हैं, उनसे सहयोग की आश रखते हैं उनका आधार पकड़ते हैं, उनसे परमात्मा का आधार और सहारा छूट जाता है। इसके लिए बाबा ने कहा है कि जो किसी व्यक्ति या वैभव का सहारा लेता है, उससे परमात्मा का सहारा छूट जाता है।

"सदा इस नशे में रहो कि हमको जो मिला है, वह किसी को मिल नहीं सकता। अभी यह प्रेसीडेण्ट चाहे तो स्वर्ग में आयेगा? जब तक बाप का न बने तब तक स्वर्ग में आ नहीं सकते।... ऐसा नशा और खुशी रहे कि हम विश्व के मालिक के बालक हैं।"

अ. बापदादा 3.12.78 पार्टी 3

B. कुछ ब्राह्मण आत्मायें बाहरमुखता में आकर दूसरों (बाहर के व्यक्तियों को और ब्राह्मण परिवार के किन्ही व्यक्तियों) की साधन-सम्पत्ति, पद को देखकर, उनको आगे बढ़ता हुआ देख या समझ कर ईर्ष्यावश स्वयं में हीनता के बीज बोने लगते और ज्ञान-मार्ग के नियम-संयम से विचलित होकर उनकी तरफ लालायित होने लगते हैं। इस सत्य को कभी भूलना न चाहिए कि ये वैरायटी ड्रामा है और इसमें सबको समान प्राप्तियाँ न हैं और न ही हो सकती हैं और ये साधन-सम्पत्ति और पद ही उन्नति एवं सुख-शान्ति का मापदण्ड नहीं है। जिसको साधन-सम्पत्ति, पद मिला है वह भी उनके किन्हीं शुभ-कर्मों का परिणाम है। परन्तु इस सत्य को भी सदा याद रखना है कि ये साधन-सम्पत्ति, पद उन्नत जीवन का एक घटक (Factor) अवश्य हैं परन्तु ये सर्वस्व नहीं हैं अर्थात् जिसके पास ये हैं, वह सदा सुखी है या आध्यात्मिक रूप से भी आगे है या परमात्मा की दृष्टि में भी आगे है, ऐसा नहीं है। आध्यात्मिक मार्ग में उन्नति का मापदण्ड है मनुष्य की मानसिक सम्पन्नता, ज्ञान, गुण-शक्तियाँ, चरित्र आदि

ईश्वरीय प्राप्तियाँ हैं, साधन-सम्पत्ति तो बाद की बात है। सर्वशक्तिवान परमात्मा का हाथ हमारे ऊपर है और वह सदा साथ है और उसने हमको जो दिया है, उसके आगे तो ये पद और साधन-सम्पत्ति का कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए हमको हीनता का बीज कभी भी अपने अन्दर अंकुरित नहीं होने देना है और अहंकार को भी जन्म नहीं देना है क्योंकि सभी आत्मायें परमात्मा की सन्तान हैं और परमात्मा ने सभी को समान अधिकार दिया है। ज्ञान मार्ग में उन्नति का एकमात्र साधन है फॉलो फादर। जो इस निश्चय पर अडिग रहता है, उसका जीवन सदा सुखमय रहता है और वह सदा चढ़ती कला का अनुभव करता है।

"यज्ञ से जो कुछ मिले वह अंगीकार करना चाहिए। बाबा अनुभवी है। भल कितना भी बड़ा जवाहरी था, कहाँ आश्रम में जायेंगे तो आश्रम के नियमों पर पूरा चलेंगे। वहाँ ऐसे नहीं मांगा जाता कि हमको फलानी चीज दो। वहाँ बड़ा रॉयल्टी से भोजन पाया जाता है। जो सभी को मिलता है वही खाया जाता है। इस ईश्वरीय आश्रम में तो बड़ी शान्ति चाहिए।"

सा.बाबा 10.3.72 रिवाइज

१५. *निश्चय और ब्राह्मण जीवन की प्राप्तियाँ*

गायन है गोधन, गजधन, बाजिधन और रतन धन खानि, जो आवै सन्तोष धन सब धन धूरि समान। परमात्मा और परमात्मा से प्राप्त ज्ञान धन ही आत्मा की सन्तुष्टता का एकमात्र आधार है।

अपने ब्राह्मण जीवन की प्राप्तियों का हमको ज्ञान, उनकी उपयोगिता का अनुभव हो, उन पर पूरा निश्चय और विश्वास हो तो ये ब्राह्मण जीवन परम सुखमय अनुभव होगा।

जीवन में परमपिता परमात्मा की प्राप्ति और उनसे प्राप्त ये ईश्वरीय ज्ञान आत्मा की जीवन में सर्वोत्तम प्राप्ति है और जीवन की सर्व प्राप्तियों का आधार है।

ब्राह्मण जीवन सर्वोच्च जीवन है, जिसकी महिमा देवताओं से भी श्रेष्ठ है, जो अभी हमको प्राप्त है।

परमात्मा की याद और ज्ञान की धारणा से आत्मा में सर्व श्रेष्ठ गुण, आध्यात्मिक शक्तियाँ अभी ही जाग्रत होती हैं, जिनके प्रयोग से श्रेष्ठ कर्म करने में आत्मा समर्थ होती है और जिसके कारण भविष्य जीवन श्रेष्ठ होता है। बाबा के द्वारा दिये गये ज्ञान, वरदानों, स्वमानों की स्मृति से ही आत्मा की सोई हुई शक्तियाँ जाग्रत होती हैं।

ज्ञान धन सबसे श्रेष्ठ धन है, जिसके पास ज्ञान धन है, उसको किसी भी धन की इच्छा नहीं रहती है, उसका मन सदा तृप्त रहता है और सर्व इच्छायें पूर्ण होती हैं।

यहाँ एक बात विशेष रूप से बुद्धि में रखने की है कि आत्मा की प्राप्तियों और अप्राप्तियों का निर्णायक बिन्दु (Criteria) क्या है ? क्योंकि जब हम अपने से अधिक भौतिक प्राप्तियों वाले को देखते हैं तो हमको अपनी प्राप्तियाँ कम अनुभव होती है, जिससे जीवन में हीनता आती है और जब हमारे सामने हमारे से कम प्राप्तियों वाले होते हैं तो हमको अपनी प्राप्ति अधिक अनुभव होती हैं, जिससे आत्मा में अहंकार जाग्रत होता है परन्तु आध्यात्मिक प्राप्तियों में ऐसी बात नहीं है। आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न आत्मा में अपने से कम प्राप्तियों वाले के प्रति रहम भावना जाग्रत होती है और वह उसको भी भरपूर करने का पुरुषार्थ करता है क्योंकि आध्यात्मिक प्राप्तियाँ बांटने से वृद्धि को प्राप्त होती हैं। भौतिक प्राप्तियों के विषय में भी कहावत है - बिनु मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख।

"हर ब्राह्मण आत्मा के जन्मते ही भाग्य विधाता बाप ने मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींच ली है, ऐसी श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हैं। ... हर एक ब्राह्मण के दिल में दिलाराम, दिल का दुलार, दिल का प्यार दे रहे हैं। यह परमात्म प्यार सारे कल्प में एक द्वारा और एक समय ही प्राप्त होता है। यह रुहानी नशा सदा हर कर्म में रहता है ?" अ.बापदादा

"यह मनुष्य सृष्टि है। इस समय तुम ब्राह्मण धर्म के मनुष्य बने हो।... यह शरीर आत्मा का रथ है। ... हम आत्माओं का रहने का स्थान मूलवतन है, यह शरीर हमको यहाँ मिलता है। ... हम ऊंच ते ऊंच बिरादरी वाले हैं। हम ही सबसे जास्ती सुख भोगते हैं, फिर वे ही कंगाल बनते हैं।" सा.बाबा 15.6.06 रिवा.

"भाग्य विधाता द्वारा आप भाग्यवान आत्माओं का दिव्य ब्राह्मण जन्म हुआ है ... जिसका बाप स्वयं भाग्य विधाता है, उसका भाग्य कितना श्रेष्ठ होगा! ... भाग्य विधाता द्वारा जन्म होना, ये सबसे नम्बरवन भाग्य है।" अ.बापदादा 31.3.95

"पॉवरफुल योग वाले के सामने मुश्किल हो ही नहीं सकती।... ब्राह्मण जीवन है मजे की जीवन, संगमयुग है मजे का युग, बोझ उठाने का युग नहीं है। बोझ उतारने का युग है।" 30.11.99 अ.बापदादा

"तुम ब्राह्मण देवताओं से भी उत्तम हो। अभी जानते हो - हम ईश्वरीय सन्तान हैं, शिवबाबा के बच्चे हैं। वहाँ स्वर्ग में तुमको यह ज्ञान नहीं रहेगा, न जब निराकारी दुनिया मुक्तिधाम में होंगे, तब यह ज्ञान होगा। यह ज्ञान इस शरीर के साथ ही खत्म हो जाता है।" सा.बाबा 24.5.06 रिवा.

"ब्रह्मा और तुम ब्राह्मणों का ही दिन-रात गाया जाता है। दिन और रात का ज्ञान भी तुम बच्चों को है। लक्ष्मी-नारायण को यह ज्ञान नहीं है। ... यह ज्ञान अभी तुमको बाप द्वारा मिला है। ...

लक्ष्मी-नारायण को यह सृष्टि-चक्र का ज्ञान थोड़ेही है, न वे त्रिकालदर्शी हैं।"

सा.बाबा 20.5.06 रिवा.

१६. *निश्चयबुद्धि और पाप-पुण्य का खाता*

ये संगमयुगी जीवन कल्प में सर्वोत्तम जीवन है, अति मूल्यवान है और महत्वपूर्ण है, इसमें ही आत्मायें अनेक जन्मों का पाप का खाता भस्म करती हैं और अनेक जन्मों के लिए पुण्य का खाता जमा करती हैं। सतयुग-त्रेतायुग में न पाप-पुण्य की बात होती है और न कोई गरीब, दुखी होगा जिसको दान करने की आवश्यकता हो और खाता जमा हो। ये संगमयुग ही पुण्य का खाता जमा करने का युग है। बाबा ने हमको जो कर्म की गहन गति बताई है, उसमें पाप-पुण्य के विधि-विधान का भी ज्ञान दिया है और अपना पाप का खाता खत्म करने और पुण्य का खाता जमा करने का विधि बतायी है। इस सत्य का ज्ञान, अनुभव और निश्चय करने वाले ही पापों को भस्म करने और पुण्य का खाता जमा करने का यथार्थ पुरुषार्थ कर सकेंगे। पवित्र स्थान पर पाप कर्म करने का पाप साधारण स्थान पर पाप करने से अधिक होता है। इसका भक्ति मार्ग में विधान है। मन्दिरों में, तीर्थों पर मनुष्य पाप-कर्म तो अलग की बात है, पाप का संकल्प करना भी पाप समझते हैं। बाबा ने भी कहा है क्लास में बैठकर किसी की बुद्धि बाहर भटकती है तो उस पर बड़ा पाप चढ़ता है, कोई विकार में जाकर फिर क्लास में आकर बैठता है तो वह पत्थरबुद्धि बन जाता है आदि आदि।

साधारण व्यक्ति विकार में जाते हैं तो उन पर कोई पाप नहीं चढ़ता है क्योंकि कलियुग का जीवन ही यह है परन्तु ज्ञान में आकर बाबा से प्रतिज्ञा करके कोई विकार में जाता है तो उस पर कई गुणा पाप चढ़ता है।

संगमयुग पर बाबा की याद में रहने से आत्मा का पुण्य का खाता जमा होता है क्योंकि उससे आत्मा स्वयं भी पावन बनती है, वातावरण भी पावन बनता है और उसके वायब्रेशन्स से अन्य आत्माओं को भी पावन बनने में सहयोग मिलता है, प्रेरणा मिलती है। द्वापर-कलियुग में पाप अधिक और पुण्य कम होता है, इसलिए दिनोदिन आत्मा पापात्मा ही बनती जाती है। संगमयुग पर परमात्मा के बनते तो पुण्य अधिक होता और पाप कम होता है, जिससे पुण्यात्मा बनते जाते हैं। सतयुग-त्रेता में पाप-पुण्य दोनों ही नहीं होते हैं।

"शिवबाबा को याद करने से हम पुण्यात्मा बन जायेंगे।... बाप को याद करने से माया एकदम भाग जायेगी। बाप को प्यार से याद करो तो तूफान उड़ जायेंगे।"

सा.बाबा 17.7.06 रिवा.

"यह है पापात्माओं की दुनिया।... अब बाप तुमको पुण्यात्म बनाये ऐसी दुनिया में ले जाते हैं, जिसको स्वर्ग कहा जाता है। वहाँ न कोई पाप होगा और न कोई दुख होगा।"

सा.बाबा 18.7.06 रिवा.

"यह है ही पापात्माओं की दुनिया, इसमें कोई भी पुण्यात्मा होती नहीं। पुण्यात्माओं की दुनिया में फिर कोई पापात्मा नहीं होती।" सा.बाबा 1.08.03 रिवा.

"अपने को देही समझो, मुझे याद करो। बस यह है मेहनत। ... हर एक को अपनी शक्ल देखनी है - हम क्या बनने लायक हैं?... भल सरेण्डर किया है, उसका भी हिसाब-किताब है। सरेण्डर किया है परन्तु कुछ सर्विस नहीं करते, सिर्फ खाते-पीते रहते हैं तो जो दिया वह खाकर खत्म करते हैं। फिर और भी बोझा चढ़ जाता है। यहाँ रहते हैं जो दिया सो खाया। जो भल नहीं देते हैं परन्तु सर्विस बहुत करते हैं तो वे ऊंच पद पा लेते हैं। मम्मा ने कुछ नहीं दिया परन्तु पद बहुत ऊंच पाती है क्योंकि बाबा की रुहानी सर्विस बहुत करती है।"

सा.बाबा 29.10.03 रिवा.

१७. *निश्चयबुद्धि और भारत भूमि*

भारत देश की महिमा महान, जहाँ आते शिव भगवान। बाबा ने कहा है - जैसे परमात्मा की महिमा अपरमअपार है, वैसे ही भारत की महिमा भी अपरमअपार है। भारत ही स्वर्ग बनता है, भारत ही सभ्यता का मूल है। भारत ही अविनाशी भूमि है और अविनाशी बाप की जन्मभूमि (अवतरणभूमि) है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना भारतीय सभ्यता का प्राण है। ज्ञान का मूल स्रोत ज्ञान सागर परमात्मा के द्वारा भारत से ही प्रवाहित होता है। ऐसी भारत भूमि में जन्म लेना कितना गर्व (Graceful) की बात है। जब इन सब सत्यों को अनुभव करते, उन पर निश्चय होता है, तब हमको अपने जीवन के महत्व का आभास होता है, उसका नशा रहता है और उस अनुसार कर्तव्य होता है, जिससे हमारे श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण होता है।

"अभी तुम सारे ड्रामा के खेल को जान गये हो। समझते हो यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। ... तुम इस खेल को पूरा जान गये हो। ... तुमको निश्चय है कि हम इस भारत को श्रेष्ठाचारी जरूर बनायेंगे, तब तो भ्रष्टाचारी दुनिया का विनाश होगा।"

सा.बाबा 25.7.06 रिवा.

"भक्ति तो भारत में जितनी होती है, उतनी और कहाँ नहीं होती। ... जो देवताओं के पुजारी हैं, वे ही यहाँ आकर ब्राह्मण बनेंगे।... कल्प पहले जिन्होंने पढ़ा होगा, वे ही फिर पढ़ेंगे। ... भारतवासियों जैसी भक्ति कोई नहीं करते हैं।"

सा.बाबा 24.7.06 रिवा.

"वृक्षपति बाप आकर मनुष्य मात्र पर बृहस्पति की दशा बिठाते हैं। खास भारत, आम विश्व पर इस समय राहू का ग्रहण लगा हुआ है। ... मैं ही आकर खास भारत, आम सारी दुनिया

की गति-सद्गति करता हूँ। ... मेरे लाड़ले बच्चो, तुम्हारे ऊपर अभी वृक्षपति की दशा है। दे दान तो छूठे ग्रहण।" सा.बाबा 14.7.06 रिवा.

"अभी तुम बच्चे बाबा के मददगार बन आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हो। जब तुम स्वर्ग के मालिक बनने के लायक बन जायेंगे तब फिर विनाश शुरू हो जायेगा। ... विनाश होने बिगर भारत स्वर्ग बन न सके।"

सा.बाबा 10.6.06 रिवा.

१८. निश्चयबुद्धि और ब्रह्मा बाबा

अटल निश्चय का सिम्बल है ब्रह्मा बाबा, जो अपने अटल निश्चय और अथक पुरुषार्थ के बल से पहले मानव हैं, जो फरिश्ता बने और आज भी हम आत्माओं का मार्ग-दर्शन कर रहे हैं। इसलिए शिवबाबा सदा ही कहते हैं - पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाबा को फॉलो करो। ब्रह्मा बाबा के अटल निश्चय और दृढ़ विश्वास से इस यज्ञ की स्थापना हुई और उनके अटल निश्चय के आधार पर अनेक आत्माओं ने निश्चय बुद्धि होकर इस यज्ञ की स्थापना में सहयोगी बनी और अपने जीवन को सफल किया।

"जो दृढ़ निश्चय रखते हैं तो निश्चय की विजय कभी टल नहीं सकती। ... कभी निश्चय में हलचल नहीं हुई। विजय हुई पड़ी है, यही बोल सदा ब्रह्मा बाप के रहे।"

अ.बापदादा 31.12.95

"मैं इनमें प्रवेश करता हूँ, इनको भी मालूम नहीं पड़ता है। यह भी नहीं जानते कि बाबा ने कब प्रवेश किया। ... मैं इनमें प्रवेश करता हूँ फिर चला जाता हुँ। बैल पर सारा दिन सवारी थोड़ेही करते हैं। मुझे जिस समय बच्चे याद करते हैं, मैं हाज़िर हूँ।"

सा.बाबा 13.6.06 रिवा.

"दुनिया में रिकार्ड रखने के कई साधन हैं। बाप के पास साइन्स के साधनों से भी रिफाइन साधन हैं, जो स्वत: ही कार्य करते रहते हैं।... अव्यक्त वतन के साधन प्रकृति से परे हैं, इसलिए वे परिवर्तन में नहीं आते हैं।... बापदादा याद और सेवा दोनों का ही रिकार्ड देखते हैं।" अ.बापदादा 20.2.88

"भल मैं भी सुना सकता हूँ परन्तु बच्चों के कल्याण अर्थ कहता हूँ - तुम सदा समझो कि शिवबाबा समझाते हैं। विचार-सागर मन्थन करना बच्चों का काम है। जैसे तुम करते हो, वैसे मैं भी करता हूँ। नहीं तो मैं पहले नम्बर में कैसे जायेंगे, लेकिन अपने को गुप्त रखते हैं।"

सा.बाबा 6.6.06 रिवा.

"ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक साकार रूप में प्रैक्टिकल की। ...

सदा अढ़ाई-तीन बजे उठकर स्वयं प्रति तपस्या की, संस्कार भस्म किये तब कर्मातीत बनें, फरिश्ता बनें ... लास्ट तक बिना आधार के तपस्वी रूप में बैठे, आंखों में चश्मा नहीं डाला। यह सूक्ष्म शक्ति है।" अ.बापदादा 31.12.05

"यह तो बच्चों को जरूर निश्चय होगा कि हमारा पारलौकिक बाप है परमपिता परमात्मा और यह सब बच्चों का अलौकिक बाप है। इनको ही प्रजापिता ब्रह्मा कहेंगे। ... पहले नहीं थे, जब बेहद के बाप ने इसमें प्रवेश किया तो यह हो गया दादा।"

सा.बाबा 22.6.06 रिवा.

"मौत सामने खड़ा है, अचानक लड़ाई लग सकती है।... बाबा कहते हैं - बच्चे अजुन योगबल में होशियार हुए नहीं हैं।... परन्तु ड्रामा अनुसार ऐसा होगा ही नहीं। बच्चों ने पूरा वर्सा लिया नहीं है, इसलिए निश्चय होता है कि यह लड़ाई करके लगेगी भी, तो भी बन्द हो जायेगी क्यों अभी राजधानी स्थापन नहीं हुई है।"

सा.बाबा 7.8.06 रिवा.

१९. बाबा के द्वारा दिये गये स्वमान और वरदान

"सर्व शक्तियां बाप का वर्सा और वरदाता का वरदान हैं। बाप और वरदाता - इस डबल सम्बन्ध से हरेक बच्चे को यह श्रेष्ठ प्राप्ति जन्म से ही होती है। ... सभी बच्चों को एक द्वारा एक जैसा ही डबल अधिकार मिलता है लेकिन धारण करने की शक्ति नम्बरवार बना देती है।" अ.बापदादा 29.10.87

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए और हमारी सुषुप्त शक्तियों को जाग्रत करने के लिए अनेकानेक स्वमानों की स्मृति दिलाई है और समय २पर विभिन्न वरदान दिये गये हैं, जो हमारे इस जीवन की सफलता के लिए परम उपयोगी हैं, इसलिए उनकी स्मृति रखना हमारे जीवन की सफलता के लिए अति आवश्यक है।

परमात्मा ज्ञान का सागर है और वे ही सर्व आत्माओं के आदि-मध्य-अन्त की कहानी को जानते हैं, इसलिए बाबा हमारे अन्दर सोई हुई शक्तियों को जगाने, सोये हुए संस्कारों को जाग्रत करने, अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा जाग्रत करने के लिए समय-समय पर विभिन्न स्वमानों का वर्णन करते हैं, याद दिलाते हैं और विभिन्न वरदानों को हमारे प्रति उच्चारण करते हैं, जिससे हम उनको अनुभव करके, उन पर निश्चय करके अपने कर्तव्य-पथ पर अग्रसर हों और अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

स्वमानों का जितना ज्ञान होगा, उन पर जितना निश्चय होगा, उनकी स्मृति होगी उस अनुसार ही हमको नशा होगा और हमारे कर्म होंगे, जिसके फल स्वरूप हमारा वर्तमान और

भविष्य जीवन सफल होगा। उन पर निश्चय के अनुसार ही हम अपने उत्तरदायित्व को अनुभव करेंगे। जब कर्म श्रेष्ठ होंगे तो कर्म-फल भी अवश्य ही श्रेष्ठ होगा और श्रेष्ठ कर्म-फल ही मानव जीवन की सच्ची पूँजी है, सच्ची विजय है क्योंकि श्रेष्ठ कर्म-फल ही आत्मा का सच्चा साथी है, जो सदा-सर्वदा साथ देता है।

परमात्मा ने आत्माओं के विषय में जो महावाक्य उच्चारे, जो वरदान दिये, जिन उपाधियों से सम्बोधित किया वे केवल महिमा मात्र, आश्वासन मात्र या केवल उत्साहित करने के लिए नहीं हैं बल्कि शत प्रतिशत सत्य हैं भले ही अभी हम उनको अनुभव न करें परन्तु समय आयेगा जब उनकी हमको अनुभूति होगी। जो समय से पहले उनको अनुभव करके, उन पर निश्चय करके, उनका लाभ उठा लेंगे, उनको जीवन की सच्ची सफलता की अभी भी अनुभव होगी और भविष्य भी सफल होगा। जैसे -

तुम बच्चे बाप समान मास्टर ज्ञान के सागर हो,

तुम मास्टर सर्वशक्तिवान हो।

तुम बच्चे विश्व के कल्याणकारी हो।

तुम जगत के लिए लाइटहाउस-माइट हाउस हो।

तुम विश्व के सहारे दाता हो।

तुम सर्व आत्माओं के पूर्वज हो।

तुम लकी सितारे हो, तुम्हारे रोशन होने से जगत रोशन होता है।तुम बेहद सन्यासी हो।

सन्यासी का क्या कर्तव्य होता है - साधना, नियम-संयम, एक परमात्मा के प्रति समर्पणमयता, (ब्रह्मचर्य)

तुम योद्धा हो, रुहानी सेना हो, विजय तुम्हारी निश्चित है।

(योद्धा का कर्तव्य क्या होता है - युद्ध और विजय, नियम-संयम क्या होते हैं - सेना के नियम क्या होते हैं - कमाण्डर की आज्ञा का पालन, कमाण्डर कौन होता है - हमारा सुप्रीम कमाण्डर परमात्मा ही है और जिसको उसने निमित्त बनाया, कमाण्डर की अनुपस्थिति या मरने के बाद जो सीनियर होता है, वह स्वत: कमाण्ड होल्ड करता है और सब मानते हैं। अनुशासन सेना का मूल सिद्धान्त होता है, जिससे विजय की प्राप्ति सहज होती है)

"ये स्मृति रहे कि हम युद्ध के मैदान पर उपस्थित योद्धे हैं। योद्धे कभी भी आराम पसन्द नहीं होते, आलस्य और अलबेलेपन की स्थिति में नहीं रहते। योद्धे कभी भी शस्त्रों के बिना नहीं रहते, योद्धे कभी भय के वशीभूत नहीं होते, निर्भय होते हैं।"

अ.बापदादा 13.6.73

"रुहानी सेना के लिए मुख्य लॉ यही है कि कभी भी अपनी देह को वा अन्य देहधारी की तरफ

नहीं देखना है।" अ.बापदादा 5.7.74

तुम स्वदर्शनचक्रधारी, ब्राह्मण कुल भूषण हो।
तुम बच्चे ही त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी हो।
तुम सर्वश्रेष्ठ सत्य ज्ञान की अथॉर्टी हो।
तुम पुरुषोत्तम युगी सर्वोत्तम ब्राह्मण हो।
तुम जगत के आधारमूर्त और उद्धारमूर्त हो।
तुम इस जगत के तारे हो, तुम्हारे आत्म-प्रकाश से जगत प्रकाशित होता है।
"तुम इस जगत के आधार हो। तुम्हारी चढ़ती कला तो जगत की चढ़ती कला है और तुम्हारी उतरती कला तो जगत की उतरती कला हो जाती है। ड्रामा के रहस्य अनुसार आप ब्राह्मण जगे तो सब जगे। ब्राह्मण जगे तो दिन, रोशनी हो जाती है और ब्राह्मणों की ज्योति बुझी तो विश्व में अन्धकार, रात हो जाती है।... इतनी जिम्मेवारी हर एक पर है।"

अ. बापदादा 2.1.82

तुम इस ब्राह्मण कुल के दीपक हो, भगवान की आँखों के तारे हो।
परमपिता परमात्मा तुम्हारा सर्व सम्बन्धी है।
खुदा तुम्हारा दोस्त है।
तुम परमात्मा के बगीचे के खुशबूदार फूल हो,
"मधुबन को महान भूमि कहा जाता है तो महान भूमि पर रहने वाली आत्मायें भी महान आत्मायें होंगी। तो हम महान आत्मायें हैं - इस रुहानी नशे में रहते हो?"

अ.बापदादा 21.4.73

तुम इस रुद्र ज्ञान यज्ञ के रक्षक हो। तुम्हारा जन्म यज्ञ वेदी से हुआ है।
तुम भक्तों के इष्टदेव हो, भक्त तुमको ही पुकार रहे हैं।
"सभी अपने को ऐसे इष्ट देव-आत्मा समझते हो? ऐसे परम पवित्र, सर्व प्रति रहमदिल, सर्व प्रति मास्टर वरदाता, सर्व प्रति मास्टर रुहानी स्नेह के सागर, सर्व प्रति शुभ-भावनाओं के सागर, ऐसे पूज्य इष्ट देव आत्मा हो।" अ.बापदादा 10.1.82

तुम परमात्मा के डायरेक्ट बच्चे हो। तुम ईश्वरीय कुल के हो।
तुम गॉड फादरली स्टूडेण्ट हो।
तुम पण्डे हो, सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताने वाले हो।
तुम पैगम्बर हो, बाप का पैगाम सबको देना है।
तुम सच्चे सच्चे वैष्णव हो।

तुम ही गोपी वल्लभ के गोप-गोपियाँ हो। बाप के साथी हो।
तुम पाण्डव हो, परमात्मा से प्रीत बुद्धि हो। पाण्डवों की विजय निश्चित है।
तुम विजयमाला के मणके हो, विजय तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।
तुम परमात्मा के नयनों के नूर हो।
तुम परमात्मा के शोकेश के शो-पीस हो।

निश्चय का प्रभाव ज्ञान मार्ग तक ही सीमित नहीं है लेकिन जीवन के हर क्षेत्र की सफलता में निश्चय की भूमिका महत्वपूर्ण है। इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि असम्भव से लगने वाले कार्य भी निश्चय के आधार पर सम्भव हो गये।

असत्य बात को भी अगर हम शत प्रतिशत सत्य समझ कर निश्चय से रखते हैं और भावना श्रेष्ठ है तो सफलता अवश्य होती है। शंकराचार्य का सर्वव्यापी का असत्य सिद्धान्त भी निश्चय के आधार पर ही विश्व में मान्य है और 1500 वर्षों से समस्त संसार में प्रचलित और समाज में उसकी आज भी मान्यता है। हमारे पास सत्य ज्ञान और डायरेक्ट परमात्मा का सहयोग होते भी उनको काटने में अनेक कठिनाइयां अनुभव करते हैं। इस सबकी पृष्ठभूमि में हम झांकें तो निश्चय ही मूल है। आज भी कोटों में कोई ही उसको छोड़कर हमारे इस सत्य सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं। ऐसे ही जब हमको बाबा के महावाक्यों पर, ज्ञान पर शत प्रतिशत दृढ़ निश्चय होगा और उसमें अंशमात्र भी संशय नहीं होगा, तब हम ऐसे दृढ़ निश्चय से अपनी बात को सभ्यतापूर्वक और शुभ भावना से किसी के सामने रखेंगे तो उसका प्रभाव उसके मन पर अवश्य होगा और हमारी विजय अवश्य होगी अर्थात् वह हमारी बात को अवश्य मानेगा, भले ही वह उसको पालन करने में समर्थ हो या न हो। निश्चय हमको निर्भय बनाता है और जब हम निश्चय और निर्भयता से किसी बात को किसके सामने रखते हैं तो उसका प्रभाव अवश्य होता है। इस विषय में निम्नलिखित कुछ बातों पर भी विचार करेंगे, जिनका ज्ञान, अनुभव तथा उन पर निश्चय होना भी हमारी आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए आवश्यक है। इससे हमको अपनी बात को किसके सामने रखने में भी सहयोग मिलेगा और हमको अपना ये जीवन Graceful अनुभव होगा।

१. निश्चय बुद्धि और परस्पर व्यवहार

A. आत्मिक सम्बन्ध

जब ये निश्चय दृढ़ होता है कि हम आत्मा हैं और हम सभी आत्मायें एक बाप की सन्तान भाई-भाई हैं तो हमारे अन्दर भ्रातृत्व की भावना स्वत: जाग्रत हो जाती है, आपस में प्रेम होता है और उसी अनुसार व्यवहार होता है। सर्व के साथ सहयोग की भावना जाग्रत होती है। जहाँ परस्पर सहयोग होता है, वहाँ हर कार्य की सफलता निश्चित होती है।

जब ये निश्चय होता है कि हम साकार में एक ब्रह्मा बाप की सन्तान भाई-बहन हैं तो

भाई-बहन का शुद्ध प्रेम जाग्रत होता है और ब्रह्मचर्य की धारणा सहज हो जाती है, जो स्वत: में ही एक विजय है। ब्रह्मचर्य ही आध्यात्म की सफलता की आधार-शिला है।

जब परमात्मा पर निश्चय हो जाता है, तो बाबा ने मुरलियों में अनेक व्यवहारिक बातों पर भी प्रकाश डाला है, अनेक राज़ समझाये हैं, उन पर भी निश्चय होता है और उनको जीवन में अपनाने से कदम-कदम पर परमात्मा की मदद का अनुभव होता है और जब परमात्मा की मदद के निश्चय से करने से हर कार्य में सफलता का अनुभव होता है और आत्मा निश्चिन्त रहती है। परन्तु हमको ड्रामा की यथार्थता और कर्मों की गुह्य गति को कभी भी भूलना न चाहिए, उनके फलस्वरूप कर्मभोग, आपसी व्यवहार में मधुरता या कटुता अवश्य आयेगी परन्तु ज्ञान के प्रकाश में रहने से वह जीवन को प्रभावित नहीं करेगी अर्थात् दुख की अनुभूति नहीं करायेगी।

* जब ये निश्चय होता है कि हमारे दुख का कारण अन्य आत्मायें हैं तो उनके प्रति शत्रुता का भाव उत्पन्न होता है और दिलों की दूरी बढ़ती जाती है परन्तु जब परमात्मा द्वारा प्राप्त विश्व-नाटक के विधि-विधान के सत्य ज्ञान के आधार पर ये निश्चय हो जाता है कि हम आत्मा हैं और अन्य सभी भी आत्मा हैं और हमारे प्रिय भाई हैं। हर आत्मा अपने सुख-दुख का स्वयं ही कारण है, हर आत्मा इस विश्व-नाटक में स्वतन्त्र पार्टधारी है। तो सबके प्रति स्नेह और भ्रातृत्व भाव उत्पन्न होता है और क्रिया-प्रतिक्रिया के सिद्धान्त अनुसार दूसरों के दिलों में भी हमारे प्रति स्नेह उत्पन्न होता है तथा दो दिलों की दूरी कम होती है। प्रेम जीवन की सफलता का महत्वपूर्ण घटक है और विश्व-बन्धुत्व की भावना भारतीय सभ्यता का प्राण है, जो परमात्मा ने हम आत्माओं के अन्दर सत्य ज्ञान के द्वारा जाग्रत की है।

* मनुष्य का जैसा निश्चय होता, वह संकल्प, बोल, कर्म में अवश्य आता है। भले ही वह व्यक्ति दूसरों को कुछ भी शिक्षा दे परन्तु उसका जैसा निश्चय होता है, जैसी आन्तरिक भावना होती है वह उसके हाव-भाव, बोल, कर्म से अवश्य प्रगट होता है और वह अन्य आत्माओं को उसकी शिक्षा से अधिक प्रभावित करता है। इसीलिए कहा गया है मनुष्य को सुनने से ज्यादा वह जो देखता है, वह उसे प्रभावित करता है।

* दूसरे की प्राप्तियों से कब ईर्ष्या न कर अपनी प्राप्तियों की स्मृति जाग्रत रखना व्यवहार में शुद्धि का आधार है। ईर्ष्या सम्बन्धों में कटुता का मुख्य घटक है - इस सत्यता को अनुभव करना और निश्चय करके उससे बचकर रहना आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति में परमावश्यक है। ईर्ष्यालु व्यक्ति अपनी प्राप्तियों का भी सुख नहीं ले पाता है और उसके व्यवहार में भी मधुरता नहीं रहती है। परमात्मा ने हम आत्माओं को अनन्त अमूल्य प्राप्तियाँ दी हैं, उनका

सुख लेना और दूसरों को भी सुख देना ही हम आत्माओं का परम कर्तव्य है और परस्पर व्यवहार शुद्धि का आधार है।

B. प्रेम और सम्बन्ध

व्यवहार में मधुरता के लिए परस्पर प्रेम होना अति आवश्यक है। प्रेम इस विश्व-नाटक का महत्वपूर्ण घटक है, इसलिए इस विश्व-नाटक को प्रेम-कहानी भी कहा जाता है क्योंकि प्रेम के आधार पर ही ये विश्व-नाटक आदि से अन्त तक सतत गतिशील है। सतयुग में देही-अभिमानी होने के कारण प्रेम में पवित्रता होती है और आत्मा का कर्मेन्द्रियों पर शासन होता है, इसलिए कोई विकर्म नहीं होता है और आत्मायें सुख-शान्ति में रहती हैं। परन्तु द्वापर से जब देहाभिमान आत्मा पर प्रभावी हो जाता है तो इस प्रेम में अपवित्रता आ जाती हैं, जिसके कारण इन्द्रिय सुखों की आकर्षण बढ़ जाती है, मोह आदि बढ़ जाता है, जिसके परिणाम स्वरूप आत्मायें अनेक विकर्म करने में प्रवृत्त हो जाती हैं, जिसके फल स्वरूप दुख-अशान्ति होने लगती है। संगम पर जब ज्ञान-सागर बाप आकर आत्मा का और आत्मिक सम्बन्धों का सत्य ज्ञान देते हैं और आत्मा इस सत्य का निश्चय करती है तो देहाभिमान को छोडकर आत्माभिमानी स्थिति में स्थित होती है तो बुद्धि अपवित्र प्रेम निकल जाती है और पुन: पवित्र प्रेम जाग्रत होता है। संगम पर ही आत्माओं का परमात्मा से यथार्थ प्रेम होता है और आत्माओं का परस्पर सच्चा प्रेम होता है, जो आत्मा की चढ़ती कला का आधार बनता है, आत्माओं के सच्चे सुख का आधार बनता है।

सम्बन्ध, प्रेम का आधार है, जिनके बिना जीवन नीरस हो जाता है और भार अनुभव होने लगता है। प्रेम के बिना मनुष्य का संसार में जीना कठिन हो जाता है। संगम पर परमपिता परमात्मा से सम्बन्ध जुटता है और आत्मा को परमात्मा का प्यार मिलता है। ये कोई परिकल्पना या आदर्श नहीं है परन्तु यथार्थ है, जिसको देह से न्यारी अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा ही अनुभव कर सकती है। इसका रास्ता भी परमात्मा ही बताते हैं। यदि ईश्वरीय सम्बन्ध और परमात्म प्यार की अनुभूति नहीं होती तो दैहिक सम्बन्धों और प्यार में बुद्धि अवश्य जायेगी, जिसको रोका नहीं जा सकता है और यदि दैहिक सम्बन्धों में आत्मा की प्रवृत्ति अधिक है तो भी परमात्म प्यार का अनुभव हो नहीं सकता। देह और दैहिक सम्बन्धों से न्यारा होकर परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़कर परमात्म प्यार की अनुभूति करना और उसे प्रगाढ़ बनाना हर ब्राह्मण आत्मा का परम कर्तव्य है, यही यथार्थ पुरुषार्थ है। इसकी सत्यता में निश्चय वाला ही ये पुरुषार्थ कर सकेगा और सच्चे परमात्म प्यार का अनुभव कर सकेगा।

योग एक प्रभु-प्यार की कहानी है, भय-चिन्ता या दुख के कारण योग लगाना यथार्थ

योग नहीं लेकिन वियोग की निशानी है। बाबा ने हमको क्या दिया है, उस प्राप्ति के चिन्तन और प्रभु-प्यार में खो जाना ही योग है। इस सत्य को अनुभव करके और निश्चय करके अपने अन्दर प्रभु-प्यार को जाग्रत करना या प्रभु-प्यार में खो जाना ही सच्चा योग है।

"बन्धन डालने वाली आत्मा भी पुरुषार्थ में सहयोगी है। बन्धन से और ही अधिक इच्छा और निश्चय बढ़ता है। तो बन्धन, बन्धन नहीं लेकिन सहयोग हुआ ना।"

अ.बापदादा 6.2.77

"जब तक महसूसता की शक्ति नहीं आती, तब तक अनुभूति नहीं होती और जब तक अनुभूति नहीं तब तक ब्राह्मण जीवन की विशेषता का फाउण्डेशन मजबूत नहीं। ... एक है अपनी कमजोरी की महसूसता और दूसरी है जो परिस्थिति वा व्यक्ति निमित्त बनते हैं, उनकी इच्छा और उनके मन की भावना वा व्यक्ति की कमजोरी या परवश के स्थिति की महसूसता।"

अ.बापदादा 2.11.87

२. निश्चय और भक्ति मार्ग

भक्ति की सफलता और असफलता पर विचार करें तो उसमें भी निश्चय का ही आधार है। भक्ति में भी जिन्होंने परमात्मा पर या अपने किसी इष्टदेव पर निश्चय करके अटूट भक्ति की तो उनके अनेक कार्य सफल हो गये और उनका नाम आज भी गाया जाता है, जैसे मीरा, नरसी भगत, चेतन्य महाप्रभु आदि आदि। इस सन्दर्भ में नरसी भगत के विषय में तो अनेकानेक प्रकार की कथायें प्रचलित हैं।

भक्ति में निश्चय के अनेक मार्ग हैं। जैसे कोई किसी इष्ट की पूजा करता है, उस पर दृढ़ निश्चय करता है तो उसके कार्य सफल होते हैं और जीवन में अल्प काल की विजय का अनुभव करते हैं। कोई जाप करता है तो भी अल्प काल की सफलता का अनुभव करता है। कोई व्रत-नियम रखता तो भी उसकी विजय का, आत्म-संतुष्टि का अनुभव करता है। धन-धान्य से सम्पन्नता का भी अनुभव करता है। किसी भी मन्दिर-मस्जिद में निश्चय से जाता है तो उसकी अल्पकाल की इच्छायें पूर्ण होती हैं। इस प्रकार हम देखें तो जो दृढ़ निश्चय से भक्ति करता है तो उसको अनेक प्राप्तियाँ, अनेक चमत्कारिक सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, जिससे उनका नामाचार हो जाता है क्योंकि कर्म का फल तो आत्मा को अवश्य ही मिलता है। यथार्थ अस्तित्व न होते भी निश्चय के आधार से ही पत्थर की मूर्ति से उस इष्ट का साक्षात्कार हो जाता है।

भक्ति मार्ग में भावना प्रधान होती है, इसलिए निश्चय के आधार पर भावना का फल मिलता है, साक्षात्कार आदि होता है परन्तु फिर भी आत्मा की कलायें गिरती ही जाती हैं। ज्ञान

मार्ग में भावना और विवेक सन्तुलन (Balence) होता है, इसलिए आत्मा की चढ़ती कला होती है परन्तु दोनों में निश्चय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

३. *निश्चय और सन्यास मार्ग*

सन्यासी जीवन की सफलता में निश्चय ही प्रधान है। निश्चय के आधार पर ही सन्यास धर्म में सर्वव्यापी का सिद्धान्त चल रहा है और उसको लोग मान्यता देते हैं। अनेक ऐसे उदाहरण देते, जो गलत हैं और साधारण लोग समझते भी हैं लेकिन उनको काटना ज्ञान मार्ग में चलने वालों को भी कठिन प्रतीत होता है।

निश्चय के आधार पर ही उनका शरीर निर्वाह होता, उनको जंगल में बैठे भी जीवन निर्वाह के साधन उपलब्ध होते हैं, जबकि कई ब्राह्मण आत्मायें सर्वशक्तिवान सत्य परमात्मा का साथ और सत्य ज्ञान होते भी चिन्तित हैं और उस चिन्ता के कारण अनेक उचित-अनुचित कर्म करके अपने प्राप्त हुए वर्तमान के भाग्य का सुख अनुभव नहीं करते और भविष्य को भी अन्धकारमय बना रहे हैं।

सन्यासी-हठयोगी भी विदेही अर्थात् देह से न्यारा होने का अभ्यास करते हैं, भले ही उनको आत्मा का स्पष्ट रूप से ज्ञान नहीं होता है फिर भी आत्म-निश्चय से कुछ हद तक सफलता और सिद्धियाँ अवश्य प्राप्त करते हैं। उनकी सफलता का आधार भी उनका दृढ़ निश्चय ही है। अभी बाबा ने तो हमको आत्मा का सत्य ज्ञान दिया है और अनुभव भी कराया है। इस सत्य का जितना गहरा अनुभव करेंगे और उस पर हमारा निश्चय दृढ़ होगा उस अनुसार ही हमारा पुरुषार्थ चलेगा और पुरुषार्थ अनुसार सफलता अवश्य मिलेगी।

हम बेहद के सन्यासी हैं। सच्चे सन्यासी का कोई सिर झुका नहीं सकता और न वह किसके आगे सिर झुकायेगा। सच्चा सन्यासी दीनता, दासता और अहंकार तीनों से परे होता है और एक परमात्मा में उसकी आस्ता, विश्वास तथा निश्चय दृढ़ होता है और वह अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्प होता है। हम भी अपने को बेहद का सन्यासी समझकर एक परमात्मा पिता की याद में होंगे तो हमको भी कब किसके आगे सिर झुकाने की आवश्यकता नहीं हो, सर्वत्र हमारा सम्मान होगा। हमारा सदा सिर ऊंचा रहेगा।

हद का सन्यास हठ से और बेहद का सन्यास ज्ञान से होता है। परमात्मा पर श्रृद्धा और विश्वास के साथ दृढ़ निश्चय से अपने स्वरूप में स्थित हो जाओ तो कब किसके आगे सिर झुकाने की आवश्यकता नहीं होगी। इसीलिए गायन है - एकै साधे सब सधैं ... एक बाप की याद और साथ से अपने स्वरूप में स्थित होने से सर्व प्राप्तियाँ, सर्व का सहयोग, सर्व सुख

स्वत: प्राप्त होते हैं।

"इतना याद करो, जो पिछाड़ी में शरीर का भान बिल्कुल न रहे। ब्रह्म ज्ञानी भी ऐसे ऐसे होते हैं जो पिछाड़ी में ऐसे बैठे बैठे शरीर छोड़ते हैं। .. यहाँ तुमको बाप बैठ सिखलाते हैं कि कैसे याद में शरीर छोड़ना है।" सा. बाबा 2.3.72 रिवा.

"जितना याद की यात्रा में रहेंगे तो प्रकृति तुम्हारी दासी बनेगी। सन्यासी लोग कब मांगते नहीं हैं। वह भी योगी तो हैं ना। निश्चय है हमको ब्रह्म में लीन होना है। उन्हों का धर्म ही ऐसा है। बहुत पक्के रहते हैं। बस हम जाते हैं। यह शरीर छोड़ कर जायेंगे। परन्तु उन्होंका रास्ता ही रांग है, जा नहीं सकते। बड़ी मेहनत करते हैं। भक्ति मार्ग में देवताओं से मिलने के लिए जीवघात भी कर लेते हैं।" सा.बाबा 8.1.73 रिवा.

"सन्यासी लोग कहाँ भी जाते तो भोजन आदि आपही उन्होंको मिल जाता है। शरीर निर्वाह तो उन्होंका होना ही है। सर्विस में लगा रहे तो खान-पान मिलना ही है... सन्यासी सन्यास करते तो पहाड़ों पर रहते भी उनको भोजन मिलता है, उनके पास ले जाते हैं।"

सा.बाबा 30.11.73 रिवा.

सन्यास का प्रचलन प्राय: सभी धर्मों में है परन्तु हर धर्म में सन्यास की रीति-रिवाज़ अलग-अलग है। जो आत्मा उस धर्म विशेष की मान्यताओं, कर्ममाण्ड, उसके पूर्ववर्ती महापुरुषों के जीवन से प्रभावित होती है, उनके प्रति आस्था जाग्रत होती है और उनमें निश्चय होता है, तो उसके संस्कार उसको उस धर्म के अनुसार सन्यास के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे वे सन्यास करते हैं। उनका दृढ़ निश्चय ही उनको उस धर्म की नियम-मर्यादाओं को पालन करने में सफल बनाता है, उसके कारण उनको उसमें अल्पकालिक सफलता भी प्राप्त होती है परन्तु ड्रामा के मूल सिद्धान्त हर आत्मा पर लागू होता है और उसके अनुसार वे आत्मायें भी सतोप्रधानता से तमोप्रधानता की ओर जाती ही हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाना तो एक परमपिता परमात्मा का ही काम है। विभिन्न धर्मों में सन्यास के रूप हैं -

सन्यास धर्म में ब्रह्म ज्ञानी, तत्व ज्ञानी सन्यासी,
वैष्णव सम्प्रदाय में भक्त सन्यासी
शैव सम्प्रदाय में नागे सन्यासी
जैन धर्म में जैन मुनि और साध्वी
बौध धर्म में बौध भिक्षु-भिक्षुणी
क्रिश्चियन धर्म में पोप और नन्स

ब्राह्मण कुल में समर्पित भाई-बहनें।

घर-गृहस्थ में रहने वाले भी सन्यासी हैं क्योंकि वे भी पुरानी दुनिया से बुद्धियोग हटाकर, ऐश-आराम का त्याग कर नई दुनिया के लिए पुरुषार्थ करते हैं। प्राय: सभी धर्मों के सन्यास में ब्रह्मचर्य, आत्मिक प्रेम, सत्य, अहिंसा आदि मूल सिद्धान्त हैं और सभी में आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण की प्रेरणा बलवती होती है।

"अब तुम बच्चों का इस पुरानी दुनिया से बुद्धियोग बिल्कुल हट जाना चाहिए। ... अपने को आत्मा निश्चय कर, मुझे याद करो तो अन्त मति सो गति हो जायेगी। ... वह है हद का सन्यास और यह है बेहद का सन्यास। उन सन्यासियों को भी कितना मान मिलता है।"

सा.बाबा 21.6.06 रिवा.

४. *निश्चयबुद्धि और साइन्स*

परमात्मा के स्वर्ग की स्थापना के कार्य में विभिन्न शक्तियों का जाने-अन्जाने योगदान है। बाबा ज्ञान और योग के द्वारा आत्माओं के संस्कारों को परिवर्तन करके स्वर्ग के योग्य बनाता है परन्तु जब तक पुरानी दुनिया का विनाश न हो तब तक स्वर्ग की स्थापना कैसे हो सकती है। इस विनाश के कार्य में प्रकृति का भी योगदान है। प्रकृति के साथ साइन्स का महत्वपूर्ण योगदान है। साइन्स के साधन परमात्मा का दिव्य संन्देश देने में भी सहयोगी बनते हैं तो साथ2 विनाश के कार्य में भी सहयोगी बनते हैं। इस सत्य कोजानकर वैज्ञानिकों के कार्य में निश्चय रखकर उनके प्रति भी हमारी सदा सद्भावना रहनी चाहिए। इसीलिए बाबा ने कहा है - सन्यासी बच्चे भी बाबा के कार्य में सहयोगी हैं।

"जब एटॉमिक और आत्मिक दोनों शक्तियों का मेल हो जायेगा। आत्मिक शाक्ति से एटॉमिक शक्ति भी सतोप्रधान बुद्धि द्वारा सुख के कार्य में लगेगी तब दोनों शक्तियों के मिलन द्वारा शान्तिमय दुनिया इस भूमि पर प्रत्यक्ष होगी क्योंकि सुख-शान्तिमय स्वर्ग के राज्य में दोनों शक्तियाँ हैं।"

अ.बापदादा 5.3.84

५. *निश्चय और भविष्य*

प्राय: सभी मनुष्यों को अपने और अपने परिवार के भविष्य की चिन्ता रहती है और वे उसके लिए सदा प्रयत्नशील रहते हैं। मनुष्य भविष्य के लिए ही संग्रह करते हैं, सम्बन्ध बनाते हैं परन्तु वास्तविकता ये है कि मनुष्य की संग्रह की हुई साधन-सम्पत्ति या सम्बन्ध समय पर उसका साथ नहीं देते हैं बल्कि मनुष्य का कर्म-फल ही उसका सच्चा साथी है और समय

पर साथ देता है। साधन-सम्पत्ति भी कर्म-फल के अनुसार ही सुखदायी या दुखदायी बनते हैं। सम्बन्ध में भी एक परमात्मा ही आत्माओं का सच्चा सम्बन्धी है जो सदा, सर्वदा और सर्वत्र साथ निभाता है, वही सच्चा साथी है। और सभी सम्बन्धी तो ड्रामा के पार्ट और कर्मानुसार सुखदायी और दुखदायी दोनों ही बन जाते हैं।

यूँ तो मनुष्य जो भी कर्म करता है, उसकी सफलता-असफलता का सम्बन्ध उसके निश्चय की दृढ़ता से ही है और उसका फल भविष्य में ही मिलता है क्योंकि वर्तमान जीवन हमारे भूतकाल का फल और वर्तमान के कर्म ही भविष्य का बीज हैं।

यहाँ "निश्चयबुद्धि विजयन्ति" का अर्थ है - अपने आत्मिक स्वरूप पर निश्चय, परमपिता परमात्मा पर निश्चय, उसके द्वारा दिये गये ज्ञान और उसके महावाक्यों पर निश्चय। इन तीनों पर दृढ़ निश्चय रखकर जो आत्मा वर्तमान में श्रेष्ठ कर्म करती है, उससे उसकी भूतकाल, वर्तमान और भविष्य जीवन की सफलता निर्भर करती है अर्थात् भूतकाल कर्मों के अशुभ फल से भी मुक्त होकर वर्तमान में सुख पाता है और भविष्य के लिए सुखदायी कर्म-फल संचित करता है। जो परमात्मा पर निश्चय रखते हैं, उनको निश्चय के आधार पर परमपिता परमात्मा का सहयोग अवश्य प्राप्त होता है। सन्यासी जीवन में भी परमात्मा का बड़ा सहयोग रहता है, उसके सहयोग पर ही हद और बेहद दोनों प्रकार के सन्यास की सफलता आधारित है।

"सिर्फ लकीर के ऊपर लकीर खींच रहे हो। ड्रामा की लकीर खींची हुई है, नई लकीर नहीं खींच रहे हो, जो सोचो कि पता नहीं सीधी होगी या नहीं। कल्प-कल्प की बनी हुई प्रारब्ध को सिर्फ बनाते हो क्योंकि कर्मों के फल का हिसाब है। ... यह है अटल निश्चय।"

अ.बापदादा 11.4.86

६. *निश्चय और साहित्य*

साहित्य किसी भी देश, समाज, सभ्यता या व्यक्ति का दर्पण होता है। किसी देश के साहित्य से उसके अतीत और वर्तमान की मान्यताओं, वहाँ के निवासियों के चरित्र, जीवन-व्यवहार आदि का पता चलता है। व्यक्ति के विषय में भी जो व्यक्ति जैसा साहित्य पढ़ता है या लिखता है, उससे उस व्यक्ति के चरित्र, भावनाओं, मान्यताओं, निश्चय आदि का दर्शन होता है। व्यक्ति का साहित्य पर और साहित्य का व्यक्ति पर गहरा प्रभाव होता है।

जो व्यक्ति जैसा साहित्य पढ़ता है, वैसा ही उसका चिन्तन होता है, जिसका प्रभाव उसके जीवन पर अवश्य पड़ता है। ये अटल सत्य है कि मनुष्य जो पढ़ता, देखता है, सुनता

है वह कभी निष्प्रभावी नहीं हो सकता। समर्थ पर उसका प्रभाव धीरे-धीरे पड़ता है और कमजोर पर प्रभाव तुरन्त पड़ता है। इसीलिए ज्ञान सागर बाबा ने यज्ञ में कोई भी ग्रन्थ, शास्त्र, नावेल, कहानियां आदि पढ़ने से मना की है। जिसको बाबा की इस श्रीमत पर जितना ही निश्चय रहा, उतना ही उसने बाबा इस श्रीमत का पालन किया। जितना जिसने बाबा की इस श्रीमत का पालन किया, उतना ही उसका जीवन उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ और उसने इस ईश्वरीय जीवन का उतना ही सुख प्राप्त किया और कर रहा है।

कुछ लोगों की मान्यता है कि बाहर के साहित्य के पढ़ने से बुद्धि का विकास होता है, बौद्धिक उन्नति होती है, ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है। जब मनुष्य ऐसा मानता है, निश्चय करता है, तो उसकी उसमें रुचि और बढ़ जाती है, जिससे उसके पठन-पाठन में समय जाता है, जिससे धीरे2 अपने साहित्य में उसकी अरुचि होने लगती है और बाहर की भेंट में वह हल्का प्रतीत होने लगता है। ये भी एक प्रकार का ज्ञान में संशय ही है। परन्तु विचारणीय विषय यह है कि जब उस साहित्य को लिखने वाले ही उतरती कला में आ गये तो उनके साहित्य पढ़ने से किसी की चढ़ती कला कैसे हो सकती है। बाबा ज्ञान का सागर है, उसने हमको जो ज्ञान दिया है, वह सागर के समान है, हम उसमें से अपनी बुद्धि रूपी बर्तन के अनुसार ही ग्रहण कर पाये हैं। यथार्थ रीति देखें तो बाबा की मुरलियाँ अखुट ज्ञान का भण्डार है, उनसे हम जितना लें, वह कम ही होगा। इसलिए हमको अपने साहित्य और ज्ञान को कम आंकना भी संशय की ही निशानी है। ऐसे व्यक्ति ज्ञान का उतना सुख अनुभव नहीं कर सकते, जितना करना चाहिए या किया जा सकता है।

* सर्वशक्तिवान ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा को पाकर भी कोई आत्मा उनकी स्मृति को भूलकर उनकी मुरली को छोड़कर किसी आत्मा विशेष को याद करती, उसके क्लास में अधिक रुचि रखती, उसके साहित्य को पढ़ने में विशेष रुचि रखती, उसके गुण-धर्मों से विशेष प्रभावित होती तो भी हमको कभी आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए, राग-द्वेष की भावना जाग्रत नहीं होनी चाहिए क्योंकि बाबा ने स्पष्ट ज्ञान दिया है कि ये विश्व एक ड्रामा है और अभी ये राजाई स्थापन हो रही है और वहाँ की राजाई में भी विभिन्न प्रकार की राजाई होंगी और राजाई में भी विभिन्न पद और प्राप्तियों वाले व्यक्ति होंगे ही तो जरूर कोई ऐसे कारण बनेंगे, जिसके अनुसार वे पद और प्राप्तियाँ होंगी। लौकिक गीता में भी इस सत्य के विषय में स्पष्ट रूप से क हा गया कि मेरे को भजने वाले मेरे लोक को प्राप्त होते हैं और देवताओं और भूतों को भजने वाले उनके लोक को प्राप्त होते हैं। ये विश्व-नाटक का अटल सिद्धान्त हैं कि जो जिसका साहित्य पढ़ता है, किसके गुण-धर्मों की ओर आकृष्ट होता है, उसको उसकी याद अवश्य

आती है।

"अब तुम पूज्य आत्मा बन रहे हो। अभी अगर पाप किया तो सजा-दण्ड आदि खायेंगे। श्रीमत पर चलने से ही श्रेष्ठ बनेंगे। और कोई श्रीमत दे न सके। हमारे पास कोई शास्त्र नहीं हैं। बाप पढ़ाते हैं फिर मनुष्य के शास्त्र हम क्यों पढ़ें।"

सा. बाबा 14.1.73 रि. रात्रि क्लास

"इन शास्त्रों आदि में क्या रखा है? तुम अपने योगबल से पावन बन रहे हो। जानते हो हम पावन बन पावन दुनिया में चले जायेंगे। अभी राइट यह है या वह? इन सभी बातों में बुद्धि चलनी चाहिए ना। ड्रामा में मुक्ति का पार्ट भी होने का ही है।"

सा.बाबा 30.6.69 रिवा.

७. *निश्चय बुद्धि और साक्षात्कार*

साक्षात्कार का भक्ति मार्ग में भी और ज्ञान मार्ग में भी बहुत महत्व है। साक्षात्कार भी आत्मा के निश्चय को दृढ़ करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और साक्षात्कार का आधार भी उस आत्मा के ज्ञान, भावना, श्रद्धा-विश्वास पर बहुत कुछ आधारित होता है। साक्षात्कार के कुछ और भी कारण हो सकते हैं। इस ज्ञान मार्ग में भी साक्षात्कारों का विशेष महत्व रहा है। यज्ञ की स्थापना के आदि काल से साक्षात्कार की विशेष भूमिका रही है परन्तु यज्ञ की स्थापना के आदि में आत्माओं को जो हुए, वे परमात्मा ने आत्माओं में श्रद्धा-भावना और निश्चय बिठाने के लिए कराये। उनमें उन आत्माओं का कोई विशेष पुरुषार्थ नहीं था, फिर भी उनमें पूर्व में की गई भक्ति का संस्कार तो था ही। साक्षात्कार के कारण आत्माओं का कोई अहित न हो या पुरुषार्थ में कोई बाधा न आ जाये इसके लिए बाबा ने साक्षात्कार के विषय में अनेक महावाक्य उच्चारण किये हैं, जिन पर ध्यान रखना भी अति आवश्यक है। साक्षात्कार की बातों से अर्थात् साक्षात्कार से लाभान्वित होने के लिए साक्षात्कार के सम्बन्ध में बाबा के महावाक्यों को समझना, उन पर निश्चय होना भी अति आवश्यक है अन्यथा साक्षात्कार कब-कब आत्मा के पतन का भी कारण बन जाता है।

साक्षात्कार के मुख्यता निम्न तीन आधार है :-

A. बाबा के द्वारा ज्ञान के किसी रहस्योद्घाटन के लिए कराया गया साक्षात्कार। बाबा ने समय-समय पर ज्ञान के अनेक रहस्यों का साक्षात्कार के द्वारा उद्घाटन किया है। झाड़, त्रिमूर्ति, सृष्टि-चक्र, त्रिलोक आदि के चित्र भी साक्षात्कार या दिव्य-दृष्टि में दिखाकर ही बनवाये हैं।

B. बाबा के द्वारा किसी आत्मा को निश्चय कराने के लिए, उसकी भावना के आधार पर साक्षात्कार करा देना। वैसे तो बाबा कहता है कि मैं किसी को इसके लिए साक्षात्कार नहीं कराता हूँ। हरेक को ड्रामा अनुसार ही साक्षात्कार होता है। फिर भी साक्षात्कार करने वाली आत्मा और ब्रह्मा बाबा के शुभ-संकल्प के आधार पर भी किसी-किसी को साक्षात्कार हुए हैं।
b. नधा भक्ति करने वाले भक्तों को भी उनकी भावना के आधार पर भक्ति मार्ग में साक्षात्कार होता है, जिससे उनका अपने उस इष्ट देव के ऊपर निश्चय बैठ जाता है और भक्ति की भावना दृढ़ हो जाती है। उनके दृढ़ निश्चय के कारण उनकी कई अल्पकाल की मनोकामनायें भी पूर्ण होती हैं परन्तु उसके सम्बन्ध में सत्यता अलग बात है। सत्यता तो परमात्मा ही बताता है।
इस प्रकार साक्षात्कार की वास्तविकता पर विचार करें तो साक्षात्कार में उस आत्मा के निश्चय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और इस सम्बन्ध में बाबा के महावाक्यों को ध्यान में रखें और निश्चय करें तो हमारे पुरुषार्थ में विशेष उन्नति हो सकती है अर्थात् पुरुषार्थी जीवन में विशेष सफलता का अनुभव होता है।
"अरे यह तो समझने की बात है ना। चार भुजा वाला मनुष्य होता थोड़ेही है। ... वहाँ चतुर्भज देखते हो। चित्रों में है ना तो बुद्धि में बैठा हुआ है तो जरूर साक्षात्कार होंगे। परन्तु ऐसी कोई चीज है नहीं। यह सभी भक्तिमार्ग के चित्र हैं।"

सा.बाबा 12.5.69 रिवा.

८. निश्चय बुद्धि और आदर्शवाद एवं यथार्थवाद

भक्तिमार्ग और ज्ञानमार्ग दोनों में आदर्शवाद और यथार्थवाद दोनों की विशेष भूमिका होती है और मनुष्यों में दोनों होती हैं। भक्ति में आदर्शवाद विशेष होता है परन्तु ज्ञान मार्ग के पुरुषार्थी जीवन की सफलता में आदर्श और यथार्थ दोनों का सन्तुलन होना अति आवश्यक है। आदर्शवाद मनुष्य की भावना से प्रेरित होता है, उसमें उसकी भावना प्रधान होती है। जबकि यथार्थवाद में विवेक प्रधान होता है। भावना प्रधान आदर्शवाद समयान्तर में अन्धश्रृद्धा, अन्ध-विश्वास या अविश्वास को जन्म दे सकता है जबकि भावना-विहीन विवेक प्रधान यथार्थवाद अहंकार, हीनता या पुरुषार्थ-हीनता को जन्म दे सकता है, इसलिए इन दोनों का सन्तुलन ही यथार्थ पुरुषार्थ के मार्ग को प्रशस्त करता है। दोनों में सन्तुलन होने पर ही पुरुषार्थी का पुरुषार्थ सही दिशा में चलता है, जिससे वह अपने अभीष्ट लक्ष्य को सहज प्राप्त कर सकता है। सच्चा पुरुषार्थी इन दोनों के ज्ञान और महत्व को जानकर, उस पर निश्चय करके अपने पुरुषार्थी जीवन की सही दिशा को निश्चित करके सच्ची सफलता कर सकता है।

हमारी बुद्धि में जड़ता न आये और अन्धश्रृद्धा जाग्रत न हो इसलिए बाबा ने कई बातों के विषय में देश-काल परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप से समझाया है और कहा है

कि इन बातों पर मनन-चिन्तन करो और जज करो कि सत्य क्या है। बाबा कहते हैं मूल बात है पावन बनने की, इसके लिए एक बाप को याद करो। बाबा को याद करने के विषय में बाबा ने ये भी कहा है कि सदा बाप को परमधाम में याद करो और कब-कब ये भी कहा है कि बाबा यहाँ आया है यहाँ मधुवन में ब्रह्मा तन में याद करो, बाप को सदा अपने साथ याद करो। अब हम कहाँ और कैसे याद करें, यह समझने की बात है। इन सब बातों का अपना-अपना महत्व है और सब में सत्यता है, उसको यथार्थ रीति समझना अति आवश्यक है। जब बाप पर निश्चय होगा तब ही अन्य सभी बातों को समझ सकेंगे।

ये पढ़ाई है, पढ़ाई में आदर्श और यथार्थ दोनों का ही महत्व होता है। बाप ने भी समय समय पर कुछ बातें आदर्श के रूप में कहीं हुई हैं और कुछ बातें ऐसी कही हैं, जो यथार्थ में हैं परन्तु हमारे जीवन की सफलता के लिए दोनों का ही महत्व है अर्थात् आत्मा के पावन बनने एवं दैवी गुण सम्पन्न बनने में दोनों का ही समयानुसार और परिस्थिति के अनुसार महत्व है। इसलिए इन दोनों को यथार्थ रीति समझेंगे और धारण करेंगे तब ही उनका उचित लाभ अनुभव करेंगे।

"चित्रों में भी बहुत करेक्शन करते बदलते जायेंगे। जैसे बाबा सूक्ष्मवतन के लिए समझाते थे। अब बाबा कहते हैं कि वह है ही नहीं। तो बुद्धि कहेगी कि यह क्या ? आगे वैसे कहते थे, अभी ऐसे कह रहे हैं। परन्तु दिन प्रतिदिन करेक्शन होती जाती है। भक्ति मार्ग में विष्णु के चित्र बनाते हैं परन्तु ऐसा विष्णु कोई है थोड़ेही। यह तो लक्ष्मी-नारायण के दो रूपों को मिलाकर विष्णु का चित्र बना है।" सा.बाबा 10.8.69 रिवा.

"इस पुरानी दुनिया का विनाश होना ही है। बाकी 8 वर्ष हैं, फिर कहेंगे सात वर्ष, 6 वर्ष। लड़ाइयाँ शुरू हो जायेंगी।" सा. बाबा 14.1.69

"यह त्रिमूर्ति आदि के चित्र वास्तव में कोई यथार्थ रीति हैं नही। यह तो सभी अर्थ रहित चित्र हैं। विष्णु भी जेवर वाला सूक्ष्मवतन में कैसे हो सकता ? यह भी ठीक नहीं है। तुम कहेंगे यह सभी शास्त्र, चित्र भक्तिमार्ग के हैं। वहाँ तो ऐसी कोई बात हो न सके। प्रजापिता ब्रह्मा वहाँ कैसे हो सकता ? बाप ने समझाया है यह व्यक्त, वह अव्यक्त। जब अव्यक्त बनते हैं तो सूक्ष्म फरिश्ता हो जाते हैं। मूलवतन, सूक्ष्मवतन है तो सही ना। सूक्ष्मवतन में भी जाते हैं ना। यह तो चित्र आदि कोई यथार्थ रीति है नहीं।" सा. बाबा 25.2.69 रिवा.

"बाबा चित्र शौक से बनाते हैं तो फिर करेक्शन की जाती है। इसमें (श्रीकृष्ण के चित्र में) 84 पुनर्जन्म लिखा है, परन्तु मरण अक्षर नहीं लिख सकते हैं। है राइट परन्तु जैसा देश वैसा वेश को बदलना पड़ता है। वे कहेंगे श्रीकृष्ण तो भगवान है, वह मरण में कैसे आयेंगे ? श्रीकृष्ण की

आत्मा तो गर्भ से पैदा हुई तो जरूर जन्म ले फिर शरीर भी छोड़ती होगी।"

सा.बाबा. 9.10.97 रिवा.

९. निश्चय बुद्धि और विकर्म विनाश

आध्यात्मिक पुरुषार्थ का लक्ष्य ही आत्मा को पावन बनाना अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाना। आत्मा पर देहाभिमान और देहाभिमान वश विकर्मों का लेप-क्षेप चढ़ा हुआ है, इसलिए आत्मा को पावन बनाने के लिए देहाभिमान को खत्म कर देही-अभिमानी बनना और पुण्य के खाते को जमा करके विकर्मों के खाते को खत्म करना होता है। देही-अभिमानी बनने के लिए आत्मिक स्वरूप का अभ्यास करना होता है।

विकर्म विनाश करने के दो साधन हैं। एक है योग से विकर्म विनाश और दूसरा है भोग के द्वारा विकर्मों का विनाश। आत्मा को पावन बनने में इन दोनों बातों का प्रभाव होता है अर्थात् आत्मा के पावन बनने के ये दो मुख्य साधन है। आत्मा या तो योग से पावन बनती है या कर्मभोग के द्वारा पावन बनती है। कोई योग का विशेष पुरुषार्थ कर अपने अधिकांश विकर्मों को विनाश कर लेता और नाममात्र अन्त में कर्मभोग के रूप में भोगना पड़ता है। जो योग से पावन नहीं बनता, उसको कर्मभोग के रूप में अधिक भोगना पड़ता है। जैसे बाबा ने कहा है कि 8 ही आत्मायें ऐसी हैं, जिनको अन्त में कोई भोगना नहीं भोगनी पड़ती है। पावन बनने के बाद ही आत्मा घर वापस जा सकती है और पावन आत्मा ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का सच्चा सुख अनुभव कर सकती है। जो योग का पुरुषार्थ करके पावन बनते, वे अपने योगी जीवन में अच्छे कर्म करके शुभ कर्मों का खाता जमा कर लेते हैं, जिससे भविष्य में आने वाली सतयुगी दुनिया में भी वे पहले आते हैं और ऊंच पद पाते हैं तथा वर्तमान जीवन में भी मुक्ति-जीवनमुक्ति का देव-दुर्लभ सुख पाते हैं। जो इस सत्य को अनुभव करते और निश्चय करते, उनका योग पर अधिक ध्यान रहता और वे उसमें सफल भी अधिक होते हैं। उनके पुरुषार्थ के आधार पर परमात्मा का सहयोग भी उनको अधिक मिलता है।

वास्तव में योग भी एक प्रकार का भोग ही है, जो स्वेच्छा से भोगा जाता है और जो कार्य स्वेच्छा से किया जाता है, वह आत्मा को खुशी प्रदान करता है। जैसे कोई व्रत रखता है और 2-3 दिन तक खाना नहीं खाता तो भी उसमें उसे सुख की अनुभूति होती है परन्तु यदि किसी व्यक्ति के पास खाने को नहीं है तो एक समय पर भी खाना न मिले तो वह परेशान हो जाता है और दुखी होता है। योग की सफलता के लिए पुरुषार्थी विभिन्न प्रकार के नियम संयम अपनाता है, त्याग-तपस्या करता है। योगी ये सब स्वेच्छा से करता है, जिससे उसे कर्मभोग न कहकर कर्मयोग की संज्ञा दी जाती है। परन्तु ये सब पुरुषार्थ वही कर सकता है, जिसको

इसके फल में निश्चय होता है।

जब कर्मभोग दैहिक-मानसिक व्याधि, प्राकृतिक आपदाओं, सम्बन्धों में कटुता के रूप में आता है और आत्मा को इस सत्य का ज्ञान नहीं होता कि ये हमारे ही कर्मों का फल है, तो वह उसके लिए अधिक दुखदायी बन जाता है और जिसको इस सत्य का ज्ञान होता है, उस पर निश्चय होता है तो वह उसे खुशी से भोगकर पूरा करता है। यदि आत्मा के योग के द्वारा या पहले से भोग के रूप में विकर्म खत्म नहीं होते तो अन्त समय साक्षात्कार के द्वारा सजाओं के रूप में आत्मा को भोगकर पूरा करना पड़ता है। जो आत्मायें योग के द्वारा अपने विकर्मों को भस्म नहीं करेंगी, अन्त समय उनको ही साक्षात्कार के रूप में भोगना भोग कर पावन बनना होगा।

"शरीर में आत्मा प्रवेश होने से छोटेपन से ही पार्ट बजाने लग पड़ती है। अनादि-अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। शरीर तो जड़ है, उसमें जब चेतन आत्मा प्रवेश करती है, उसके बाद गर्भ में सजा खाने लगती है। आत्मा सजा खाती है। सजायें भी कैसे खाती है? भिन्न-भिन्न शरीर धारण कर जिन-जिन को जिस रूप से दुख दिया है, वह साक्षात्कार करते जाते हैं और दण्ड मिलता जाता है। त्राहि-त्राहि करते हैं, इसलिए गर्भ जेल कहते हैं। ड्रामा कैसा अच्छा बना हुआ है।"

सा.बाबा 19.5.72 रिवा.

१०. निश्चय बुद्धि और अधिकार एवं कर्तव्य

निश्चय बुद्धि और अहंकार एवं हीनता की भावना

पुरुषार्थ से प्रालब्ध और कर्म से फल की प्राप्ति - ये इस विश्व नाटक का अटल विधान है। अधिकार और कर्तव्य मानव जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं अर्थात् जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं, जो समानान्तर चलते हैं। इन दोनों में जितना ही अच्छा सन्तुलन रहेगा, उतना ये जीवन रूपी गाड़ी अपनी मंजिल पर सहज पहुँच जायेगी। हर मनुष्य के जीवन में ये दोनों पहिये सतत गतिशील हैं और हर आत्मा इनके प्रति निरन्तर प्रयत्नशील है। इसके विषय में एक महत्वपूर्ण तथ्य समझना अति आवश्यक है। कलियुग में बहुधा लोग अधिकार के प्रति अधिक जागरूक रहते हैं और कर्तव्य को भूल जाते हैं। कहाँ कहाँ कर्तव्य को तो अच्छी रीति पालन करते परन्तु अधिकार के प्रति जागरूक नहीं होते हैं। जिससे आत्मा अहंकार या हीनता में आ जाती है, इसलिए जीवन की सफलता के लिए इन दोनों का सन्तुलन अति आवश्यक है। इन दोनों का असन्तुलन आत्मा के द्वारा अनेक विकर्म कराकर आत्मा को दुखी बना देता है। हमारी जीवन रुपी गाड़ी सदा सफलता पूर्वक चलती रहे, उसके लिए बाबा ने हमको

अधिकार और कर्तव्य में सन्तुलन रखना सिखाया है। अपनी मंजिल पर सहज पहुँचने के लिए जीवन रूपी गाड़ी के दोनों पहियों में सन्तुलन होना अति आवश्यक है, अन्यथा ये पुरुषार्थी जीवन सुखमय नहीं होगा और मंजिल कठिन प्रतीत होगी। वर्तमान जगत में मनुष्य कहाँ अधिकार के प्रति अधिक जाग्रत हैं परन्तु अपने कर्तव्य का ध्यान नहीं देते। जो अधिकार के प्रति अधिक जाग्रत है और कर्तव्य का ध्यान नहीं रखता, वह अवसर पाकर अहंकार के वश होकर निरंकुश शासक बन जाता है, उसके जीवन में उद्दण्डता आ जाती है और जो अपने अधिकार को भूल कर कर्तव्य ही ध्यान में रखता है, उसमें दासता के बीज अंकुरित हो जाते हैं अथवा वह दासता के गर्त में फंस जाता है। उसके अन्दर हीनता-दीनता घर कर लेती है। ये दोनों ही मानव जीवन के लिए घातक हैं। इस सत्य का ज्ञान और निश्चय अति आवश्यक है।

राष्ट्रीय कवि मैथलीशरण गुप्त की कुछ पंकितयाँ इस सन्दर्भ में महत्वपूर्ण हैं - "अधिकार खोकर बैठ रहना ये महा दुष्कर्म है, न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है। इस ध्येय पर ही पाण्डवों का कौरवों से रण हुआ, जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ।"

अधिकार आत्मा के लिए महत्वपूर्ण है परन्तु अधिकार की मांग अपने कर्तव्य को ध्यान में रखकर दिव्यता और सभ्यता के साथ करने वाले को अधिकार अवश्य प्राप्त होता है और वह सुखदायी होता है। इसके लिए आत्मा में निर्भयता और सहनशीलता होना अति आवश्यक है।

बाबा ने इस सन्दर्भ में महावाक्य उच्चारण किये हैं - "मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है और ईश्वरीय सेवा करना, यज्ञ की रक्षा करना हर ब्राह्मण आत्मा का परम कर्तव्य है। इस कर्तव्य के आधार पर ही भविष्य के राजभाग का अधिकार प्राप्त होता है।"

जो दोनों की वास्तविकता को समझकर, उनके महत्व को जानकर, निश्चय करके इन दोनों में सन्तुलन रखकर चलता है, उसका ये पुरुषार्थी जीवन सदा सफलता का अनुभव करता है और वह इस संगमयुग का सच्चा सुख अनुभव करता है तथा अपनी अन्तिम मंजिल को निर्विघ्न प्राप्त कर लेता है।

मूल आत्मिक स्वरूप अहंकार और हीनता दोनों से मुक्त है, इसलिए ज्ञानी आत्मा को अहंकार और हीनता दोनों प्रभावित नहीं करते हैं। अहंकार और हीनता देहाभिमान जनित विकार है परन्तु मूल स्वरूप में आत्मा निर्विकारी है, इसलिए उस पर कोई भी विकार प्रभावित नहीं होता है। पहले तो आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को कोई भी दुख नहीं दे सकता है

और यदि देता भी है तो वह लेगी नहीं क्योंकि आत्मिक सवरूप दोनों से मुक्त है।

जो किससे कुछ ले लेता है या लेने की इच्छा रखता है, उसको देने वाले के सामने सिर झुकाना ही पड़ता है।

स्वमान वाले में अपमान और अभिमान की फीलिंग हो नहीं सकती। ज्ञानी आत्मा ही आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक की विधि-विधान को यथार्थ रीति समझने वाला अहंकार और हीनता, भय और चिन्ता दोनों से मुक्त होकर स्वमान में स्थित हो स्वाभिमान से जीता है। उसके जीवन में बड़े और छोटे की दृष्टि निकलकर समभाव जाग्रत हो जाता है।

निराकार परमपिता परमात्म और फरिश्ता स्वरूप ब्रह्मा बाबा की ज्ञान-गुण-शक्तियों की किरणें हर आत्मा पर निष्पक्ष भाव से अबाध रूप से बरस रहीं हैं परन्तु ड्राता क पार्ट और ड्रामा के विधि-विधान और कर्म के सिद्धान्त के अनुसार हर आत्मा नम्बरवार ही प्राप्त करती है, अनुभव करती है।

"अपने आपको भूलो नहीं। सदा अपने को अमूल्य समझकर चलो। लेकिन छोटी सी गलती नहीं करना। अमूल्य हो लेकिन बाप के साथ के कारण अमूल्य हो। बाप को भूलकर सिर्फ अपने को समझेंगे तो भी रांग हो जायेगा। बनाने वाले को नहीं भूलो। बन गये हैं लेकिन बनाने वाले के साथ बने हैं - यह है समझने की विधि। ... न यह सोचो कि मैं कुछ नहीं हूँ और न यह समझो कि मैं ही सब कुछ हूँ। दोनों ही रांग हैं। (अहंकार और हीनता दोनों न हों) मैं हूँ लेकिन बनाने वाले ने बनाया है। बाप को निकाल देते हो तो पाप हो जाता है।"

अ.बापदादा 2.3.85

११. *निश्चय बुद्धि - जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, भूत-प्रेत, वास्तु-शास्त्र आदि*

निश्चय जीवन के हर क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भमिका निभाता है और उसके आधार पर मानव जीवन के स्वरूप का निर्माण होता है, उसकी पहचान होती है, समाज में उसकी मान-प्रतिष्ठा का अस्तित्व निर्भर करता है परन्तु मानव जीवन में अनेक ऐसी घटनायें होती हैं और हो रही हैं, जिनके वास्तविक स्वरूप को न पहचानने के कारण मनुष्य धोखा भी खाता है और उससे उसका भावी जीवन प्रभावित होता है। कहाँ सुख, दुख में बदल जाता है और कहाँ-कहाँ दुख से मुक्त हो अल्पकाल के सुख का भी अनुभव करता है परन्तु सदा काल का सुख अनुभव नहीं करता। हर बात के यथार्थ स्वरूप को समझकर उसे अनुभव करके उसे स्वीकार करने में ही जीवन का सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है। इसके लिए परमात्मा ने हमको सारा ज्ञान दिया है, जो हमको सहज मार्ग प्रदर्शित कर रहा है और हमारा सदा साथ निभा रहा है। उसके

यथार्थ स्वरूप पर निश्चय करके जीवन में अपनायेंगे तो अनेक प्रकार के ऐसे धोखों से बचे रहेंगे और ये पुरुषार्थी जीवन यात्रा सुगम और सफल अनुभव होगी। जो बिना अनुभव किये निश्चय करके चलते हैं, वे कभी2 भटक भी जाते हैं। इसलिए अनेक बार मुरलियों में बाबा ने कहा - बाबा जो सुनाते हैं, उसको जज करो।

वर्तमान समाज में और ब्राह्मण परिवार में भी जन्त्र-तन्त्र-मन्त्र, भूत-प्रेत, वास्तु-शास्त्र आदि की अनेक समस्यायें पैदा हो गई हैं और जोर पकड़ती जा रही हैं, जिनसे कुछ लोग तो लाभान्वित होते हैं तो कई उनके चक्कर में परेशान भी हो रहे हैं। इस सम्बन्ध में प्यारे बाबा ने भी कहा है - अन्त समय अनेक भूत-प्रेतात्माओं का प्रकोप होगा, अपने विकर्म, कमी-कमजोरियाँ भी भूत-प्रेत बनकर सामने आयेंगी, सतायेंगी और हमारे निश्चय को डगमग करेंगी परन्तु जो पक्के निश्चयबुद्धि होंगे वे एक बाप पर अटल निश्चय और उसके सहारे उनको सहज पार कर लेंगे। इसके लिए परखशक्ति बहुत अच्छी चाहिए।

सत्यता की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। जन्त्र-तन्त्र-मन्त्र, भूत-प्रेत, वास्तु-शास्त्र आदि बातों का अस्तित्व है, महत्व है, उनका प्रभाव होता है परन्तु उसकी एक सीमा है, उस सीमा के पार ये कुछ भी नहीं कर सकते हैं और वह सीमा है - हमारे कर्म, हमारे अन्य आत्माओं के साथ अच्छे-बुरे सम्बन्ध और ड्रामा का पार्ट। इन सबके आधार पर मनुष्य का अपना निश्चय और विश्वास उसको प्रभावित करता है। यदि हमारी मन्सा शक्तिशाली है और हमको परमात्मा की याद है तो उनका प्रभाव हमको प्रभावित नहीं कर सकता। परन्तु जिन आत्माओं के साथ हमारा कोई हिसाब-किताब है, वह तो उनके साथ पूरा करना ही होगा और ड्रामा में जो पार्ट है, वह बजाना ही होगा परन्तु इस सत्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि ड्रामा की हर घटना मनुष्य के पूर्व कर्मों से प्रभावित होती है। ड्रामा में कोई अप्रिय-प्रिय घटना होती है तो उसके पीछे हमारे कोई न कोई कर्म अवश्य होते हैं, जिनके कारण वह घटना होती है। यदि हमारा किसी प्रेतात्मा के साथ कोई अशुभ कर्म का खाता संचित होगा तो ही वह हमको दुख देगी, सतायेगी अन्यथा कोई भी आत्मा हमको सता नहीं सकती है। इस सत्य को कभी भी भूलना नहीं चाहिए।

इस अटल सत्य को भी सदा ध्यान में रखना और उस पर दृढ़ निश्चय होना आवश्यक है कि इस ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार परमात्मा है, जो सर्वशक्तिवान, ज्ञान का सागर है। वही सर्व आत्माओं की चढ़ती कला का एकमात्र आधार है। अगर उन पर दृढ़ निश्चय है, उसकी यथार्थ याद है और सर्वात्माओं के प्रति हमारी शुभ भावना, शुभ कामना है तो कोई जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र का प्रभाव हमारे ऊपर नहीं हो सकता और न ही किसी आत्मा को

हमारे प्रति ऐसे व्यवहार का संकल्प उठ सकता है। जिसके साथ सर्वशक्तिवान परमात्मा है, उसकी छत्रछाया है, उसको कोई भूत-प्रेत सता ही कैसे सकता है। फिर भी अगर पूर्व कर्मों के कारण हमारा किसके साथ हिसाब-किताब है तो वह भी परमात्मा की याद से ही हल्का होगा और सहज चुक्ता होगा। इसलिए न किसी भूत-प्रेत से डरने की बात है और न ही उसके प्रति अशुभ संकल्प करने की बात है। शुभ संकल्प का फल सदा ही शुभ होता है और अशुभ का अशुभ। कर्म के इस विधान को भी सदा याद रखना है। यदि आत्मा को झूठा होते भी निश्चय हो गया कि किसी प्रेतात्मा का प्रभाव हमारे ऊपर है या किया है तो वह निश्चय प्रेतात्मा का प्रभाव न होते भी आत्मा को दुखी कर देगा।

वर्तमान समय यज्ञ में वास्तु-शास्त्र की भी बहुत चर्चा हो गयी है और कई भाई-बहनें इसके चक्कर में परेशान रहते हैं परन्तु हमको इस सत्य को कभी भूलना नहीं चाहिए कि हम सर्वशक्तिवान परमपिता की कल्याणमयी छत्रछाया में हैं, जब हम परमात्म की स्मृति में होंगे, स्वस्थिति में होंगे, एकाग्र चित्त होंगे तो हमारा निर्णय यथार्थ होगा और कल्याणकारी होगा। हमको जो प्रेरणा आयेगी, वह स्वाभाविक ही सर्व-शास्त्र सम्मत होगी। परमात्मा ने ये जो साधन, विधि-विधान, स्मृति का महामन्त्र हमको दिया है, इसके आगे सभी साधन, विधि-विधान नत-मस्तक हैं। हम अपने इस श्रेष्ठ साधन के प्रति दृढ़ निश्चयवान रहें तो हमारी सदा सफलता निश्चित है। अन्य सभी विधि-विधानों का ये नाटक देखने में आता है कि एक व्याधि जाती है तो वह दूसरी को जन्म देकर जाती है और इसके चक्कर वाले कभी भी छूटे हुए नजर नहीं आते हैं। इसीलिए गायन है- "एकै साधे सब सधैं, सब साधे सब जाहिं ...।"

इस बात की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र का, भूत-प्रेतात्माओं का प्रभाव होता है। वास्तु-शास्त्र का अपना महत्व है, परन्तु इस कटु सत्य को भी सदा याद रखना है कि अनेक सभ्यताओं में ये विद्या अपने चर्मोत्कर्ष पर थी फिर भी उन सभ्यताओं का पतन हो गया है , उनके इन विद्याओं के महान ज्ञाता अपनी उतरती कला में ही आये हैं। ये सब ज्ञान बाबा ने हमको दिया है। ये सभी विद्यायें अन्त में इस एक सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय विद्या में समाहित होंगी। भले हमको अनेक आत्माओं के साथ अपने हिसाब-किताब को पूरा करना ही होगा, ड्रामा का पार्ट बजाना ही होगा परन्तु हमको इन सभी को करते भी अपनी इस श्रेष्ठ ईश्वरीय विद्या के अस्तित्व, महत्व और प्रभाव को भूलना नहीं चाहिए। ये एक केन्द्र बिन्दु है, जिसके चारो ओर ही सर्व विद्यायें चक्कर लगाती हैं। अपनी इस श्रेष्ठ प्राप्ति को पहचानकर, उसको अनुभव कर, उस पर दृढ़ निश्चय रखकर जीवन की सच्ची सफलता और प्राप्ति को अनुभव करना है, उसके महत्व को उजागर करना हम सभी ब्राह्मण आत्माओं का परम कर्तव्य है।

तन्त्र-मन्त्र-जन्त्र आदि को जानने वाले अपनी इन अल्पकाल की सिद्धियों को प्राप्त करके अल्पकाल के लिए भले ही खुश होते हैं परन्तु अन्त में उन सबको पछताना अवश्य पड़ता है। ज्ञान मार्ग में चलने वाले भी ईश्वरीय शक्ति और ज्ञान में पूरा निश्चय न होने के कारण कहाँ-कहाँ इन बातों के चक्कर में आ जाते हैं परन्तु वे महापाप के भागी बनते हैं क्योंकि ईश्वर का नाम बदनाम करने के भागी बन जाते हैं, जिस कारण उनको कई गुणा पश्चाताप करना होगा। अव्यक्त बापदादा ने भी इस सम्बन्ध में मधुवन निवासियों के साथ मुलाकात में कहा है।

इन सब बातों को जानते हुए ज्ञानी आत्मा का कर्तव्य है कि वह किसी भी आत्मा के प्रति दुर्भावना न रख, सदा शुभ भावना और शुभ कामना रखे और सदा परमात्मा की याद में कर्म करें - यही हम सभी ईश्वरीय सन्तानों का कर्तव्य है।

१२. *निश्चय बुद्धि और दान*

भक्ति मार्ग में जो दान की प्रथा चलती, उसका आधार भी करने वाले का निश्चय ही है। क्योंकि जब मनुष्य को निश्चय होता है कि दान करने से उसका भविष्य में अच्छा फल मिलेगा, उससे उसका भविष्य श्रेष्ठ सुखमय होगा, तब ही मनुष्य की प्रवृत्ति दान के कामों में होती है। बाबा दान की भी गुह्य गति बताते हैं। बाबा ने बताया है कि भक्ति मार्ग में जो दान करते उसका फल अल्पकाल अर्थात् एक जन्म के लिए ही मिलता है परन्तु अभी तुम जो दान करते उसका फल 21 जन्मों के लिए मिलेगा। जब इस सत्य का अनुभव होता है और निश्चय होता है तो इन कार्यों में प्रवृत्ति और भावना बढ़ जाती है और उनके लिए त्याग या सहन करना भी कठिन नहीं लगता बल्कि उसमें खुशी होती है।

बाबा ने कहा है कि ज्ञान-रतनों का दान सबसे श्रेष्ठ दान है, जो ज्ञान रतनों का दान करते हैं, उनको सतयुग में स्थूल रतन भी अवश्य प्राप्त होते हैं। मन्सा से योग-दान करना सबसे श्रेष्ठ दान है, इससे अपनी अवस्था भी अच्छी बनती है और जिसके लिए दान करते हैं, उसको भी लाभ होता है। स्थूल धन के लिए तो बाबा कहता है कि ये तुम बच्चे बाबा के पास इन्श्योर करते हो, जिसका रिटर्न बाबा तुमको 21 जन्म तक देते हैं। स्थूल धन भी ईश्वरीय सेवा में लगाते हैं, उससे जिन आत्माओं को लाभ होता है, उनसे हिसाब-किताब बनता है और उनसे उसका रिटर्न भविष्य में मिलता है। यदि हम किसी का दान किया हुआ धन अपने हित में प्रयोग करते हैं तो उस आत्मा को उसका प्रतिफल देना ही पड़ता है। इसलिए बाबा सदैव कहते हैं कि दान के पैसे का दुरुपयोग मत करो। इस सत्य का ज्ञान और निश्चय जब आत्मा को बैठ जाता है तो ही वह श्रीमत पर इस ईश्वरीय कार्य में लगाकर अपना तन-मन-धन बाबा

के पास इन्श्योर करता है और वह इस सेवा के बिना रह नहीं सकता।

दान देकर, फिर उसको वापस लेने से सौगुणा पाप बन जाता है। ये भी ड्रामा का नियम है कि बाप से प्रतिज्ञा कर फिर प्रतिज्ञा भंग करते हैं तो दण्ड पड़ जाता है।

"औरों से मांगो मत। नहीं तो देने वाले को भी नुकसान पड़ जाता है क्योंकि उसने शिवबाबा के भण्डारे में नहीं दिया। देना चाहिए शिवबाबा के भण्डारे में।"

सा. बाबा 25.1.72 रिवा.

"यह सब ड्रामा में नूँध है, फिकर की कोई बात नहीं है। नहीं तो स्थापना कैसे होगी। दूसरी बात यह भी है कि जो करेगा, वह पायेगा।... किसको दान नहीं करेंगे तो फल भी कैसे मिलेगा।... किसी न किसी को सन्देश सुनाकर फिर भोजन खाना चाहिए।"

सा.बाबा 18.5.05 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं हूँ गरीब निवाज। दान हमेशा गरीबों को ही दिया जाता है। सुदामा की बात है ना - चावल चपटी ले उनको महल दे दिये। समझो कोई के पास 25-50 रुपया है, उसमें से 20-25 पैसे देता है और साहूकार 50 हजार दे तो भी इक्वल हो जाता है।"

सा.बाबा 23.6.06 रिवा.

१३. *निश्चय बुद्धि और प्रत्यक्षता*

"अभी धर्म नेताओं तक नहीं पहुँचे हैं, जो लास्ट युद्ध है, जिससे चारो ओर आवाज फैल जाये। ये होगा ज्ञान की बात से। गीता के भगवान की बात से नाम बाला होना है।"

अ.बापदादा 14.11.78 मधुवन निवासी

प्रत्यक्षता का आधार है गीता-ज्ञान की प्रत्यक्षता। ज्ञान में भी मुख्य बातें हैं गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं लेकिन निराकार परमात्मा शिव है, परमात्मा सर्व व्यापी नहीं है लेकिन परमधाम का वासी है। वही पतित-पावन, सर्व का गति-सद्गतिदाता है। आत्मा परमात्मा नहीं है और न ही हो सकती है आदि आदि।

ज्ञान हमारी वाणी, स्थिति, कर्म और व्यवहार से प्रत्यक्ष हो, तब ज्ञान सागर बाप की प्रत्यक्षता होगी। हम आत्मा के वास्तविक स्वरूप में स्थित होंगे और दूसरों को भी आत्मिक दृष्टि से देखेंगे तब हमारा प्रभाव अन्य आत्माओं को प्रभावित करेगा और बाबा का नाम बाला होगा।

परमात्मा को यथार्थ रूप में जान उसके साथ सम्बन्ध और व्यवहार अर्थात् परमात्मा जो है जैसा है, वैसा जानकर, उसके साथ सम्बन्ध रखना और इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान अर्थात् उसके विधि-विधानों को समझकर उनकी धारणा करने से ज्ञान हमारे व्यवहार में

आयेगा।

"इतना बड़ा संगठन क्या नहीं कर सकता है। एक तो श्रेष्ठ आत्मायें, पवित्र आत्मायें हो तो पवित्रता की शक्ति है, दूसरा - मास्टर सर्वशक्तिवान होने के कारण सर्वशक्तियाँ साथ हैं। संगठन की शक्ति है, साथ-साथ त्रिकालदर्शी होने के कारण जानते हो कि अनेक बार हम विश्व परिवर्तक बने हैं। इसलिए कल्प-कल्प के विजयी होने के कारण अब भी विश्व परिवर्तन के कार्य में विजय निश्चित है। होंगे या नहीं होंगे - यह क्वेश्चन ही नहीं है, निश्चयबुद्धि विजयी।"

अ.बापदादा 11.5.83

निश्चय और गीता-ज्ञान एवं गीता-ज्ञानदाता

बाबा ने अनेक मुरलियों में कहा है कि तुम बच्चों की विजय का आधार "गीता ज्ञानदाता कौन?" को सिद्ध करने पर है। साथ ही बाबा ने यह भी कहा है कि प्रत्यक्षता का आधार तुम बच्चे हो। तुम्हारे चेहरे से बाबा प्रत्यक्ष हो अर्थात् ज्ञान तुम्हारे जीवन में हो और बाप की याद हो तब ही प्रत्यक्षता होगी। बाबा की इन बातों से सिद्ध होता है कि जब गीता ज्ञान प्रत्यक्ष होगा तब ही गीता ज्ञान-दाता प्रत्यक्ष होगा और गीता ज्ञान हम बच्चों की चलन, चेहरा, धारणा और अवस्था से प्रत्यक्ष होगा। इसके लिए भी बाबा ने कहा है प्रत्यक्ष प्रमाण ही सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है अर्थात् जीवन-दर्शन ही सबसे बड़ा प्रमाण है। इसलिए गीता ज्ञानदाता को प्रत्यक्ष करने के लिए हमको गीता ज्ञान का स्वरूप बनना होगा, तब ही गीता-ज्ञान और गीता-ज्ञानदाता प्रत्यक्ष होगा होगा अर्थात् सिद्ध होगा। प्रत्यक्ष के लिए तो गायन है कि प्रत्यक्ष को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है, वह स्वत: सिद्ध होता है।

गीता ज्ञान का स्वरूप

नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप अर्थात् देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों से बुद्धि निकाल एक बाप की ही याद रहना। नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप में स्थित होने से हमारी अवस्था निर्भय, निर्मान, निरहंकारी होगी, जिससे हम निर्भयता पूर्वक ज्ञान को किसी के भी सामने स्पष्ट कर सकेंगे।

जब हम स्वयं आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे, देह और देह की दुनिया से रिश्ता छोड़ एक बाप दूसरा न कोई की स्थिति में स्थित होंगे तब ही हम औरों को भी आत्मिक स्वरूप में स्थित करके सच्चिदानन्दमय आत्मिक स्वरूप का अनुभव करा सकेंगे और परमात्मा से उनका नाता जुटा सकेंगे।

चेक करें -

हम "नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप" कहाँ तक बने हैं ?
देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों से हमारी बुद्धि नष्टोमोहा है और हमको एक बाप की अव्यभिचारी याद है ?

सर्व आत्माओं के प्रति हमारी रहम और कल्याण की भावना है ? हमारी भावना और वृत्ति में अहंकार, ईर्ष्या-द्वेष, घृणा आदि की तो कोई दुर्गन्ध नहीं है ? हमारे अन्दर किसी को हराने या नीचा दिखाने की भावना तो नहीं है ?
हमारी साक्षी स्थिति है ? हम अहंकार और हीनता दोनों से मुक्त हैं ?
हमारी स्थिति सदा सम्पन्न है ? क्योंकि आत्मिक स्वरूप सदा सम्पन्न है। ... ?

प्रत्यक्षता में हमारा योगदान

स्वरूप से, ज्ञान की धारणा से, सर्व आत्माओं के प्रति अपनत्व और कल्याण की भावना रखने से। प्राप्ति स्वरूप का नशा और खुशी (अहंकार युक्त नशा और खुशी नहीं) स्थिति में स्थित होकर मन्सा-वाचा-कर्मणा ईश्वरीय सेवा करके प्रत्यक्षता में अपना योगदान दे सकते हैं।

हमारी किसको हराने की भावना नहीं हो लेकिन कल्याण की भावना हो - जैसे दादी जानकी ने जादूगर यूरी गेलर के साथ हुए साक्षात्कार और प्रदर्शन में उसके प्रति उसके कल्याण भावना रखी तो वह स्वयं ही दादी जी के आगे झुक गया। ये धर्मक्षेत्र है, धर्म में अहंकार और हीनता कोई स्थान नहीं है। अहंकार वाला किसको झुका नहीं सकता, बल्कि उसको स्वयं ही झुकना पड़ता है।

१४. निश्चय और विश्व के अन्य धर्म, सिद्धान्त एवं दर्शन

बाबा ने जो सत्य ज्ञान दिया है, वही पूर्ण सत्य है और हर आत्मा के उत्थान का एकमात्र साधन है, यह हमारा निश्चय है और उसके अनुसार कर्म करना, उसका प्रचार-प्रसार करना हमारा परम धर्म है परन्तु उसके विपरीत किसी अन्य धर्म, सिद्धान्त वाला कोई अपनी असत्य बात कहता या हमारी मान्यता के विपरीत बात कहता है तो उसे हाँ-हाँ कहकर स्वीकार करना भी अपने ज्ञान में संशय ही है, अपने ज्ञान का डिस्क्रिगार्ड ही है। भल हमको किसी की बात या मान्यता का विरोध करके उसे ठेस नहीं पहुँचाना है परन्तु ऐसा भी नहीं कि हम उसकी गलत मान्यता को स्वीकार कर लें या ऐसा व्यवहार करें, जिससे उसकी अभिधारणा अपनी मान्यता के प्रति और पक्की हो, जिससे वह हमारे ज्ञान के महत्व को न

समझे। सभ्यता और दृढ़ निश्चय से उसके सामने अपनी सत्य बात को रखना है और उसके ऊपर विचार अर्थ छोड़ देना है। न उसके प्रति घृणा भाव लाना है और न ही उसकी बात को स्वीकार करके अपने ज्ञान का अपमान करना है। हमको किसी की ऐसी बातों को सुनकर हताश भी नहीं होना है क्योंकि ड्रामा की अनादि नूंध अनुसार सभी आत्मायें हमारी बात को मानेंगे भी नहीं। नियमानुसार सभी को अपने धर्म की मान्यतायें ही प्यारी लगेंगी और समय आने पर ही बाबा के ज्ञान को मानेंगे। इसलिए ड्रामा की इस अनादि नूँध को भी ध्यान में रखना चाहिए और किसी धर्म वाले के प्रति घृणा, वैर-विरोध आदि भी मन में नहीं लाना है। सत्यता को जानते हुए अहंकार और हीनता दोनों को जन्म नहीं देना है।

* धर्मपिताओं का काम है श्रेष्ठ धारणाओं का ज्ञान देकर धर्म-मठ-पंथ की स्थापना करना परन्तु सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त, आत्मा-परमात्मा, कर्म की गुह्य गति, योग आदि का सत्य ज्ञान देकर आत्मा और सृष्टि को पावन बनाना, नया बनाना ज्ञान-सागर परमपिता परमात्मा का ही काम है। परमात्मा के द्वारा दिये सत्य ज्ञान को धारण करके ही अन्य धर्म की आत्मायें भी अपने धर्म की श्रेष्ठ धारणाओं को पालन करने में समर्थ होती हैं, जिसके परिणाम स्वरूप वे अपने धर्म में ऊंच पद पाती हैं।

विभिन्न धर्म और उनकी स्थापना

बाप आकर आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं, साथ ही अन्य धर्मों की आत्माओं का भी उद्धार करते हैं, इसलिए परमात्मा को सर्व का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता कहा जाता है। परमात्मा ही विभिन्न धर्मों की का राज़ भी समझाते हैं। जैसे बाप आकर परकाया प्रवेश करके आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते, वैसे अन्य धर्म स्थापक भी परकाया प्रवेश करके ही अपने धर्म की स्थापना करते हैं और फिर जन्म लेकर अपने धर्म की पालना करते हैं परन्तु परमात्मा पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। वह स्थापना करके घर वापस चले जाते हैं।

अभी बाबा से ज्ञान मिला है कि सबसे पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा द्वारा की है। इसको ही सनातन धर्म कहा जाता है क्योंकि इस धर्म की आत्मायें सारे कल्प इस विश्व-नाटक की स्टेज पर रहती हैं। पहले देवी-देवता स्वरूप में, बाद में हिन्दू धर्म के रूप में और संगम पर परमात्मा आकर इसकी कलम लगाते हैं, ब्राह्मण कुल के रूप में। अन्य धर्म द्वापर से आना आरम्भ होते हैं, उनकी नई कलम नहीं लगती लेकिन कल्प वृक्ष के आदि सनातन देवी-देवता धर्म रूपी तने से ही शाखायें-प्रशाखायें

निकलती रहती हैं क्योंकि उनके धर्म-पिता भी पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्मा के शरीर में ही प्रवेश करते हैं और पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्मायें ही उस धर्म में परिवर्तित होकर उसमें वृद्धि के निमित्त बनती हैं। बाद में उनके धर्म की आत्मायें आती जाती हैं। इसीलिए बाबा ने कहा है कि तुम सभी आत्माओं के पूर्वज हो और ब्रह्मा को ग्रेट-ग्रेट ग्रेण्ड फादर कहा जाता है। बाबा ने कहा है - तुम ही सर्व आत्माओं के कल्याण के निमित्त हो, इसलिए तुम्हारी सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होनी चाहिए।

इसी पूर्वजपन के संस्कार के कारण सनातन धर्म वाले किसी शासक ने किसी धर्म वाले के ऊपर आक्रमण करके अपने राज्य के विस्तार करने का पुरुषार्थ नहीं किया और इस धर्म वालों की सभी धर्म की आत्माओं के प्रति सहानुभूति रही है। इस सत्यता को जानने और निश्चय करने से ही हमारे अन्दर विश्व-बन्धुत्व की भावना जाग्रत होती है, पूर्वजपन के संस्कार जाग्रत होते हैं, जिससे सभी के प्रति स्वत: ही स्नेह की भावना जाग्रत होती है। जब हमारे अन्दर सबके प्रति प्रेम जाग्रत होता है तो उनके अन्दर भी हमारे प्रति प्रेम जाग्रत होता है। सबके प्रति प्रेम होना और सबका हमारे प्रति प्रेम होना जीवन की बहुत बड़ी विजय है और सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

"विश्व का परिवर्तन करने के लिए पहले स्वयं का परिवर्तन करो। हर संकल्प में स्मृति रहे कि विश्व का कल्याण हो।"

अ.बापदादा 6.1.79 पार्टी 1

अभी जब देवी-देवता धर्म की पुन: स्थापना हो रही है तो आदि सनातन धर्म की आत्मायें जो अन्य धर्मों में परिवर्तित हो गई हैं, वे सभी आत्मायें पुन: अपने मूल धर्म में आ जायेंगी। इस निश्चय और भावना से सभी धर्म वालों को बाप का सन्देश देना है, जिससे हमारे आदि सनातन धर्म की आत्मायें पुन: अपने धर्म में आ जायें और उन धर्म वंश की आत्माओं का भी कल्याण हो।।

"जैसे यह देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला प्रजापिता ब्रह्मा है, अभी झाड़ के एण्ड (End) में खड़ा है। क्राइस्ट भी क्रिश्चियन धर्म का प्रजापिता है ना। जैसे यह प्रजापिता ब्रह्मा है वैसे वह प्रजापिता क्राइस्ट, प्रजापिता बुद्ध ... यह सब धर्म की स्थापना करने वाले हैं।... अन्त में यह भी आकर समझेंगे। पिछाड़ी में सलाम करने आयेंगे जरूर। उन्हों को भी कहेंगे बेहद के बाप को याद करो। बेहद का बाप सबके लिए कहते हैं - देह सहित देह के सब धर्मों को छोड़ अपने को अशरीरी समझ बाप को याद करो।"

सा.बाबा 25.12.03 रिवा.

१५. *निश्चय और संकल्प शक्ति*

संकल्प शक्ति एक महान शक्ति है, जिससे असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं। संकल्प मानव जीवन की सफलता और असफलता का मूलाधार है। संकल्प का आधार मनुष्य का अपना निश्चय है। जैसा निश्चय होता है, उसके अनुसार ही संकल्प होता है और वह संकल्प जीवन के हर क्षेत्र में प्रभावित होता है। संकल्प की दृढ़ता कर्ता के निश्चय पर आधारित होती है। निश्चय की दृढ़ता उसके ज्ञान और पूर्व अनुभव पर आधारित होती है। बाबा ने हमको रचता और रचना का स्पष्ट ज्ञान दिया है और हमको सभी बातों का स्पष्ट अनुभव कराया है और ब्रह्मा बाबा के द्वारा करके भी दिखाया है। बाबा को निश्चय हो गया कि मैं ही नारायण था और मैं ही बनूँगा, तो उनके संकल्प और कर्म भी उस अनुरूप हो गये और उन्होंने अपने पुरुषार्थ से वैसा बनकर दिखाया, जो उदाहरण हमारे सामने है। हम आत्माओं को भी इस श्रेष्ठ शक्ति को पहचान कर,अनुभव कर उसके द्वारा श्रेष्ठ कार्य करके अपने इस जीवन को सफल करना है।

* हमको अपने संकल्प के महत्व का अनुभव और निश्चय होना चाहिए। हमारा हर संकल्प विश्व के नव-निर्माण में सहयोगी भी है तो विघ्नरूप भी है। हमारे संकल्प के आधार पर ही हमारे भाग्य का निर्माण होता है। संकल्प के आधार पर कर्म होते हैं और कर्मों के आधार पर हमारा खाता जमा भी होता है तो ना (-) भी होता है।

संकल्प शक्ति का मानव-शरीर पर भी गहरा प्रभाव है। संकल्प के आधार पर ही अनेक दैहिक बीमारियों का जन्म भी होता है तो निदान भी होता है। संकल्प शक्ति के प्रभाव के कारण ही गोवा के गिरजाघर में रखे सेन्ट जेवियर के पुतले को देखने, वहाँ दान करने वालों की मनोकामना, दैहिक रोगों का कुछ हद तक निदान होता है। संकल्प की दृढ़ता के आधार पर ही मन्दिरों या तीर्थ स्थानों पर मान्यता रखने वालों की मनोकामनायें पूर्ण हो जाती है। संकल्प शक्ति से ही अनेक जन्त्र-मन्त्र वाले भी अनेक मानसिक और शारीरिक रोगों का निदान करते हैं।

१६. *निश्चय बुद्धि - उपभोग एवं उपयोग*

इस विश्व में हर आत्मा के लिए क्या और कितना उपभोग एवं उपयोग करना है, वह निश्चित है और उसका विधि-विधान भी निश्चित है। यदि कोई उससे अधिक उपभोग एवं उपयोग करता है तो वह दूसरे के हिस्से का उपभोग एवं उपयोग करता है और उसका उसके साथ हिसाब-किताब बनता है, जिसको समयानुसार उसको चुक्ता करना ही पड़ता है। आवश्यकता

से अधिक उपभोग करने से तत्वों के साथ हिसाब-किताब बनता है।

वास्तव में और प्रकृति के विधि-विधान अनुसार मनुष्य को उतना ही उपभोग एवं उपयोग करने का अधिकार है, जिससे उसकी कार्य क्षमता बढ़ती है या कार्य क्षमता स्थिर रहती है या देश-काल-परिस्थिति-पद के अनुसार अति आवश्यक है। उसके अतिरिक्त जो भी उपभोग एवं उपयोग करते हैं, वह आत्मा पर बोझा है अर्थात् उसका भोग आत्मा को कर्मभोग के रूप में भोगना ही पड़ता है। सृष्टि के इस विधि-विधान को जानकर, उस पर निश्चय करके उस अनुसार साधनों का उपभोग एवं उपयोग करना ही ज्ञानी आत्मा का कर्तव्य है।

भले किसी आत्मा के पुरुषार्थ के अनुसार कितना भी धन-सम्पत्ति हो परन्तु इस सत्य को भी याद रखना कि हम इस विश्व-नाटक में ट्रस्टी होकर पार्ट बजा रहे हैं, इसलिए साक्षी होकर इसे देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाने और उस अनुसार उपभोग एवं उपयोग करने वाला ही इसका सच्चा सुख अनुभव कर सकता है। अनेक राजाओं के ऐसे उदाहरण हैं, जिनके पास विपुल सम्पत्ति थी फिर भी वे त्यागी-वैरागी जीवन में ही रहे। ब्रह्मा बाबा का जीवन भी हमारे सामने है और बाबा ने कहा भी है कि तुम्हारा जीवन न बहुत ऊंचा हो और न बहुत नीचा, देवतायें बहुत कम खाते हैं आदि-आदि।

१७. *निश्चय बुद्धि - योगबल से जन्म*

बाबा ने बताया है कि सतयुग में योगबल से जन्म होता है, शास्त्रों में भी इसके विषय में अनेक उपाख्यान हैं, मेरी से क्राइस्ट का जन्म होने की बात भी ऐसी ही है। ये तो रही सतयुग में योगबल से जन्म की बात परन्तु आध्यात्मिक उन्नति का पुरुषार्थ बिना ब्रह्मचर्य के सम्भव नहीं है। सतयुग के विषय में कोई संकल्प न होते हुए भी आध्यात्मिक जीवन के जो महान पुरुषार्थी हुए हैं, उन्होंने ब्रह्मचर्य की पालना अवश्य की है। सन्यासी, जैन साधु-साध्वी, नन्स आदि इसके जाग्रत उदाहरण हैं। इसी आधार पर कन्याओं के जीवन को श्रेष्ठ माना जाता है, मन्दिरों में विषय-भोग की परहेज रखी जाती है। सन्यासियों के जीवन का महत्व भी इसी आधार पर है। योगबल से जन्म देने की शक्ति धारण करने का आधार वर्तमान संगमयुग की योग तपस्या ही है और उस योग तपस्या का मूलाधार ब्रह्मचर्य की धारणा ही है।

"वहाँ कोई तमोगुणी जानवर होता ही नहीं है। तुमको मालूम है कि मोर-मोरनी विकार से बच्चा पैदा नहीं करते हैं। उनके आंसू गिरते हैं तो उनको धारण करती है। नेशनल बर्ड कहते हैं। वहाँ विकार का नाम नहीं। उनका पंख, पहला नम्बर प्रिन्स है, उनके माथे पर लगाते हैं तो उसका कोई तो रहस्य होगा ना। तो यह सब बातें बाप रिफाइन कर समझाते हैं। वहाँ बच्चे

कैसे पैदा होते हैं, वह भी तुम जानते हो। प्यार से भी हो सकता है ना। वहाँ भ्रष्टाचार बिल्कुल नहीं होता।" सा.बाबा 30.9.69 रिवा.

"मोर डेल का भी मिसाल देते हैं। आंखों से आंसू गिरने से गर्भ होता है। अच्छा यह पपीता का झाड़ है, उसका भी एक मेल का झाड़, एक फीमेल का झाड़ एक-दो के बाजू में होने से फल निकलता है। यह भी वण्डर है ना। एक-दो के बाजू में झाड़ है तो बच्चा हो जाता है, यह भला कैसे होता है! बाजू में खड़े हो देखते हैं और बच्चा हो जाता है। जब जड़ जैसी चीज में भी ऐसे है तो चेतन में क्या नहीं हो सकता है? यह भी डिटेल में तुम बच्चों को आगे समझ में आ जायेगा।" सा.बाबा 23.10.71 रिवा.

"सतयुग में विष से जन्म नहीं होता। नहीं तो उन्हों को निर्विकारी कह न सकें।"

सा.बाबा 22.1.72 रिवा.

"वह तो वाइसलेस दुनिया थी। वहाँ विकारी बनना नहीं होता। कहते हैं तब बच्चे कैसे पैदा होंगे। अरे वह तो जो रसम होगी, वैसे होंगे। बच्चे तो जरूर पैदा होते हैं। परन्तु वह तो है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। समझो योग बल से पैदा होते हैं। पहले साक्षात्कार होता है। मुख का प्यार होता है। इसलिए कहा जाता है मुखवंशावली। यह बड़ी गुह्य बातें हैं। नये को इन बातों में नहीं लाना है।" सा.बाबा 28.11.73 रिवा.

१८. निश्चय बुद्धि - जीवन की पहेली का हल

इस जगत में न कोई अपना है और न कोई पराया, न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है, न कोई कुछ दे सकता है और न कोई कुछ ले सकता है, न किसी ने कुछ दिया है और न किसी ने हमारा कुछ लिया है, दाता एक बाप है, उसने जो कुछ दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। बाबा ने इस सत्य का ज्ञान दिया है कि बच्चे, तुम देह नहीं आत्मा हो और परमधाम के रहने वाले हो। संसार एक नाटक है, जहाँ आकर तुम पार्ट बजा रहे हो। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर परमशान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो, साक्षी होकर विश्व नाटक को देखते और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। इस जगत में जो हुआ, वह बच नहीं सकता और जो नहीं हुआ है, वह हो नहीं सकता परन्तु जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि कर्म-फल-कर्म पर आधारित ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और परम कल्याणकारी है।

इस विश्व-नाटक में हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और उसका

फल पा रही है। आत्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है।

पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्थिति और आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ पर सर्व प्राप्तियां स्वत: होंगी, सर्व सुख होंगे, इच्छामात्रम् अविद्या होगी। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होगी, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होगी। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होगा। जीवात्मा की शुभ में अभिरुचि, अशुभ में अरुचि स्वत: होगी, समय पर कृत्य का संकल्प आपही उत्पन्न होगा, इसलिए सोचने की भी आवश्यकता नहीं। सर्व आत्माओं के प्रति शुभ-भावना शुभ-कामना होगी, परिणाम स्वरूप दूसरों की भी हमारे प्रति शुभ-भावना शुभ-कामना अवश्य ही होगी, इसलिए जीवन सदा निर्भय होगा।

इस विश्व-नाटक में न कोई अपना है और न कोई पराया है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया हमारा होगा। यहाँ न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। जो आज मित्र का पार्ट बजा रहा है, वही कल शत्रु का पार्ट बजा सकता है और शत्रु मित्र का पार्ट बजा सकता है। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है, न किसी ने कुछ दिया है और न किसी ने हमारा कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रहीं है, दाता एक बाप है, उसने जो कुछ दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। अपने अनन्त स्वरूप में स्थित होकर परमशान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा करते हुए परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखते और पार्ट बजाते हुए परमशान्ति का अनुभव करो। परम कल्याणमय ये विश्व-नाटक कल्प-कल्प पुनरावृत्त होता है, इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं। निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

इस सत्य को जानने, अनुभव करने और निश्चय वाला ही आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास कर सकता है और वही सेकेण्ड के अन्तिम पेपर में पास होगा अर्थात् जीवन की अन्तिम विजय को प्राप्त कर सकता है।

१९. *निश्चयबुद्धि और निर्भय, निश्चिन्त, अटल-अचल स्थिति*

जब आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का ज्ञान मिल जाता है और उसमें निश्चय हो जाता है तो आत्मा निर्भय, निश्चिन्त हो जाती है और अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए उसका पुरुषार्थ सहज ही चलने लगता है।

"जब विजय निश्चित है तो निश्चिन्त रहेगा ना। कोई भी बात में चिन्ता की रेखा दिखाई नहीं देगी। ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी, निश्चित और सदा निश्चिन्त रहने वाले हो ? ...बाप में निश्चयबुद्धि के साथ-साथ अपने आप में भी निश्चयबुद्धि होने चाहिए और साथ-साथ जो भी ड्रामा के हर

सेकण्ड की एक्ट रिपीट हो रही है, उसमें भी 100 प्रतिशत निश्चयबुद्धि चाहिए - इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि।"

अ.बापदादा 27.2.72

"कमजोर संकल्प करना अर्थात् स्वयं में संशय का संकल्प... कमजोरियों के रूप में एक भूत के साथ और माया के भूतों का आह्वान करते हो अथवा बुद्धि में स्थान देते हो।... भय के भूत को भी जब तक बुद्धि से नहीं निकाला तब तक इस भय के भूत के साथ बाप की याद बुद्धि में कैसे रह सकती है? ... निश्चयबुद्धि विजयन्ति।"

अ.बापदादा 4.7.74

"कितने भी संकल्प-विकल्प, तूफान आयें, सारी रात संकल्पों में नींद फिट जाये तो भी डरना नहीं है। बहादुर रहना है। ... युद्ध का मैदान है ना तो ये सब आयेंगे जरूर। तुम युद्ध करते हो माया को जीतने के लिए। बाकी इसमें कोई स्वांस आदि बन्द नहीं करना है। ... बहुत बच्चे हैं जो युद्ध करते नहीं हैं। समझा जाता है राजधानी स्थापन हो रही है तो नापास भी बहुत होंगे। गरीब प्रजा भी चाहिए। भल वहाँ दुख नहीं होता है परन्तु गरीब और साहूकार तो हर हालत में होंगे।"

सा.बाबा 18.8.04 रिवा.

"ऐसा निश्चयबुद्धि जो पाँव भी कोई हिला न सके।... ऐसे निश्चयबुद्धि सदा निश्चिन्त रहते हैं। अगर जरा भी कोई चिन्ता है तो निश्चय में कमी है। कभी किसी बात में थोड़ी भी चिन्ता हो जाती है, उसका कारण क्या है? जरूर किसी न किसी बात के निश्चय में कमी है। चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी है, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी है, चाहे बाप में निश्चय की कमी है। तीनों ही प्रकार के निश्चय में जरा भी कमी है तो निश्चिन्त नहीं रह सकते। सबसे बड़ी बीमारी है चिन्ता। ... ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है।"

अ.बापदादा 13.01.86 पार्टी I

"निश्चय की निशानी है - निश्चित विजयी। ... जब भी किसी कार्य में विजय प्राप्त नहीं होती है तो समझ लो कि निश्चय की कमी है। ... निश्चयबुद्धि की निशानी जैसे निश्चित विजय है, वैसे ही वे सदा निश्चिन्त होंगे।"

अ.बापदादा 9.1.95

"निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चिन्त। ... यदि निश्चिन्त नहीं होंगे तो ब्राह्मण जीवन के अन्तकाल का जो लक्ष्य वर्णन करते हो, वह सहज कैसे होगा और अन्त तक ये व्यर्थ संकल्प भूतों के, यमदूतों के रूप में आयेंगे। और कोई यमदूत नहीं आते हैं। ... ऐसे ही किसी के लिए कहते विमान आयेंगे लेकिन विमान अर्थात् उड़ती कला का अनुभव होगा।"

अ.बापदादा 9.1.95

"कमजोर संकल्प करना अर्थात् स्वयं में संशय का संकल्प... कमजोरियों के रूप में एक

भूत के साथ और माया के भूतों का आह्वान करते हो अथवा बुद्धि में स्थान देते हो।... भय के भूत को भी जब तक बुद्धि से नहीं निकाला तब तक इस भूत के साथ बाप की याद बुद्धि में कैसे रह सकती है? ... निश्चयबुद्धि विजयन्ति।" अ.बापदादा 4.7.74

"सच्चे दिल से, निस्वार्थ भाव से सेवा करनी है। बाबा कहते हैं ऐसे बच्चों की हुण्डी मैं सकारता हूँ। यह भी ड्रामा में नूँध है। ... मांगो कोई से भी नहीं, मांगने से मरना भला। आप ही तुम्हारे पास आ जायेगा। उसमें ताकत रहेगी।"

सा.बाबा 12.5.04 रिवा.

"यादगार है ना कि रावण सम्प्रदाय ने पांव हिलाने की कोशिश की लेकिन जरा भी हिला न सके। ... यह मेरा ही यादगार है, ऐसा निश्चय बुद्धि बनने से विजय अवश्य प्राप्त होगी।"

अ.बापदादा 24.5.71

"कितने भी संकल्प-विकल्प, तूफान आयें, सारी रात संकल्पों में नींद फिट जाये तो भी डरना नहीं है। बहादुर रहना है।... युद्ध का मैदान है ना तो ये सब आयेंगे जरूर। तुम युद्ध करते हो माया को जीतने के लिए। बाकी इसमें कोई श्वांस आदि बन्द नहीं करना है। ... बहुत बच्चे हैं जो युद्ध करते नहीं हैं। समझा जाता है राजधानी स्थापन हो रही है तो नापास भी बहुत होंगे। गरीब प्रजा भी चाहिए। भल वहाँ दुख नहीं होता है परन्तु गरीब और साहूकार तो हर हालत में होंगे।" सा.बाबा 18.8.04 रिवा.

"ऐसा निश्चयबुद्धि जो पाँव भी कोई हिला न सके। ... ऐसे निश्चयबुद्धि सदा निश्चिन्त रहते हैं। अगर ज़रा भी कोई चिन्ता है तो निश्चय में कमी है। कभी किसी बात में थोड़ी भी चिन्ता हो जाती है, उसका कारण क्या है? जरूर किसी न किसी बात के निश्चय में कमी है। चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी है, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी है, चाहे बाप में निश्चय की कमी है। तीनों ही प्रकार के निश्चय में ज़रा भी कमी है तो निश्चिन्त नहीं रह सकते। सबसे बड़ी बीमारी है चिन्ता। ... ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है।"

अ.बापदादा 13.01.86 पार्टी I

"जो निश्चयबुद्धि हैं, उनकी बुद्धि में यह निश्चित रहता है कि मैं विजयी बना था, बनेंगे और सदा ही बनेंगे। ... बहुत काल का अभ्यास अन्त में मदद करेगा।"

अ.बापदादा 15.11.89 बाम्बे ग्रुप

"चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है - ऐसे निमित्त बनकर करने वाले बेपरवाह बादशाह होते हैं। ... बेपरवाह बादशाह को सदा ही यह निश्चय रहता है कि जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होने वाला है वह और भी अच्छा होगा क्योंकि कराने वाला अच्छे ते अच्छा

है। इसको कहते हैं - निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा।"

अ.बापदादा 1.12.89

"दुनिया वाले तो कहते - खाली हाथ आये और खाली हाथ जाना है।... आप फलक से कहते हो - हम आत्मायें बाप द्वारा मिले हुए खज़ानों से भरपूर होकर जायेंगे और अनेक जन्मों तक भरपूर रहेंगे। ... बाप के दिल-तख्त के आगे यह तख्त भी क्या है। ... तुम अभी के भी बेफिकर बादशाह और भविष्य में भी राजाई प्राप्त करते हो।"

अ.बापदादा 25.12.89

"सेवा भी करावनहार बाप करा रहे हैं और कराते रहेंगे ... वह हमारे द्वारा करा रहे हैं - इससे बेफिकर हो जायेंगे। निश्चय है कि यह श्रेष्ठ कार्य होना ही है वा हुआ ही पड़ा है। इसलिए निश्चयबुद्धि निश्चिन्त, बेफिकर रहते हैं। यह तो सिर्फ बच्चों को बिज़ी रखने के लिए सेवा का एक खेल करा रहे हैं। बच्चों को निमित्त बनाये वर्तमान और भविष्य सेवा के फल का अधिकारी बना रहे हैं।"

अ.बापदादा 25.12.89

२०. निश्चय बुद्धि और मनोविज्ञान एवं दार्शनिक ज्ञान

आत्मा एक स्वतन्त्र सत्ता है, मन उसकी एक कार्य शक्ति है। ज्ञान सागर परमात्मा के द्वारा दिया आध्यात्मिक ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान है और मनोविज्ञान आध्यात्मिक ज्ञान का एक अंशमात्र है। परमात्मा अध्यात्मिक ज्ञान देता है, जिसमें मनोविज्ञान समाया हुआ है। दुनिया में जो मनोविज्ञान पढ़ते हैं, उसका अध्यात्मिक ज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि कोई भी मनुष्य आत्मा-परमात्मा के विषय में यथार्थ रीति नहीं जानता है, इसलिए उसके अध्ययन से किसी भी आत्मा की चढ़ती कला न हुई है और न ही हो सकती है। वास्तव में वह मनोविज्ञान भी नहीं है क्योंकि उसमें भी मन का ही यथार्थ ज्ञान नहीं है तो वह मनोविज्ञान भी कैसे कहा जायेगा। दुनिया का मनोविज्ञान तो मन और मन की शक्तियों के विषय में अनुमान ही है, इसलिए वह मनोविज्ञान भी आत्मा और विश्व की उतरती कला का ही निमित्त बनता है और बना है।

जैसे आध्यात्मिक ज्ञान में मनोविज्ञान समाया हुआ है, वैसे आध्यात्मिक ज्ञान में सभी दर्शनों का सार समाया हुआ है। इसीलिए कहते हैं परमात्मा आकर सभी वेदों-शास्त्रों का सार सुनाते हैं। दर्शन में चेतन आत्मा के विषय में खोज या अनुमान के आधार पर वर्णन होता है, यथार्थ का वर्णन नहीं होता है। आत्मा की चेतनता और विश्व-नाटक के विषय में यथार्थ ज्ञान तो परमात्मा ही आकर देते हैं, जिससे आत्मा और विश्व की चढ़ती कला होती है। परमात्मा जो ज्ञान देते हैं, वह सभी दर्शनों का सार है अथवा यह कहें कि परमात्मा जो ज्ञान देते हैं, उसके

अंशमात्र पर ही सभी दर्शन आधारित हैं, समग्र रूप में नहीं। समग्र ज्ञान तो ज्ञान सागर परमात्मा ही देते हैं, जिसका कुछ अंश भक्ति मार्ग में विभिन्न दार्शनिक अंश रूप में वर्णन करते हैं। उसमें भी यथार्थता का अभाव ही होता है।

इसलिए यही कहा जायेगा कि दुनिया के जो भी मनोविज्ञान के विषय में वर्णन हैं या दर्शन हैं, उन सबसे आत्मा की उतरती कला ही होती है, परमात्मा के यथार्थ ज्ञान से चढ़ती कला होती है, इसलिए किसी भी मनोविज्ञान के शास्त्र या दर्शन शास्त्र के पढ़ने से न कोई लाभ हुआ है और न हो सकता है। हाँ परमात्मा के यथार्थ ज्ञान की अनुपस्थिति में वे आत्मा को कुछ राहत अवश्य देते हैं।

निश्चय और चिन्तन /
निश्चयबुद्धि और ज्ञान, गुण-शक्तियों की धारणा

निश्चय के अनुसार चिन्तन होता है और जैसा चिन्तन होता है, वैसी धारणा बनती है। जब निश्चय होगा कि हम ही देवता थे और हम ही बनेंगे तो दैवी गुणों की धारणा स्वत: और सहज होती जायेगी।

ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा का आधार निश्चय है। जैसा आत्मा का निश्चय होता है, उस अनुसार उसमें ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों, संस्कारों और दैवी गुण, शक्तियों, कर्म-संस्कारों की धारणा होती है। यदि पुरुषार्थ करते भी जीवन में ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा नहीं होती है तो जरूर निश्चय में कोई न कोई कमी है। यथार्थ धारणा के लिए विचार-सागर मन्थन करके उस कमी को परखना और दूर अति आवश्यक है।

निश्चयबुद्धि और दृष्टि-वृत्ति, स्मृति

जैसा निश्चय होता है, उसके अनुसार ही दृष्टि-वृत्ति और स्मृति होती है, जिसका प्रभाव जड़-जंगम और चेतन तीनों पर पड़ती है। इसलिए जीवन में अभीष्ट उन्नति करने के लिए इन सभी बातों पर पूरा ध्यान रखना चाहिए।

आध्यात्मिक प्रश्नावली

विचारणीय प्रश्न और उनके विषय में विचारणीय तथ्य

मनुष्य के मन में प्रश्न दो प्रकार से उठते हैं। एक प्रश्न होता है किसी बात के विषय में संशय से और एक प्रश्न होता है, किसी बात के रहस्य को जानने के दृष्टिकोण से। जो संशय से प्रश्न उठता है, वह पतन की ओर ले जाता है और जो जानने के उद्देश्य से प्रश्न उठता है, वह उत्थान का कारण बनता है। जानने के उद्देश्य से प्रश्न उठना अच्छा है। यदि कोई बात समझते नहीं हैं और पूछेंगे भी नहीं तो वह अन्धश्रृद्धा हो जाती है और वह कभी न कभी धोखा दे सकती है। यहाँ ज्ञान के सम्बन्ध में कुछ विचारणीय प्रश्न लिखे गये हैं, जिनके विषय में विचार करना-जानना आवश्यक है।

किसी प्रश्न का उत्तर देते, किसी बात की सत्यता के सम्बन्ध में घोषणा करते या लिखते तो वह साइन्टिफिक अर्थात् प्रकृति के नियमानुसार हो, विवेकसंगत हो और बाबा के महावाक्यों के अनुसार भी हो अर्थात् तीनों से प्रमाणित हो तब ही उसको यथार्थ सत्य माना जा सकता है। जैसे योगबल की सन्तान की बात बाबा ने कही है तो उसके लिए बाबा ने पपीते का, मोर का प्रमाण भी दिया है, शास्त्रों में भी इसका वर्णन है और बुद्धि भी समझती है कि स्वर्ग और नर्क के बीच कोई सीमा रेखा तो अवश्य ही होगी, जो स्वर्ग को नर्क से अलग करती होगी। जीवात्मा के नेत्रों से, मुख से, स्पर्श से ऐसे सूक्ष्म परमाणु प्रवाहित होते ही हैं, जो एक-दूसरे पर प्रभावित होते हैं। उसी अनुसार ये योगबल से सन्तानोत्पत्ति का कार्य भी सम्भव है। स्वर्ग और नर्क के मध्य यही मुख्य सीमा रेखा है।

Q. निश्चय की परख क्या है?

विजय ही निश्चय की परख है, इसीलिए निश्चयबुद्धि विजयन्ति और संशयबुद्धि विनश्यन्ति गाया हुआ है अर्थात् जिसको आत्मा में, परमात्मा में और विश्व-नाटक में पूरा निश्चय हो जाता है, वह परमात्मा की श्रीमत पर अवश्य चलता है और जो श्रीमत पर चलता है, उसकी कब स्वप्न में भी हार नहीं हो सकती। इस प्रकार हम देखें तो हर कार्य में विजय ही आत्मा में, विश्व-नाटक में और परमात्मा में और परमात्मा की श्रीमत में निश्चय की पहचान है, कसौटी है, जिससे हम सहज ही समझ सकते हैं कि हम कहाँ तक निश्चयबुद्धि हैं। निश्चयबुद्धि की विजय निश्चित है। विजय होगी या नहीं होगी, होगी तो कितनी होगी, कैसे होगी, उसके लिए इस संकल्प का भी प्रश्न नहीं है। इस बात का संकल्प उठना भी संशय है और संशयबुद्धि विनश्यन्ति कहा है अर्थात् उसकी हार ही होती है। विजय शत प्रतिशत निश्चित है।

Q. समर्पित भाई-बहनों में असुरक्षा की भावना क्यों जाग्रत हो रही है ? समर्पित भाई-बहनों के द्वारा समर्पित जीवन के विपरीत कर्म क्यों हो रहे हैं, उसका कारण क्या है ? उनका लौकिक सम्बन्धियों से सम्पर्क बढ़ाने का कारण क्या है ? कभी-कभी तो समर्पित भाई-बहनों के द्वारा जीवघात जैसे दिल दहलाने वाले समाचार भी सुनने में आते हैं तो इन सबका कारण क्या है ?

1. ज्ञान-योग की कमी अर्थात् विश्व-नाटक और कर्म के विधि-विधान का यथार्थ ज्ञान और अनुभव की कमी और ज्ञान-योग से अनुभव होने वाले अतीन्द्रिय सुख के अनुभव की कमी, जिससे इन्द्रीय सुखों का आकर्षण बढ़ जाना।

2. वर्तमान समय समर्पित भाई-बहनों के परस्पर स्टेण्डर्ड, साधनों में जो अन्तर (Veriation) बढ़ता जा रहा है, जो असन्तोष का एक कारण है। जिसके फलस्वरूप परस्पर व्यवहार में भी परिवर्तन आ रहा है, जो समर्पित भाई-बहनों में हीनता या अहंकार की भावना जाग्रत कर रहा है और उनको अकृत्य करने की ओर प्रेरित कर रहा है।

3. समर्पित जीवन के विधि-विधान, उसके महत्व और परमात्मा के सहयोग से अनभिज्ञता या उसमें संशय का आना या उसके अनुभव में कमी अर्थात् यथार्थ ज्ञान की कमी।

4. ब्राह्मण जीवन के लक्ष्य अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् निर्संकल्प-निर्विकल्प स्थिति से भटक जाना या उसके महत्व और देव-दुर्लभ सुखद अनुभव की कमी।

5. किसी भाई-बहन को जो 10-15 साल समर्पित जीवन में रहा और उसको घर वापस भेजा गया, तो उसके विषय में यथार्थता को न जानकर, उसको देखकर विचलित हो जाना।

इस प्रकार की भावना जाग्रत होने से समर्पित भाई-बहनें जो कर्म कर रहे हैं, उनको देखकर, सुनकर प्रश्न उठता है कि -

क्या वे जो कर रहे हैं, उससे जीवन के अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति होगी ? क्या वे जो धन इकट्ठा कर रहे हैं, वह उनको वह सुरक्षा देगा, जो परमात्मा और यज्ञ नहीं दे सकता है ?

क्या लौकिक सम्बन्धी वह सुख दे सकेंगे, जो परमात्मा दे रहा है और देने का वायदा है ? यदि देंगे तो पहले उनको छोड़कर क्यों आये थे ?

क्या हमको परमात्मा के सहयोग पर निश्चय है और यदि परमात्मा हमारा सहयोग करे या ड्रामा में उसकी नूँध हो तो क्या कोई आत्मा उससे वंचित कर सकती है ?

क्या वे इन सब कार्यों को करके अपने अभीष्ट लक्ष्य मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव कर रहे हैं या कर सकेंगे, जो वर्तमान समय बापदादा हर मुरली के अन्त में ड्रिल कराकर अनुभव कराता है ?

इन सब बातों पर विचार करने के बाद यही निष्कर्ष निकलता है कि यह सब

आत्म-विश्वास की कमी, विश्व-नाटक और कर्म के विधि-विधान के ज्ञान की कमी, सर्वशक्तिवान परमात्मा के गुण-शक्तियों के यथार्थ ज्ञान, उसके अनुभव और उसमें यथार्थ निश्चय की कमी है, जो हर आत्मा को स्वयं ही मनन-चिन्तन द्वारा पूरी करनी है।

Q. सृष्टि के नियमानुसार हर चीज सतोप्रधान, सतो, रजो, तमोप्रधानता में आती ही है परन्तु संगमयुग विशेष युग है, उसको ध्यान में रखते हुए यज्ञ की सतोप्रधान अवस्था किसको कहें अर्थात् यज्ञ की आदि स्थापना के समय को या वर्तमान समय की स्थिति को या अन्त की स्थिति को?

वास्तव में यज्ञ की सतोप्रधान स्थिति तो अन्त की ही कही जायेगी, जब यज्ञ की सम्पन्नता और समाप्ति होगी परन्तु हर आत्मा के व्यक्तिगत पुरुषार्थ की स्थिति अलग है क्योंकि हर आत्मा अभी सतयुग से कलियुग के अन्त तक के लिए पुरुषार्थ करती है, इसलिए पुरुषार्थ में दशायें बदलती रहती हैं।

Q. योग से विकर्म विनाश होते हैं? यदि होते हैं तो उसका स्वरूप क्या होता है, उसकी पहचान क्या है?

Events can't be changed, but we can change our attitude towards events.

2. योग से देहाभिमान मिटता है और देही-अभिमानी स्थिति बनती है, जिससे आत्मा देह से न्यारी स्थिति में स्थित होकर स्वयं को हल्का अनुभव करती है, जीवन में राहत अनुभव करती है। कर्मभोग होते भी कर्मभोग की वेदना से मुक्त होती है या वेदना हल्की हो जाती है। देहाभिमान का मिटना और आत्माभिमानी स्थिति पक्की होना ही विकर्म विनाश या पापों का खत्म होना है।

Q. संस्कार कितने प्रकार के होते हैं? क्या नैसर्गिक संस्कारों में परिवर्तन सम्भव है?

नैसर्गिक अर्थात् मूल संस्कार, जो परिवर्तन नहीं होते हैं। दूसरे हैं व्यवहारिक संस्कार, जो परिवर्तनशील होते हैं। नैसर्गिक संस्कार अनादि-अविनाशी होते हैं, उनमें परिवर्तन नहीं हो सकता है और यदि अपवाद के रूप में होता भी है तो वह ड्रामानुसार ही कहेंगे। जैसे भिन्न2 योनियों की आत्माओं के अपने-अपने संस्कार-स्वभाव हैं, उनकी अपनी प्रजनन क्रियायें हैं, जिनमें परिवर्तन सम्भव नहीं है। ऐसे ही एक ही योनि में नर और मादा के अपने-अपने नैसर्गिक संस्कार हैं, उनमें परिवर्तन होना असम्भव ही है। बाबा ने कहाँ-कहाँ मुरली में परिवर्तन की बात कही है परन्तु उस बात के स्पष्टीकरण के लिए कोई प्रमाण नहीं न मुरली में है और न ही दुनिया में पुनर्जन्म की जो बातें देखने में आती हैं, उनमें मिलता है। जैसे बाबा ने योगबल से

सन्तानोत्पत्ति के लिए पपीते, मोर आदि का उदाहरण दिया है, मुख के प्यार की बात कही है। व्यवहारिक संस्कार भी हर योनि के अपने-अपने हैं और उनमें देश-काल-परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होता है। जैसे सतयुग-त्रेता में जब देही-अभिमानी होते तो संस्कार-स्वभाव निर्विकारी होता और द्वापर-कलियुग में जब देहाभिमान आ जाता तो संस्कार-स्वभाव में विकारों की प्रवेशिता हो जाती है।

बाबा ने मुरली में जो भी महावाक्य उच्चारे हैं, वे चार बातों को ध्यान में रखकर उच्चारे हैं। एक अविनाशी सत्य को स्पष्ट करने के लिए, दूसरे शिक्षा की दृष्टि से, तीसरे आदर्श के रूप में और चौथे देश-काल-परिस्थिति के अनुसार किसी आत्मा को आथत देने के लिए। जो अविनाशी सत्य हैं, वे सृष्टि के नियमानुसार अर्थात् वैज्ञानिक दृष्टि से, बौद्धिक दृष्टि से और बाबा के महावाक्यों के द्वारा प्रमाणित होते हैं।

Q. लिंग परिवर्तन की प्रक्रिया होगी या नहीं? यदि होगी तो वह Normal or abnormal होगी?

लिंग परिवर्तन की क्रिया अर्थात् स्त्री का पुरुष के रूप में जन्म लेना और पुरुष का स्त्री के रूप में जन्म लेना असम्भव नहीं तो अति कठिन अवश्य है क्योंकि दोनों के नैसर्गिक संस्कार अपने-अपने हैं और लिंग परिवर्तन के लिए नैसर्गिक संस्कारों में भी परिवर्तन होना आवश्यक है। कोई भाई स्त्री के रूप में जन्म लेकर गर्भ धारण करे, बच्चों को जन्म दे, उनकी पालना करे, असम्भव ही है। पुनर्जन्म के प्रमाणों से भी ऐसा परिवर्तन देखने में नहीं आता है। दुनिया में पुनर्जन्म की घटनाओं को देखते हैं तो कोई भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलता है, जिससे ये सिद्ध हो कि स्त्री-लिंग वाला पुलिंग या पुलिंग वाला स्त्री-लिंग बना हो। परन्तु बाबा ने कहा है, इसलिए उस बात की अवहेलना नहीं की जा सकती है अर्थात उसको अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता है परन्तु विचारणीय है कि बाबा ने ये बात किस भाव अर्थ में कही है। क्या अविनाशी सत्य को स्पष्ट करते हुए या शिक्षा के रूप में या आदर्श के रूप में या बहनों में स्वभिमान जाग्रत करने के लिए, उनको धैर्य देने के लिए कही है। जहाँ तक मुरली में देखा है तो ये बात बाबा ने उसी समय कही है, जब बाबा के सामने किसी बहन पर अत्याचार आदि की बात आई है।

ऐसे ही क्या परमधाम ऊपर है, परमधाम में झाड़ जैसा तीन लोक के चित्र में दिखाया है, वैसा ही है या वह नक्शे के रूप में बताया है। ऐसे ही पशु योनियों के विषय में बाबा ने अधिक नहीं बताया। ये सब विचारणीय बातें हैं और बाबा के भाव-अर्थ को समझना अति आवश्यक है।।

Q. देवताओं और मनुष्यों की पहचान के निर्णय, स्वर्ग और नर्क की सीमा रेखा क्या है?

मनुष्य, देवताओं को पूजते हैं, उसका कारण या आधार क्या है अर्थात् पूज्य और पुजारी की सीमा रेखा क्या है ?

"पवित्र की ही पूजा करते हैं। कोई भी मनुष्य की पूजा नहीं कर सकते। जो विकार से पैदा होते हैं, उनकी पूजा नहीं हो सकती। पूजा देवताओं की होती है, जो सदैव पवित्र होते हैं।"

सा.बाबा 17.7.06 रिवा.

"भगवानुवाच है ना - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पाने से तुम जगतजीत बन जायेंगे। ... इस पर जीत पाने के लिए मामेकम याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। दैवीगुण धारण करो, किसको दुख मत दो। पहला नम्बर दुख है - काम कटारी चलाना। यही आदि-मध्य-अन्त दुख देने वाला है। सतयुग में यह होता नहीं है। ... जैसे तुम योगबल से राज्य लेते हो, वैसे वहाँ योगबल से बच्चा पैदा होता है।" सा.बाबा 6.2.04 रिवा.

Q. योगबल और भोगबल से जन्म का स्वरूप क्या है ? सतयुग मे सन्तानोत्पत्ति की प्रक्रिया जैसे बाबा ने पपीता, मोर, मुख के प्यार का उदाहरण दिया, उस तरह से कोई भिन्न होगी या वर्तमान स्वरूप का ही सतोप्रधान स्वरूप होगा ?

"बाबा ने कहा देवी-देवताओं के पैर इस तमोप्रधान सृष्टि पर नहीं पड़ सकते।" -

सा.बाबा 24.8.2000 रिवा.

(वह वार्डर लाइन क्या है, जहाँ देवी-देवताओं के पैर पड़ते और जहाँ नहीं पड़ते हैं ?)

Q. सतयुग में अकाले मृत्यु नहीं होती है, इसका अर्थ क्या है ?

Q. अचानक या दुर्घटना आदि में किसी की मृत्यु होती है तो क्या वे सभी आत्मायें भटकती हैं ?

Q. क्या द्वापर-कलियुग में भी कोई की अकाले मृत्यु होती है ? यदि हाँ तो अकाले मृत्यु क्या है और कैसे ?

मनुष्यों की अभिधारणा है कि जब किसी दुर्घटना में किसी की मृत्यु हो जाती है तो वह अकाले मृत्यु है और समझते हैं कि वे आत्मायें भटकती है। परन्तु ऐसा नहीं है, ये मनुष्यों की एक भ्रान्ति है। दुर्घटना आदि में शरीर त्याग करना तो शरीर त्यागने का एक माध्यम है और कलियुग की रीति है। विचारणीय बात है कि एक ही आयु का एक व्यक्ति सालो-साल असाध्य बीमारी से दुखी होकर मरे और एक किसी दुर्घटना में तुरन्त शरीर छोड़ दे तो अपेक्षाकृत कौन सी मृत्यु अच्छी कही जायेगी ?

यदि ड्रामा की भावी पर विचार करें तो अकाले मृत्यु किसी की होती ही नहीं। हर आत्मा ड्रामानुसार अपने पूर्व निश्चित समय पर ही शरीर छोड़ती है, एक सेकेण्ड भी उससे आगे-पीछे

नहीं हो सकती है। ड्रामा के इस सत्य को भी कभी भूलना नहीं चाहिए। जो आत्मायें दुर्घटना में शरीर हैं, वे भी सभी भटकती नहीं हैं। ये प्रेत योनि में भटकने का भी किन्हीं आत्माओं का पार्ट है, उनमें अधिकांश वे होती हैं, जिनकी हत्या की जाती है और मरते समय उनके अन्दर बदला लेने की भावना बलवती रहती है।

द्वापर-कलियुग में आत्माओं के हिसाब-किताब, विकर्मों के कारण माँ-बाप के रहते, बच्चे शरीर छोड़ देते, बड़े भाई के रहते छोटा भाई शरीर छोड़ देता, छोटी आयु में ही शरीर छोड़ देते, इसलिए उसको अकाले मृत्यु कहा जाता है। जो सतयुग-त्रेता में नहीं होगा। वहाँ सभी जीवात्मायें बड़ी आयु के बाद ही शरीर छोड़ेंगी। परन्तु वहाँ भी निश्चित आयु के बाद ही शरीर छोड़ने की कोई निर्धारित सीमा या आयु-नियम (Standard Age) नहीं होगा, जिसको पाकर ही सभी शरीर छोड़ेंगे। वहाँ भी विभिन्न मनुष्यों के शरीर छोड़ने की आयु में भिन्नता अवश्य होगी, सबकी आयु एक समान नहीं हो सकती है।

इस सम्बन्ध में एक ज्वलन्त उदाहरण हैं - जब गुरु गोबिन्द सिंह के दो बच्चों को औरंगजेब ने कैद कर लिया और उनको मुसलमान बनने के लिए कहा तो उन्होंने ऐसा करने से मना कर दिया। तब उसने उनको जीते जी दीवाल में चिनवा दिया। जब दीवाल उनके चारो ओर चिनने लगी और छोटे भाई के गले तक आ गई तो बड़ा भाई उसे देखकर रोने लगा। उसको रोता देखकर छोटे ने पूछा तू रोता क्यों है ? तब बड़े ने कहा मैं इसलिए नहीं रोता हूँ कि हम मर रहे हैं परन्तु हमको दुख इस बात का हो रहा है कि तू मेरे बाद में आया और मेरे से पहले जा रहा है।

* देवतायें जरा-मृत्यु से मुक्त होते हैं, मृत्यु उनके लिए वस्त्र बदलना होता है - तो मृत्यु या वस्त्र बदलने का निर्णायक बिन्दु क्या होता है और उसका निर्णय कैसे होता है ?

जैसे नाटक के पार्टधारी एक पार्ट पूरा होने पर उनको अपनी वह ड्रेस उतारने का संकल्प आता है और दूसरे पार्ट के लिए दूसरी ड्रेस पहनने का संकल्प आता है, उसमें ड्रेस के खराब या अच्छी होने का प्रश्न नहीं होता परन्तु पार्ट अनुसार स्वेच्छा से ड्रेस बदलते हैं, ऐसे ही सतयुग में आत्मिक ज्ञान होने के कारण समय पर एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। शरीर का पुराना होना और पार्ट का पूरा होना दोनों साथ2 होंगे और जीवन के लिए दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

"अपने को अशरीरी समझने का अभ्यास करना है क्योंकि बहुत समय से अपने को अशरीरी नहीं समझा है। सतयुग में यह ज्ञान पूरा रहता है कि मैं आत्मा हूँ, मुझे यह पुराना शरीर छोड़कर नया लेना है। साक्षात्कार भी हो जाता है, चाहे परोक्ष या अपरोक्ष। समझते हैं - अभी शरीर की आयु पूरी हुई है। जैसे कोई मरने पर होता है तो कहते हैं - हमको ऐसा लगता है कि

अब मैं मरूँगा, रह नहीं सकूँगा। वहाँ फिर समझते हैं अब यह शरीर बड़ा हो गया है, अब इसको छोड़ना है। अपने टाइम पर खुशी से छोड़ देते हैं। आत्मा का ज्ञान पूरा रहता है, बाप का ज्ञान बिल्कुल नहीं है।" सा.बाबा 26.08.03 रिवा.

वहाँ आत्मा में चिर काल तक राज्य करने का कोई लोभ-मोह तो होता नहीं हैं, इसलिए जब उत्तराधिकारी योग्य हो जाता है तो खुशी से उसे राज्य देकर स्वयं निवृत होकर शान्ति का और प्रकृति का आनन्द लेते हैं।

Q. क्या परमात्मा सृष्टि का रचता है, यदि वह रचता है तो किसका और कैसे ?

परमात्मा कोई नई सृष्टि नहीं रचता है परन्तु वह सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञाता है और ज्ञान देकर, आत्माओं को पावन बनाकर पुरानी सृष्टि में नई सृष्टि की कलम लगाता है अर्थात् सृष्टि-चक्र के नये चक्र को चालू करता है, इसलिए उसको रचता कहा जाता है। सृष्टि तो अनादि-अविनाशी है, इसलिए उसको रचने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

Q. जड़-जंगम और चेतन प्रकृतियों के गुण-धर्म क्या हैं और तीनों में अन्तर क्या है ?

जड़ चीजें जैसे पत्थर, सूखी लकड़ी आदि में कोई महसूसता शक्ति नहीं होती है, इनमें अपनी कोई घटती-बढ़ती की शक्ति नहीं होती है परन्तु इनमें भी आकर्षण शक्ति (Magnetic power) होती है, जिससे ये अपने समकक्ष तत्वों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं और उनके सामूहीकरण से इनकी मात्रा में वृद्धि होती है और विघटन से घटती होती है।

जंगम प्रकृति में भिन्न-भिन्न प्रकार हैं और उनके अपने बीज होते हैं, जिनके आधार पर वे मिट्टी, पानी, हवा आदि का सहयोग पाकर अंकुरित होते हैं और उनसे अपने गुण-धर्म के अनुरूप कण आकर्षित करके अपनी वृद्धि करते हैं और आगे के लिए नये बीजों का निर्माण करते हैं। उनके विकार में उनके बीज और खेत तथा पालना तीनों का महत्व समान होता है - जैसे सन्तानोत्तपत्ति और उसके विकास में मां-बाप का और आने वाली आत्मा तीनों का महत्व होता। जैसे जंगम प्रकृति में भी बीज प्रधान होता है, बीज के आधार पर वृक्ष बनता है और उसके आधार पर ही उसके गुण-धर्म कार्य करते हैं परन्तु चेतन प्रकृति में नर के बीज और मादा के सहयोग से शरीर का निर्माण तो होता है परन्तु उसमें आने वाली आत्मा का पार्ट प्रधान होता है। चेतन प्रकृति में शरीर रचना के लिए नर का बीज प्रधान होता है और वह मादा के गर्भ में प्रस्थापित होकर उसके शरीर से तत्वों को आकर्षित करके देह का निर्माण करता है परन्तु उसमें चेतनता तब आती है, जब उसमें आने वाली आत्मा प्रवेश करती है परन्तु जंगम में अलग से कोई आत्मा आदि प्रवेश नहीं करती है।

जैसे शुक्राणु से शरीर निर्मित होता, वैसे ही जंगम का बीज होता, बीज स्थान और

वातावरण पाकर अंकुरित होता है। उसका एक मैगनेटिक फील्ड होता है जो उसके आकार, प्रकार और स्वरुप पर निर्भर करता और वातावरण को प्रभावित करता है परन्तु उसमें सोचने समझने कुछ नया बढ़ाने-घटाने की, स्थानान्तरित होने आदि की अपनी शक्ति नहीं होती है जैसे आत्मा में होती है। चेतन आत्मा शरीर निर्मित होने के बाद अलग से प्रवेश करती तब शरीर में चेतनता अर्थात् महसूसता अर्थात् अनुभव की शक्ति आती है। आत्मा शरीर से अलग है इसलिए उसका अपना रुप-देश-काल-गुण-धर्म हैं। आत्मा देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अपनी अनुभव शक्ति को परिवर्तन कर सकती है। प्यार, राग-द्वेष, भय-चिन्ता आदि से प्रभावित होती है और उसके प्रभाव को अपने में स्मृति के रूप में संचित करती है और समय उसको प्रयोग करती है, जो जंगम प्रकृति में नहीं होता है।

आत्मा में पूर्व नीहित अविनाशी पार्ट ही संस्कार कहलाता है, उस पार्ट को पुनरावृत्त करने में मन-बुद्धि सहयोगी बनती है, जिसके आधार पर ही आत्मा में अनुभव है और आत्मा अपना पार्ट पुनरावृत्त करने का निर्णय करती है। ये संस्कार अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार जड़, जंगम और चेतन तीनों में होते हैं परन्तु जड़-जंगम में मन-बुद्धि न होने के कारण अनुभव और निर्णय करने की शक्ति एवं उसे व्यक्त करने की शक्ति, अनुभव को स्मृति के रूप में संचित रखने और समय पर व्यक्त करने की शक्ति नहीं है।

जैसे चेतन में किसी योनि के शरीर के निर्माण में उसके नर का बीज समकक्ष योनियों की मादा तक ही काम कर सकता है, सब में नहीं। ऐसे ही जंगम प्रकृति में एक पेड़ की उसकी समकक्ष पेड़ों के साथ ही कलम आदि लग सकती है, सब में नहीं। जंगम में कई वृक्षों के बीज भी होते हैं तो कलम भी लगती है।

बाबा ने भी कहा है परमात्मा ज्ञान का सागर सृष्टि का चेतन बीजरूप है, इसलिए वह इस कल्प-वृक्ष के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देता है। उसमें ये ज्ञान देने के संस्कार हैं। जैसे आत्मा में अविनाशी संस्कार नीहित होते हैं, वैसे जड़ बीज में भी वृक्ष के विकास के सारे संस्कार होते हैं परन्तु वह चेतन नहीं है, इसलिए बता नहीं सकता। जंगम प्रकृतियों के बीज में अविनाश्यता शक्ति भी नहीं है।

ऐसे आत्मा चेतन है इसलिए वह अपने सुख-दुख की अभिव्यक्ति कर सकती है, स्मृति को संचित कर सकती है, अपनी शक्ति का विकास कर सकती है, समयानुसार अपने को स्थानान्तरित कर सकती है परन्तु पेड़-पौधे ऐसा नहीं कर सकते हैं। कुछ पेड़-पौधे ऐसे होते हैं, जिनका बीज नहीं होता है, उनकी कलम लगती है। कुछ पेड़-पौधे मांसाहारी भी होते हैं परन्तु उनका वह संस्कार सीमित होता है।

Q. क्या जैसे चेतन मे अपनी प्रजाति को बढ़ाने की होड़ होती है, वैसे जंगम में होती है ?
इस जगत में जो भी जड़, जंगम, चेतन प्रकृतियां हैं, वे सब आवश्यक हैं और सबका इस विश्व-नाटक में महत्वपूर्ण स्थान है। उन सबसे ही इस विश्व-नाटक की शोभा है और वे सब एक-दूसरे के सहयोगी हैं।
Q. क्या मन-बुद्धि आत्मा से अलग कोई चीज है ?
मन-बुद्धि आत्मा से अलग कोई चीज नहीं है। यदि किसी के दृष्टिकोण में अलग हैं तो हमारा प्रश्न है कि वे क्या हैं, किस तत्व के बने हुए हैं (जड़ या चेतन) और विनाश के समय उसकी क्या भूमिका और स्थिति रहती है ? वर्तमान जीवन में उसकी क्या भूमिका है ?
जीवन के उत्थान-पतन में प्रभाव मन-बुद्धि का है या आत्मा का ? पवित्र और अपवित्र मन होता है या आत्मा ?
Q. क्या त्रेता के अन्त और द्वापर के आरम्भ में भी कोई बड़े भूकम्प आदि होते हैं, उथल-पथल होती है, मनुष्य दर-बदर होते हैं या काल-चक्र की गति के अनुसार समय के साथ स्वत: परिवर्तन होता है ? यदि भूकम्प आदि होता है तो उसका स्वरूप और प्रभाव क्या होता है ? क्या उससे आत्मायें दुखी होती हैं ?
"सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी फिर वैश्य वर्ण में आये। रावण राज्य होने से सब विकार में गिर पड़े, भक्ति शुरू हो गई। बड़े 2 सोने, हीरे, जवाहरों के महल अर्थक्वेक में अन्दर चले गये। भारत विकारी बनने से ही अर्थक्वेक हुई। फिर रावण राज्य शुरू हो गया। पवित्र से अपवित्र बन पड़े। कहते भी हैं सोने की लंका अन्दर चली गई।"

सा.बाबा 22.3.71 रिवा.

Q. क्या त्रेता के बाद नेचुरल केलेमिटीज होंगी ? यदि होंगी तो उनका स्वरूप क्या होगा, उनका मानव जीवन पर क्या प्रभाव होगा ? क्योंकि वहाँ कोई विकर्म तो किया नहीं, तो मनुष्य को दुख कैसे हो सकता है ?
Q. दैवी सभ्यता द्वापर से भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण विलीन होगी या 25 सौ वर्षों में प्रकृति के अनादि-आदि नियमानुसार सभ्यता और साधनों में स्वत: परिवर्तन होगा ? जब नौ लाख से 33 करोड़ मनुष्य हो जायेंगे तो साधन और सम्पत्ति में प्रति व्यक्ति कमी अवश्य होगी। समय के साथ पुरानी सभ्यता और साधनों में भी परिवर्तन अवश्य होगा, इस प्रकार सतयुग की आदि दैवी सभ्यता का अधिकांश तो काल-चक्र के अनुसार स्वत: ही खत्म हो जायेगा और जो त्रेता के अन्त में नाम मात्र बचेगा वह भूकम्प आदि में विलीन हो जायेगा। देवतायें जब वाममार्ग में जाते, विकारी बनते तो उसके दण्ड-स्वरूप भूकम्प आदि तो होंगे,

पृथ्वी जो 90 अंश पर सीधी है, वह साढ़े तेईस अंश झुक जायेगी, जिससे भौगोलिक उथल-पुथल बड़ी होगी, जिसमें दैवी सभ्यता का नाम-निशान मिट जायेगा परन्तु आत्माओं को दुख नाममात्र ही होगा।

Q. द्वापर में परिवर्तन, अर्थ-क्वेक आदि क्यों होगी ?

देवतायें वाममार्ग में गये अर्थात् देहाभिमान प्रभावी हो गया, आत्माओं में विकार की प्रवृत्ति आ गई। जब देवतायें विकारी हो गये तो दैवी दुनिया का साधन-सम्पत्ति का उपभोग कर नहीं सकते, इसलिए वह अर्थ-क्वेक में नीचे चली जाती है, परन्तु वहाँ आत्माओं को कोई विशेष दुख नहीं होता है। सृष्टि के नियमानुसार आत्माओं की पवित्रता और अपवित्रता का प्रभाव जड़ तत्वों पर होता है और उनमें उथल-पुथल होती है। संगमयुग की उथल-पुथल कल्याणकारी होती है, सुखदायी होती है परन्तु द्वापर के आदि की उथल-पुथल गिरावट की होती है।

Q. क्या परमधाम में संकल्प उठ सकता है ?

परमधाम में संकल्प उठने का कोई प्रश्न ही नहीं क्योंकि संकल्प भी एक कर्म है, जो स्थूल या सूक्ष्म शरीर के बिना हो नहीं सकता। परमात्मा के लिए जो ये गायन है - बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना, कर बिनु कर्म करै विधि नाना। ये इस समय की बात है, जब वह निराकार ब्रह्मा तन में आकर कर्म करता है।

"आधा कल्प मैं वहाँ आराम से बैठा रहता हूँ वानप्रस्थ में। तुम मुझे पुकारते हो। ऐसे भी नहीं कि मैं वहाँ सुनता हूँ। मेरा पार्ट ही इस समय का है। ड्रामा के पार्ट को मैं जानता हूँ।"

सा.बाबा 21.10.69 रिवा.

Q. क्या परमात्मा को परमधाम में संकल्प उठता है ? क्या उनको यहाँ आते समय संकल्प आता है कि मैं अब जाऊं ?

नहीं, ये सब ड्रामा अनुसार ही होता है और ज्ञान देने का संकल्प भी ब्रह्मा तन में आने के बाद ही उठता है। परमधाम संकल्प से भी परे की दुनिया है।

Q. संकल्प भी एक प्रकार का कर्म है तो क्या परमधाम में कर्म हो सकता है ?

संकल्प के लिए स्थूल या सूक्ष्म शरीर अवश्य चाहिए, इसलिए परमधाम में संकल्प नहीं उठ सकता। परमात्मा आकर पहले सूक्ष्मवतन रचता है अर्थात् सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को इमर्ज करता है, फिर स्थूल वतन में आकर ब्रह्मा तन में प्रवेश करके ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की कलम लगाता है।

Q. क्या इस साकार तन में आने से पहले सूक्ष्मवतन में संकल्प हो सकता है ?

हाँ, हो सकता है। ये स्थूल शरीर भी जड़ है, जिसमें आत्मा प्रवेश होने से चेतन हो जाता है, तो

सूक्ष्म शरीर भी जड़ ही है, उसमें प्रवेश होने से संकल्प उठ सकता है। तो शिवबाबा ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर को इमर्ज करके नई रचना का कार्य आरम्भ कर देते हैं। साकार ब्रह्मा बाबा भी समय-समय पर सन्देशियों को सूक्ष्मवतन में भेजकर अपने संकल्प को वेरीफाई कराते थे, कोई बात पूछना होती थी तो पूछते थे।

हर आत्मा का चाहे सतयुग हो या कलियुग लेकिन स्थूल शरीर के साथ ही सूक्ष्म शरीर भी निर्माण होता ही है, जिस सूक्ष्म शरीर के साथ ही आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरे में प्रवेश करती है। ड्रामा अनुसार शिवबाबा को भी ड्रामा के पार्ट की आकर्षण होती है और वे अपना पार्ट बजाने आ जाते हैं, फिर ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर या स्थूल शरीर में प्रवेश होकर नई रचना का कार्य करते हैं।

Q. क्या परमात्मा परमधाम में किसकी पुकार सुनता है और वहाँ से किसी की मनोकामनायें पूरी करता है या ये सारा खेल ड्रामा अनुसार ही चलता है और संगमयुग पर ही परमात्मा का पार्ट चलता है जब आत्माओं को ज्ञान देकर पावन बनाने का समय होता है?

Q. यदि परमात्मा भक्ति मार्ग में भक्तों की मनोकामनायें पूरी करते हैं तो निराकार रूप से ही पूरी करते हैं या किसके तन में प्रवेश करके करते हैं?

भले बाबा ने ये कहा है कि मैं भक्ति मार्ग में साक्षात्कार कराता हूँ, तुम्हारी पुकार सुनता हूँ परन्तु बाबा ने अनेक बार ये भी कहा है कि ये सब कार्य ड्रामा अनुसार ही चलता है, मैं संगम पर ही आकर तुमको पावन बनाकर सतयुग की स्थापना करता हूँ। बाबा ने ये भी कहा है कि तुम विचार सागर मंथन करो और जज करो क्या सत्य है। इन सब महावाक्यों पर विचार करने के बाद यही निष्कर्ष निकलता है कि परमात्मा का पार्ट संगमयुग पर ही चलता है, और सारा कल्प ड्रामा अनुसार पार्ट चलता है।

Q. क्या परमात्मा परमधाम में रहकर कोई कार्य कर सकता है या करता है?

Q. क्या कोई भी आत्मा आकाश तत्व में स्थूल या सूक्ष्म देह के बिना रह सकती है?

कोई भी आत्मा स्थूल या सूक्ष्म शरीर के बिना कोई भी कर्म नहीं कर सकती। आकाश तत्व में भी आत्मा स्थूल या सूक्ष्म देह के साथ ही रह सकती है परन्तु आत्मा जब परमधाम से आती है, उस समय सूक्ष्म वतन और आकाश तत्व से पार होते समय सूक्ष्म देह नहीं होती है।

Q. क्या परमात्मा परमधाम में किसकी पुकार सुनता है?

आत्मा स्थूल या सूक्ष्म देह में रहते ही किसकी पुकार सुन सकता या अनुभव कर सकता है। मूल वतन में आत्मा न सुन सकती और न ही अनुभव कर सकती है। प्रकृति का ये विधि-विधान परमात्मा के साथ भी प्रभावित होता है। बाबा ने अनेक बार कहा है कि मेरे को परमधाम

में कान ही कहाँ हैं, जो मैं तुम्हारी पुकार सुनूँ।

Q. विनाश के बाद कीट-पतंगो, पशु-पक्षी, जानवरों की आत्मायें कहाँ जायेंगी ?

स्थूल या सूक्ष्म शरीर के बिना कोई भी आत्मा कोई भी कर्म नहीं कर सकती और न ही कोई भी आत्मा आकाश तत्व में स्थूल या सूक्ष्म देह के बिना रह सकती है। इसलिए जानवरों या कीट-पतंगों की आत्मायें भी सतयुग में इस वातावरण में नहीं रह सकती हैं, जैसा कि ज्ञान के अनेक भाई-बहनों का मन्तव्य है। अन्त में सभी आत्माओं को आत्माओं की दुनिया परमधाम में जाना ही चाहिए और जाती ही हैं।

"सब पुरुषार्थी हैं। अब सबको स्वीट होम, वाणी से परे जाना है। वह है हम आत्माओं का घर, निर्वाणधाम। धाम में कोई एक नहीं रहते। जितनी अभी जीव-आत्मायें हैं वे सभी शरीर छोड़कर जायेंगे, अपने घर बाबा के पास। वह है निराकारी झाड़।"

सा.बाबा 6.08.03 रिवा.

Q. भगवानोवाच्य आत्मा में ही खाद पड़ती है - आत्मा में कौनसी खाद पड़ती है और कैसे खाद पड़ती है ?

आत्मा में अज्ञानता के वशीभूत देहभान और देहाभिमान रूपी खाद पड़ती है, जिससे आत्मा देही-अभिमानी से देहाभिमानी बन जाती है और ये अज्ञानता जनित देहाभिमान दिनोदिन गहरा होता जाता है। आत्मा में ये खाद सतयुग के प्रथम जन्म और प्रथम क्षण से पड़ना आरम्भ हो जाती है परन्तु उसका आभास बाद में होता है। कल्पान्त में ज्ञान-सागर परमात्मा ज्ञान देकर और योग सिखलाकर इस खाद को निकालते हैं और आत्मा अपने मूल स्वरूप में आ जाती है। सभी आत्मायें पावन बनकर अपने घर परमधाम में जाती हैं और फिर इस धरा पर आती है, पार्ट बजाने, जिससे सृष्टि का नया चक्र आरम्भ होता है।

Q. क्या परमात्मा किसको अधिक देता है और किसको कम ? या उसका भण्डारा समान रूप से सब के लिए खुला रहता है, जो जितना चाहे उतना ले ?

परमात्मा ज्ञान-गुण-शक्तियों का सागर है, उसका ज्ञान-गुण-शक्तियों का भण्डारा सबके लिए समान रूप से खुला है, लेना हर आत्मा का अपना कार्य है और हर आत्मा ड्रामा के पार्ट और अपनी शक्ति के अनुसार लेती है। परमात्मा की महिमा तो सागर या सूर्य से की जाती है, जो अखुट है और उसका भण्डारा सबके लिए बिना किसी भेदभाव के खुला है।

Q. ड्रामा हू-ब-हू रिपीट होता है तो क्या अणु और परमाणु के साथ रिपीट होता है या केवल मानव पार्ट रिपीट होता ?

ये विश्व-नाटक अणु-परमाणु के साथ हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। जब अणु-परमाणु के साथ

पुनरावृत्त हो तब ही ये हू-ब-हू पुनरावृत्त हो सकता है, अन्यथा हू-ब-हू नहीं कहा जा सकता है।

Q. क्या परमपिता परमात्मा ने इस विश्व-नाटक की रचना कब की है ? अथवा क्या ये कब रचा गया है ? यदि हाँ, तो कब और कैसे ?

नहीं। परमात्मा इस विश्व-नाटक का ज्ञाता है, रचता नहीं। वह ज्ञान देकर और योग सिखला-कर स्वर्ग अर्थात् नई दुनिया की रचना करता है अर्थात् पुरानी दुनिया में नई दुनिया की कलम लगाता है।

Q. यह विश्व एक अनादि-अविनाशी ड्रामा है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है परन्तु ड्रामा कहने का अधिकारी कौन ?

जो पूर्ण देही-अभिमानी है, वही ड्रामा कहने का अधिकारी है। यथार्थ में ड्रामा कहने का अधिकारी एक परमात्मा ही है और वही ज्ञान का सागर है और ड्रामा का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह पूर्ण साक्षी है। बाकी ब्रह्मा बाबा सहित सभी आत्मायें नम्बरवार हैं। ब्रह्मा तन में परमात्मा की प्रवेशता होती है, इसलिए ब्रह्मा बाबा भी शिवबाबा के समान ही साक्षी है परन्तु शिवबाबा के बाद। इसीलिए ब्रह्मा का स्थान Next to GOD कहा जाता है।

Q. क्या ड्रामा में किसी का पार्ट परिवर्तन हो सकता है ? यदि हाँ, तो कैसे और यदि नहीं, तो क्यों ? ड्रामा में किसी आत्मा का पांच हजार साल का पार्ट परिवर्तन नहीं हो सकता, वह तो पुनरावृत्त होगा ही परन्तु ये विश्व-नाटक हर क्षण परिवर्तनशील है इसलिए हर क्षण पार्ट परिवर्तन होता है। कर्म और फल के विधि-विधान अनुसार हर आत्मा समय पर अभीष्ट पुरुषार्थ भी अवश्य करती है।

* क्या ये ड्रामा बीती हुई बात पर ही लागू होता है या भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों पर ? क्या पुरुषार्थ से पार्ट परिवर्तन हो सकता है ? यदि हाँ तो कैसे ? यदि नहीं तो जीवन में पुरुषार्थ का क्या महत्व है ?

ड्रामा का विधि-विधान भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों पर समान रूप से लागू होता है। ड्रामा का पार्ट और कर्म अर्थात् पुरुषार्थ समानान्तर चलते हैं या कहें एक सिक्के दो पहलू हैं, जो साथ-साथ ही रहते हैं। पुरुषार्थ से ही पार्ट परिवर्तन होता है और पुरुषार्थ ड्रामा अनुसार होता है। पुरुषार्थ आत्मा का निजी स्वभाव है, जिसके बिना इस कर्मक्षेत्र पर आत्मा रह नहीं सकती। Events can't be changed but we can our attitude towards events.

Q. क्या ये नाटक सुख-दुख का है ? यदि हाँ तो कैसे, यदि नहीं तो कैसे ?

सुख-दुख, हार-जीत का ये विश्व-नाटक बड़ा ही सुन्दर बना है। इसमें सुख और दुख दोनों का समान महत्व है क्योंकि बिना सुख के दुख की और बिना दुख के सुख की महसूसता नहीं होती

है। इसमें सुख-दुख का बड़ा अद्वितीय सन्तुलन है। हर आत्मा जितना सुख है, उसके अनुसार ही दुख भी होता है।

Q. क्या इसमें किसको VIP या हीरो पार्ट मिला है और किसी को साधारण ? यदि ऐसा है तो क्यों और कैसे ?

Q. यदि किसी आत्मा को विशेष पार्ट (हीरो पार्ट) मिला है और किसी को साधारण या निकृष्ट - यह इस विश्व नाटक में पक्षपात है, गलत है या इसमें कोई न्यायपूर्ण समानता है ?

ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। इसमें देश-काल-परिस्थितियों के अलग-अलग हीरो होते हैं और ड्रामा के भी हीरो हैं परन्तु सभी आत्माओं के सुख-दुख में अद्वितीय सन्तुलन है, जिससे कोई भी पार्टधारी, जिसको इसका यथार्थ ज्ञान है, इसमें कोई दोष नहीं निकाल सकता, अहंकार या हीनता अनुभव नहीं कर सकता। जो इसको यथार्थ रीति जानता है, वह इसके परम सुख को अनुभव करता है।

Q. क्या ये फिल्म अभी शूट हो रही है या पहले से ही शूट हुई है ? यदि अभी हो रही है तो कैसे ? यदि पहले से शूट हुई है तो अभी हमारा क्या कर्तव्य है ?इस विश्व-नाटक की फिल्म की अनादि-अविनाशी शूटिंग है, फिर भी हर शूटिंग हो रही है क्योंकि हमको इसका यथार्थ ज्ञान तो है नहीं, इसलिए अपने पार्ट की शूटिंग पर सदा ध्यान रखना हमारा परम कर्तव्य है, जिससे ही हम अपने पार्ट के महत्व को समझकर इसका यथार्थ आनन्द ले सकते हैं।

Q. ये ड्रामा अच्छा है तो क्यों है ? यदि नहीं तो क्यों ?

ये विश्व-नाटक सदा ही अच्छा है क्योंकि खेल सदा ही अच्छे ही होते हैं, तब तो मनुष्य उनको देखने जाते हैं और देखकर खुश होते हैं।

Q. इस ड्रामा में पूर्व का याद नहीं रहता तो क्यों और उससे क्या लाभ है ? यह भूलना अच्छा है या खराब ?

इस विश्व-नाटक में भूतकाल की घटना को भूल जाने की प्रक्रिया परम कल्याणकारी है, उससे ही इसका यथार्थ आनन्द है। यदि भूतकाल की सभी बातें याद रहें तो आत्मा पागल हो जाये और अनेक प्रकार के व्यवधान इस विश्व-नाटक में आ जायें।

Q. इस ड्रामा में हम कुछ परिवर्तन कर सकते हैं या नहीं ? यदि हाँ तो क्यों और कैसे ? यदि नहीं तो क्यों और आत्माओं को दुख क्यों भोगना पड़ता है ?

पांच हजार साल के पार्ट में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता परन्तु कर्म और फल पर आधारित इस नाटक में हर क्षण परिवर्तन होता है और ये परिवर्तन ही इसकी शोभा है। आत्मा को यथार्थ रीति सुख की अनुभूति के लिए दुख की अनुभूति भी आवश्यक है, इसलिए ये विश्व-नाटक

सुख-दुख का बना हुआ है। दोनों का इसमें समान महत्व है। बिना दुख की अनुभूति के सुख की अनुभूति हो नहीं सकती।

Q. ये नाटक हर क्षण नया लगता है, क्यों ?

भविष्य का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण और भूतकाल को भूल जाने के कारण एवं सतत परिवर्तनशील होने के कारण ये विश्व-नाटक हर क्षण नया लगता है। हर क्षण परिवर्तन और विविधिता ही इसकी शोभा है।

Q. जब ये विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है तो हमारा कर्तव्य क्या है ?

इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानना और साक्षी होकर इसे देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना ही हमारा कर्तव्य है और यही जीवन की सफलता है और सुखमय जीवन का प्रशस्त पथ है। परमात्मा इसके आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर आत्माओं को जाग्रत करते हैं।

Q. ब्रह्मलोक है क्या ?

ब्रह्म लोक आत्माओं के रहने का स्थान है अर्थात् आत्माओं का विश्रामग्रह है।

Q. क्या ब्रह्मलोक और सूक्ष्म वतन भूमण्डल या आकाश तत्व के चारो ओर है या भूमण्डल के ऊपर एक तरफ है ?

ब्रह्मलोक और सूक्ष्म वतन भूमण्डल के चारो ओर है अर्थात् आकाश तत्व सूक्ष्म वतन एवं ब्रह्म तत्व से आवृत है।

Q. क्या आत्मायें ब्रह्माण्ड में शिवबाबा के आसपास चारो ओर समस्त ब्रह्माण्ड में रहती हैं या ब्रह्माण्ड के एक विशेष भाग में रहती हैं ?

हमारे विचार से आत्मायें सारे ब्रह्माण्ड में रहती हैं परन्तु हर धर्म-मठ-पंथ, समूह की आत्मायें एक-दूसरे के निकट अपने समूह में रहती हैं। मनुष्यात्मायें परमात्मा के चारो ओर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रहती हैं।

बाबा ने आत्माओं और ब्रह्माण्ड की तुलना आकाश और तारों से की है। तारे सारे आकाश में विद्यमान हैं, भल दिन में दिखाई नहीं देते हैं। जब कभी पूर्ण सूर्यग्रहण होता है तो दिन में भी आकाश में तारे दिखाई पड़ते हैं।

यद्यपि आत्मा अति सूक्ष्म है इसलिए उसको रहने के लिए कोई अधिक स्थान की आवश्यकता नहीं है परन्तु हर आत्मा में अपनी पवित्रता की शक्ति है और अपनी आकर्षण शक्ति है, जो आत्माओं को एक-दूसरे सेअलग रखती है। इसलिए आत्मायें ब्रह्माण्ड में एक-दूसरे के साथ चिपक कर न रहकर दूर-दूर सारे ब्रह्माण्ड में रहती हैं।

Q. मूलवतन में आत्माओं का झाड़ ऐसा ही है, जैसा चित्रों में दिखाया है या ये समझाने के

लिए नक्शेमात्र है। इस चित्र और वास्तविकता में कोई अन्तर है ?
ये चित्र तो बाबा ने नक्शेमात्र समझाने के लिए बनवाया है, वास्तविकता इससे भिन्न है। आत्मायें सारे ब्रह्माण्ड में स्थित हैं परन्तु हर धर्म-वंश की आत्माओं का अपना समूह अवश्य है, जैसे यहाँ पर जीवात्मायें सारे भूमण्डल पर रहती हैं और हर धर्म-वंश के अपने-अपने समूह और क्षेत्र हैं।

Q. क्या सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा विष्णु शंकर की अपनी आत्मायें हैं, उनका अपना अस्तित्व है और तीन आत्मायें ब्रह्मलोक में है ? वास्तविकता क्या है ?
यह परमात्मा के कर्तव्य को सिद्ध करने के लिए दिखाया गया है। बाबा ने अनेक बार मुरली में कहा है कि सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की कोई आत्मायें नहीं है, ये समझाने के लिए बाबा ने इमर्ज किया है। वैसे भी परमात्मा सहित हर आत्मा का इस साकार ड्रामा स्टेज पर पार्ट चलता है। यदि सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की आत्मायें होती तो उनका भी अपना पार्ट अवश्य चलता।

Q. सूक्ष्म वतन में सभी आत्माओं के सूक्ष्म शरीर हैं या केवल एक ब्रह्मा बाबा का ही है ?
विवेक कहता है कि जब ब्रह्मा का सूक्ष्म शरीर सूक्ष्मवतन में है तो सभी आत्माओं के होने चाहिए। वैसे भी स्थूल शरीरधारी का सूक्ष्म शरीर भी होता ही है। ब्रह्मा बाबा अपने पुरुषार्थ से फरिश्ता बनकर बहुत समय तक विश्व की सेवा करते हैं परन्तु हर आत्मा को परमधाम जाते समय उस स्टेज से पास होना ही होता है, भले किसी की वह स्थिति एक सेकेण्ड की हो या एक वर्ष की हो।

Q. क्या सूक्ष्म शरीर से किये गये कर्मों का प्रभाव भी आत्मा पर पर पड़ता है और उसकी शक्ति में कोई परिवर्तन होता है ?
सूक्ष्म या स्थूल शरीर से जो भी आत्मा कार्य करती है, उसका प्रभाव उसकी स्थिति पर अवश्य पड़ता है और उसका फल भी उस आत्मा को मिलता है।

Q. क्या सभी आत्मायें सूक्ष्म शरीर धारण कर सूक्ष्म वतन में जायेंगी ?
हाँ, सभी को सूक्ष्म वतन को पार करना ही है और जब पार करेंगी तो सूक्ष्म शरीर भी अवश्य होगा ही।

Q. क्या सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग में सूक्ष्मवतन होगा ? यदि हाँ तो उसका स्वरूप क्या होगा और यदि नहीं तो क्यों ?
सूक्ष्म वतन तो सदा ही होगा परन्तु वहाँ कोई कारोबार नहीं होगा और न ही उसका आत्माओं को ज्ञान होगा, क्योंकि न कोई तत्व विनाश होता है और न ही स्थान विनाश होता है। केवल

रूप परिवर्तन होता है।

"आकाश बहुत सूक्ष्म तत्व है। अच्छा उनसे भी ऊपर देवतायें (B.V.S. सूक्ष्म देवतायें) रहते हैं। वह भी पोलार है। आकाश में बैठे हैं। फिर उनसे भी ऊपर और आकाश (ब्रह्म तत्व) है, उसमें भी आत्माओं के बैठने की जगह है। वह भी आकाश है, जिसको ब्रह्म तत्व कहते हैं। यह तीन तत्व हैं - स्थूल, सूक्ष्म और मूल।"

सा.बाबा 19.12.02 रिवा.

Q. क्या शंकर या परमात्मा विनाश कराता है या विनाश की प्रेरणा देता है ?

परमात्मा या शंकर न विनाश कराते हैं और न ही विनाश की प्रेरणा देते हैं। ड्रामा के अनादि विधान अनुसार हर चीज समयानुसार पुरानी होती है और विनाश को पाती है। परमात्मा इस ड्रामा का ज्ञान देता है और योग सिखलाता है, जिसके द्वारा आत्मायें पावन बनती हैं और उसके आधार पर नई दुनिया की कलम लगती है अर्थात् ये पुरानी दुनिया ही नई दुनिया बनती है।

Q. विश्व-नाटक की 5000 वर्ष की गणना का आधार-वर्ष क्या अर्थात् सौर-वर्ष या चन्द्र-वर्ष ?

विश्व में मुसलमानों के संवत हिजरी की गणना चन्द्र-वर्ष के आधार पर है, वर्तमान ईसवी संम्वत भी पहले चन्द्र-वर्ष के आधार पर अर्थात् 354 या 355 दिन का था, जो बाद में सौर-वर्ष के आधार पर 365 दिन का किया गया है और भारत के मुख्य सम्वत विक्रम और शक गणना की सूर्य-चन्द्र दोनों के सन्तुलन से होती है। इसलिए भारत में हर तीन वर्ष के बाद एक पुरुषोत्तम मास होता है क्योंकि 3 साल में 37 मास हो जाते हैं। इन सब बातों को समझकर, उसके निष्कर्ष के आधार पर ही कल्प के 5000 वर्ष की गणना का राज समझा जा सकता है।

महाभारत में वर्ष के दिनों की इस गणना के आधार पर पाण्डवों के वनवास और अज्ञात-वर्ष के पूरे होने के विषय में विवाद दिखाया गया है।

इस सब पर विचार करने के बाद यही निष्कर्ष निकलता है कि सूर्य-वर्ष से गणना करना ही यथार्थ है क्योंकि सौर-मण्डल में सूर्य सबसे अधिक प्रभावशाली है।

Q. सृष्टि-चक्र आदि-अन्त की गणना कब से कब तक ?

ब्रह्मा बाबा की आत्मा के श्रीकृष्ण के रूप में गर्भ में प्रवेश करने से घर परमधाम जाने के समय तक अर्थात् यही कल्प के आदि और अन्त का केन्द्र बिन्दु माना जा सकता है।

Q. संगमयुग की गणना कब से कब तक होगी ?

शिवबाबा के ब्रह्मा तन में प्रवेश होने की वेला से लक्ष्मी-नारायण के सिंहासनारूढ़ होने के समय

तक होनी चाहिए।

Q. सतयुग के 1250 वर्ष की गणना कब से कब तक होगी ?

श्रीकृष्ण की आत्मा के गर्भ में प्रवेश होने के समय से पहले राम की आत्मा के राम के रूप में गर्भ में प्रवेश होने के समय तक की जानी चाहिए, तब ही सतयुग के 1250 वर्ष पूरे होंगे। भले बाबा कहता है कि नया सम्वत् लक्ष्मी-नारायण के सिंहासन पर बैठने के समय से गिना जायेगा परन्तु उस समय से गिनने से सतयुग के 1250 की आयु की गणना और कल्प की 5000 वर्ष की गणना में अन्तर हो जायेगा।

Q. क्या सतययुग-त्रेतायुग में जन्म लेने वाले सभी मनुष्यों की आयु एक समान ही होगी या अन्तर होगा ?

सतयुग की औसत आयु 150 साल और त्रेता की 100 साल है परन्तु ये विविधतापूर्ण ड्रामा है, विविधता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है, इसलिए भिन्नता अवश्य होना चाहिए। इसलिए हर जीवात्मा की आयु में विविधता अवश्य होगी। कोई हार्ड एण्ड फास्ट नियम नहीं है कि हर आत्मा आयु समान हो और सभी अमुख आयु में ही शरीर छोड़ेगी और वहाँ सभी मनुष्यों की आयु एक समान ही हो। विविधता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है। हर जन्म की आयु में भी अन्तर होगा परन्तु औसत लगभग समान ही होगा।

Q. सतयुग के प्रथम जन्म की आयु और सतयुग अन्त के जन्म की आयु में अन्तर होगा या नहीं, यदि होगा तो क्या अन्तर होगा ?

समय की गति अनुसार जब सतोप्रधानता की कलायें कम होंगी तो आयु भी अन्तर अवश्य होगा। हर जीवात्मा की आयु का औसत सतयुग का 150 वर्ष और त्रेतायुग का 100 वर्ष के लगभग होगा।

Q. दोनों घरानों के भातियों के पुरुषार्थ में मूलभूत अन्तर क्या देखने में आयेगा ?

"जिन्होंने कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया है, वह हम साक्षी होकर देखते हैं। एक होता है राजाई घराना, दूसरा होता है प्रजा घराना। प्रजा में भी कोई बहुत साहूकार होते हैं, कोई कम। राजाओं में भी कोई बहुत साहूकार होते, कोई कम होते हैं।"

सा.बाबा 28.7.06 रिवा.

Q. सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की कितनी गद्दियाँ चलेंगी ? त्रेता में राम-सीता की कितनी गद्दियाँ चलेंगी ?

सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की 8 गद्दियाँ समानान्तर (Horizontal) और 20-21 गद्दियां क्रमानुसार (Vertical) चलेंगी। ऐसे ही त्रेता में 12 गद्दियाँ समानान्तर चलेंगी और 30-

35 गद्दियां क्रमानुसार चलेंगी।

"तुम जानते हो - जैसे हमने विश्व का मालिक बन राज्य चलाया था, वैसे फिर जाकर चलायेंगे। ... कृष्ण को अपनी राजधानी होगी। दूसरे भी राजायें होते हैं ना। कम से कम 8 तो हैं ना। फिर 8 हैं वा 108 हैं, वह आगे चलकर पता पड़ जायेगा। ऐसे नहीं कि जो पिछाड़ी में ज्ञान देना है, वह अभी देंगे। ... आगे चलकर तुम बहुत कुछ समझने वाले हो।"

सा.बाबा 20.7.06 रिवा.

"देहली सबकी कैपिटल रहती है। देहली ही परिस्तान थी... सिर्फ दोनों (लक्ष्मी-नारायण) ही नहीं है, जरूर और भी होंगे। आठ राजाई तो गाई जाती हैं। बुद्धि से काम लेना है। सतयुग में जरूर और भी राजाई होंगी।" सा.बाबा 15.7.06 रिवा.

सतयुग-त्रेता की गद्दियों की गणना को समझने के लिए निम्नलिखित बातों पर विचार करना आवश्यक है।

	जन्म	शादी एवं गद्दी	बच्चे का जन्म	वानप्रस्थ	देह-त्याग	राज्य का समय	कुल गद्दियाँ
आदि		30-40	60-70	90-100	160-180	60	21
मध्य		25-35	55-65	80-90	140-150	55	23
अन्त		25-30	45-50	75-85	125-135	53	24
औसत					150	57	22

महाराजायें - राजायें 176

त्रेतायुग में

	जन्म	शादी एवं गद्दी	बच्चे का जन्म	वानप्रस्थ	देह-त्याग	राज्य का समय	कुल गद्दियाँ
आदि		25-30	45-50	75-85	120-130	52	24
मध्य		25-30	40-45	60-70	110-120	38	33
अन्त		24-25	30-35	50-60	80- 90	28	42
औसत					105	40	33

राजायें 396

Q. सतयुग आदि से त्रेता अन्त तक कितनी राजाई चलेंगीं ?

लगभग सतयुग में 176 (8x22) त्रेता में 396 (12x33) कुल 572 महाराजा-महारानी, राजा-रानी सतयुग-त्रेता में गद्दी पर बैठेंगे।

ये सब गणना अनुमानित है, जिसमें वहाँ की रीति-रिवाज के आधार पर कुछ घटत-बढ़त

अवश्य होगी। इसलिए इसको शत प्रतिशत सही नहीं माना जाना चाहिए परन्तु समझने के दृष्टिकोण से ये स्पष्ट किया गया है। प्राय: अधिकांश भाई-बहनों का मन्तव्य है कि वहाँ 1250 वर्ष में आठ ही गद्दियाँ चलेंगी अर्थात् 8 ही लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठेंगे और एक-एक राजा 150 वर्ष तक राज्य करेगा, जो सिद्धान्त: गलत है क्योंकि 150 वर्ष आयु हो और 150 राज्य भी करे, सम्भव नहीं है। इस आधार पर गणना सिद्धान्त: सही नहीं बैठेगी। बाबा ने 8 जन्म और 150 वर्ष औसत आयु कहा है, 150 वर्ष राज्य करने की बात नहीं कही है। इन दोनों बातों के भेद को भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है।

"तुम जानते हो- जैसे हमने विश्व का मालिक बन राज्य चलाया था, वैसे फिर जाकर चलायेंगे। ... कृष्ण को अपनी राजधानी होगी। दूसरे भी राजायें होते हैं ना। कम से कम 8 तो हैं ना। फिर 8 हैं वा 108 हैं, वह आगे चलकर पता पड़ जायेगा। ऐसे नहीं कि जो पिछाड़ी में ज्ञान देना है, वह अभी देंगे। ... आगे चलकर तुम बहुत कुछ समझने वाले हो।"

सा.बाबा 20.7.06 रिवा.

"देहली सबकी केपिटल रहती है। देहली ही परिस्तान थी ... सिर्फ दोनों ही नहीं है, जरूर और भी होंगे। आठ राजाई तो गाई जाती हैं। बुद्धि से काम लेना है। सतयुग में जरूर और भी राजाई होंगी।"

सा.बाबा 15.7.06 रिवा.

"राजा-रानी के एक-दो बच्चे होंगे, उनको राजकुल का कहेंगे। प्रजा तो कितनी ढेर होती है। प्रजा तो झट बनती है, राजायें थोड़े ही बनते हैं। 16108 त्रेता के अन्त में जाकर बनते हैं।"

सा.बाबा 25.12.03 रिवा.

"मनुष्यों को तो यह पता नहीं है कि लक्ष्मी-नारायण और राधे-कृष्ण का क्या कनेक्शन है? वह राजकुमारी, वह राजकुमार, दोनों अलग-अलग राज्य के हैं। ऐसे नहीं कि दोनों ही आपस में भाई-बहन हैं। वह अलग अपनी राजधानी में थी, कृष्ण अपनी राजधानी का राजकुमार था। उन्हों का स्वयंवर होता है तो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं।"

सा.बाबा 8.10.03 रिवा.

"कोच-कुर्सियां हैं ... लेकिन ऐसा अभ्यास जरूर करो कि कोई भी समय साधन नहीं हो तो साधना में विघ्न नहीं पड़ना चाहिए। ... जितना साधन बढ़ायेंगे, उतनी संख्या डबल-ट्रिबल बढ़ेगी। ... सम्पन्नता और समाप्ति तब होगी जब कम से कम 9 लाख की माला बनाओ।"

अ.बापदादा 9.1.95

"माला 8 की भी है, 108 की भी है और 16108 की भी है। अब 16 हजार हैं या 5-10 हजार हैं, उनका कोई हिसाब नहीं निकाला जाता है। ... जितने भी राजायें कल्प पहले

सतयुग-त्रेता में बने थे, उतने ही बनेंग। सौ बनें या 2-3 सौ बनें, यह पूछना नहीं है। ... सतयुग के आसार भी दिखाई देते हैं। बाकी लाखों जाकर रहेंगे। फिर 9 लाख रहें या 9-10 लाख रहें, एक्यूरेट नहीं कह सकते।... अभी बहुत कुछ समझने का समय पड़ा है।"

सा.बाबा 3.8.06 रिवा.

Q. बाबा ने कहा है - कन्या वह जो 21 पीड़ी का उद्धार करे और ये भी कहा है कि मैं तुमको 21 जन्म के लिए स्वर्ग का वर्सा देता है। तो 21 पीड़ी और 21 जन्म में क्या सामन्जस्य है? ये दोनों बातें बड़ी समझ की हैं। एक व्यक्ति के एक जन्म में 3-4 पीड़ी हो सकती हैं परन्तु उसका जन्म एक ही माना जायेगा। पीढ़ी का सम्बन्ध वंश परम्परा से है और जन्म आत्मा के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्ध रखते हैं। इस प्रकार सतयुग में एक घराने में 20-21 पीड़ी हो जायेंगी लेकिन एक आत्मा के जन्म 8 ही होंगे। ऐसे ही त्रेता में एक ही घराने में पीड़ियां तो 30-35 होंगी लेकिन जन्म 12 ही होंगे।

Q. सतयुग में जो गद्दियां लक्ष्मी-नारायण के नाम से चलती हैं, वे त्रेता में राम-सीता के नाम से कैसे चलने लगती हैं?

सतयुग के 1250 वर्ष पूरे होते-होते आत्मा में और विश्व में कुछ गिरावट तो अवश्य आयेगी, इसलिए सतयुग के अन्त और त्रेता के आदि में मुख्य गद्दी पर बैठने वाले राजा के मन में संकल्प आयेगा और वह गद्दी का नाम बदल सकता है अर्थात् जो गद्दी लक्ष्मी-नारायण के नाम से चलती थी, उसे सीता-राम का नाम दे देगा।

"ऐसे नहीं कि चन्द्रवंशियों ने सूर्यवंशियों पर जीत पाई। नहीं, जो चन्द्रवंशी का राजा होता है तो सूर्यवंशी राजा-रानी उनको राज्य भाग्य का तिलक दे तख्त पर बिठाते हैं और उनको राजा राम, रानी सीता का टाइटिल मिलता है। किसने दिया? कहेंगे सूर्यवंशियों ने ट्रान्सफर किया कि अब तुम राज्य करो। यह सीन भी बच्चों ने साक्षात्कार में देखी है।"

सा.बाबा 15.6.06 रिवा.

Q. सतयुग की 8 गद्दियों से त्रेतायुग में 12 गद्दियां कैसे होंगी?

सतयुग पूरा होते-होते समय की गति के साथ मानव मन में और सतयुगी की दैवी सभ्यता में कुछ बदलाव अवश्य ही आयेगा और जनसंख्या की भी वृद्धि हो जायेगी, जिसके फलस्वरूप विश्व के आवासीय क्षेत्रफल में भी विस्तार हो जायेगा, जिससे त्रेता के आदि में चली आ रही 8 गद्दियों से 12 गद्दियां हो जायेंगी। परन्तु ये परिवर्तन कैसे होगा? पहले से चले आ रहे सतयुगी राजाओं में जो एक बच्चा और एक बच्ची के जन्म का विधि-विधान था, उसमें समयान्तर में कुछ बदलाव आयेगा और किन्हीं राजाओं के दो-दो पुत्र होंगे, जिनमें से कोई

अपनी नई राजाई स्थापन करेगा या राज घराने का ही कोई सदस्य सुदूर में जाकर अपनी नई राजाई स्थापन करेगा, जिससे त्रेता में राजाइयों की संख्या 8 से बढ़कर 12 हो जायेगी और त्रेता में 12 गद्दियां चलेंगी परन्तु सारे विश्व में सभी राजाइयां एक ही चक्रवर्ती राजा के छत्र के नीचे चलेंगी, जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्त होगी। सभी राजायें उसके झण्डे के नीचे प्रेम से चलेंगे। भल सृष्टि-चक्र के अनुसार त्रेता को भी स्वर्ग कहा जाता है परन्तु सतयुग की राजाई परम्परा, सभ्यता और त्रेता की राजाई परम्परा और सभ्यता में कुछ अन्तर अवश्य होगा, जिससे वह त्रेता कहलाता है। फिर त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में राजाइयों की संख्या और भी बढ़ जायेगी।

"सूर्यवंशी में आठ गद्दियाँ चलती हैं, फिर चन्द्रवंशी में 12 चलती हैं। डिनायस्टी होती है ना। ... बाप फिर वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉर्टी, वन गवर्मेन्ट, वन राज्य स्थापन करते हैं।" (सूर्यवंशी की आठ गद्दियाँ और चन्द्रवंशी की 12 गद्दियों का अर्थ क्या है और कैसे चलती हैं?)

सा.बाबा 21.07.03 रिवा.

"सतयुग में विष से जन्म नहीं होता। नहीं तो उन्हों को निर्विकारी कह न सकें।"

सा. बाबा 22.1.72 रिवा.

Q. सतयुग में 8 जन्म और 8 ही गद्दियाँ होंगी या दोनों की गणना, विधि-विधान अलग-अलग है?

Q. अष्ट रतनों का निर्णय समानान्तर वालों से होगा या क्रमानुसार जो चक्रवर्ती होंगे, उनमें से होगा?

प्रथम लक्ष्मी-नारायण के समानान्तर (Horizontal) राजाओं और चक्रवर्ती लक्ष्मी-नारायण के क्रमानुसार (Vertical) गद्दी पर बैठने वालों में कौन महान हैं, ये भी विचारणीय बात है। जो अधिक महान होंगे, वे ही अष्ट रतन में गिने जायेंगे।

Q. अष्ट रतन, 8 युगल हैं या 8 आत्मायें अर्थात् 4 युगल हैं?

"उन्हों का मान बहुत है। हमेशा नौ रत्न गाये जाते हैं, आठ नहीं। चार की जोड़ी हो जाती है, बाकी है एक बीच में है बाप।" सा.बाबा 20.06.03 रिवा.

Q. सतयुगी सृष्टि में ऊंच पद किसका होगा अर्थात् जो यहाँ यज्ञ के नियम-संयम अनुसार त्याग-तपस्या कर सादा जीवन में रहते हुए और यज्ञ सेवा में रहते हैं या जो कूटनीति से साधन-सम्पत्ति, सुख-साधनों की प्राप्ति, उनका उपभोग करते हुए यज्ञ सेवा में आगे हैं?

सतयुगी सृष्टि श्रृद्धा-भावना से युक्त सृष्टि है इसलिए उसमें राज्य कारोबार भी श्रृद्धा और भावना के आधार पर ही चलेगा, इसलिए वहाँ त्याग-तपस्या, नियम-संयम से यज्ञ सेवा करने

वालों का ही ऊंच पद होगा, कूटनीति से सेवा करने वालों का नहीं। कूटनीति से सेवा करने वाले बाद में ऊंच पद पायेंगे। सतयुग के पद के निर्णय में कर्म के स्वरूप से भी कर्म के प्रति आत्माओं की भाव-भावना का महत्व प्रधान होगा।

Q. इसी सन्दर्भ में ये विचारणीय बात है कि मूल गद्दी पर बैठने वाले राजायें ऊपर से नई आत्मायें आयेंगी या जो पहले जन्म ले चुके, उनमें से ही पुनर्जन्म लेकर गद्दी पर बैठेंगे ?

अभी की यज्ञ-कारोबार में देखते हैं तो देखने में आता है कि नये आने वाले राज्य कर रहे हैं और पुराने तटस्थ हो गये हैं परन्तु उन्होंने अपनी त्याग-तपस्या के आधार पर बाबा के साथ जो अतीन्द्रिय सुख अनुभव किया है, वह नयों को मिल नहीं सकता। अभी नये ही जोन-इन्चार्ज आदि हैं। बाबा ने भी कहा है नये आने वाले वाले भी माला का दाना बन सकते हैं। मधुवन हेड क्वार्टर की व्यवस्था में देखें तो ऐसा ही अनुभव है। जो पहले आये उन्होंने बाबा के साथ अतीन्द्रिय सुख भोगा परन्तु साधन और सत्ता का सुख अधिकतर पीछे वाले भोग रहे हैं। क्या ऐसा ही सतयुग में पहले आने वाले और बाद में राजा-रानी बनने वालों में भी होगा ? अर्थात् पहले अष्ट नम्बर में आने वाले, प्रकृति का सतोप्रधान सुख भोगने वाले और बाद में भी राजाई परिवार में ऊंचे पदों पर रहकर सुख भोगेंगे परन्तु राजा-रानी नई आने वाली आत्मायें बनेंगी। इस विराट विश्व-नाटक में अनेक हीरो पार्टधारी हैं। कोई पूरे ड्रामा के हीरो पार्टधारी हैं, जैसे ब्रह्मा-सरस्वती। कोई समय, स्थान और परिस्थितियों के हीरो पार्टधारी हैं। जैसे अनेक धर्म-पितायें, राजायें आदि। Number one अर्थात् the then Hero actor.

Q. सतयुग में एक ही समय मनुष्यात्माओं की आयु में अन्तर होगा या नहीं ? युगलों में स्त्री-पुरुष की आयु में अन्तर होगा या नहीं ? यदि होगा तो किस क्रम में होगा ?

दोनों की आयु में अन्तर तो अवश्य होगा। सबकी आयु एक समान हो नहीं सकती परन्तु कुल मिलाकर औसत समान होगा।

Q. विधवा का यथार्थ अर्थ क्या है, सतयुग-त्रेता में स्त्रियां विधवा होंगी या नहीं ?

विवेक ऐसा कहता है कि लिंग परिवर्तन की क्रिया सामान्य नहीं होगी, असामान्य रूप में हो सकती है और बाबा ने भी ऐसा ही कहा है। इसलिए आयु के औसत को सामान्य करने के लिए स्त्री-पुरुष में कोई भी पहले शरीर छोड़ सकता है परन्तु स्त्रियों को भी वैधव्य या विधवापन का दुख नहीं होगा क्योंकि वहाँ सभी नष्टोमोहा होते और सुख-शान्ति से सम्पन्न होते। जैसे वहाँ भी मृत्यु तो होगी परन्तु मृत्यु-दुख या मृत्यु-भय की महसूसता नहीं होगी, ऐसे ही पुरुष भी स्त्री से पहले शरीर छोड़ सकते हैं परन्तु स्त्री को उसका दुख नहीं होगा क्योंकि देह से मोह या लगाव नहीं होता है।

यदि सदा ही स्त्री पुरुष से छोटी होगी और वह पुरुष से पहले देह का त्याग भी करेगी तो आयु का जो अन्तर होगा, वह कैसे पूरा होगा। जैसे स्त्री पुरुष से आयु में 10 वर्ष छोटी हो और वह 10 वर्ष पहले शरीर छोड़ दे तो हर जन्म का 20 साल का अन्तर कैसे पूरा होगा या क्या होगा।

"जरूर वहाँ का कायदा होगा। बच्चा किस आयु में आयेगा। वहाँ सब रेग्यूलर चलता है ना। वह आगे चलकर महसूस होगा। ... वहाँ 150 वर्ष की आयु होती है, तो बच्चा तब आयेगा जब आधा लाइफ से थोड़ा आगे होंगे। ... पहले बच्चे की, फिर बच्ची की आत्मा आती है। विवेक कहता है पहले बच्चा आना चाहिए। पहले मेल, पीछे फीमेल। आठ-दस वर्ष की देरी से आयेंगे। ... रस्म-रिवाज भी जरूर सुनाते जायेंगे। आगे चलकर बहुत सुनायेंगे और सब साक्षात्कार होते रहेंगे।" सा.बाबा 28.6.04 रिवा.

Q. सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण का गायन है तो 16 कलायें क्या है अर्थात् कोई विशेष कलायें हैं या सम्पूर्णता की श्रेणी है?

16 कलायें सम्पूर्णता का मापदण्ड है, कोई अलग से कलायें नहीं हैं, जिनकी गिनती की जा सके।

"अभी सच्ची कथा सुनकर तुम 16 कला सम्पूर्ण बनते हो। चन्द्रमा को 16 कला सम्पूर्ण कहा जाता है, सूर्य के लिए ऐसे नहीं कहते हैं। तुम जानते हो हम आत्मायें भविष्य में सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे।" सा.बाबा 5.6.06 रिवा.

"संगम की जीवन प्राप्ति की जीवन है।... अभी संगम पर ही 16 कला सम्पूर्ण बनते हो। सोलह कला अर्थात् फुल।" अ.बापदादा 15.11.89 दिल्ली ग्रुप

Q. आत्मा पर ग्रहचारी है क्या है और वह स्थूल रतनों अर्थात् पत्थरों से उतर सकती है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों?

आत्मा पर ग्रहचारी देहाभिमान की है, जो स्थूल पत्थरों से उतर नहीं सकती। आत्मा की ग्रहचारी तो परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान रतनों से और उनकी मधुर याद से ही उतरती है। स्थूल पत्थरों का भी जो प्रभाव देखने में आता है, वह वस्तु और व्यक्तियों से हिसाब-किताब चुक्तू करने का विधि-विधान और दिखावा मात्र है। पक्की निश्चयबुद्धि आत्मा की बुद्धि उधर जा नहीं सकती।

Q. क्या परमपिता परमात्मा की छत्रछाया में बैठी आत्मा पर किसी प्रेतात्मा या रिद्धि-सिद्धि वाले का प्रभाव हो सकता है? यदि हाँ तो क्यों और कैसे? यदि नहीं तो क्यों?

यदि हमको परमात्मा पर और उनकी शक्तियों पर अटल विश्वास है तथा हम उसकी छत्रछाया

में हैं तो हमारे ऊपर किसी प्रेतात्मा या रिद्धि-सिद्धि वाले का प्रभाव हो नहीं सकता परन्तु हमारे में इसका भी अहंकार नहीं होना चाहिए, हमको इस सम्बन्ध में किसको चेलेन्ज भी नहीं करना चाहिए। अहंकार और चेलेन्ज करना भी देहाभिमान है, दूसरे को नीचा दिखाने का एक विकर्म है, जो अपना प्रभाव अवश्य दिखायेगा। यथार्थ निश्चयबुद्धि आत्मा का प्रभाव उन पर पड़ेगा। रिद्धि-सिद्धि वालों के पीछे भटकना भी परमात्मा का, ज्ञान का और अपनी निन्दा कराना ही है।

Q. क्या कर्म का सिद्धान्त सर्व आत्माओं पर समान रूप से लागू होता है या उसमें कोई भेद है?

परमात्मा और प्रकृति के नियम अटल-अविनाशी हैं और सभी पर समान रूप से प्रभावित होते हैं, उनमें कोई भेद-भाव नहीं है। इसलिए कर्म का सिद्धान्त सभी आत्माओं पर समान रूप से लागू होता है। हर आत्मा को अपने कर्मों का फल अवश्य मिलता है। अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा। अन्तर कर्ता की भाव और भावना पर आधारित होता है, जो सबके लिए समान है।

Q. क्या कोई आत्मा, किसी दूसरी आत्मा के सुख-दुख का कारण हो सकती है? यदि हाँ तो कैसे और कितना?

परमात्मा के द्वारा बताये गये विधि-विधान के अनुसार और लौकिक गीता के महावाक्यों के अनुसार जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है, इसलिए कोई आत्मा किसी दूसरी आत्मा के सुख-दुख का मूल कारण नहीं हो सकती। हर एक के सुख-दुख का मूल कारण उसका अपना ही कर्म होता है, दूसरी आत्मायें तो निमित्त मात्र होती हैं, जो उनके परस्पर हिसाब-किताब तक ही कारण या सहयोगी बन सकती हैं।

Q. मनुष्यात्माओं और अन्य योनियों की आत्माओं में क्या अन्तर है? क्या वे भी मन-बुद्धि-संस्कार सहित हैं? यदि वे आत्मायें हैं तो वे आत्मायें भी परमधाम में जायेंगी या नहीं? यदि नहीं तो क्यों?

हर योनि की आत्मा में मन-बुद्धि-संस्कार हैं परन्तु उनकी परसेन्टेज अलग-अलग है। मनुष्य विश्व का सबसे बुद्धिमान प्राणी है, इसलिए उसमें मन-बुद्धि-संस्कार की सर्वोच्च स्थिति है परन्तु मनुष्यों में भी विभिन्न मनुष्यों की मन-बुद्धि-संस्कार में अन्तर होता है। मनुष्य होते भी एक राजा के और एक पागल-भिखारी के मन, बुद्धि, संस्कार में अन्तर तो होता है ना!

"मनुष्यों को मनुष्यों की ही बात समझाई जाती है, जानवरों की बातें जानवर जाने। यहाँ तो मनुष्य सृष्टि है तो बाप भी मनुष्यों को बैठ समझाते हैं। मनुष्य में भी जो आत्मा है, उनको बैठ समझाते हैं।" सा.बाबा 30.10.03 रिवा.

"इसको क्यामत का समय कहा जाता है। सबका हिसाब-किताब चुक्तू होने वाला है। जानवरों का भी हिसाब-किताब होता है ना। कोई-कोई राजाओं के पास रहते हैं, उन्होंकी कितनी पालना होती है। ... यह भी ड्रामा में नूँध है। यह सारा बना-बनाया खेल है।"

सा.बाबा 21.2.04 रिवा.

"सतयुग में विकार की कोई बात नहीं। देवतायें पवित्र थे। वहाँ योगबल से ही सब-कुछ होता है। यहाँ पतित मनुष्यों को क्या पता वहाँ बच्चे कैसे पैदा होते हैं? उसका नाम ही है वाइसलेस वर्ल्ड। विकार की बात ही नहीं। कहेंगे जानवर आदि कैसे पैदा होते हैं? बोलो वहाँ है ही योगबल, विकार की बात ही नहीं। सौ परसेन्ट वाइसलेस हैं।"

सा.बाबा 23.2.04 रिवा.

Q. कैसे कहें कि हर आत्मा अपने कर्मानुसार सुखी-दुखी होती है?

एक ही समय, एक ही वातावरण, एक समान परिस्थिति में रहते भी कोई आत्मा उसमें सुख का अनुभव करती तो कोई आत्मा दुख का अनुभव करती है। ये कर्म रूपी बीज का ही प्रभाव है। जन्म से ही कोई सुखी, कोई दुखी होता है। परमात्मा सर्व न्यायकारी समदर्शी है, यह विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है फिर भी इसमें कोई आत्मा सुखी, कोई दुखी है तो इसका कारण क्या है? इस सत्य पर विचार करेंगे तो आप आपही अनुभव करेंगे कि आत्मा के सुख-दुख का कारण उसका अपना ही कर्म है।

Q. अकर्म कौनसा कर्म है? क्या कोई कर्म अकर्म होता है, यदि हाँ तो कैसे और कब होता है और नहीं तो क्यों और कैसे?

अकर्म अर्थात् जिस कर्म का अच्छा या बुरा कोई फल न हो। बाबा ने कहा है सतयुग में तुम्हारे कर्म अकर्म होते हैं परन्तु हमको इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि बाबा ने कोई बात किस उद्देश्य से कही है, उसका भाव-अर्थ क्या है? बाबा ने ये बात संगमयुग के श्रेष्ठ कर्मों अर्थात् सुकर्मो और द्वापर-कलियुग के विकारी कर्मों अर्थात् विकर्मों की भेंट में कही है। वास्तव में इस सृष्टि रंगमंच पर कोई कर्म अकर्म नहीं होता है अर्थात् कोई भी ऐसा कर्म नहीं होता, जिसका कोई फल न हो। हर कर्म का फल होता है, और उसके कर्ता को मिलता ही है। सतयुग में जो दो कलायें कम होती हैं, वे कर्मो और साधन-सम्पत्ति के उपभोग के फलस्वरूप ही होती हैं। सतयुग में सुकर्म नहीं होता क्योंकि सब सुखी-समृद्ध होते हैं, इसलिए कोई दान-पुण्य नहीं होता, वहाँ आत्मा की चढ़ती कला भी नहीं होती और विकार न होने के कारण विकर्म भी नहीं होते, इसलिए दोनों से परे स्थिति को स्पष्ट करने के लिए वहाँ के कर्मों को बाबा ने अकर्म कहा है।

Q. कर्म और पुरुषार्थ में क्या अन्तर है ? या दोनों एक ही बात है ?

ये विश्व-नाटक कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित एक घटना-चक्र है। पुरुषार्थ अर्थात् जो कर्म पुरुष अर्थात् आत्म के कल्याण अर्थ किया जाता है, उसे पुरुषार्थ कहते हैं। जो कर्म हम दैनिक जीवन-निर्वाह अर्थ करते हैं, वह कर्म है। यथार्थ पुरुषार्थ संगमयुग पर ही होता है। द्वापर से भी आत्मायें आत्म-कल्याण की भावना से कर्म करते हैं, वह भी पुरुषार्थ है अर्थात् उससे आत्मा की गिरती कला की गति मन्द हो जाती है परन्तु चढ़ती कला नहीं होती है।

Q. क्या लक्ष्मी-नारायण सतयुग में प्रतिदिन नई ड्रेस पहनेंगे, इसका भाव-अर्थ क्या है ?

इस सत्य पर विचार करते तो प्रश्न उठता - क्या ये प्रैक्टिकल है कि लक्ष्मी-नारायण प्रतिदिन नई ड्रेस पहनें और एक बार पहनी ड्रेस को फिर कभी न पहनें ? यदि लक्ष्मी-नारायण प्रतिदिन नई ड्रेस पहनेंगे तो पुरानी बहुमूल्य ड्रेसों का क्या होगा ?

सम्भव है एक निश्चित समय के बाद या साल के बाद रिपीट करते हों, या कुछ कपड़े रोज बदलते हों और कुछ नहीं या एक दिन में भी समय-समय पर अलग-अलग डेस पहनते हों।

Q. क्या सतयुग में जानवरों का दूध पियेंगे ? यदि पियेंगे तो क्यों अर्थात् सतयुग में जानवरों का दूध पीने की आवश्यकता क्यों होगी ? यदि होगी तो क्या स्वाद के लिए पियेंगे या स्वास्थ्य लाभ के लिए ? जब सतयुग में सभी स्वस्थ होंगे, तो जानवर के दूध पीने की आवश्यकता क्यों होगी ?

ये प्रकृति का नियम है कि जो जिसका दूध पीता है तो उसके संस्कार-स्वभाव, गुण-धर्मों का प्रभाव भी पीने वाले के ऊपर अवश्य पड़ता है। तो क्या जानवरों का दूध पीने से उनके स्वभाव-संस्कारों का प्रभाव मनुष्यों पर नहीं होगा ? बाबा ने ये भी कहा है कि वहाँ का पानी भी दूध के समान ही स्वास्थ्यप्रद होगा।

प्राय: देखा गया है कि हर योनि में अपनी माँ का दूध उसका बच्चा ही पीता है या मां के पास दूध उसके बच्चे के लिए ही होता है। किसी योनि का बच्चा दूसरी योनि की माँ का दूध नहीं पीता है। मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जो अन्य योनियों की माताओं का दूध पीता है। ये मनुष्य की अपनी कमजोरी है क्योंकि कलियुग में अनेक बीमारियों के कारण मनुष्य ऐसा करता है या करने के लिए बाध्य है। सतयुग में तो सभी स्वस्थ होंगे और देही-अभिमानी होने के कारण इन्द्रियों के वशीभूत भी नहीं होंगे।

"यह जल इत्र-फुलेल का कार्य करेगा। जैसे जड़ी-बूटियों के कारण गंगा जल अभी भी और जल से पवित्र है। ऐसे खुशबूदार जड़ी-बूटियाँ होने के कारण जल में नेचुरल खुशबू होगी। जैसे यहाँ दूध शक्ति देता है, ऐसे वहाँ का जल ही शक्तिशाली होगा, स्वच्छ होगा। इसलिए

कहते हैं कि दूध की नदियां बहती हैं।" अ.बापदादा 30.1.85

Q. संगमयुग का समय कब से कब तक माना जायेगा अर्थात् कितना है?

संगमयुग का समय परमात्मा के अवतरण से लेकर नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया के विनाश तथा नई दुनिया के निर्माण कार्य के सम्पन्न होने तक माना जायेगा। नया संवत लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने से आरम्भ होगा।

Q. ब्राह्मण जीवन में क्या आकर्षण (Charm) है या जीवन में क्या आकर्षण है, जिसके कारण मनुष्य का जीवन में इतना मोह है कि असाध्य रोगों से ग्रसित, मृत्यु-शैय्या पर लेटा हुआ व्यक्ति भी शरीर छोड़ना नहीं चाहता? क्या मौज से खाना-पीना, रहना, साधन-सम्पत्ति का संग्रह करना यही जीवन का आकर्षण है या जीवन का कोई और प्रयोजन है?

अनेक विकर्मों के कारण आत्मा को गर्भ में महान दुख होता है, जो आत्मा में संस्कार रूप में नीहित है, वह स्मृति, आत्मा का वर्तमान वस्तु-व्यक्तियों में लगाव, विकर्मों के कारण भविष्य में गिरती कला के जीवन का दुख का आभास आत्मा को शरीर छोड़ने नहीं देता। परन्तु सतयुग-त्रेता में ऐसा नहीं होता है।

परन्तु ब्राह्मण जीवन का प्रयोजन अलग है। वर्तमान ब्राह्मण जीवन कल्प में सबसे मूल्यवान और सारे कल्प के लिए खाता जमा करने का जीवन है, परमात्मा के संग में अतीन्द्रिय सुख अनुभव करने का जीवन है, मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुर-दुर्लभ सुख को अनुभव करने का जीवन है, जो सतयुगी जीवन में भी नहीं होगा। इसलिए हम चाहते हैं कि जब तक जीते हैं, तब तक अच्छे कर्म करके अपना खाता जमा कर लें, मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख अनुभव करते रहें इसलिए ब्राह्मण भी इस देह को त्याग नहीं करना चाहते और कर्मातीत बनकर घर जाने का पुरुषार्थ करते हैं।

Q. सतयुग में स्वर्ण-मुद्रा का प्रचलन होगा या आवश्यकतानुसार वस्तु-विनिमय की स्वतन्त्र प्रथा होगी?

मैं समझता हूँ कि सतयुग में आवश्यकतानुसार वस्तु-विनिमय की ही स्वतन्त्र प्रथा होगी। मुद्रा का प्रचलन तो बाद में होता है।

Q. क्या बिना शरीर के आत्मा से शक्ति रेडियेट होती है?

शक्ति रेडियेट तब होती है, जब संकल्प उठता है। जब आत्मा को शरीर ही नहीं तो संकल्प भी नहीं फिर शक्ति कैसे रेडियेट होगी। परन्तु विचारणीय है कि जब से आत्मा इस धरा पर आती है, तब से उसके साथ सूक्ष्म या स्थूल काया होती ही है। बिना स्थूल या सूक्ष्म काया के आत्मा परमधाम में ही होती है और परमधाम में शक्ति रेडियेट होने का प्रश्न ही नहीं और

आवश्यकता भी नहीं।

"यहाँ आकर 5 तत्वों का शरीर लिया है। सूक्ष्मवतन में 5 तत्व होते नहीं हैं। 5 तत्व यहाँ होते हैं, जहाँ तुम पार्ट बजाते हो। हमारा असली देश वहाँ है।"

सा.बाबा 14.12.02 रिवा.

Q. सूक्ष्म वतन क्या है, वहाँ कौन सा तत्व है, जिसके आधार पर सूक्ष्म वतन का अस्तित्व है?

सूक्ष्मवतन का अपना कोई तत्व नहीं है। सूक्ष्म वतन अस्तित्व आकाश तत्व और ब्रह्म तत्व के मिश्रण से है। वह दोनों के बीच में एक क्षेत्र है। पावन बनने वाली सूक्ष्म शरीरधारी पावन आत्मायें सूक्ष्म वतन के ऊपरी भाग में रहती हैं और फरिश्ता कहलाती हैं। ऐसे ही सूक्ष्म शरीरधारी निकृष्ट आत्मायें सूक्ष्मवतन के निचले भाग में अर्थात् आकाश तत्व के साथ वाले क्षेत्र में रहती हैं या वे आकाश तत्व में ही भटकती रहती हैं और प्रेतात्मा कहलाती हैं।

Q. चन्द्रवंशी बनने वाले किस बात में फेल होंते हैं, जिससे वे चन्द्रवंश में चले जाते हैं?

"बाप कहते हैं - मैं संगम पर आकर राजयोग सिखाता हूँ। जो पास होते हैं, वे सूर्यवंशी बनते हैं और जो फेल होते हैं, वे चन्द्रवंशी बनते हैं। सूर्यवंशी की प्रजा सूर्यवंशी होगी और चन्द्रवंशी की प्रजा चन्द्रवंशी होगी।" सा.बाबा 23.12.02 रिवा.

Q. सतयुगी देवी-देवताओं को सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे?

जब शरीर में आने से ही कलायें कम होना आरम्भ हो जाती हैं तो कलायें कम हो गई तो सम्पूर्ण पवित्र कैसे कहेंगे? फिर प्रश्न है कि सम्पूर्णता कब और कहाँ होती है? आत्मा जब परमधाम जाती है तो अन्त के क्षण और जब इस धरा पर आती है तो आदि के क्षणों को ही सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे। इसलिए बाबा ने कहा है - श्रीकृष्ण का मान नारायण से अधिक है क्योंकि श्रीकृष्ण को ही सम्पूर्ण पावन कहेंगे।

Q. कोई तुमसे पूछे - तुम पावन हो या पतित हो तो तुम क्या उत्तर देंगे?

"तुमसे कोई पूछेंगे कि तुम सम्पूर्ण पावन हो? तो क्या कहेंगे? भल पवित्र तो हैं परन्तु कायदे अनुसार जब तक यह शरीर है तो तुमको सम्पूर्ण पावन नहीं कह सकते। ... सम्पूर्ण पावन बन जायें फिर तो खेल ही खलास हो जाये, फिर यह शरीर छोड़ना पड़े। यह किसको समझाना बड़ा गुह्य ज्ञान है। यहाँ किसको सम्पूर्ण पवित्र कह न सकें क्योंकि हम खुद कहते हैं कि यह व्यक्त है, वह अव्यक्त है। सम्पूर्ण अव्यक्त अन्त में बनेंगे, फिर यह शरीर नहीं रहेगा। यह सम्पूर्ण बन गये फिर ज्ञान भी पूरा हो जाता है।" सा.बाबा 8.03.03 रिवा.

"तुम्हारी स्थिति सर्व आत्माओं को मुक्ति दिलायेगी, विनाश को समीप लायेगी।"

अ.बापदादा 17.3.03

"सृष्टि को तमोप्रधान बनना ही है। फिर भक्ति में इतनी जो साधना करते हैं, उससे कुछ मिलता है या नहीं। वहाँ यह विचार भी नहीं किया जाता है। अब समझते हैं, कुछ भी मिलता नहीं।"

सा.बाबा 25.03.03 रिवा.

Q. आत्माओं का खाता जमा और ना होने की प्रक्रिया क्या है?

सतयुग-त्रेता में Deposit से minus = Minus जमा का कम होना।

द्वापर-कलियुग में Deposit से Plus:Minus = Minus जमा का कम होना।

संगमयुग में Deposit से Plus:Minus = Plus जमा का खाता बढ़ना और सम्पूर्ण होना।

Plus-minus = 0 or Plus-minus = Plus or Plus-minus = Minus ?

Plus-minus = 0 - अयथार्थ है अर्थात् कोई ऐसा समय नहीं होता जब आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर हो और उसके खाते में कुछ भी प्लस न हो या माइनस ही हो। इसलिए बाबा कहते हैं - अन्त में भी कुछ नाममात्र शक्ति रहती है, जिसके आधार पर आत्मा कलियुग में पार्ट बजाती है। जैसे चन्द्रमा की लकीर रहती है। परन्तु सतयुग से कलियुग के अन्त तक आत्मा की जमा शक्ति ह्रासित होती है। जमा करने का समय संगमयुग ही है जब आत्मा की शक्ति Plus-minus = Plus होती है क्योंकि संगमयुग में आत्मा का खाता जमा अधिक होता है और घटता कम है इसलिए बैलेन्स में प्लस ही होता है और ये प्लस होते-होते अन्त में सम्पूर्ण बन जाते हैं। Plus-minus = Minus सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक आत्मा का खाता जमा कम होता है और खर्च अधिक होता है, इसलिए खाता घटता ही जाता है। वास्तव में सतयुग में आत्मा के खाते में जमा कुछ भी नहीं होता, घटता ही जाता है क्योंकि वहाँ जमा करने का संकल्प ही नहीं उठता है और आवश्यकता भी नहीं होती। ये संकल्प द्वापर से ही उठता है, जब आत्मा का दुखी होना आरम्भ होता है और मनुष्य दुखी आत्माओं के प्रति दान-पुण्य करना आरम्भ करता है।

"तुम जानते हो - बाबा हमको श्रीमत दे रहे हैं। श्रीमत है ही भगवान की। ... फिर कलायें कम होती जाती हैं। जैसे चन्द्रमा की कलायें कम होते-होते बाकी एकदम पतली लकीर बन जाती है। सारा गुम नहीं होता। अब तुम्हारी यह है बेहद की बात।"

सा.बाबा 22.7.06 रिवा.

Q. आत्मा के पावन बनने और खाता जमा करने में कोई अन्तर है या एक ही है?

आत्मा योग से या कर्मभोग से पावन बनती है परन्तु खाता जमा कमाई करने से होता है। जब योगयुक्त होकर, ज्ञान की धारणा करके अच्छे कर्म करते हैं, दान-पुण्य करते हैं तो खाता जमा होता है। जब हम अपने ज्ञान, गुण, शक्तियों, संकल्प, समय का, तन-मन-धन का

ईश्वरीय सेवा में सदुपयोग करते हैं तो हमारा खाता जमा होता है। खाता जमा करना कमाई है और पावन बनना आत्मा के ऊपर चढ़े बोझ को उतारना है। पावन तो सभी आत्मायें बनती हैं परन्तु खाता जमा नम्बरवार होता है, जिस अनुसार ही वे पार्ट बजाती हैं। सतयुग की आदि में आने वाली आत्माओं का खाता अधिक जमा होता है, जिसके आधार पर वे सारे कल्प में पार्ट बजाती हैं।

"बाबा ने काशी कलवट का भी मिसाल सुनाया है। शिव पर जाकर बलि चढ़ते थे। उनको भी कुछ तो मिलना चाहिए। उनके जो पाप किये हुए हैं, उनकी सजा भोगकर चुक्तू कर देते हैं, फिर नये सिर जन्म होता है। तुम भी बलि चढ़ते हो।"

सा.बाबा 22.7.06 रिवा.

"जो अष्ट बनते हैं, वे ही इष्ट भी इतने ही महान बनते हैं। ... यह जन्म वा जीवन वा युग सारे कल्प के खाते को जमा करने का युग वा जीवन है। "अब नहीं तो कब नहीं" ... ब्रह्मा बाप के नम्बरवन जाने की विशेषता क्या देखी ? कब नहीं, लेकिन अब करना है। "तुरत दान महापुण्य" कहा जाता है।"

अ.बापदादा 24.3.85

"आज बापदादा सभी के जमा के खाते देख रहे थे। ज्ञान का खजाना, शक्तियों का खजाना, श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना कहाँ तक जमा किया है और समय का खजाना कहाँ तक जमा किया है। अभी इन चारो ही बातों का खाता अपना चेक करना।"

अ.बापदादा 24.3.85

Q. क्या अभी के पुरुषार्थ का फल भविष्य में ही मिलेगा या अभी भी कोई प्राप्ति है। यदि अभी भी प्राप्ति है तो वह क्या है ?

अभी की प्राप्ति भविष्य से भी श्रेष्ठ है और भविष्य की प्राप्ति का आधार है। परमात्मा के साथ से, उसके ज्ञान से अतीन्द्रिय सुख का जो अनुभव, वही सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान से अभी जो मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होता है, वह परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से पदमगुणा श्रेष्ठ है। यथार्थता ये है कि संगमयुग का पुरुषार्थ ही प्रालब्ध है, सुखदायी है।

Q. सन्यासियों और देवताओं की पवित्रता में क्या अन्तर है, जिससे देवताओं के मन्दिर बनते, सन्यासियों के नहीं ?

सन्यासियों की आत्मा पवित्र होती है परन्तु देह तो विकार से ही पैदा होती है, इसलिए उनके मन्दिर नहीं बन सकते परन्तु देवताओं की आत्मा और शरीर दोनों पावन होते क्योंकि वे योगबल से जन्म लेते हैं, इसलिए उनके मन्दिर बनते हैं।

Q. हमारे जीवन के लिए उत्तरदायी कौन है?

क्या कोई व्यक्ति, सेन्टर, यज्ञ, परमात्मा हमारे जीवन के लिए उत्तरदायी है? क्या हमको उनके ऊपर आधारित रहना चाहिए? या किसी दुख-दर्द के लिए उनको उत्तरदायी ठहराना चाहिए?

परमात्मा ज्ञान का सागर है, उसने इस विश्व-नाटक का , उसके सारे राजों का, विधि-विधान का, कर्मों का ज्ञान दे दिया है और इस सत्य को भी बता दिया है कि इस विश्व-नाटक में हर आत्मा स्वतन्त्र है और अपने जीवन के लिए स्वयं ही उत्तरदायी है, उसका अपना कर्म ही उसके सुख-दुख का कारण है। भक्ति मार्ग की गीता में भी ये अक्षर हैं - जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आपही अपना शत्रु है। परमात्मा यथार्थ सत्य का ज्ञान देने के लिए ही इस सृष्टि में अवतरित होता है, उस ज्ञान को पाकर जो आत्मा एक कदम परमात्मा के साथ इस मार्ग पर बढ़ाता है, यज्ञ में बीज बोता है, परमात्मा उसका सौगुणा, हजार गुणा मदद करता है। ये ड्रामा का एक नियम है। इस सत्य को समझकर विचार करो - हमारे जीवन के लिए उत्तरदायी कौन है? क्या हमको किस पर आधारित रहना चाहिए? भक्ति मार्ग में भी कहा है - करु बहिंयां बल आपनो छाड़ि बिरानी आश, जाके आंगन है नदी वह कस मरे प्यास।

हर आत्मा चाहे वह समर्पित हो, ट्रस्टी ब्रह्माकुमार हो या ब्रह्माकुमार न भी हो, वह अपने जीवन के लिए स्वयं ही उत्तरदायी है, दूसरी आत्मायें उसके साथ कर्मों के हिसाब-किताब और ड्रामा के पार्ट अनुसार केवल निमित्तमात्र हैं। इसलिए ज्ञानी पुरुष को किसी भी परिस्थिति में किसको दोष देकर, किसके प्रति राग-द्वेष का भाव लाकर अपने विकर्मों का खाता नहीं बढ़ाना चाहिए। अपने को उत्तरदायी समझकर अपने कर्मों को श्रेष्ठ करने का अभीष्ट पुरुषार्थ करना चाहिए।

धर्म और परमात्मा सर्वशक्तिवान है और हर प्रकार से आत्माओं की रक्षा करते हैं। आत्मा को उन पर किसी भी परिस्थिति में अपना निश्चय और विश्वास खोना नहीं चाहिए। सदा उन पर विश्वास रखकर शुभ कर्मों में प्रवृत्त रहने वाले को कब दुख हो नहीं सकता, कोई भी आत्मा उसको कब धोखा नहीं दे सकती। गायन है - जाको राखे साइयां मार सके न कोई, बाल न बांका कर सके जो जग वैरी होये।

हम किसका बुरा नहीं सोचेंगे या करेंगे तो हमारा बुरा हो नहीं सकता - ड्रामा के इस सत्य पर निश्चय कर सदा निश्चिन्त रह अपने अभीष्ट लक्ष्य के लिए पुरुषार्थ कर इस संगमयुग के सच्चे सुख को अनुभव करना और कराना ही इस जीवन की सफलता है।

Q. हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है, हमको इस जीवन में और क्या चाहिए?

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा के जीवन का अभीष्ट लक्ष्य है। इसके लिए हमको चाहिए देह और देह की दुनिया से न्यारे होने की शक्ति, जो शक्ति ही मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति करायेगी। ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको जो ज्ञान दिया है और जो योग का जो रास्ता बताया है, वही इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम है, पर्याप्त है परन्तु आत्मा अपनी प्राप्तियों को भूलकर अन्य अयथार्थ बातों में चली जाती है, जिससे अपने अभीष्ट लक्ष्य से भटक जाती है और अन्त में पश्चाताप करती है। अन्त में हमको पश्चाताप न करना पड़े और अभी भी जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकें, उसके लिए अपनी प्राप्तियों को पहचान उनका सदुपयोग करना हर आत्मा का पावन कर्तव्य है। मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

ये ब्राह्मण जीवन, जीवन का वह सर्वोच्च शिखर है, जिसको पाने के लिए गौतम बुद्ध, राजा भर्तृहरि, राजा गोपीचन्द, मीरा ... ने राजाई को त्याग कर पुरुषार्थ किया। अभी वह जीवन हमको प्राप्त है, इसको सफल करना हमारा कर्तव्य है। इसके महत्व को जानकर इसे सफल करो, इसका सुख अनुभव करो।

Q. ब्राह्मण जीवन क्या है और क्यों है ?

विचार करो - बाबा ने हमको क्या दिया है, हमारे पास क्या है और अब हमारा कर्तव्य क्या है ? हम क्या कर सकते हैं और हमको क्या करना चाहिए ? समय की पुकार क्या है ?

Q. ये विश्व-नाटक क्या है, इसकी यथार्थता को जानते हुए हमारा कर्तव्य क्या है ? क्या हमारे हाथों में है ?

क्या ये जीवन इन्द्रिय सुख-साधनों की प्राप्ति, उनके उपभोग, उनकी प्राप्ति की खुशी मनाने के लिए ही है ? क्या उनकी प्राप्ति की खुशी हमको अपने अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति करायेगी ? इन सत्यों पर विचार करके अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अभीष्ट कर्तव्य करो। अपनी प्राप्तियों और विश्व-नाटक की यथार्थता को देखते हुए हमारा कर्तव्य है कि हम बाप समान अपने मूल स्वरूप में स्थित साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखें और ट्रस्टी होकर पार्ट बजायें। अपने समय, शक्ति, संकल्प को विश्व नव-निर्माण के श्रेष्ठ कार्य में लगायें। यही हमारे हाथों में है। Events can't be changed but we can change our attitude towards events. ये जीवन परम प्राप्तियों से परिपूर्ण है, उनको समझकर उनका सुख लेना और सर्व आत्माओं को सुख देना ही ज्ञानी आत्मा का कर्तव्य है। देह से न्यारा आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, इस स्वरूप का जितना गहन अभ्यास होगा, उतना ही जीवन में परमानन्द का अनुभव होगा। मुक्ति-जीवनमुक्ति संगमयुग की परम प्राप्ति है और मानव जीवन का परम

लक्ष्य है।

"अवतार सदा परमात्म पैगाम ले आते हैं। आप सभी संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें भी परमात्म पैगाम देने के लिए, परमात्म मिलन कराने के लिए अवतरित हुए हो। ... यह देह सेवा के अर्थ बाप ने लोन में दी है। .. जब देह ही मेरी नहीं तो देह का भान कैसे आ सकता है।"

अ.बापदादा 24.2.84

Q. क्या विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता किसी आत्मा को दोष दे सकता है?

नहीं, क्योंकि इस विश्व-नाटक में हर आत्मा का पार्ट अनादि-अविनाशी है, जिसको बजाने के लिए वह बाध्य है, इसलिए यथार्थ ज्ञानी आत्मायें किसी आत्मा को दोष दे नहीं सकते।

"वह तो कह देते हैं - परमात्म नाम-रूप से न्यारा है, परन्तु ऐसा है नहीं। उनका भी कोई दोष नहीं है। बाबा ने आकर अपना बच्चा बनाया नहीं है, जो वे बैठकर बाप का सही परिचय दें। तकदीर में हो तो समझें।" सा.बाबा 6.12.03 रिवा.

Q. ब्राह्मण जीवन को चोटी क्यों कहा गया है, इसका आधार क्या है?

पुरुषोत्तम संगमयुग कल्प का सर्वोत्तम समय है और इस ब्राह्मण जीवन में ही आत्मा को सुख-शान्ति, पवित्रता, आनन्द की चरमोत्कृष्ट प्राप्ति होती है, जो सुर-दुर्लभ है। इस जीवन में ही आत्मा को भूतकाल और भविष्य का ज्ञान होता है, यही आत्मा की चढ़ती कला का जीवन है। इस जीवन की प्राप्तियों का मूल स्रोत है परमपिता परमात्मा और उसका ज्ञान है। सत्य ज्ञान के आधार पर ही इस ब्राह्मण जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव होता है, जो सतयुग में भी नहीं हो सकता। इसके कारण ही इस ब्राह्मण जीवन को चोटी कहा जाता है। इसलिए ही इस जीवन को चोटी कहा जाता है।

Q. स्वेच्छा से देह त्याग की प्रक्रिया क्या है?

"वहाँ अकाले मृत्यु नहीं होगा। वह है ही अमरलोक, काल का नाम नहीं। वहाँ अचानक मृत्यु होती नहीं। तुम एक शरीर छोड़कर दूसरा लेते हो, दुख की कोई बात नहीं। सर्प को दुख होता होगा क्या? और ही खुशी होती होगी।" सा.बाबा 24.1.04 रिवा.

"तुम समझते हो हम खुद अपनी दिल से यह शरीर छोड़कर अपने घर जाकर फिर नये पवित्र सम्बन्ध में, नई दुनिया में आयेंगे। ... घड़ी-घड़ी बुद्धि में आना चाहिए कि हम अब घर जाने के लिए तैयारी कर रहे हैं। जो करेंगे वे ही साथ चलेंगे।" सा.बाबा 5.2.04 रिवा.

गायन है - जनमत मरत दुसह दुख होई। इसलिए संसार का हर प्राणी पुरानी देह का त्याग करने में भयभीत होता है। जब कि आत्मा अविनाशी है, जन्म और मृत्यु तो एक वस्त्र बदलना है और विश्व-नाटक की अपरिहार्य घटना है, फिर भी आत्मा का जीवन के प्रति मोह क्यों, मृत्यु

से भय क्यों ?।

इसका कारण अज्ञानता जनित देहाभिमान है। आत्मा अविनाशी है, जन्म और मृत्यु एक वस्त्र बदलना है। वास्तव में मृत्यु विश्व-नाटक की सबसे प्रिय घटना है और आत्माओं के लिए एक वरदान है परन्तु अज्ञानतावश अभिषाप बन गई है क्योंकि इससे ही हम पुराने वस्त्र का त्याग करके नया वस्त्र धारण करते हैं। विश्व-नाटक के इस सत्य को समझकर और सर्वशक्तिवान परमात्मा की याद से अज्ञानता जनित देहाभिमान मिट जाये और आत्मा इतनी शक्तिशाली हो जाये कि आत्मा के लिए जीवन और मृत्यु समान सुखदायी हो जायें तब ही आत्मा मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त होकर स्वेच्छा से देह त्याग करने में समर्थ होगी और इस जीवन में यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख अनुभव कर सकेगी, जो आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है।

जैसे अव्यक्त बापदादा गुल्जार दादी के तन में आते हैं, मुरली चलाते हैं, प्यार से बच्चों से मिलते हैं और चले जाते हैं। कर्तव्य करते हैं परन्तु किससे मोह नहीं है। नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप साक्षी स्थिति स्वेच्छा से देह त्याग के लिए मूलभूत आधार है। इस स्थिति में स्थित रहने का लम्बे समय से और गहन रूप का अभ्यास हो, तब ही हम समय पर स्वेच्छा से देह त्याग कर सकते हैं। अव्यक्त बापदादा की स्थिति को देखें तो देखते हैं कि कई बार स्टेज पर अन्चाही घटनायें भी हो जाती हैं, सभा में भी अन्चाही घटनायें हो जाती है परन्तु बापदादा पर उसका कोई प्रभाव नहीं होता है और न ही बापदादा उसका कोई वर्णन करते हैं। बाबा सारा दृश्य खेल की तरह देखते हैं और समय पर चले जाते हैं। सेकेण्ड में देह में आने और देह से न्यारे होने का सतत और सफल अभ्यास हो, तब ही अन्त समय में स्वेच्छा से देह का त्याग करके मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त हो सकते हैं। अव्यक्त बापदादा की प्रवेशता इस प्रक्रिया का सर्वोत्तम उदाहरण है। फालो फादर।

Q. अभी स्वेच्छा से शरीर छोड़ने का पुरुषार्थ करते और सतयुग में स्वेच्छा से शरीर छोड़ते। तो उस समय शरीर छोड़ने के समय की स्थिति का निर्णायक बिन्दु (Critaria) क्या है ?

सतयुग में स्वेच्छा से शरीर छोड़ने में समय रूपी कांटा जब उस स्थान पर आता है तो ड्रामा अनुसार आत्मा की इस देह और इस देह की दुनिया से बुद्धि हट कर जहाँ जाना है, वहाँ से लग जाती है और आत्मा को वहाँ की आकर्षण इतनी तीव्र होती है कि आत्मा एक सेकेण्ड भी इस देह में रहना नहीं चाहती या रह नहीं सकती और खुशी से देह का त्याग करके जहाँ जाना है, वहाँ चली जाती है। परन्तु अभी हम उसके लिए पुरुषार्थ करते हैं। अभी देह से न्यारा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का जितना ही दृढ़ अभ्यास होगा, देह और देह की दुनिया से

नष्टोमोहा होंगे, घर परमधाम की आकर्षण होगी, भविष्य सतयुग के लिए शुभ कर्मों का खाता जमा होगा तो अन्त समय स्वेच्छा से देह का त्याग कर सकेंगे। अन्त समय वह संकल्प आयेगा और सहज ही इस देह से न्यारा हो जायेंगे।

दूसरों की दुआओं, योग-दान से भी देह भूल जाती है और सहज देह का त्याग कर सकते हैं। इसलिए आत्मा का दुआओं का जमा का खाता भी समय पर स्वेच्छा से देह के त्याग में सहयोग करता है।

"बच्चों की बुद्धि में खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। यह तो समझाया है कि सतयुग में आत्मा का ज्ञान है, सो भी जब बूढ़े होते हैं तब अनायास ख्याल आता है कि यह पुराना शरीर छोड़, फिर दूसरा नया शरीर लेना है। यह ख्यालात भी पिछाड़ी के टाइम में आता है, बाकी सारा टाइम खुशी-मौज में रहते हैं। पहले यह ज्ञान नहीं रहता है।"

सा.बाबा 18.10.03 रिवा.

"देवताओं की आयु बहुत बड़ी होती है, तो साक्षात्कार होता है - अभी यह शरीर छोड़कर जाकर बच्चा बनना है। तो यह अन्दर में आना चाहिए - हम आत्मा यह पुराना शरीर छोड़ जाकर गर्भ में निवास करेंगी। अन्त मते सो गते। संकल्प आता है - बूढ़े से तो हम क्यों न बच्चा बन जाऊं। आत्मा जब इस शरीर के साथ है, तब तकलीफ महसूस करती है।"

सा.बाबा 21.10.03 रिवा.

"ड्रामा प्लेन अनुसार हमने एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। सुखधाम में आपेही खुशी से एक शरीर छोड़ते थे, दूसरा लेते थे। अब बाप खुशी से शरीर छोड़ने के लिए समझा रहे हैं। बच्चे समझते हैं - हम आत्मा परमधाम से आई हैं, यहाँ पार्ट बजाती हैं। पहले-पहले निश्चय चाहिए कि हम आत्मा अविनाशी हैं। ... आत्मा को कोई डर नहीं होना चाहिए।"

सा.बाबा 22.1.04 रिवा.

मृत्यु से भयभीत होना तो एक मूर्खता ही कहेंगे क्योंकि देह का त्याग करना, नई देह लेना इस विश्व-नाटक की अनिवार्य और अपरिहार्य घटनायें है। मृत्यु तो नव-जीवन का संदेश है, उसको समय पर सहर्ष स्वीकार कर लेना ही सच्चा ज्ञान है। यथार्थ ज्ञानी के लिए मृत्यु भी जीवन के समान सदा सुखदायी होगी।

जब आत्मा अपने सुखमय भविष्य के प्रति आश्वस्त होगी तो उसको मृत्यु का कोई भय नहीं होगा और इस जीवन की वस्तु और व्यक्तियों से लगाव भी नहीं होगा, जिससे आत्मा को मृत्यु का भय और मृत्यु का दुख नहीं होगा और समय पर सहज स्वेच्छा से देह त्याग कर सकेगी।

Q. जब आत्मा परमधाम से आती है तो उसके लिए गर्भ में फीचर्स किस आधार पर बनते हैं? परमधाम से आने वाली आत्मा के पहले जन्म के फीचर्स किस आधार पर बनते हैं। क्या सूक्ष्म शरीर जो परमधाम जाते समय होता है, वह सूक्ष्म वतन में विद्यमान रहता है, उसके आधार पर या संस्कार-स्वभाव के कारण जिस मात-पिता के पास जन्म लेना है, उसके आधार पर बनते हैं?

* जो भी धर्मपिता ऊपर से आते हैं, उस समय उन्होंने गर्भ से जन्म तो लिया नहीं, जैसे ब्रह्मा बाबा का पहले से ही सूक्ष्म शरीर है तो उसका साक्षात्कार होता है, ऐसे धर्मपिताओं का साक्षात्कार कैसे होता है। जैसे मोहम्मद के लिए कहते हैं कि कोई फरिश्ता आता था और कुरान की आयतें सुनाकर जाता था?

हर आत्मा का अन्तिम समय पावन बनकर घर परमधाम जाने के समय का सूक्ष्म शरीर सूक्ष्मवतन में रहता है, जिसका ही धर्म स्थापना के समय साक्षात्कार होता है। जैसे ब्रह्मा बाबा का सम्पूर्ण स्वरूप। निराकार परमपिता परमात्मा कब गर्भ से जन्म नहीं लेते इसलिए उनका सूक्ष्म या स्थूल शरीर नहीं है। धर्मपिता के सूक्ष्म शरीर और जिसमें प्रवेश करते हैं, उनके अन्त समय सम्पूर्ण बनकर परमधाम वापस जाने के समय के अन्त समय के सूक्ष्म-शरीरों में बहुत कुछ समानता होती है, जिनको पहचानना भी कठिन होता है। जैसे किन्हीं-किन्हीं जुड़ुवां बच्चों के शरीर। जैसे सूक्ष्म शरीर के बाद मूल में प्रवेश करते या बनते वैसे ही आदि समय अर्थात् परमधाम से आते समय हर आत्मा पहले उस सूक्ष्म शरीर में प्रवेश कर फिर स्थूल (गर्भ में) या धर्म स्थापना के लिए परकाया में प्रवेश करती। जैसे पॉजेटिव से नेगेटिव बनता और नेगेटिव से फोटो बनते, ऐसे ही ये प्रथम शरीर की प्रक्रिया होती है। या क्या होता है?

शिवबाबा संगम पर आकर सूक्ष्म वतन रचता है अर्थात् शिवबाबा संगम पर आकर सूक्ष्म वतन का ज्ञान देता है, सूक्ष्म वतन में आने-जाने का रास्ता बताता है। परमधाम से आते समय ये क्रिया स्वभाविक होती है, उसका कोई ज्ञान नहीं होता। धर्मपितायें भी स्वभाविक ही प्रवेश होकर अपने धर्म की स्थापना का ज्ञान देते हैं क्योंकि सूक्ष्मवतन का जैसे परमात्मा हमको ज्ञान देते वैसे उनमें ज्ञान नहीं होता, इसलिए वे इस तरह का कोई ज्ञान न देते और न दे सकते हैं। धर्मपिताओं में धर्म स्थापना के लिए शरीर में प्रवेश होने और चले जाने का ज्ञान होता है, वह भी धर्म-स्थापना के बाद जन्म लेने या गर्भ में प्रवेश होने के बाद भूल जाता है। बाबा ने जो ज्ञान दिया ये अति श्रेष्ठ और परमसुख को देने वाला है। बाबा के इस ज्ञान की एक-एक बात को विचार करें तो आत्मा परम सुख को अनुभव करती है और उसको धारण करने से वह

सुख जीवन में स्थाई हो जाता है।

क्या परमपिता परमात्मा का स्वरूप परिवर्तन होता है, कभी प्यार का सागर हो, कभी न हो, कभी धर्मराज के रूप में हो ...? उसका रूप परिवर्तन होता है या वह सदा एकरस है, हमको अपनी भावना और कर्मों अनुसार अनुभव होता है?

परमात्मा का रूप सदा एकरस है क्योंकि वह इस विश्व की किसी भी घटना से प्रभावित नहीं होता है। वह ज्ञान का सागर है और इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह सदा ही इसका साक्षी-दृष्टा है। उसका हर आत्मा के लिए समान प्यार है और उसकी सर्व शक्तियाँ सर्व आत्माओं के लिए सदा-सर्वदा, समान रूप से बरस रहीं हैं। आत्मायें अपनी भावना, पुरुषार्थ और ड्रामा के पार्ट अनुसार उनको अनुभव करती हैं और उसका लाभ उठाती हैं।

* क्या साधन-सम्पत्ति, पद की प्राप्ति ही जीवन का चर्मोत्कर्ष है?

नहीं। साधन-सम्पत्ति, पद तो इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए साधन मात्र हैं, उनकी प्राप्ति ही जीवन का चरमोत्कर्ष समझ लेना तो एक भ्रान्ति है। साधन-सम्पत्ति, पद की प्राप्ति से प्राप्त सुख की अपेक्षा विश्व-नाटक के ज्ञान को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमपिता परमात्मा की मधुर स्मृति में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने का सुख कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। जीवन के उत्कर्ष में साधन-सम्पत्ति, पद से भी ज्ञान, गुण, शक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

Q. क्या विश्व में सर्व आत्माओं को एक समान साधन-सम्पत्ति, सुविधायें प्राप्त होना सम्भव है? क्या विश्व-नाटक की ये विविधता पक्षपातपूर्ण है?

ये विश्व-नाटक विविधितापूर्ण है और ये विविधिता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है। साधन-सम्पत्ति, सुविधायें सर्व आत्माओं को एक समान न प्राप्त हैं और न ही हो सकती है। ये सब हर आत्मा को अपने पार्ट और पुरुषार्थ अनुसार समय पर प्राप्त होती हैं। इसमें किसी प्रकार का पक्षपात नहीं है।

Q. क्या ये ब्राह्मण जीवन इन्द्रिय सुखों और साधन-सम्पत्ति के संग्रह के लिए है?

इन्द्रिय सुख तो सारे कल्प भोगे, अभी भी दुनिया में अनेक मनुष्यों को अपार साधन-सम्पत्ति प्राप्त हैं, इन्द्रिय सुख तो जानवरों को भी प्राप्त है। ये ब्राह्मण जीवन ईश्वरीय सुखों और ईश्वरीय कर्तव्य के लिए मिला है। इस सत्य को जानकर इन्द्रिय सुखों से विरक्त होकर ईश्वरीय कर्तव्य में प्रवृत्त होने वाले का ही ये ब्राह्मण जीवन सफल है और परम सुखमय है।

Q. विश्व में अनन्त साधन-सुविधायें हैं। हमारे लिए क्या आवश्यक है, हमको क्या रखना

चाहिए, क्या नहीं रखना चाहिए, हमारे लिए क्या कृत्य है और क्या अकृत्य है ... उसका निर्णायक बिन्दु क्या है ?

आत्मिक स्थिति में स्थित और परमात्मा की मधुर याद में स्थित आत्मा को ये स्वत: आभास होता है और उसको आवश्यकता अनुसार समय पर ये सब स्वत: ही प्राप्त होते हैं। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होना ही हमारे लिए आवश्यक कृत्य है, जिसमें अन्य सब निर्णय आवश्यकता अनुसार समय पर स्वत: होते हैं। जिसमें आत्मिक शक्ति का विकास हो, जिसमें दूसरे के अधिकार का हनन न हो, उस सीमा तक ही साधनों का संग्रह उचित है और आत्मा को रखने का अधिकार है। जिसमें देश-काल-संगठन की मर्यादा का उलंघन न हो, उसके अनुकूल हो, उतना ही संग्रह उचित है। जिसको करने और रखने से मन में कोई द्वन्द न हो। वह साधन-सम्पत्ति अपने स्वस्थ पुरुषार्थ से अर्जित की हुई हो और उसका संग्रह ज्ञान सागर परमात्मा के महावाक्यों के अनुकूल हो।

Q. कर्मातीत स्थिति और विकर्माजीत स्थिति में क्या अन्तर है ?

पूर्ण कर्मातीत आत्मायें परमधाम में ही होती हैं और विकर्माजीत सतयुग-त्रेता में होती हैं। संगमयुग पर आत्मायें कर्मातीत और विकर्माजीत बनने का पुरुषार्थ करती हैं। यहाँ जो जितना इसका अभ्यास करता है, वह उतना ही उनका यहाँ अनुभव करता है। यहाँ का अनुभव परमधाम की कर्मातीत स्थिति और स्वर्ग की विकर्माजीत स्थिति से पदमगुणा श्रेष्ठ और परमानन्दमय है।

Q. मानव जीवन का लक्ष्य क्या है ?

Q. मुक्ति-जीवनमुक्ति आत्मा की मूलभूत प्यास है परन्तु मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव कब, कहाँ और कैसे ?

मुक्ति-जीवनमुक्ति। मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है और हर आत्मा अपने पुरुषार्थ विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार इसका अनुभव अवश्य करता है। संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है।

संगमयुग पर जब परमात्मा आकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का ज्ञान देते हैं और आत्मा जीवनमुक्त और जीवनबन्ध का ज्ञान होते हुए पुरुषार्थ करके जो मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती है, वही यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव है, जो सुर-दुर्लभ है।

Q. क्या विनाश के समय हर योनि की कुछ आत्मायें बीज रूप में बचेंगी या मनुष्य और कुछ अच्छी योनि की आत्मायें ही बचेंगी ?

Q. क्या सतयुग में हर योनि की आत्मायें बीजरूप में होगी या मनुष्यात्मायें और कुछ अच्छी

योनि की आत्मायें ही होंगी ?

विवेक कहता है कि हर योनि की या समकक्ष योनि की आत्मायें विनाश के समय बीजरूप में बचनी ही चाहिए अन्यथा उस योनि की उत्पत्ति कैसे होगी ? यदि किसी योनि की उत्पत्ति अनायास या बिना किसी बीज के हो सकती है तो फिर मनुष्य की क्यों नहीं हो सकती है। इसलिए जैसे मनुष्य योनि की जनसंख्या बीजरूप में बचती है, ऐसे हर योनि की आत्मायें बीज रूप में बचना ही चाहिए। भले उनका क्षेत्र अलग हो।

Q. क्या गीता का भगवान किसी लौकिक न्यायालय में सिद्ध होगा ? या ये भी बाबा की पुरुषार्थ कराने की एक विधि है, जिससे सर्वात्माओं को बाप का सन्देश मिले ?

"अभी आप लोगों ने बापदादा की एक आशा पूरी नहीं की है। की है ? ... गीता के भगवान पर हिलाकर दिखाओ। ... थोड़ा-थोड़ा रिहर्सल तो करो, हिलाकर देखे क्या कहते हैं।"

अ.बापदादा 31.12.03 जूरिस्ट विंग

"बापदादा की एक बात अभी तक कोई भी वर्ग वाले ने नहीं की है। याद है, कौन सी ? (गीता के भगवान की) ये गीता वाली बात छोड़ो, वह तो बापदादा ने कहा भी है कि यह बात बहुत श्रेष्ठ है परन्तु यह बहुत सम्भाल कर करनी है। पहले एक ग्रुप ऐसा तैयार करो जो आपके साथी बनें। वे माइक बनें और आप माइट बनो। ...अभी बापदादा की सभी बच्चों को यही शुभ राय वा श्रीमत है कि ऐसा ग्रुप तैयार करो, जो यह आवाज फैलाये कि यही परमात्म-कार्य है। निर्भय होकर, नि:संकोच होकर बाप को प्रत्यक्ष करे। दृढ़ता से बोले, अथॉरिटी से बोले। आजकल के जमाने में स्थूल अथॉरिटी भी काम में आती है। लौकिक अथॉरिटी और परमात्म अथॉरिटी दोनों अथॉरिटी वाले आवाज फैला सकते हैं।"

अ.बापदादा 2.2.04

"अपने नॉलेजफुल स्वरूप को प्रत्यक्ष करना है। अभी समझते हैं कि शान्ति स्वरूप आत्मायें हैं, यह स्वरूप प्रत्यक्ष हुआ भी है और हो भी रहा है लेकिन नॉलेजफुल बाप की नॉलेज है तो यही है। अब यह आवाज हो। ... सबके मुख से आवाज निकले कि सत्य ज्ञान है तो यही है।"

अ.बापदादा 9.3.85

बाबा ने हमको आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कल्प-वृक्ष, कर्मों की गुह्य गति, विभिन्न धर्मों आदि का जो ज्ञान दिया है, उसकी सत्यता सिद्ध होगी तब ही गीता ज्ञान दाता सिद्ध होगा। उसके लिए पहले वह ज्ञान हम सब बच्चों की बुद्धि में स्पष्ट हो, उस पर पूरा निश्चय हो, उसकी जीवन में धारणा हो तब ही गीता का भगवान हमारे स्वरूप से सिद्ध होगा। हम अपने दिल से पूछें - हमको ज्ञान की सत्यता पर कहाँ तक निश्चय है और वह हमारे जीवन में कहाँ

तक प्रैक्टिकल में है, तब ही गीता के भगवान को सिद्ध कर सकेंगे। गीता के भगवान के महावाक्य हैं - नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप, निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

Q. यदि केस किया जाये तो क्या कोई लौकिक दुनिया वाला जज ये निर्णय कर सकता है कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं, निराकार परमात्मा शिव है ?

Q. क्या वह समय आयेगा जब कोई ब्रह्मा कुमार-कुमारी लौकिक दुनिया में किसी उच्च या उच्चतम न्यायालय में जज बनेगा और उसके सामने गीता ज्ञान के विषय में केस हो और वह निर्णय दे कि गीता ज्ञानदाता श्रीकृष्ण नहीं निराकार परमपिता परमात्मा शिव है ?

इन सब बातों पर विचार करके ही ये निर्णय किया जा सकता है कि गीता का भगवान साकार देहधारी श्रीकृष्ण नहीं, निराकार ज्ञानसागर परमात्मा शिव है। यह सत्य किसी न्यायालय में सिद्ध होगा या पब्लिक कोर्ट अर्थात् जनता जनार्दन के बीच हमारे स्वरूप से सिद्ध होगा।

विवेक कहता है कि गीता का भगवान किसी न्यायालय में सिद्ध नहीं होगा, ये पब्लिक कोर्ट में ही सिद्ध होगा। जैसे ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को और उनके ज्ञान को अपने स्वरूप से प्रत्यक्ष किया, उनके कर्मों से शिवबाबा के कर्म प्रत्यक्ष हुए। ऐसे ही बच्चों को गीता ज्ञान की यथार्थ धारणा से गीता ज्ञान दाता को सिद्ध करना होगा। जब हम नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनेंगे तो गीता का भगवान स्वत: ही सिद्ध हो जायेगा।

भगवानोवाच्य - तुम्हारी स्थिति ज्ञान की सत्यता को सिद्ध करेगी, जब ज्ञान सिद्ध होगा तो ज्ञान-दाता सिद्ध होगा। गीता ज्ञान-दाता कोई कोर्ट में सिद्ध नहीं होगा। लौकिक दुनिया का जज, जो स्वयं ही यथार्थ गीता-ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता को नहीं जानते, वे "गीता ज्ञान-दाता कौन" का निर्णय कैसे कर सकते। ये जन-साधारण का कोर्ट है, जहाँ गीता ज्ञान-दाता सिद्ध होगा। तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो तुम्हारे स्वरूप से वे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायेंगे और ज्ञान की सत्यता को अनुभव करेंगे। तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो उनको साक्षात्कार हो जायेगा। जैसे ब्रह्मा बाबा के द्वारा अनेक आत्माओं को हुआ और वे बाबा के बन गये।

तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो तुम्हारे स्वरूप में परमात्मा के स्वरूप को देखेंगे। तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो वे तुम्हारी दृष्टि-वृत्ति से सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव करेंगे। जैसे ब्रह्मा बाबा ने हमको कराया।

बाबा के महावाक्य हैं - Son shows Father, बच्चे प्रत्यक्ष होंगे तो बाप प्रत्यक्ष होगा अर्थात् जब हमारी अवस्था ऐसी ऊंची होगी कि दुनिया हमारी तरफ आकर्षित होगी और हम उनको अपनी स्थिति का राज़ बतायेंगे तो वे आपही इस सत्य को अनुभव करेंगे।

गीता ज्ञान की धारणा ही गीता ज्ञान को और गीता ज्ञान दाता को प्रत्यक्ष करेगी। गीता ज्ञान का सार है - देह सहित देह से सर्व सम्बन्धों से नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप में स्थित, निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्थिति। जब हमारी ऐसी होगी तो वह स्थिति ही गीता ज्ञान दाता को सिद्ध करेगी।

"गीता का रचयिता जरूर चाहिए। ... मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन - इन तीनों लोकों को कहा जाता है त्रिलोकी, इनको जानने वाला त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी परमपिता परमात्मा शिव है, यह उनकी महिमा है न कि श्रीकृष्ण की। कृष्ण की महिमा है - सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम। उनकी भेंट करते हैं चन्द्रमा से। परमात्मा की भेंट चन्द्रमा से नहीं करेंगे।" सा.बाबा 11.11.03 रिवा.

Q. क्या जो यहाँ सर्व सुखों का अनुभव नहीं करता, इस जीवन से परेशान है, वह भविष्य जीवन में या सतयुग में सर्व सुखों का अनुभव कर सकता है?

ये प्रकृति का नियम है कि भविष्य जीवन वहीं से आरम्भ होगा, जहाँ से अभी समाप्त होगा। तो जो अभी सर्व सुखों का अनुभव नहीं कर रहा है, उसके लिए भविष्य जीवन में सर्व सुखों का अनुभव करना असम्भव ही है। मुक्ति-जीवनमुक्ति परमात्मा पिता का वर्सा है। संगमयुग ही यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का युग है। ड्रामा की अटल भावी और कर्म के अटल विधान और सिद्धान्त को जानने और निश्चय वाला किसी भी घटना से अप्रभावित आत्मा ही निर्भय-निश्चिन्त होकर इस मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकता है। जननी-जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयशी। बाप अभी है तो उसका प्यार स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है।

Q. ड्रामा के विधि-विधान और राज़ को जानने वाला किसी गलत कर्म को करने वाले को दण्ड दे सकता है या देना चाहिए?

वास्तव में विश्व-नाटक के कम और फल के विधि-विधान अनुसार अच्छे-बुरे हर कर्म का अच्छा या बुरा फल ड्रामा में नूँधा हुआ है, जो कर्ता को भोगना ही पड़ता है परन्तु उत्तरदायी व्यक्ति को संगठन के हित को देखकर, उसके कानून के अनुसार निष्पक्ष भाव से अपना कर्तव्य पालन करना ही चाहिए।

Q. शुभ-भावना और शुभ-कामना तथा न्याय-प्रक्रिया में क्या सामन्जस्य है?

Q. क्या समर्थ और उत्तरदायी आत्मा को किसी आत्मा को पाप कर्म करते हुए देखकर, जानकर उसको साम-दाम-दण्ड-भेद से रोकना ही शुभ-भावना और शुभ-कामना है, न्याय है, उसका कर्तव्य है या करने देना ही उसके प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना है, न्याय है, कर्तव्य-पालन है?

Q. किन्ही दो व्यक्तियों के द्वारा किसी समान या समकक्ष पाप कर्म, विकर्म करने पर उनको समान दण्ड देना यथार्थ है या बड़े-छोटे, नये-पुराने, अपने निकट या दूर का भेद करके न्याय करना न्याय है ?

Q. किसी पाप कर्म करने पर शुभ-भावना, शुभ-कामना, ड्रामा समझ कर छोड़ देना न्याय है या संगठन के हित को देखकर यथोचित दण्ड देना न्याय है ?

Q. यदि कोई गलत काम करता है तो उसकी आवाज उठाना उचित और न्याय-संगत है या ड्रामा समझकर आंखे बन्द कर लेना न्याय-संगत है, उचित है ?

वर्तमान समय यज्ञ का कार्य ज्ञान सागर, सर्वशक्तिवान, धर्मराज, सर्व के कल्याणकारी, सर्वज्ञ परमपिता परमात्मा की छत्रछाया में, उनकी श्रीमत के आधार पर, उनकी मार्ग दर्शना में चल रहा है। वह सर्वज्ञ है, सबकी जन्मपत्री को जानने वाला है, उनकी भेंट में हम अल्पज्ञ हैं, इसलिए उनकी न्याय-प्रक्रिया, विधि-विधान में श्रृद्धा और विश्वास रखना ही हमारे व्यक्तिगत जीवन और संगठन के लिए हितकर है, न्यायपूर्ण है। हम अपने अभीष्ट लक्ष्य के लिए पुरुषार्थी हैं, इसलिए अपने अभीष्ट लक्ष्य में सफलता पाने के लिए हमको उन बातों से आंखे बन्द कर अपने मन-बुद्धि को अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने पर ही केन्द्रित रखना ही उचित है और न्यायपूर्ण है।

जो बात हमारे अधिकार और कर्तव्य क्षेत्र में नहीं है, उसमें न जाना ही हमारे लिए हितकर और न्यायपूर्ण है। जिस कार्य को, न्याय को परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ है, सर्वशक्तिवान है, बुद्धिमानों की बुद्धि है, सर्व समर्थ है, फिर भी वह साक्षी होकर देखता है तो हम क्यों उसमें अपने समय, संकल्प और शक्ति को व्यर्थ करते हैं। ये विचारणीय सत्य है।

लोभ-मोह-भय (मृत्यु-भय, मान-शान का भय, अहित की परिकल्पना) का न्याय-प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है। इनके वशीभूत व्यक्ति कभी यथार्थ न्याय नहीं कर सकता है।

Q. प्राय: हम किसी भी बात को न जानते, न समझते हुए भी उसके विषय में अपना निर्णय दे देते हैं। वह निर्णय अपने मन में हो या शब्दों में हो - ये कहाँ तक यथार्थ है ?

यथार्थ निर्णय वही दे सकता है, जो अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित हो और उसकी बुद्धि एक परमात्मा की याद में हो। परमात्मा धर्मराज भी है और जो उनकी मधुर स्मृति में होगा, उसका निर्णय अवश्य ही यथार्थ होगा। सबके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखना हमारा परम कर्तव्य है परन्तु देश-काल-परिस्थिति को देखते हुए यथार्थ निर्णय करना भी हमारा परम कर्तव्य है। इसके लिए बाबा ने कहा - लव और लॉ का बैलेन्स रखना है। न्याय ऐसा हो, जो व्यक्ति का भी अहित न हो और संगठन की भी मर्यादा भंग न हो, तब ही उसे यथार्थ निर्ण कहा

जायेगा। यदि हम यथार्थ सत्य को न जानते हुए लोभ-मोह-भय, अहंकार के वशीभूत, अपने अधिकार क्षेत्र के बाहर किसी बात के प्रति निर्णय देते हैं तो हम अपने ऊपर पाप का बोझा चढ़ाते हैं।

Q. सत्य आध्यात्मिक ज्ञान की परख क्या है अर्थात् हमको जो ज्ञान मिला है, वही सत्य है, वह कैसे समझ सकते या किसको सिद्ध कर सकते हैं?

1. आध्यात्मिक ज्ञान तर्क का विषय नहीं है और अन्धश्रृद्धा से स्वीकार करने का विषय भी नहीं है। यह स्वचिन्तन से आत्मानुभूति का विषय है। यथार्थ ज्ञान का दाता परमात्मा है। जो ज्ञान हमारे पास है या किसी मनुष्य के द्वारा दिया गया है और जो ज्ञान, ज्ञान सागर परमात्मा देता है, उसके विषय में निष्पक्ष भाव + स्व-कल्याण की भावना से चिन्तन करने वाला ही यथार्थ निर्णय कर सकता है अर्थात् वही आत्मानुभूति + परमात्मानुभूति कर सकता है और वही सम्पूर्णता और सम्पन्नता, आत्म-सन्तुष्टि का पुरुषार्थ कर सकता है। जिसको सम्पूर्णता + सम्पन्नता + आत्म-सन्तुष्टि की अनुभूति हो जाती है, उसकी जानने की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है और उससे प्राप्त सुख को चिर-स्थाई बनाने का पुरुषार्थ चलने लगता है। उसकी इच्छामात्रम अविद्या की स्थिति होती है।

2. आत्मानुभूति वाला ही परमात्मानुभूति कर सकता है और परमात्मानुभूति वाला ही ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा इस विश्व-नाटक के सभी राज़ों अर्थात् विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान, कर्म-सिद्धान्त, योग का ज्ञान अर्थात् आत्मा के ऊपर विकर्मों और विकारों की खाद, लेपक्षेप, बोझा खत्म करने का ज्ञान प्राप्त करके अपने अभीष्ट लक्ष्य के लिए पुरुषार्थ करके सम्पूर्णता और सम्पन्नता अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने लगता है, जिससे उसकी सत्य ज्ञान को प्राप्ति की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है और यथार्थ ज्ञान को धारण कर मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव को चिर-स्थाई बनाने का पुरुषार्थ आरम्भ हो जाता है। वह इच्छामात्रम अविद्या की स्थिति को प्राप्त करके जीवन में सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव करने का पुरुषार्थ करने लगता है। ये मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होना ही सत्य ज्ञान की परख है।

3. सत्य ज्ञान से आत्मानुभूति होती है और आत्मानुभूति होने के कारण देहाभिमान अर्थात् अहंकार समाप्त होने लगता है और विश्व-प्रेम जाग्रत होने लगता है।

4. सत्य ज्ञान मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय में समान स्थिति होने लगती है अर्थात् आत्मा अपने को विपरीत परिस्थिति में भी एकरस रखने में समर्थ होती है, जिससे वह विकर्मों से बच जाती है और उसकी स्वयं भी अनुभूति करती है और दूसरे भी उससे वह अनुभूति करते हैं।

5. सत्य ज्ञान अर्थात् जिससे देह भूल जाये, सहज अपने सत्य स्वरूप में स्थित हो जाये, परमशान्ति की अनुभूति हो, इच्छामात्रम अविद्या की स्थिति हो, आत्म-कल्याण के लिए ज्ञान की जिज्ञासा समाप्त होकर आत्म-कल्याण का पुरुषार्थ आरम्भ हो जाये।

6. यथार्थ ज्ञान अर्थात् (आत्मानुभूति + परमात्मानुभूति) - (जिज्ञासा + अहंकार + अज्ञानता) = आत्म-सन्तुष्टि = सम्पन्नता अर्थात् भरपूरता की अनुभूति अर्थात् विकर्मों का खाता कम होना आरम्भ, संस्कारों की अपवित्रता कम होकर पवित्रता की ओर अग्रसर

7. यथार्थ ज्ञान दृष्टि आत्मिक बना देता है, सर्व के प्रति कल्याण की भावना बना देता है, राग-द्वेष खत्म कर देता है। सत्य ज्ञान को सिद्ध करने में अहंकार नहीं आना चाहिए, तब ही सामने वाला ज्ञान की सत्यता को अनुभव करेगा, स्वीकार करेगा।

8. सत्य ज्ञान एक अंकुश है, जो हमको बुरे कर्मों से रोकता है और एक दिव्य प्रकाश के रूप में श्रेष्ठ कर्मों के लिए मार्ग-दर्शन करता है, श्रेष्ठ कर्मों के लिए प्रेरित करता है।

9. सत्य ज्ञान की कसौटी - निश्चय करने के लिए अगर माध्यम सही है तो उससे मन में विरोधाभास (Contradiction) नहीं होगा, इसलिए सदा सन्तुष्टि होगी।

Q. मन्सा सेवा एवं मन्सा भोगना का स्वरूप क्या होता है ?

मन आत्मा की मुख्य शक्ति है, इसलिए मन्सा का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तविकता तो ये है कि मन्सा ही मनुष्य के सारे कर्मों बीज है और उनसे निर्मित फल को भोगने का आधार है। ये ब्राह्मण जीवन है ही स्व-सेवा और विश्व-सेवा के लिए। जैसे स्थूल कर्म, बोल से हम सेवा करते हैं, वैसे ही मन्सा द्वारा भी सेवा कर सकते हैं। मन्सा का प्रभाव वाचा और कर्म से कई गुणा अधिक प्रभावशाली है। मन्सा द्वारा दुनिया के किसी कोने में बैठे भी हम दुनिया के किसी कोने में बैठी आत्मा की सेवा कर सकते हैं। किसी व्यक्ति विशेष की सेवा के अतिरिक्त हम लाइट हाउस के समान समग्र विश्व की सेवा कर सकते हैं। इस सबके लिए मन्सा बहुत पवित्र और शक्तिशाली चाहिए। मन्सा को पवित्र और शक्तिशाली बनाने के लिए एकमात्र साधन परमपिता परमात्मा के साथ योग ही है क्योंकि वही सर्वशक्तिवान है।

जैसे मन्सा सेवा वाचा और कर्मणा से अधिक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण है, ऐसे ही मानसिक भोगना भी दैहिक भोगना से बहुत अधिक दुखदायी है। आत्मा के विकर्म में प्रवृत्त होते ही मानसिक भोगना का दण्ड आरम्भ हो जाता है। भले ही कोई उसे उस समय अनुभव करे या न करे परन्तु समय आने पर अनुभव होता ही है। मन्सा भोगना का प्रभाव शरीर पर भी पड़ता है और शारीरिक भोगना का भी कारण बन जाता है। जैसे कर्म का बीज संकल्प है वैसे शारीरिक भोगना का बीज है मानसिक भोगना। जीवघात का कारण भी मन्सा भोगना ही है।

मन्सा से उत्पन्न हुए संकल्पों के साथ प्रवाहित होने वाले सूक्ष्मातिसूक्ष्म कण अर्थात् परमाणु दुनिया के किसी भी कोने में बैठी आत्मा को प्रभावित करते हैं और कर सकते हैं, जिनका प्रभाव व्यक्ति की भावना पर आधारित होता है। इस सत्य को जानकर खान-पान, व्यवहार को करने वाला ही इस आध्यात्मिक पुरुषार्थ में सफल होता है। वह मन्सा सेवा कर अपना भाग्य बना सकता है और अपने इस संगमयुगी आध्यात्मिक जीवन में मानसिक भोगना से बच सकता है क्योंकि ये मानसिक भोगना अपने अभीष्ट पुरुषार्थ में भी बाधक बन जाती है। इसीलिए ही ज्ञान सागर बाबा ने हम आत्माओं को खान-पान, रहन-सहन आदि की परहेज बताई है। मानसिक भोगना से तथा दैहिक व्याधियों से निदान पाने के लिए भी हम अपनी मन्सा का उपयोग कर सकते हैं अर्थात् अपने योगबल से उनसे मुक्ति पा सकते हैं। योग का स्थूल पदार्थों पर कैसे प्रभाव पड़ता है, उसको जानना, उन पर निश्चय करके यथार्थ प्रयत्न करने वाला अनेक बातों से बच सकता है।

यज्ञ में भोग लगाना, भोग लगाकर खाना भी आत्मा की मन्सा का प्रभाव जड़ तत्वों पर भी पड़ता है, उसको सिद्ध करने और उसका लाभ उठाने की एक प्रक्रिया है, जो आत्मा की आध्यात्मिक उन्नति में बहुत महत्वपूर्ण है। **अव्यक्त बापदादा ने आदरणीय दादी जी के लिए शारीरिक व्याधि से निदान पाने के लिए योग के वायब्रेशन्स से सरचार्ज जल दवाई के रूप में पीने की श्रीमत दी थी।**

निश्चय से विष भी निष्क्रिय हो जाता है, इसके भक्ति मार्ग में भी मीरा आदि के उदाहरण है और दुनिया में भी ऐसी अनेक घटनायें हैं। किसी व्यक्ति को सांप ने काट लिया परन्तु उसने जान नहीं पाया तो उस पर विष का प्रभाव नहीं हुआ और काफी समय बाद जब उसने उस सत्य को जाना कि उस समय उसको सांप ने काटा था तो उस समय ही उस पर विष का प्रभाव हो गया क्योंकि निश्चय के आधार मानव-शरीर में अनेक प्रक्रियायें होती हैं जो उसके दैहिक प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।

Q. कैसी स्थिति हो जो ज्ञान की यह सब बातें अनुभव कर सकें और ज्ञान का सच्चा सुख ले सकें ?

ये संगमयुगी ब्राह्मण जीवन सारे कल्प में सर्वश्रेष्ठ जीवन है। इस जीवन का यथार्थ सुख हम तब ही अनुभव कर सकेंगे, जब हम आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे। ज्ञान के विभिन्न सत्यों, जिनका ज्ञान ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको दिया है, उनका अनुभव करने के लिए, उनके विषय में विचार-सागर मंथन कर उनकी सत्यता को अनुभव करना अति आवश्यक है। इसीलिए बाबा बार-बार मुरलियों में कहता है - बाबा जो ज्ञान देता है, जो राज़ समझाता है,

उनके विषय में विचार सागर मंथन करो। जब विचार सागर मंथन करके उनकी सत्यता, उनका जीवन में महत्व, उनका जीवन पर प्रभाव को अनुभव करोगे तब ही जीवन में उनका सुख अनुभव होगा।

"कितनी वैल्यूबुल पढ़ाई है। बाप के पास ही एक्यूरेट नॉलेज है, जो बच्चों को देते हैं। ... सारी सृष्टि कैसे चक्र में फिरती रहती है। यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, इसमें नई एडीशन हो नहीं सकती। गायन भी है - बनी-बनाई ... चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होये। जो कुछ होता है, वह ड्रामा में नूँध है। साक्षी होकर देखना पड़ता है। ... इसमें रोने-रूसने की कोई बात नहीं। अफसोस उनको होता है, जो ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को रियलाइज नहीं करते।... ऐसी-ऐसी बातों पर विचार कर पक्का कर लेना चाहिए।"

सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

Q. ज्ञान की इन सब बातों को कौन धारण कर सकेंगे ? क्या धारणा हो, जो ज्ञान की सब बातों की धारणा कर सकें ?

जिनको पवित्रता की धारणा होगी, बाबा के बताये गये नियम-संयम पर चलते होंगे अर्थात् जो पूरे आत्माभिमानी होंगे और परमात्मा के विधि-विधान पर निश्चय होगा, उनको ही ज्ञान की इन सब बातों की धारणा होगी। जिनको ज्ञान की बातों की अच्छी धारणा होगी, वे ही इनका सच्चा सुख अनुभव करेंगे। बाबा कहता है - ये ज्ञान रत्न हैं और ज्ञान का एक-एक रत्न लाखों रुपयों का है। ज्ञान का एक-एक रत्न जीवन को पलटाने वाला है।

"यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, यह तुम्हारे सिवाए और कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। ... ज्ञान की धारणा सबको एकरस हो नहीं सकती है। इसमें ज्ञान चाहिए, याद चाहिए, धारणा बड़ी अच्छी चाहिए। ... पिछाड़ी में तुमको एकदम भाई-भाई होकर रहना है। नंगे आये हैं, नंगे जाना है।"

सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

"विचार सागर मंथन कर औरों को सुनाते रहेंगे तब चिन्तन चलेगा। ... यह पढ़ाई है। आमदनी में खुशी होती है। जिसके पास जितने ज्ञान रत्न होंगे, उतनी खुशी भी होगी।"

सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

Q. भगवानोवाच्य - स्वर्ग है वण्डर आफ दि वर्ल्ड। तो स्वर्ग में क्या विशेष वण्डर होगा ?

स्वर्ग में साइन्स का चरमोत्कर्ष होगा, आत्माभिमानी स्थिति होगी। प्रकृति पूर्ण सतोप्रधान होने कारण साधन-सम्पत्ति का सुख भी सतोप्रधान होगा। सतोप्रधान प्रकृति का सौदर्य होगा। आत्मायें पूर्ण सुख-शान्ति का अनुभव करेंगी। योगबल से जन्म होगा।

Q. जीवन की सर्वोच्च सुख की स्थिति कब, कहाँ और कैसे है ?

1. क्या जब प्रथम बार बाबा से मिलते हैं तब? - जब आत्मा बाबा की शक्ति से अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति के परमसुख का अनुभव करती है। या
2. जब सम्पूर्ण बनकर घर जाते अर्थात् अन्त समय? जब आत्मा अपने पुरुषार्थ से, ज्ञान की धारणा से, अभ्यास से अपनी सतोप्रधान स्थिति में स्थित होती है, परमात्मा का साथ होता है, आत्मा की चढ़ती कला होती है और मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख के अनुभव में होती है। या
3. जब सतयुग में प्रथम जन्म लेते, तब? जब आत्मा पूर्ण सतोप्रधान होती परन्तु उतरती कला होती, स्पष्ट ज्ञान नहीं होता, परमात्मा का साथ भी नहीं होता परन्तु सुख पूरा होता है। या
4. अभी संगमयुग के पुरुषार्थी जीवन में? जब पुरुषार्थ करके आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की मधुर स्मृति से मुक्ति-जीवनमुक्ति के परमसुख का अनुभव करती है या अनुभव करने का पुरुषार्थ करती है? अभी आत्मा को परमात्मा का साथ है, आत्मा की चढ़ती कला है, आत्मा को तीनों लोकों, तीनों कालों का ज्ञान परन्तु संगमयुग होने के कारण आत्मा के पुराने हिसाब-किताब के फलस्वरूप, पुराने स्वभाव-संस्कार के कारण विकर्म होने से कब-कब दुख-दर्द का भी अनुभव होता है।

आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, परमात्मा का साथ परमानन्दमय है, ये विश्व-नाटक परम सुखमय है परन्तु अनुभव करना आत्मा का अपना कर्तव्य है। जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है, इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की स्मृति होती और परमात्मा की मधुर स्मृति में होती है तो आत्मा को जो देव-दुर्लभ अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता वह त्रिलोक्य में कहाँ भी नहीं हो सकता। इस सत्य का निश्चय करके उस सुख का अनुभव करने में ही इस जीवन की सफलता है।

Q. ज्ञान की हर प्वाइन्ट्स को शक्ति या शस्त्र के रूप में धारण करने के लिए क्या पुरुषार्थ है?

शस्त्र शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए होता है। जब ज्ञान की हर प्वाइन्ट हमारे जीवन में शस्त्र के रूप में धारण होगी तो कब भी माया का कोई वार हमारे ऊपर नहीं होगा। माया सामने आयेगी परन्तु वार नहीं होगा, हार नहीं होगी। जब वार और हार नहीं होगी तो दुख भी नहीं होगा और जब दुख नहीं होगा तो जीवन में सदा सुख का अनुभव होगा। ये माया का वार और हार न होना ही ज्ञान की यथार्थ धारणा की निशानी है। इसके लिए मनन-चिन्तन करके ज्ञान की हर प्वाइन्ट की यथार्थता को अनुभव करके, निश्चयबुद्धि होकर उसको धारण करना, जिससे वह आवश्यकता के समय पर काम में आये।

"अन्तर यह है कि ज्ञान को प्वाइन्ट्स के रूप में धारण करना और ज्ञान की एक-एक बात को

शक्ति के रूप में धारण करना - इसमें अन्तर पड़ जाता है। जैसे ड्रामा की प्वाइन्ट उठाओ। यह बहुत बड़ा विजय प्राप्त करने का शक्तिशाली शस्त्र है। जिसको ड्रामा के ज्ञान की शक्ति प्रैकटिकल जीवन में धारण है, वह कभी भी हलचल में नहीं आ सकता। सदा एकरस अचल-अडोल बनने और बनाने की विशेष शक्ति यह ड्रामा की प्वाइन्ट है। इसे शक्ति के रूप में धारण करने वाला कभी हार नहीं खा सकता।" अ.बापदादा 21.3.85

Q. इस पुरुषार्थी जीवन में सबसे अच्छी अवस्था क्या है ?

ड्रामा के यथार्थ ज्ञान को बुद्धि में धारण करके, इसे साक्षी होकर देखना और अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित होकर परमात्मा की मधुर स्मृति में स्थित होना ही पुरुषार्थी जीवन में सबसे अच्छी अवस्था है, जिस स्थिति में ही आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुर-दुर्लभ सुख अनुभव करती है

Q. सतयुग में प्रकृति मनवांछित फल देने वाली होगी तो वहाँ मनुष्यों की दिनचर्या क्या होगी ?

परमधाम से आत्मायें आती हैं तो शान्तिप्रिय होती हैं, इसलिए उनके कोई अधिक संकल्प आदि नहीं होते, शान्ति में रहते हैं। प्रकृति का भी अपना विशेष सुख है, जिसके अनुभूति में आत्मा होती है। वहाँ आत्मायें प्रकृति के सुख में अधिक रहते हैं और खेलपाल में भी समय रहता है, आर्ट और कल्चर में भी बिजी रहते हैं और कुछ समय अपने दैनिक जीवन के व्यवहारिक कार्यों में भी लगाते हैं। परन्तु सभी कार्य बड़े धैर्यवत् और नियमित चलते हैं।

Q. जीवन का प्रयोजन क्या है, ब्राह्मण जीवन का प्रयोजन क्या है ?

जीवन का प्रयोजन है - साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखना, इसका आनन्द लेना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना। परन्तु ये विश्व-परिवर्तन का समय है, हम परमात्मा के साथ विश्व-परिवर्तन में सहयोगी हैं तो हमारा कर्तव्य है हम देही-अभिमानी स्थिति में स्थित साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखें, पार्ट बजायें और दूसरी आत्माओं को भी इसकी अनुभूति करायें, इसके लिए सहयोग दें।

Q. विनाश की प्रक्रिया कब, क्यों और कैसे ?

बाबा ने अनेक बार कहा है - जब तुम कर्मातीत बनेंगे, तब विनाश होगा। कर्मातीत अर्थात् हमारा यहाँ कोई भी कर्म अर्थात् पार्ट इस विश्व रंगमंच पर नहीं रहेगा। हमारी घर जाने की लगन लग जायेगी। बाबा ने ये भी कहा है कि जब तुम विनाश को भूल जायेंगे तब अचानक विनाश होगा।

सर्व आत्माओं को बाप का सन्देश मिल जायेगा। ब्रह्मा बाबा भी अभी वतन में बैठा है और आत्माओं को प्रेरित करने का पार्ट बजा रहा है, जिससे सबको बाप का सन्देश मिल

जाये, आत्मायें पावन बनकर मुक्ति-जीवनमुक्ति को प्राप्त कर लें। ब्रह्मा सर्व जीवात्मओं का पिता है। जब तक सबका कल्याण नहीं होता तब तक वह भी घर जा नहीं सकता, इसलिए बाबा सूक्ष्म वतन से ये कार्य कर रहा है।

जब तुम पावन बन जायेंगे अर्थात् तुम जब पावन बनेंगे तो तुम्हारे लिए दुनिया भी पावन चाहिए तो पुरानी दुनिया का विनाश अवश्य होगा। एक भी आत्मा शत प्रतिशत पावन बन जायेगी अर्थात् शिव बाबा के समान बन जायेगी तब विनाश होगा। ब्रह्मा बाबा भी अभी सूक्ष्म शरीर के साथ सूक्ष्म वतन में है।

जब तुम देवता बन जायेंगे। देवताओं के पैर पतित दुनिया में पड़ नहीं सकते।

जब सर्व आत्मायें परमधाम से इस धरा पर आ जायेंगी, तब वापस जाना आरम्भ होगा अर्थात् तब विनाश होगा।

"तुम्हारा इम्तहान तब होगा जब तुम्हारी राजधानी पूरी स्थापन हो जायेगी। ... ज्ञान पूरा हो जायेगा तब लड़ाई भी लगेगी। ... अभी तो कोई भी सौ परसेन्ट बने नहीं हैं। अभी तो घर-घर में पैगाम पहुँचाना है।" सा.बाबा 23.2.04 रिवा.

Q. बाबा ने कहा है - जो पहले आये वे ही पहले घर जायेंगे अर्थात् पहले उनको सम्पूर्ण बनना है। - इस सत्य को समझ कर उस पर विचार करके निश्चित करो कि ये सब कब और कैसे होगा ? कब एटमिक वार होगी ?

"पहले नम्बर में देवी-देवताओं की आत्मायें आई, उनके पीछे दूसरे नम्बर वाले आते हैं। ... जो पहले आते हैं तो जाना भी पहले उनको ही है।"

सा.बाबा 18.03.03 रिवा.

Q. क्या ड्रामा के यथार्थ ज्ञान से कोई पुरुषार्थी पुरुषार्थहीन हो सकता है ?

ड्रामा को यथार्थ रीति समझने का प्रयत्न भी बहुत बड़ा पुरुषार्थ है। जो ड्रामा के राज़ को समझ लेगा वह कभी पुरुषार्थहीन हो नहीं सकता क्योंकि ड्रामा उसको पुरुषार्थ अवश्य करायेगा। ड्रामा का ज्ञान तो हमको पुरुषार्थ में परम सहयोगी है। ड्रामा के ज्ञान से ही हम सहज निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं और निर्संकल्प स्थिति वाला ही बीजरूप परमात्मा को याद करने का अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकता है। ड्रामा का ज्ञान ही हमको साक्षी स्थिति का अनुभव कराता है।

"जिसको ड्रामा के ज्ञान की शक्ति प्रैकटिकल जीवन में धारण है, वह कभी भी हलचल में नहीं आ सकता। सदा एकरस अचल-अडोल बनने और बनाने की विशेष शक्ति यह ड्रामा की प्वाइन्ट है।" अ.बापदादा 21.3.85

Q. जीवन की सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति क्या है ?
परमपिता परमात्मा की प्राप्ति, परमात्मा से विश्व-नाटक के ज्ञान की प्राप्ति, जिससे हम मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज अनुभव कर सकते हैं, जो आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है।
Q. क्या हम किसी को ये कह सकते हैं कि अभी परमात्मा ने हमको ये बात नहीं बताई है ? जब ब्रह्मा बाबा सम्पूर्णता को प्राप्त हो गया और समय सम्पूर्णता की ओर जा रहा है तो इससे ये बात सिद्ध होती है कि बाबा ने सब बातें समझा दी हैं। जब ब्रह्ता बाबा सम्पूर्ण हो गये तो ये कैसे कहा जा सकता है कि बाबा ने हमको ये बात नहीं बताई है। यदि नहीं बताई तो ब्रह्मा बाबा कैसे सम्पूर्ण बन गये। बाबा ने सब बातें बताई है, उसको समझकर ही ब्रह्मा बाबा सम्पूर्ण बना है। वास्तविकता ये है कि बाबा ने तो बताई है परन्तु वह बात हमने अभी तक नहीं समझी है। इसलिए ये कहना यथार्थ नहीं है कि कोई बात बाबा ने नहीं बताई है। यदि हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हों तो सब बातों का उत्तर समय अवश्य आयेगा।
"यह भी तुम जानते हो कि इस समय जो हम इस ज्ञान से पद पाते हैं, चक्र लगाकर फिर वही बनेंगे। यह बड़ी आश्चर्यवत् विचार सागर मंथन करने की बातें हैं। ... यह बातें तुम बच्चे ही समझाते हो। तुम थोड़ेही कहेंगे कि हम नहीं जानते हैं। तुमको बाप इस समय सब समझाते हैं।" सा.बाबा 12.2.04 रिवा.
Q. यथार्थ योग क्या है ?
अपने निराकार ज्योतिर्बिन्दु आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर, ज्योतिर्बिन्दु निराकार परमात्मा की याद, जहाँ इन्द्रियों की सर्व क्रियायें बन्द हो जायें। चेतन हो पर चेतनता न हो अर्थात् देह में रहते बीजरूप स्थिति।
"कोई कहे मैं 6-8 घण्टा योग में रहता हूँ तो बाबा मानेगा नहीं।... मुरली सुनना याद नहीं है। यह तो धन कमाते हो। याद में तो सुनना भी बन्द हो जाता है।... मुरली सुनने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। ... याद से ही सतोप्रधान बनेंगे।" सा.बाबा 29.1.04 रिवा.
Q. ज्ञान-योग से पुराने स्वभाव-संस्कार, विकर्मों का बोझ खत्म होता है ? यदि हाँ तो कहाँ तक और कैसे, यदि नहीं तो क्यों ?
ज्ञान-योग से आत्मा का पुराना स्वभाव-संस्कार परिवर्तन होता है, मिटता नहीं है अर्थात् पुराना मर्ज हो जाता है और नया इमर्ज हो जाता है। मर्ज हुआ 5000 साल बाद अपने समय पर फिर इमर्ज होता है। आत्मा पर विकर्मों का जो बोझा है, वह खत्म हो जाता है और आत्मा पावन बन जाती है। विकर्मो का बोझा उतर जाता है तो आत्मा हल्की हो जाती है और उड़ती कला का अनुभव करती है। आत्मा को न भूतकाल का चिन्तन रहता है और न भविष्य की चिन्ता रहती

है, वह वर्तमान में ही सम्पूर्णता का अनुभव करता है।

Q. पवित्र आत्मा की क्या पहचान है अर्थात् पवित्रता की यथार्थ धारणा क्या है ?

आत्मा जब चाहे, जहाँ चाहे, जितना समय चाहे अपनी मन-बुद्धि को उस स्थिति में स्थित कर ले। उसकी दृष्टि-वृत्ति आत्मिक हो, इच्छा मात्रम् अविद्या हो अर्थात् कोई इच्छा न हो परन्तु समय सभी आवश्यकतायें स्वत: ही पूरी हो जायें। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति का अंश भी न हो। मित्र-शत्रु, अपने-पराये की भावना न हो।

Q. समय और संकल्प के खजाने को जमा करने की विधि क्या है और सिद्धि क्या है ?

समय और संकल्प के खजाने को जमा करने की विधि है - खजानों की बचत करना और खजानों को श्रेष्ठ कर्मों में लगाना। सिद्धि है खुशी की अनुभूति, सन्तुष्टि, प्रसन्नता।

Q. अधिकार और कर्तव्य जीवन रूपी गाड़ी के दो चक्र हैं, जिनके आधार पर जीवन की गाड़ी की सफलता निर्भर है तो दोनों में सन्तुलन कैसे हो ?

जब हमको अपने अधिकार और कर्तव्य का यथार्थ ज्ञान होगा तब ही हम उनमें सन्तुलन रख सकेंगे। ये सन्तुलन ही जीवन की सफलता राज़ है। बिना कर्तव्य के अधिकार आत्मा को उदण्ड बना देता है और बिना अधिकार के कर्तव्य आत्मा में दासता के बीज बोता है। अधिकार और कर्तव्य दोनों का सन्तुलन ही जीवन की सच्ची सफलता का अनुभव कराता है।

Q. किस सत्य की स्मृति और धारणा हो जो जीवन में अहंकार और हीनता न आये ?

अहंकार और हीनता आत्मा के बड़े शत्रु हैं, जो आत्मा को सच्चे सुख का अनुभव होने नहीं देते। यथार्थ आत्मिक स्वरूप में अहंकार और हीनता का कोई अस्तित्व नहीं है। यथार्थ आत्मिक ज्ञान, ड्रामा का यथार्थ ज्ञान की धारणा और परमात्मा की छत्रछाया में रहने वाले पर इन दोनों की छाया नहीं पड़ सकती, उनका प्रभाव हो नहीं सकता। देहाभिमान वश किसी को अपने से ऊंचा देख हीनता आती है और किसी को अपने से नीचे देख अहंकार आता है। ड्रामा के यथार्थ राज़ को जानने वाले के लिए न कोई ऊंचा है और न ही नीचा। ड्रामा के पार्ट अनुसार जो एक समय पर ऊचा है, वही कब नीचा भी अवश्य होता है। इस सत्य को जानकर हर आत्मा के साथ समभाव रखने से अहंकार-हीनता आ नहीं सकती।

Q. तीनों लोकों और तीनों कालों में सबसे सुन्दर, सुखमय, मन-भावन समय और स्थान कौनसा है, क्यों है और कैसे है ?

संगमयुग सबसे मन-भावन समय है, जब यथार्थ ज्ञान के साथ हम मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करते हैं। हम जहाँ खड़े हैं यदि वहाँ परमात्मा की याद है, आत्मिक स्थिति है, ज्ञान बुद्धि में है तो वह सबसे श्रेष्ठ समय और स्थान है। संगठित रूप से पाण्डव भवन। गायन है -

धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहाँ जहाँ नाथ पाँव तुम धारा।

Q. क्या शास्त्र लिखने वालों ने परमात्मा से सम्मुख में ये ज्ञान सुना होगा ?

पहले तो प्रश्न स्पष्ट नहीं है क्योंकि दुनिया में अनेकानेक शास्त्र हैं, किस शास्त्र के विषय में ये प्रश्न है। यदि परमात्मा के दिये ज्ञान के शास्त्र गीता के विषय में विचार करें तो बिना सुने और अनुभव किये किसको भी ऐसी स्मृति आ नहीं सकती और वह ऐसा लिख नहीं सकता अर्थात् गीता शास्त्र लिखने वाले ने अवश्य ही संगमयुग पर परमात्मा के द्वारा सम्मुख में गीता ज्ञान सुना होगा।

बाबा कहता ज्ञान में चलने वाले अच्छे-अच्छे बच्चों को भी माया खा लेती है - इसका कारण क्या है ?

इस बात पर हम विचार करें और आंकड़े एकत्रित करें तो इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि ऐसे माया के वशीभूत होने वाले बच्चों ने अहंकार वश बाबा की दो मुख्य श्रीमत में से एक का उलंघन अवश्य किया होगा। एक है खान-पान की परहेज, दूसरी मुरली का रोज अध्ययन। जीवन में दो प्रक्रियायें हैं - एक है मनोमय, जिसके लिए मुरली आवश्यक है और दूसरी अन्नमय, जिसके लिए खानपान की शुद्धि। अच्छी सफलता के लिए दोनों आवश्यक हैं।

Q. बाबा ने जो ज्ञान दिया है, रास्ता दिखाया है, वह मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव कराने वाला है, फिर भी चाहते हुए भी क्यों नहीं कर पाते हैं ?

किसी न किसी पुराने स्वभाव-संस्कार के वश होने के कारण अपनी समय और शक्ति उसमें गँवा देते हैं, जिससे ये सुर-दुर्लभ अनुभूति नहीं कर पाते हैं।

Q. क्या सतयुग में भी सतो-रजो-तमो तीनों गुण होते हैं या केवल सतोगुण ही होता है ?

सतयुग में आत्मा में और विश्व में सतोगुण प्रधान होता है परन्तु तम्रोगुण का मूल देह-भान तो वहाँ पर भी होता ही है, जिसके कारण आत्मा की उतरती कला होती है और द्वापर से वही देह-भान, देहाभिमान का रूप धारण लेता है, जो विकारों का मूल कारण है।

Q. आत्मायें इस रंगमंच पर आकर पार्ट बजाती हैं। पार्ट बजाने के लिए देह की आवश्यकता होती है तो आत्माओं को पार्ट बजाने के लिए देह धारण करने की कितनी विधियां हैं, जिनसे आत्मायें पार्ट बजाने के लिए देह धारण करती है ?

प्रकृति में देह का निर्माण होने की चार विधियां हैं। अंडज, उद्भित, स्वेदज, जलज।

पार्ट बजाने के लिए मनुष्यात्माओं में एक है गर्भ से जन्म लेकर शरीर धारण कर पार्ट बजाना और दूसरा है परकाया प्रवेश होकर पार्ट बजाना। सभी धर्मपितायें धर्म स्थापना के लिए परकाया प्रवेश करते हैं। प्रेत योनि में भटकने वाली आत्मायें भी परकाया प्रवेश करती हैं।

परमात्मा भी परकाया प्रवेश होकर पार्ट बजाते हैं परन्तु उनके परकाया प्रवेश होने और और धर्म-पिताओं के परकाया प्रवेश एवं भूत-प्रेत के परकाया प्रवेश में दिन और रात का अन्तर है।

गर्भ से देह धारण करने की भी दो विधियां हैं - एक है योग बल से गर्भ धारण कर शरीर लेना और दूसरा काम विकार से गर्भ धारण कर शरीर लेना।

Q. उड़ती कला की स्थिति के लिए क्या पुरुषार्थ आवश्य है ?

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से मुक्त होना तथा न अपने ऊपर किसका बोझ उठाने और न स्वयं किसके ऊपर बोझ बनने वाला ही उड़ती कला में रह सकता है। जैसे पक्षी न भूत काल का चिन्तन करता और न भविष्य की चिन्ता करता, वह न किसी का बोझ अपने ऊपर उठाता और न स्वयं किसके ऊपर बोझ होता, तब ही वह स्वछन्द होकर उड़ता है। यथार्थ ज्ञान हमको ये शक्ति प्रदान करता है। अगर हमारी बुद्धि में यथार्थ ज्ञान की धारणा है तो अवश्य ही हम इस स्थिति को अनुभव करेंगे।

Q. क्या विकल्प से पाप लगता है ?

कई बार बाबा ने कहा पाप लगता है और कई बार कहा है विकल्प से पाप नहीं लगता है, जब विकल्प के अनुसार कर्म कर लेते हैं तो पाप लगता है।

विवेक कहता है कि संकल्प भी एक कर्म है, इसलिए उससे भी पाप या पुण्य अवश्य होता है। योग भी शुद्ध संकल्प है और योग से पाप कटते हैं तो विकल्प से भी पाप अवश्य बनेंगे है। विकल्प का आधार भी देहाभिमान है और जहाँ देहाभिमान होगा, वहाँ विकार होगा और विकार के कारण विकर्म होंगे और विकर्म से पाप अवश्य लगेगा। विकल्प भी एक मानसिक विकर्म है।

कोई बच्चा हतोत्साहित होकर पथभ्रष्ट न हो जाये, इसलिए कहीं-कहीं बाबा ने कहा है - विकल्प से पाप नहीं लगता। पाप तब लगता है जब उस अनुसार कर्म करते हैं। परन्तु सत्य ये है कि संकल्प-विकल्प से भी पाप-पुण्य होता है।

Q. जीवन में परम-प्राप्ति क्या है और क्यों ?

जीवन में परम-प्राप्ति है परमात्मा और उनसे प्राप्त विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान, जो ही आत्मा की चढ़ती कला का आधार है। विश्व-नाटक के ज्ञान में सभी प्रकार के ज्ञान समाहित होते हैं और उसकी यथार्थ धारणा से अन्य सभी धारणायें स्वत: हो जाती हैं।

Q. देह धारण करना और देह का त्याग करना इस विश्व-नाटक की अपरिहार्य घटना है, जो पार्ट बजाने के लिए अनिवार्य है फिर भी आत्मा को मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय क्यों ?

देह के प्रति लगाव, अज्ञानतावश अशुभ की आशंका , आत्मा पर विकर्मों का बोझ, वस्तु-व्यक्तियों में मोह, भविष्य जीवन के प्रति अनिश्चतता आदि आत्मा के मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख के मूल कारण है। यथार्थ ज्ञान, देह से न्यारेपन का सफल अभ्यास, परमात्मा की याद, श्रेष्ठ कर्मों का संचय, सुन्दर-सुखमय भविष्य के प्रति निश्चितता आत्मा को मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त कर अमृत्व प्रदान करते हैं।

Q. क्या वहाँ ऐसे समझेंगे कि अगले जन्म के कर्मों के अनुसार राजा, प्रजा, दास-दासी बने हैं? यदि राजा, प्रजा, दास-दासी की ये फीलिंग होगी और कर्मों का ये ज्ञान होगा तो दुख की फीलिंग क्यों नहीं होगी?

"सर्विस नहीं करेंगे तो मिलेगा क्या! यहाँ कोई बादशाह बनते हैं तो जरूर कोई अच्छे कर्म किये हैं। यह तो कोई भी समझ सकते हैं। यह राजा-रानी हैं, हम दास-दासियाँ हैं तो जरूर आगे जन्म में कर्म ऐसे किये हैं। बुरे कर्म करने से बुरा जन्म मिलता है। कर्मों की गति तो चलती रहती है। अब बाप तुमको अच्छे कर्म करना सिखलाते हैं। वहाँ भी ऐसे जरूर समझेंगे कि अगले जन्म के कर्मों के अनुसार ऐसे बने हैं। बाकी क्या कर्म किये हैं, वह नहीं जानेंगे। ... पिछाड़ी में सबको साक्षात्कार होगा।" सा.बाबा 2.3.04 रिवा.

Q. गॉडली स्टूडेण्ट का क्या अधिकार और कर्तव्य है?

Q. समर्पित जीवन का अर्थ क्या है? क्या समर्पित जीवन का अर्थ बुद्धि को ताला लगा देना है या ईश्वरीय महावाक्यों पर पूर्ण श्रृद्धा-भावना रखते हुए ईश्वरीय ज्ञान के रहस्यों को समझने का पुरुषार्थ करना, परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करना ही समर्पित जीवन की सफलता का मार्ग है?

बाबा के महावाक्यों को धारण करने के लिए पढ़ना-सुनना, उनका मनन-चिन्तन करना अति आवश्यक है। हर आत्मा की शक्ति अपनी-अपनी है, इसलिए विचारों में भिन्नता भी अवश्य होगी। अपने विचारों को अभिव्यक्त करना और दूसरे के विचारों को समझना और जो यथार्थ हो उसे स्वीकार करना ही स्टूडेण्ट जीवन की सफलता का आधार है।

अन्धश्रृद्धा से स्वीकार करने पर इस जीवन का यथार्थ सुख अनुभव नहीं हो सकता है।

Q. ईश्वरीय विधि-विधान क्या है?

Q. आध्यात्मिक शक्ति का स्वरूप क्या है?

Q. आलस्य, अलबेलापन और जीवनमुक्ति की निश्चिन्त स्थिति में क्या अन्तर है?

Q. यथार्थ जीवनमुक्ति स्थिति कब, कहाँ, कैसे और क्यों?

Q. परमात्म प्यार और परमात्म वर्सा कब, कहाँ, कैसे और क्यों?

इन सब बातों पर विचार करके अपने को चेक करो कि ज्ञान के सर्व रहस्य हमारे सामने प्रत्यक्ष हैं और वे हमारे अनुभव, निश्चय और धारणा में हैं? यदि हैं तो हमारी अवस्था कैसी होनी चाहिए?

सेवा में हमारी सर्व के प्रति कल्याण की भावना है या हराने की भावना है? हमको सर्व प्राप्ति स्वरूप का नशा और खुशी है? हमारे जीवन में अहंकार और हीनता तो नहीं है? हमको सर्वशक्तिवान बाप के साथ का अनुभव होता है, हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होता है, हमारे जीवन से पवित्रता, सुख-शान्ति के वायब्रेशन्स फैलते हैं अर्थात् हम अपने संगमयुगी श्रेष्ठ कर्तव्य को कर रहे हैं।

विश्व नाटक की यथार्थता को जानकर हम साक्षी होकर विश्व नाटक के हर दृश्य को देख रहे हैं और ट्रस्टी होकर पार्ट बजा रहे हैं।

साराँश

निश्चय और मुरली

ज्ञान सागर शिवबाबा की मुरली अनन्त ज्ञान रतनों की खान है और ब्राह्मण जीवन का आधार है। बाबा ने ने ब्राह्मणों के लिए मुरली को जीयदान कहा है, ब्राह्मण जीवन का स्वांस कहा है। बाबा ने कहा है - जिसका जितना मुरली से प्यार है, उतना ही मुरलीधर से प्यार है। अगर किसको मुरली से प्यार नहीं तो निश्चित समझो उसको मुरलीधर से भी प्यार नहीं है। वह सच्चा ब्राह्मण ही नहीं है। मुरली के बिना किसी ब्राह्मण का जीवन सफल हो ही नहीं सकता है। जिसको इस सत्य का ज्ञान, उसका ऐसा महत्व बुद्धि में होगा, उसका अनुभव और निश्चय होगा, वही मुरली का यथार्थ आनन्द ले सकता है और वही इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकता है। जिसको मुरली के महत्व का अनुभव होगा और उसका यथार्थ लाभ उठाता होगा, वह इस ब्राह्मण जीवन से कभी ऊबेगा नहीं, उसको कभी ये जीवन भारी अनुभव नहीं होगी।

"मुरली है लाठी, इस लाठी के आधार से कोई कमी भी होगी तो वह भर जायेगी। यह आधार ही अपने घर तक और अपने राज्य तक पहुँचायेगा। लेकिन लक्ष्य से, नियमपूर्वक नहीं लेकिन लगन से पढ़ना और धारण करना। ... मुरलीधर से स्नेह की निशानी मुरली है। जितना मुरली से स्नेह है, उतना ही समझो मुरलीधर से भी स्नेह है। सच्चे ब्राह्मण की परख मुरली से होगी।"

अ.बापदादा 23.10.75

निश्चयबुद्धि की निशानियाँ

निश्चयबुद्धि अर्थात् सदा निर्भय, निश्चिन्त, अटल-अचल स्थिति, सदा बापदादा की श्रीमत पर चलना, सर्व आत्माओं से प्यार।

सदा निर्दोष दृष्टि, विश्व-बन्धुत्व की भावना।

सदा अपने अन्तिम लक्ष्य की स्मृति और उस अनुसार पुरुषार्थ।

सदा अभिमान और अपमान से परे स्वमान में स्थित।

सदा व्यर्थ से मुक्त, समर्थ स्थिति।

उसमें सदा सर्व के कल्याण की भावना होगी।

"कितना भी बड़ा विनाशी सर्वश्रेष्ठ मूल्यवान हीरा हो लेकिन ज्ञान के एक रतन, गुण के एक रतन के आगे उनकी क्या वेल्यू है। इन रतनों के आगे वे पत्थर के समान हैं क्योंकि विनाशी

निश्चयबुद्धि विजयन्ति का गायन है अर्थात् बाबा ने हमको विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का जो ज्ञान दिया है, उसके विधि-विधान बताये हैं, उनका यथार्थ ज्ञान हो, उनका अनुभव हो, उन पर पूरा निश्चय, श्रद्धा-विश्वास हो तो ये ब्राह्मण जीवन परमानन्दमय अनुभव होगा। अब हम अपने को चेक करें, हम कहाँ तक उसके विषय में निश्चयबुद्धि हैं और हमारा जीवन कहाँ तक अपने को विजयी अनुभव करता है?

निश्चयबुद्धि अर्थात् आत्मा, परमात्मा, ड्रामा आदि सब में निश्चयबुद्धि। आत्मा, परमात्मा, ड्रामा तीनों में से किसी एक पर भी 100 प्रतिशत निश्चय है तो आत्मा अन्तिम परीक्षा अर्थात् बिन्दु रूप स्थिति में पास हो सकती है परन्तु वर्तमान सुगमयुगी जीवन का सुख अनुभव करने और कराने के लिए तीनों का ज्ञान, अनुभव और निश्चय परमावश्यक है।

आत्मा में निश्चयबुद्धि विजयन्ति = आत्मा में सर्व आत्मिक गुणों की धारणा।

परमात्मा में निश्चयबुद्धि विजयन्ति = परमात्मा के हर महावाक्य में निश्चयबुद्धि, सदा परमात्मा के साथ का अनुभव

ड्रामा में निश्चयबुद्धि विजयन्ति अर्थात ड्रामा के विधि-विधान में निश्चयबुद्धि = सदा साक्षी-दृष्टा की स्थिति

सृष्टि-चक्र में निश्चयबुद्धि विजयन्ति = संगमयुग की सर्व प्राप्तियों का अनुभव इसके साथ ही

5. त्रिलोक का ज्ञान
6. कल्प वृक्ष का ज्ञान,
7. कर्मों का ज्ञान,
8. योग का यथार्थ ज्ञान,
9. पवित्रता का ज्ञान और महत्व आदि आदि के ज्ञान की धारणा से हमारे जीवन में क्या-क्या प्राप्तियां होती हैं, उन सबका हमको अनुभव हो रहा है।

निश्चयबुद्धि अर्थात निश्चय हो कि यज्ञ की निरन्तर वृद्धि होनी ही है, नई दुनिया की स्थापना होनी ही है और पुरानी दुनिया का विनाश होना ही है, जिसको कोई व्यक्ति या परिस्थिति रोक नहीं सकती। सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलनी है, जो हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

* परमपिता परमात्मा के साथ यज्ञ के विधि-विधान में निश्चय। ज्ञान मार्ग के जीवन का सच्चा सुख पाने के लिए आत्मा, परमात्मा, ड्रामा पर निश्चय के साथ परमात्मा के रचे इस यज्ञ के

विधि-विधानों को जानना और उन पर निश्चय और श्रद्धा होना परमावश्यक है।

* निश्चय दृढ़ता को लाता है और दृढ़ता सफलता का मूलाधार है। दृढ़ता के कारण ही पत्थर की मूर्ति से भी भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं, साक्षात्कार हो जाता है।

* ये विविधतापूर्ण विश्व-नाटक है और अभी राजाई स्थापन हो रही है, जिसमें विभिन्न पद होंगे, विभिन्न कार्य व्यवहार और स्वभाव-संस्कार वाले व्यक्ति होंगे, उसकी स्थापना के लिए अभी भी ज्ञान में विभिन्न स्वभाव-संस्कार वाली आत्मायें अवश्य होंगी और उनका पुरुषार्थ भी अपने पद, कर्म और पार्ट अनुसार ही होगा। इसलिए हम किसी के पुरुषार्थ या स्वभाव-संस्कार को देखकर न आश्चर्यचकित होंगे और न प्रभावित होंगे तब ही हम अपना अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकेंगे और इस ईश्वरीय जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकेंगे क्योंकि आश्चर्यचकित होने या प्रभावित होने से हमारा पुरुषार्थ भी अवश्य ही प्रभावित होगा। ये भी एक लॉ है।

"आप ब्राह्मण बच्चों को सर्व प्राप्तियों के दाता के बच्चों को अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। सदा प्राप्ति स्वरूप हो। अल्प काल के सुख के साधन अल्पकाल के वैभव, अल्प काल का राज्य अधिकार न होते हुए भी बिनु कौड़ी बादशाह हो, बेफिकर बादशाह हो। ... अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने वाले हो।" अ.बापदादा 24.4.84

भक्तों का भी अनुभव है - जाको राखै साइयां मार सके ना कोई, बाल न बांका करि सके जो जग वैरी होये।

ये सृष्टि का नियम है, जो उसको समझकर जितना उसे अनुभव करता है, वह उतना ही दूसरों को भी अनुभव करा सकता है। उसके अधिक कोई अनुभव करता है तो वह उसका अपना पुरुषार्थ है। ब्रह्मा बाबा ने इस सत्य को अच्छी रीति अनुभव किया और उसके अनुसार पुरुषार्थ करके परम पद को पाया, जिससे उनका जीवन विश्व के लिए आदर्श बन गया, उनके जीवन के नियम-संयम विश्व के लिए नियम और सिद्धान्त बन गये। उनके पद-चिन्हों का अनुसरण करने वालों का ही जीवन श्रेष्ठ बन सकता है। विश्व-नाटक के इन अटल सत्यों के ज्ञान का निश्चय ही आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम सुख की अनुभूति करा सकता है। जागो, देखो परमपिता परमात्मा का हाथ तुम्हारे सिर पर है, सर्वशक्तिवान बाप की छत्रछाया तुम्हारे ऊपर है, उसका सुख लो और भाग्यविधाता से अपने परम भाग्य को प्राप्त करो।

"कैसे भी सरकमस्टांश हों, कैसी भी समस्या हो, स्मृति का स्वीच ऑन करो। यह अभ्यास करो क्योंकि फाइनल पेपर सेकेण्ड का ही होना है, मिनट भी नहीं। सोचने वाला नहीं पास कर सकेगा, अनुभव वाला पास हो जायेगा। तो अभी सभी सेकण्ड में इस स्मृति का स्वीच ऑन करो कि मैं परमधाम निवासी श्रेष्ठ आत्मा हूँ, और कोई भी स्मृति नहीं हो। कोई बुद्धि में

ऐसे अभ्यास में सफलता के लिए विकर्मों का दरवाजा बन्द हो और दृढ़ पुरुषार्थ से पुराने विकर्मों का खाता खत्म हो और आत्मा ज्ञान, गुण, शक्तियों के अनुभवों से भरपूर हो तब ही सेकेण्ड का अन्तिम पेपर पास कर सकेंगे। देह से न्यारे होते समय ज्ञान का चिन्तन चलना, सेवा का चिन्तन चलना भी आत्मा के ऊपर बोझा होने की निशानी है। यह भी नहीं होना चाहिए। स्टॉप तो स्टॉप। ये चेकिंग हो और उस अनुरूप पुरुषार्थ हो तब ही सेकण्ड के अन्तिम पेपर में पास होंगे। बाबा ने भी कहा है - जब बहुत बिजी हो तब ये अभ्यास करके देखो।

शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के पुरुषार्थ का उदाहरण हमारे सामने रखा है। ब्रह्मा बाबा बात करते-करते भी देह से न्यारे हो जाते थे। इससे कार्य में कोई बाधा नहीं होती और ही कार्य सिद्ध होता है। ऐसा पुरुषार्थ हो। इस पुरुषार्थ में कोई व्यक्ति, वस्तु, सेवा बाधक नहीं है। ये आत्मा की लगन की बात है। शिवबाबा ने ये भी कहा है - ब्रह्मा बाबा से बड़ी जिम्मेवारी किसकी भी नहीं है, फिर भी बाबा ने ये पुरुषार्थ करके दिखाया।

एवररेडी अर्थात् मैं हूँ ही आत्मा, इसमें सोचने या संकल्प करने की कोई मार्जिन ही नहीं है। ये आत्मिक स्वरूप के अभ्यासी की स्थिति है।

निश्चय और अविनाशी सत्य

ये विश्व-नाटक पूर्ण सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है, इसमें कर्म और फल का विधि-विधान बड़ा सुन्दर है अर्थात् दोनों पूर्ण सन्तुलन है। ज्ञान परम धन है, जो इस सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी विश्व-नाटक के अटल सत्यों को जानकर अनुभव कर निश्चय बुद्धि हो जाता, वह सहज ही नष्टोमोहा-स्मृतिस्वरूप स्थिति को सहज प्राप्त कर लेता है, जिससे वह निश्चिन्त, निर्भय, निर्संकल्प, साक्षी होकर इस विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव करता है और भविष्य के लिए अनन्त सुखों का संचय करके जीवन सफलता करता है।

परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है, आत्मा भी सच्चिदानन्द स्वरूप है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा सदा ही परमानन्द का अनुभव करती है।

ज्ञान के विषय में इस सत्य को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि हम जो समझते हैं या समझा है, वही सम्पूर्ण और सम्पूर्ण सत्य नहीं है परन्तु दूसरे भी जो समझते हैं वह भी सत्य है और हो सकता है। हमने तो सम्पूर्ण सत्य का एक अंशमात्र ही समझा है, इसलिए सच्चे पुरुषार्थी को सदा दूसरों को सम्मान देते हुए सदा सम्पूर्ण सत्य को समझने के लिए सदा

प्रयत्नशील रहना चाहिए। सम्पूर्ण तो एक परमात्मा ही है, वही सम्पूर्ण सत्य का ज्ञाता है।

"ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन ज्ञान रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर वे रतन समझ अंगूठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।" सा.बाबा 10.1.69

* यथार्थ निश्चय और विजय के लिए बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसका मनन-चिन्तन करके अनुभव करना। जब हर बात अनुभव में आ जायेगी तो उस पर निश्चय बैठ जायेगा और जिस बात का निश्चय हो जायेगा वह कर्म में अवश्य आयेगी और जब कर्म यथार्थ होगा तो फल भी अवश्य यथार्थ होगा। ज्ञान मार्ग में जीवन की सच्ची सफलता के लिए ये अनुभव और निश्चय परम आवश्य है कि हम ये समझ लें कि बाबा के महावाक्य अर्थात् बाबा की मुरली अनन्त रतनों की खान है और ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार है, ब्राह्मणों के लिए जीयदान है। जितना निश्चय और प्यार जीयदान से होगा, उतना ही प्यार और निश्चय जीवनदाता से होगा।

* जहाँ निश्चय सम्पूर्ण है वहाँ सम्पूर्ण विजय भी निश्चित है - ये इस विश्व-नाटक की अनादि नूँध है। यदि मनचाही विजय या सम्पूर्ण विजय का अनुभव नहीं होता, कोई दुख-अशान्ति की लहर आती तो ये सत्य जानों कि निश्चय में अवश्य कोई कमी है और चेक करो। जब तक सम्पूर्णता के लक्ष्य तक नहीं पहुँचे हैं तब तक हमको अपनी विजय रूपी कसौटी पर निश्चय रूपी स्वर्ण को कसते रहना है अर्थात् चेक करते रहना है और चेक करके संशय रूपी खाद को निकालते हुए सच्चा सोना अर्थात् बाप समान बनना है।

* जब निश्चय सम्पूर्ण होगा तो विजय भी तीनों कालों में अर्थात् भूतकाल, वर्तमान और भविष्य में अवश्य सम्पूर्ण होगी।

वर्तमान में विजय अर्थात् संकल्प करते ही जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें बुद्धि एकाग्र कर सकें। एक सेकण्ड में निराकारी, आकारी, साकारी स्थिति में स्थित हो सकें। कर्मेन्द्रियों पर पूर्ण विजय हो, मृत्यु-भय से मुक्त, जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव हो, साक्षी और निर्विकल्प स्थिति में स्थित होकर इस विश्व नाटक को देखेंगे और निर्भय-निश्चिन्त होकर इसका परम-आनन्द का अनुभव करें।

भूतकाल पर विजय अर्थात् संकल्प मात्र भी भूतकाल के पश्चाताप में समय और संकल्प नहीं जाये, उसका चिन्तन नहीं हो।

भविष्य पर विजय अर्थात् भविष्य के प्रति सदा आश्वस्थ हों, निश्चिन्त हों। 1. अन्त समय मृत्यु-दुख से मुक्त, एक बाप की याद में देह का त्याग और 2. भविष्य जीवन में श्रेष्ठ

पद के लिए भी निश्चिन्त। इसके लिए कोई चिन्ता न हो। 3. वर्तमान जीवन के भविष्य के विषय किसी प्रकार की चिन्ता न हो, असुरक्षा का संकल्प न हो।

जिसको बाबा के द्वारा दिये गये ज्ञान का अनुभव होगा, उस पर पूर्ण निश्चय होगा, उनको ये निश्चय भी अवश्य होगा कि इस विश्व-नाटक में जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता, जो हुआ वह भी अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है। उसको निश्चय होता है कि इस अनादि-अविनाशी नाटक में हर आत्मा अपना पार्ट बजा रही है और अपने कर्म के अनुसार उसका फल प्राप्त कर रही है अर्थात् जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक वृत्ति-दृष्टि। जहाँ पवित्रता है वहाँ आत्मा को सर्व सुख, सर्व प्राप्तियाँ स्वत: होंगी, इच्छामात्रम् अविद्या होगी, सर्व सम्बन्धों में श्रेष्ठता होगी, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होगी। जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति का नाम-निशान नहीं होगा। पवित्र आत्मा को समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: आता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वभाविक होती है। उसकी सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भावना शुभ-कामना होती है, जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप उसके प्रति सबकी शुभ-भावना शुभ-कामना होती है। इस विश्व-नाटक में न कोई अपना है और न कोई पराया है, न कोई शत्रु है और न कोई मित्र है, न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। दाता एक बाप ही है, उसने जो दिया वही हमारे काम आने वाला है और हमारे लिए हितकर है। इसलिए वह एक परमात्मा को ही सर्व सम्बन्धों से अपना समझ, उसने जो दिया, उससे ही सन्तुष्ट रहता है और उसके बताये मार्ग पर ही चलता है। जो परमात्मा को अपना साथी बना लेता है, उसकी जीवन में विजय निश्चित है, इसलिए वह सदा निश्चिन्त रहता है। उसको संकल्प में भी ये नहीं आता कि विजय होगी या नहीं होगी। इसीलिए गायन है -

प्रीतबुद्धि विजयन्ति, विप्रीत बुद्धि विनश्यन्ति।
निश्चय बुद्धि विजयन्ति, संशय बुद्धि विनश्यन्ति।

परमात्मा ज्ञान का सागर है, निराकार है, सर्व गुणों, शक्तियों से सम्पन्न सागर है इसलिए वह न्यारा है और प्यार का सागर है। वह सारे विश्व को प्यारा है और सारा विश्व उसको प्यारा है। ब्रह्मा बाबा शिवबाबा के साथ रहकर मास्टर ज्ञान का सागर, सर्व ज्ञान, गुण-

शक्तियों से सम्पन्न बन न्यारा बना, इसलिए सारा विश्व उसे प्यारा है और वह सारे विश्व को प्यारा है। हमको भी सदा सुखी-सम्पन्न बनने के लिए निराकार शिवबाबा और साकार ब्रह्मा बाबा को फॉलो कर मास्टर ज्ञान का सागर बन बाप समान न्यारा, साक्षी दृष्टा बनकर इस विश्व को देखना और पार्ट बजाना है। इसके लिए बाबा के द्वारा दिये गये ज्ञान को यथार्थ रीति समझ उसको अनुभव कर निश्चय कर कर्म में लायेंगे तो जीवन की सर्वोत्तम प्राप्ति मुक्ति-जीवनमुक्ति का अभी ही अनुभव करेंगे।

विजय का सिद्धान्त है - निश्चय + पुरुषार्थ । निश्चय - बाबा ने जो आत्मा-परमात्मा-ड्रामा का ज्ञान दिया है, उसको यथार्थ रीति जानना, अनुभव करना, उस पर चलना और कार्य में लाना। **पुरुषार्थ** - बाबा ने जो ज्ञान दिया है और आध्यात्मिक नियम-संयम और सत्यों एवं तथ्यों को बतलाया है, उनको मनन-चिन्तन करके अनुभव करना और उस स्वरूप में स्थित होने का सतत अभ्यास करना, जिससे वह बुद्धि में जाग्रत रहे और समय पर कार्य में आये।

विजय - सर्व प्राप्ति स्वरूप, सर्व सुख स्वरूप सम्पन्न स्थिति का अनुभव, इच्छा मात्रम् अविद्या, सर्व सम्बन्धों में मधुरता, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त जीवनमुक्त। सेकेण्ड में जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें, जितना समय चाहें स्थित हो जायें।

जिनको बाबा के ज्ञान पर पूरा निश्चय होगा वे कभी भी किसी के प्रति वैर-विरोध, घृणाभाव, हीनता या अहंकार की भावना नहीं लायेंगे। सबकी बातों को सुनते, देखते अविचल रहेंगे और ड्रामा की अटल भावी को जान साक्षी होकर इस विश्व को देखेंगे और इसका परम-आनन्द लेंगे।

* सम्पूर्ण निश्चय (आत्मा, परमात्मा और ड्रामा) = सम्पूर्ण विजय (मन्सा-वाचा-कर्मणा) = कर्मातीत स्थिति (स्थूल वतन में देह और देह के बन्धन से मुक्त और सूक्ष्म वतन में सेवा करते भी सेवा के सम्बन्ध से मुक्त) = बिन्दुरूप या बीजरूप।

निश्चय बुद्धि	विजय
ज्ञान रत्नों के विषय में उच्चारे महावाक्य	वर्तमान में विजय - संकल्प में वचन में कर्म की सिद्धि
योग के विषय में उच्चारे महावाक्य	सन्तुष्टता मृत्यु भय से मुक्त, निर्भय, निर्वैर, निश्चिन्त, निर्संकल्प, निर्विकल्प, निर्विकार स्थिति। अन्तिम विजय -
धारणा के विषय में उच्चारे महावाक्य	मृत्यु दुख से मुक्त, बाबा की याद में देह का त्याग, भविष्य पद का साक्षात्कार और उससे सन्तुष्ट
सेवा के विषय में उच्चारे महावाक्य	भविष्य में विजय -
कर्म और कर्म फल के विषय में उच्चारे महावाक्य	प्राप्त पद से सन्तुष्ट, स्वस्थ तन, स्वस्थ मन, स्वस्थ धन, सतयुग के आदि में जन्म, निकट में सम्बन्ध
दिये गये स्वमान और वरदानों में निश्चय	भूतकाल पर विजय - भूतकाल के पश्चाताप से मुक्त भूतकाल के चिन्तन से मुक्त

विविध बिन्दु

"सन्देशी पूरी रिपोर्ट दे सकती है कि किसकी बुद्धि बाहर भटकती है, कौन क्या करते हैं, किसको झुटका आता है, सब बता सकती है।" सा.बाबा 8.5.04 रिवा.

अवस्था को जमाने में, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में मनुष्य के अपने ही कर्मभोगों की बड़ी बाधा आती है, जिनको चुक्ता करना भी आवश्यक है, बिना उनके चुक्ता हुए अवस्था अच्छी नहीं रह सकती लेकिन चुक्ता करने के लिए भी पुरुषार्थ तो करना ही पड़ेगा, जब ये निश्चय होता है कि ये हमारे ही पूर्व के कर्मों का फल है तो उसको चुक्ता करने में दुख नहीं होता है और सहज चुक्ता हो जाता है। ये हिसाब किताब तत्वों के साथ भी है तो मनुष्यों के साथ भी है। जैसे जैसे ये दोनों चुक्ता होते हैं वैसे वैसे ही अवस्था भी अच्छी होती जाती है।

* कोई भी जो समर्पण होता, ईश्वरीय सेवा में अपना तन-मन-धन सफल करता वह भूख मर नहीं सकता, ये ईश्वरीय विधि-विधान है। इस सत्य का निश्चय होगा, तब ही ये समर्पित जीवन निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प और सुखमय होगा। बेगरी पार्ट में भी ब्रह्मा बाबा के निश्चय के अनेक उदाहरण हैं। ब्रह्मा बाबा के दृढ़ निश्चय के कारण ही अनेक बच्चों ने बेगरी पार्ट के समय अपने निश्चय की परीक्षा को पास किया और यज्ञ आज इस सफल स्थिति में है।

* व्यक्ति को खाने की इच्छा है और खाना नहीं है तो वह भूखा कहा जाता है और परेशान होता है, अपना दुर्भाग्य समझता है परन्तु जो व्रत रखते हैं वे 2-4 दिन भी खाना नहीं खाते तो भी उनको उसमें खुशी होती है और अपना भाग्य समझते हैं। उसमें पुण्य का अनुभव करते हैं। दोनों परिस्थितियाँ एक समान हैं अर्थात् खाना नहीं खाया है परन्तु मान्यता और निश्चय के कारण एक दुखदायी और दूसरी सुखदायी है।

* पहली बार जब आत्मा इस धरा पर आती है तो अपने स्वरूप में स्थित होती है तो श्रेष्ठ कर्म के लिए आत्मा को स्वत: ही प्रेरणा होती है और वह श्रेष्ठ कर्म ही करती है परन्तु कर्म का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण आत्मिक शक्ति का विकास नहीं होता है और जो कर्म होते हैं वे अकर्म होते हैं अर्थात् न सुकर्म होते और न ही विकर्म होते। प्राय: सभी आत्मायें और धर्म पितायें पहले इस धरा पर पार्ट बजाने आते हैं तो आत्मिक शक्ति के आधार पर चलते हैं और उनके कर्म अकर्म होते हैं परन्तु समयान्तर में उनके अनुगामी उनको ही सब-कुछ मानने लगते हैं और अन्ध-भक्ति और अन्धश्रृद्धा में आ जाते हैं तथा उन आत्माओं की आत्मिक शक्ति भी धीरे2 क्षीण होती जाती है। ये सृष्टि का विधि-विधान है, इसलिए इस सत्य पर निश्चय करके किसी धर्म की आत्मा के प्रति घृणा भाव नहीं आना चाहिए।

* जिसको परमात्मा पर निश्चय है और एक परमात्मा का ही आधार है, उसकी सदा विजय रहती है। अर्जुन का उदाहरण। जिन आत्माओं का स्वयं पर निश्चय और अपने कर्म का ही आधार और विश्वास परन्तु परमात्मा की स्मृति नहीं होती है, उनको भी परमात्मा का सहारा रहता है क्योंकि असमर्थता में उनकी बुद्धि परमात्मा की तरफ जाती है परन्तु पहली और दूसरी आत्माओं की प्राप्ति में अन्तर अवश्य होता है।

* परमात्मा और अपने आत्म-विश्वास को खोकर अर्थात् उनके ऊपर निश्चय से विचलित मनुष्य ही अन्य मनुष्यात्माओं, मित्र-सम्बन्धियों का सहारा लेकर चलता है और विकर्मों में प्रवृत्त होता है, जिससे वह धोखा अवश्य खाता है।

* ड्रामा न्यायपूर्ण और कल्याणमय है, परमात्मा ज्ञान का सागर, सर्वशक्तिवान, न्यायकारी, समदर्शी है। जो उस पर विश्वास करते, उस पर निश्चय करते, वह उनकी समय पर अवश्य मदद करता है।

* आत्मा और परमात्मा पर निश्चय माना संकल्प करते ही या बाबा का आदेश मिलते ही सेकण्ड में अपनी निराकारी, आकारी, साकारी स्थिति में स्थित हो जाये।

* आध्यात्मिक पुरुषार्थ की सफलता है - पवित्रता अर्थात् स्व-स्थिति में स्थित और पुरुषार्थ है ज्ञान को यथार्थ रीति समझना और देह से न्यारा होने का अभ्यास तथा उसके मार्ग में जो बाधायें आयें, उनको परीक्षा समझकर सहर्ष पास करे।

* जब ज्ञान सत्य है और उस पर निश्चय है तो उस अनुसार ही कर्म होते, जिनकी सफलता निश्चित है अर्थात् उस आत्मा को सन्तुष्टि होती, नशा और खुशी रहती, उत्थान अर्थात् चढ़ती कला का अनुभव होता। यदि ज्ञान असत्य भी है परन्तु उस निश्चय दृढ़ है तो भी विजय होगी परन्तु अल्पकाल के लिए सफलता अर्थात् सन्तुष्टि की अनुभूति होगी, परन्तु चाहना बनी रहेगी और परिणाम में स्थिति पतनोन्मुख ही होगी। यदि ज्ञान सत्य है परन्तु मनुष्य निश्चय और संशय में झूलता है तो विजय भी उस अनुसार ही होती है।

* जीवन की सबसे बड़ी विजय है कि जो बाप ने दिया है, उसमें स्थित अर्थात् देह से न्यारा होकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखना और सदा सन्तुष्ट रहना।

* जितना ही सृष्टि के आध्यात्मिक नियम-संयम, प्राकृतिक नियम, कर्म के नियम-सिद्धान्त, अविनाशी सत्य सिद्धान्त बुद्धि में स्पष्ट होंगे, उन पर यथार्थ निश्चय होगा, उतना ही व्यक्तिगत जीवन और संगठन सफल रहेगा। इस ब्राह्मण जीवन और संस्था की सफलता का मूल आधार है बाबा के द्वारा दिया गया ज्ञान और उनका अनुभव एवं उन पर निश्चय।

* भक्तिमार्ग में भी रामायण-महाभारत आदि में निश्चय और उसके अनुसार विजय के अनेक उदाहरण हैं। जैसे अर्जुन और दुर्योधन का कृष्ण से सहायता के समय का, धर्मराज युधिष्ठिर का अन्त समय का, कर्ण के दान का, शबरी के बेरों का।

* ब्राह्मण बनना भी जीवन की एक विजय है क्योंकि ब्राह्मण जीवन कल्प में सर्वश्रेष्ठ जीवन है, जिसको इस सत्य पर निश्चय होगा, वह इसको सफल करेगा, इसका सच्चा सुख अनुभव करेगा और जीवन की अन्तिम विजय है एक बाप की मधुर स्मृति में देह का त्याग करेगा।

* साधन, सम्पत्ति की प्राप्ति, ज्ञान का चिन्तन, लिखना, सुनाना ... कोई बड़ी बात नहीं है और यही इस ईश्वरीय जीवन की विजय नहीं है। ये तो साइट सीन्स हैं, यदि अपने पर नियन्त्रण नहीं तो ये भी एक जाल हैं, अहंकार पैदा करने वाले हैं। विजय है सेकण्ड में अपने संकल्प को जब चाहें, जैसे चाहें, जहाँ चाहें स्थिर कर लें। संकल्प करते ही निराकारी, आकारी, साकारी स्वरूप में स्थित हो जायें।

* वास्तव में निश्चय जीवन के हर क्षेत्र में काम करता है और निश्चय के आधार पर ही आत्मा कोई कार्य करती है, व्यवहार करती है और निश्चय के आधार पर ही उसमें सफलता होती है। जिनको निश्चय हुआ कि हमारा जन्म दूसरों पर शासन करने के लिए है तो वैसा ही कार्य करने लगे और विश्व में दास-प्रथा का जन्म हुआ और जब निश्चय हुआ कि हर आत्मा को स्वतन्त्र रूप से जीने का अधिकार है तो लोगों ने दासता का जाल काटकर फेंक दिया और विश्व से दास-प्रथा का अन्त हो गया। अभी समय अपने सत्य स्वरूप को पहचान कर माया रावण की दासता से मुक्त होने का। इसमें हर आत्मा स्वतन्त्र है और उसका अपना निश्चय ही उसकी सफलता का आधार है।

* जितना आत्म-निश्चय, उतना ही मृत्यु-भय से मुक्ति। जितना ही परमात्मा में निश्चय, उतना ही शक्तिशाली स्थिति और कर्मों में श्रेष्ठता। जितना ही ड्रामा पर निश्चय, उतना ही साक्षीपन।

* यदि इस सत्यता का पक्का ज्ञान और निश्चय हो जाये कि हर आत्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है तो आत्मा सहज ही अपना आप ही मित्र बन जाये और सहज ही राग-द्वेष से सहज ही मुक्त हो जाये तथा उसकी बुद्धि परमात्मा के साथ जुट जाये, जो आत्मा का निजी स्वभाव है और प्रकृति का स्वभाविक नियम है। जो इस स्थिति में स्थित होगा, उसको अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति सहज होगी।

* सत्य ज्ञान की प्राप्ति भी मानव जीवन की बहुत बड़ी विजय है, परन्तु सत्य ज्ञान की समझ और उसमें निश्चय ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार है। ब्राह्मणों को ही ये ज्ञान मिलता है, जो हमको अभी मिला हुआ है। तो हमारा ये जीवन कितना महान है, ये नशा भी हमको महान

बनने में सहयोगी बन जाता है।

* निश्चयबुद्धि अर्थात् जो किन्हीं विपरीत परिस्थिति और बातों के आते भी अपने निश्चय से विचलित न हो। ये भी निश्चय रहे कि बातें और विपरीत परिस्थितियाँ तो अवश्य आयेंगी और हमारे निश्चय की परीक्षा अवश्य होगी। परन्तु हमको उनमें पास होना है।

* बाबा की याद ही सुरक्षा का अभेद्य कवच है, जो सदा, सर्वदा, सर्वत्र हमारी रक्षा करता है और कर सकता है। जो दृढ़ता से इस सत्य को अनुभव करता है और निश्चय एवं विश्वास से इसको अपनाता है वह सदा सुरक्षा का अनुभव करता है और सदा सफलता को पाता है। वह सदा ही परमात्मा की मदद का अनुभव करता है।

* देश, काल और परिस्थितियों को देखते हुए किसी घटना, दृश्य या कार्य को देखकर अपने में, परमात्मा में, ड्रामा में संशय न लाना, प्रश्न न उठना, आश्चर्य न होना बल्कि उसको ड्रामा की भावी समझकर उसे उसी रूप में स्वीकार करके निश्चिन्त हो जाना ही यथार्थ ज्ञान की धारणा है, जो श्रेष्ठ स्थिति बनाने और मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने के लिए परमावश्यक है। यही जीवन की सच्ची सफलता है।

* विचार करो - जिसे अपना कहते हो वह तुम्हारा है? और जिसको पराया कहते हो वह पराया है? जिसे तुम सुख समझते हो, वह सुख है और उससे भविष्य सुख होगा? इस जगत में क्या तुम्हारा है और क्या पराया है? इस जगत में न कुछ तुम्हारा है और न ही पराया। आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर यथार्थ दृष्टि से देखो तो ये विश्व एक नाटक है इसमें सब पार्टधारी हैं। एक बाप ही तुम्हारा है और उसने जो दिया वही तुम्हारा है और वही जीवन के लिए हितकर है। बाप ने जो दिया है और जो दे रहा है, उसकी स्मृति रहे तो कब जीवन में उदासी आ नहीं सकती, सदा खुशी रहेगी और नशा रहेगा।

* ज्ञान से परमानन्द की अनुभूति होती है, जो इन्द्रिय सुखों और साधनों से हो नहीं सकती।

* अपने को चेक करो - यदि कहाँ व्यर्थ चिन्तन है, दुख-दर्द है, दिल खाता है तो कोई न कोई भूल अवश्य हुई है, उसे चेक करके सही करो। ये कटु सत्य है कि हमारा अपना कर्म ही हमारे सुख-दुख का आधार है, इसे स्वीकार करो, अज्ञानता के वश दूसरे को दोष देकर विकर्म का खाता बढ़ाकर अपने भविष्य को अन्धकारमय नहीं बनाओ।

"...पाँव छूने से हल्की हो जाती है तो समझते हैं उनकी कृपा से अच्छी हो गई। बाप कहते हैं ना - भावना का भाड़ा मिलता है। निश्चयबुद्धि होने से कुछ न कुछ कौतुक हो जाता है। बाकी ऐसे अगर हो तो फिर ढेर के ढेर वहाँ जायें।"

सा.बाबा 11.1.2001 रिवा.

* देहाभिमान को त्याग अपने को आत्मा निश्चय करना ही सर्व पुरुषार्थ का सार है और सर्व सुखों का मूलाधार है।

* हमारे हर संकल्प-स्वांस का हमारे जीवन की सफलता-असफलता में योगदान है, इसका यथार्थ ज्ञान, अनुभव और निश्चय होगा तब हम उनको सफल कर अपना खाता जमा कर सकेंगे और विकर्मों से बच सकेंगे।

* बाप पर निश्चय माना बाप के हर महावाक्य और बाप के हर कर्तव्य पर निश्चय होना। बाप पर निश्चय माना बाप ने जिसको निमित्त बनाया, उस पर भी पूरा निश्चय।

* स्वरूप में स्थित न होने के कारण ही देह आकर्षित करती है।

अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति न होने के कारण ही इन्द्रिय सुख आकर्षित करते हैं।

परमात्मा से सर्व सम्बन्धों के सुख का अनुभव न होने के कारण दैहिक सम्बन्धों में बुद्धि भटकती है।

परमात्मा की मधुर याद के द्वारा अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर अतीन्द्रिय सुख अनुभव करना ही जीवन की सफलता है और संगम युग का श्रेष्ठ फल है।

"तुम शिवबाबा के साथ योग लगाकर शक्ति ले रहे हो। वर्सा बाप ही देगा ना। वह बाप ही सर्वशक्तिवान है।... योगयुक्त होकर कोई भोजन बनाये तो खाने वालों को बहुत बल मिल जाये। (परमात्मा की याद से आत्मा को शक्ति मिलती है या आत्मा की शक्ति जाग्रत होती है? बाप से ज्ञान मिलता है, जिससे याद करते तो आत्मा की सोई शक्ति जाग्रत होती है)"

सा.बाबा 29.10.01 रिवा.

* निश्चय और दृढ़ विश्वास से कही हुई असत्य बात भी दूसरों पर सत्य के समान ही प्रभावशाली होती है और लोग उसे सत्य मान लेते हैं। जैसे सर्वव्यापी का सिद्धान्त।

* जब हमको निश्चय होगा कि हम अभी जो सेवा करते हैं, उसके आधार पर ही हमको भविष्य प्राप्तियां होने वाली हैं और उन प्राप्तियों के प्रति आश्वस्त होंगे और निश्चय होगा तब ही ईश्वरीय सेवा में लगन होगी, पुरुषार्थ में लगन होगी और जीवन में सुख की अनुभूति होगी, खुशी होगी।

* किसी बात के विषय में निर्णय करने और विचार व्यक्त करने से पहले इस सत्य को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि बिना कारण के कार्य नहीं हो सकता और बिना अपराध के किसी को पुरुष या प्रकृति से दुख नहीं मिल सकता। भले ही कर्म का कुछ प्रतिशत आगे के लिए भी संचित होता है, जिससे ड्रामा का आगे का दृश्य घटित होता है। इस सत्य का निश्चय होगा, तो हमारी बुद्धि किसी बात के विषय में गलत निर्णय करके अपने विकर्मों का खाता नहीं

बढ़ायेगी।

* इस विश्व-नाटक में कर्म-फल, पुरुषार्थ-प्रालब्ध और आत्माओं के आपसी कर्मों के हिसाब-किताब बनने और पूरा होने का, प्रकृति के साथ हिसाब-किताब बनने और पूरा होने का अद्वितीय सन्तुलन है, जो पूर्णतया सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। इसके आधार पर ये नाटक सफलतापूर्वक चलता है। जो इस सत्य को जान लेता, समझकर निश्चय कर लेता, वह इसके परमानन्द और परमसुख को अनुभव करता है।

* ये ईश्वरीय ज्ञान ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा से प्राप्त बहुमूल्य सम्पत्ति है और आत्मा को सर्व गुण, सर्व शक्तियाँ, सर्व सुख प्राप्त करने का आधार है, जो इसके महत्व को समझ लेता है और धारण करता है, उसका जीवन धन्य है।

* हमको अपनी मान्यतायें, बाबा के महावाक्यों पर जितना दृढ़ निश्चय होगा, उतना ही उनका सुख अनुभव करेगा।

* मनुष्य लेने से भरपूर नहीं होता है परन्तु देने से भरपूर होता है।
  कला उपयोग करने से विकसित होती है छिपाने से नहीं।
  कार्यक्षमता कार्य करने से बढ़ती है, अकर्मण्य बनकर बैठने से नहीं।

इस सत्य को समझने और निश्चय करने वाला, यथार्थ पुरुषार्थ कर सकता है।

* 5000 वर्ष का कल्प - कहा गया है कि क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले भारत स्वर्ग था और महाभारत के विषय में कहते हैं कि महाभारत को हुए 5000 वर्ष हुए हैं। अभी फिर महाभारत की परिस्थितियां उत्पन्न हो गई हैं अर्थात् फिर महाभारत होने वाला है अर्थात् 5000 वर्ष में चक्र पुनरावृत्त हो रहा है। इस हिसाब से हर युग की आयु 1250 वर्ष ही होती है, उसमें से 50 वर्ष हर युग के संगम के छोड़ दें तो एक युग 1200 का ही हुआ और उसको 360 से गुणा करें तो 4,32,000 का अंक आता है, जो कलियुग की आयु बताई हुई है।

* साधन-सम्पत्ति, पद के आधार पर जीवन स्तर अवश्य ऊंचा होता है परन्तु सुख-शान्ति की अनुभूति अलग बात है। सुख-शान्ति का आधार पंच तत्वों की विशुद्धता पर आधारित होता है। जहाँ पंच तत्व विशुद्ध हैं या अपेक्षाकृत विशुद्ध हैं तो उनसे आत्मा को सुख-शान्ति की अनुभूति अधिक होती है। दिल्ली के रोड पर एक लग्जरी कार में चल रहा व्यक्ति मान-शान का अनुभव कर सकता है परन्तु यथार्थ सुख-शान्ति की अनुभूति नहीं कर सकता क्योंकि वातावरण का प्रदूषण, परस्पर प्रतिद्वन्दता की बीमारी यथार्थ सुख-शान्ति की अनुभूति होने नहीं देगी। प्रकृति के बीच रहने वाले एक किसान या वनवासी को सुख-शान्ति की अनुभूति अधिक होगी क्योंकि उसको शुद्ध जल, शुद्ध वायु, खुला आकाश, स्वतन्त्र सूर्य-प्रकाश उपलब्ध है।

उसके जीवन में प्रतिद्वन्दता की बीमारी अपेक्षाकृत कम होगी क्योंकि मन पर वातावरण का गहरा प्रभाव होता है, जो उसकी सुख-शान्ति विशुद्धता, सामाजिक स्थिति, परस्पर प्रतिद्वन्दता, स्वतन्त्रता का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व-नाटक में हर आत्मा के सुख-दुख में पूर्ण सन्तुलन है। भगवानोवाच्य - सतयुग में राजा-प्रजा सभी पूर्ण सुख-शान्ति में होंगे, भल पद में अन्तर होगा। आत्मा के पद का निर्णय ज्ञान-योग-धारणा-सेवा चारो के आधार पर होता है। चक्रवर्ती राजा में चारो ही बातें पूर्ण संतुलित और सम्पूर्ण होती हैं। उसके बाद सभी में ये सन्तुलन और सम्पूर्णता की स्थिति नम्बरवार कम होती जाती है, जिससे सुख-शान्ति और पद में भी अन्तर होता जाता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org